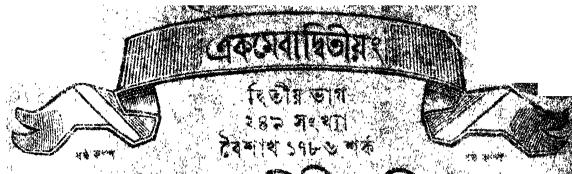
৺ অকারাদি বর্ণক্রমে ষষ্ঠ কলের দিতীয় ভাগের নির্মণ্ট পতা।

* \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	i i i	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
	मश्था। शृ	मश्था भूर
অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা (প্রাপ্ত)		
অনুঠানের আবশাকত: (প্রাপ্ত)		
অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা (প্রাপ্ত)		The state of the state of
অনুষ্ঠানের আরশাক্তা (প্রাপ্ত)		The second secon
অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা (প্রাপ্ত)		the state of the s
व्याचादणंत्र छेनदम्भ		
আজ-চিন্তা		A STATE OF THE STA
আয় বায় বিষয়ণ		success to the second
च्यां स्वासं विवर्त्ते		and the state of t
व्याप्त वाग्र विवत्न		
	289 :	The state of the s
আয় ব্যয় বিবরণ	***	
के शिक्ष की एक कर		The second secon
多 (数)		276
From Santa		ভवानी शुन्न उचाविमा। जारगत छे शारमण
· 表現公司 · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		The second secon
THE PERSON AND AND AND AND AND AND AND AND AND AN	, ,	The state of the s
के भाग भाग । जिल्लाम भाग ।	,	2 2 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4
কলিশভা <i>ব</i> ংগ্র		2 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4
		માનોતાઓના કલ ે લેઝ પ્રાથમિક
কলিকাড়া ব্রাহ্মসমাজের ব ল্ডা		
		্ সংকাৰিজিন ে, ২৫৪ ৯০ গন্সক্ষেধ ও শক্ষ্ত্রেমণ্ডৰ
		- 1975年 - 19
		・ マー・ライン *** 阿爾の神(大帝
		** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
क्षत्रेष्ट्रमञ्ज	** (\$\frac{1}{2} \cdot \	ু প্রতিষ্ঠিত ব্যস্ত -
ديش ا		ा उदकालामना २ ५ ० ५৮৫
		১ ২০ ' ্র 'উনজিংশ সাম্বৎস্থিক
		्रिशामभाष्ट्र २७० ३৯৯
থিয়োডোর পার্করের পত	२७० . ५৮३	र दलक्षिणी २०५ ४०
পর্মা বিষয়ের অবভারের প্রভিবাদ		4 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2
ইংরাজিতে		•
ใ ชย์:		
নববর্ষের স্থোত্র		
निमीध मगरा मागतरक जात्कात		11 H 2
কোৰ		
নিবৰাগ্ই চতুৰ্দ্দ সায়ৎস্বিক		* * * · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	₹€€ ; **	अरशम २०० १४
~		माक्रिमम् मङ २८१ ১२৯
মুতন গুন্তক প্রাপ্তি	200 Yes	क्षांस्थरक ब्रहिष्ठ व्यार्थना २६५ ১৮७
পঞ্জিংশ সায়ংসরিক ব্রোক্ষাসমাজ		§
श्री अ मनूषा		•
ব্রাদাধর্ম প্রচার	ጓ ๕፡፡	এই छक्दर्शिमी शिक्का किकाण बाक्रममंक स्टेट
ব্ৰাহ্ম বিবাহ	₹ €0	প্রতি মানে প্রকাশিত হয়। ৯ টেরে, সক্ষমহার, সম্বৎ ১৯২১,
वाकापिरवद्गमाधात्रवं मञा	₹¢°	本国中部1年 25-42 J



ज्याराशिमाथा विक

व के विकासित महाका में ब्रांसिय कि सकते में विकास महिन्द महिन्द के सिवार के सिवार के सिवार के सिवार के कि कि क देवारिक जिस्त नहीं कि सकति के सकति स्वार्थ के सिवार क

न वयाचीत (खान ।

(क विन्त विनास) नार्यमण्ड विकास 'खारि देननाथ स्वास्त्य सम्बार काम दिना मात्र द्यारात को विक वाकिसो खामता हु-कात्र हर्गात स्वास स्वास नाम नार्यात कवित्त धार्म हर्गात्र महाराष्ट्र महाराष्ट्र स्वास विकास सम्बद्ध प्रत्य क्षण स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र विकास स्वास्त्र महाराष्ट्र स्वास विकास गाद्याल सामना स देस नेना मन्

THE SET OF STREET STREE

कर करा अवस्त्राभिक वाल निलम् करणाज्य आविष्या करिया हर्षाक्षा सम्भन বিচ্ছ সক্ষম কর ৷ কিম-এপীতিত (১৪জন) भन्। कुल्लामाना स्मामनीटक एमटका वाञ्चामवर्ष ता शस्य स्मिष्टिक करिया, येव लेखे जे स्वी अध्यारक विविधन जन्म के प्रमि m date greater and require office. महम्बाह्य महिल्ला, प्रसाद भरते । यस दे साल् कतिरल , वर्षेष्ठ संबाधनम भूनकार ५वि । ब्री হলে তাহতে লেভিটা ক্লি কৰিলে, ভাইট্ৰি CONTROL REPORT OF THE STOP STOP STOP कार करें करा प्रदान स्वानमुक्त स्वास्ताको कर की 如"多(如果·你),更加《一·中的《异门四代》與《歌歌》 भा भाष भारत स्ट्रिंग का ना विस्ता भट्ना के बिल कि रका मन्द्रिय कविनेक कर्मा द्विम स्कृति ngre alla certe a large, agrico कर भ भावतंत्र काववा विषयि बद्धानिका Private aportal a contain alasta

র্ফিণীরার আনাধ উৎনার কর বাবে করিছিল।
ব্যান্থাত নালৰ কথনে কেন্দ্রার ক্রিছা পার হৈছে।
আন্তর্গত নালৰ কথনে কেন্দ্রার ক্রিছা পার হৈছে।
আন্তর্গত কালিভ ক্রিছা পুতর পুতর মঞ্জন মঞ্জন
নালোর প্রতিব্যান্ত রোপণ করিছেছি।
ক্রেছা ক্রিছা ক্রিছা ক্রিছার বাক্রিছার বাক্র

বেনাথ। কৃথি বেমন বৰ্ধার আ্থাননে
পার্মারক উত্থাপ ও কঠাশোর নিবারণ করিবার কন্য এবং তোমার ক্ষমতকে পম ধানে।
পূর্ণ করিবার ক্ষমা শ্যাম-বর্ণ নীরদ-মালা
ইইতে ক্ষমব্যত বার্ত্তি নালা বর্ষণ করিবে
নাই ক্ষম আ্যাদিশোর তৃথিত পাপ-পথশংলার বিশোহিত আ্যাতক তোমার কৃপা
করে আহিনিক্ত করিও ক্রমক আ্পা
করে আনিক্তি করিও ক্রমক আ্পা
করে আনিক্তির করিও ক্রমক আ্পা
করে আনিক্তির করিও ক্রমক আ্পা
করিব প্রকির্কা প্রভূমনতন করিব করিবে,
বিশাক্তিন বিশ্বিক করিবে, ক্রমি করিবে,
বিশাক্তিন বিশ্বিক করিবে,
বিশাক্তিন বিশ্বিক করিবে,
বিশাক্তিন বিশ্বিক করিবে,
ক্রমিন করিবের করিবে,
ক্রমিন চরিকার্য করিবে।

ভাত কৰি বাদাৰ নিবাস ভান পুলিবী
কানিবালনালতে স্বাক্ত নিপাতিত হইলে,
নামুক্ত লাজীনাঘৰ নাভানতল ভাৱতাহালে প্
বিশান ক্ৰাংশ সুকুটে আলাহত হইলে, পান
নামুক্ত লাভ স্বাক্ত আহলে কৰি কৰ্
নামুক্ত লাভ স্বাক্ত আহলে কৰি ক্ৰ নামুক্ত লাভ স্বাক্ত আহলে কৰি কৰ নামুক্ত লাভ স্বাক্ত আহলে কৰি কৰ নামুক্ত লাভ কৰি ক্ৰিয়ালেক ক্ৰ বিশ্ব কৰি কৰা কৰি ক্ৰিয়ালেক ক্ৰ বিশ্ব কৰি কৰা বিশ্ব কৰি ক্ৰিয়ালেক ক্ৰ নামুক্ত ভাষা নামুক্ত কৰি ক্ৰিয়ালেক ক্ৰ নামুক্ত ভাষা নামুক্ত কৰি ক্ৰিয়ালেক ক্ৰ এই বাপে হেনাণ অহোরাত পর্যা বিদিত হটনে, নাস তিথি অলীত হইনে থড় খড়ু গামনাগমন করিবে, জীবন মৃত্যুর ব্যব-ধাল ক্রমশঃ বিদ্যুক্ত হইকে, এবং দিবিধ বংগ হথেছে: থ কালকে বিচিত্রিত করিবে। কিছ হেনাথ! ভোমার প্রতি আনাদিলোর প্রজা ভক্তি কথন্ট বেল বিচলিত না হর। সমস্ত বংবর এবং সমস্ত জীবন বেন শরীর ওমনের সকল রুদ্ধি নিযুক্ত করিয়া ভোমার আজঃ

তান লোকের অবজ্যভাজন হট্টে হল, ক. গমল পাল্ডম বিকল কর, এবং জগতের অভিলবিত সকল সংলাধিত লা দেখিল সাপাতভঃ কুল হইছেলংলা কিন্তু ভাজনা কলনই বেল আন্তা, হতালালালা হই। লোকের গুলা, অবজা, সভাগভার বন্ধু এবং সাজীয়দিনের নুলনে বাহহলে করিছে ক্রেম্বানলা বিনীত নাম বাহালে ক্রেম্বানল এইং বাহসে নাম বিনতানা বহু করিছেল কান্দি হল কার্ম্বানি সাম বাহ্যজনিক। বিন্তু করিছেল নাম বিনতানা বিন্তুলাক।

বিনী জালতো প্রকালে, হে জুনার্থ নাথ।
ভালার নিকট এই নিবেশন করিভেছি, যে
জালানী বর্ষে এই গুর্জাগালাভূতুনি ফলনেশের প্রতি করুণা প্রদর্শনা হরিও। ভোগার
প্রকাশে যেন ইছার রোগ শোক শান্তি হয়,
ইছার পাণ অপবিত্রভা দূর হয়, এবং নীতি
ছইতে নীমান্তর গর্যান্ত যেল ইছাতে মা
ভারে রাজ্য, বর্ণের রাজ্য, কুশলের রাজ্য
প্রতিষ্ঠিত হয়।

ওঁ শাহিঃ শাহিঃ শাহিঃ।

गरमाविकाम।

क्रमानक।,।

কগতে মানব জীবন এত প্রকার আ ক্ষা ও মনোচর পদার্গে পরিবৃত যে, যে-পর্যান্ত না আমাদিণের হৃদিন্তিত সহজ্ঞতান বিশেষ ৰাশে সনালোচিত হয় সে প্রয়ান্ত আনুৱা পৃথিবীয় অভীত অন্য কোন পদাৱে मृक्तिभांक वो समस्यार द्यांच कविदय श्रे इ वृद् না। যেৰপ শারীরিক লৈশব্বস্থাসাছে रमहे अल मानमिक रेमभवावकाछ पृष्ठे इत्। नार्वेदिक रेपनयां कात्र स्वयन व्यक्तिक जीव-त्तव मह्हाव नालाक नारक अवस् कीवत्तव नकत सर्थ काटवा ज्यानीय साहिता ज-नर्यक अकिश्वित्व ज्ञाना विशेषात्र राज रक्ष माम तक रेस कर माम दाव कर मान कर श्रीवरीय रोक त्यांचात्र विश्वक रहेशा छ। FIR MANN THREE STATES Alphabet afternational and and and

THE RESIDENCE OF THE PRINCES IN wie vient der entrite Amme रेगमवाव संदर्भ मसुबर नामक १६ काबदकत भवन्मव मरबाटक है की बटनव मार्किक ह्या है कटत । अश्माद की बरमा जिल्ला महत्त्र इटक मिना कतियान कराई मासकामिक रुधि बरेबाटक देश क बामिटन अब निष्मान मभु ट्याव खना मरगात, मरगारितत सम्बद्धि मार्ट करे मक्की क्रिकारन विकास स्टेश লোকে এমত নমরে পার্থিক-প্রাথা কি কেই দৰ্মান্থ জ্ঞান করে। ভাষারি ক্লা বিদ্যাৰ্জন, ভাষারি জনা ধন লাক, ভাষারি জন্য ধনতি প্রতিপত্তি; ভদ্যভীত আরি যাস্থা किष्टू मकतरे खड़ीतर, मूठ गालिक्षिरवा क পোনা মাত। ধর্মানুঠান, ধর্মাচন্তা, কি ধর্মের জনা ভাগি স্বীকার এই সক্ষ কেবল -রহতাজনক বাতুলভার নাায় বেধি 🙌: সভা-মুদকান, আমোহাতি, প্রকাশ, কি মনের গতি বিধি নিবাপণ, কি ডাহার সন্ধাশক্তি 🎉 , ঈশরেজানুবামিক ভাষার প্রাকৃত লখা বি-हार अ मकन है जर्भ स्ता जमक्क विकाय মাত্র বোগহ্য। কিন্তু কাল সহকারে থে স্কুপ भावीदिक रेमगवांतका छेडीनं श्रृष्टेचा स्मितिः পর্ব্যাবক্রনে বাল্য যৌবন ও প্রৌচারতার সমাগত হয়, এবং ভাগেদিলের শরীর জ--নাগত পুট বৰ্ছিত ও বহীখান ধৰতে থাকে: कान पाटमाधनात, परेना श्राम्भातात, ७ व বস্থা পর্যায়ে দেই ক্ল ভাষ্টা পাথিব প্র দার্গের শত্তভাব ও জীবনের বথার্থ লক্ষ্য বুকিতে পারে, এবং তমহিন্তু ত অতীব্রির जातम-दादकात आफांग आखा स्त्री हैं मगदत्र वाक्र अन्य ७ व्यक्त श्राटकर वार् चस्ट्रका स्त्र १००० । १९७० ।

জানালোচনার **ধেণ**ন কোপান চিঙাল গে ব্যক্তিয়ে সাহিম্যকে ব্যক্তিক বিশ্বস্থ মনোমিবেশ ও একাজছার দাহত ভিত্তা ক-বিভে নমর সমেন, তিনি তদমুবাদিক সকল বিমরেরই মর্ম গ্রহণে সমর্থ হয়েন, তদমু-বারিক তাঁহার জ্ঞান উন্নতি পার।

कीवटनत आंत्रदेखें रयमन लिंदिक शा-र्थित वस्तु महेशा विज्ञा कृश, उकारमत शांत-ন্ত্রেও ভাহারা সেই ৰূপ প্রাকৃতিক পদার্থের उद्धासूमकारम रङ्गीन इत। এত विषर् क-তকদূর উন্নত হইলে পর তত্ত্বানুসন্ধায়ী মন স্থাবভই আপনার দিকে দৃষ্টিপাত করে। শাপিচ বিবিধ বাহ্যিক ঘটনা-কলাপে ভৌ-তিক ও মাংসারিক পদার্থের অনিতাতা জন্মশই **হৃদ**য়ে প্রতিভাত হইতে থাকে, এবং मनुषा कीतरमद अकुछ महर छेटमाना असुकृष्ठ ৰয়। মনুষা বিশেষে যে ৰূপ উলিপিড শারীরিক ও মান্সিক উভয়বিধ শৈশবাবত। লক্ষিত হইল, জাতি বিশেষে ও মাবারণত সমস্ত মানবপরিবার সম্বন্ধেই ভাষা সমান **ৰূপে লক্ষিত হইবে। বিশেষ বিশেষ মন্তু**ষে!র मकोटन करे नाम वानकना हा नाम जिल्ला हिस इत् मंगेल सांचि मदस्य ७ ठोइ। तिहे ৰূপে ভিরোহিত হয়, মানব জাতি মাত্র সমকেই ভাষা দেই ৰূপ। অভএব সর্ব अभारताचे मनुमा बांध वखत था है पृष्टि करत, অভ্যুপর ভড়িস্কার ও ভলিতারে মনংসংযোগ করে এবং পরিশেষে বাহ্য বস্তু অতীভ যে মন অথবা জন্ম পদার্থ তাহার অমুধ্যানে ও व्यादगांवनाय श्रव्ह इत्र।

যত দিন অন্যাদেশীয়ের। কেবল বাছ জগত লইয়া বাত ছিলেন, সাংসারিক ক্ষতি অতিপত্তি, নাংসারিক আশা আনন্দ, সাং-লারিক বস্তু নিয়তই যত দিন জানাদেশের স্বাহ ছিল, তত দিন জান গোচর ইন্দ্রিয়া-তীত ক্ট সাধা মনো-বিজ্ঞান আলোচনার প্রতি তাহাদিগের যত্ন বা প্রাকৃতি মাত্র ছিল না। বিশ্বস্থ জান উত্তেকের সঙ্গে সংক্রি ক্ল তাহারা মানানিত নানানিক করিয়াতি লেন, এবং গেই লালোচনা মই ত পরিবাদের কল বনশ বিশিন্ট উপ করি লাভিও করিয়া-ছিলেন। অধুনা কেমলই ফালের উমতি, তত্বামুসন্ধানের উৎকর্ম লাভ মইতেছে। লোকের মন বাজ জগতের দেলীপামান অথচ কণভঙ্গুর অস্থায়ী পদার্থ মইছে বিরত হইয়া "সভ্যাম " লাভেই সমুহস্কুক মইয়াছে। আমানুসন্ধায়ী বীর প্রকৃতি বীভ পাপ স্থবীগণ মনুষ্য তত্ত্ব মনুষ্য মহজু দর্শ-শিহ ব্যাকুল মইয়াছেন। মনো-বিজ্ঞান, অর্থাৎ মনের শক্তি প্রকৃতি প্রত্তি বিভি বিধি বিচার করিবার শাস্ত্র, এক্ষণে সাধ্য রণের প্রিয় মইনা উঠিতেছে।

কিপিও বিবেচনা করিলেই প্রতীত হ-हेट्य (स बाध कनंद मम्हल मञ्चाह मनुया कीवत्मत क्षांम हित्ममा। षाना कहे छ। বগত আছেন যে জ্থারের মহিন। নহীয়ান कतारे आमानित्यत में विश्वके सकता কিন্ত প্রথমতঃ স্থীয় স্থীয় প্রকৃতিকে মহীযান না করিলে দে লক্ষ্য কোন ক্রমেই সম্ভাবিত হইতে পারে না। স্ফ বস্তু দেখিয়াই জ-টার বিচার সম্ভবে। যে পরিমানে স্থাট পদার্থ মহৎ সেই পরিমানে তাহার স্রফী মহৎ; আর ষেপরিমানে স্থার্ট অপরুষ্ট দেই পরিমানে জ্র-উ: । অপকৃষ্ট। ছুর্ত্ত অসদাচারী পাপী লোকের ব্যবহার দেখিয়া যদি প্রমেশ্বরের সত্ব। ও স্বৰূপ নিৰ্ণয় করিতে হইত ভাহা হইলে তিনি জ্ঞান থীতি মঙ্গল ভাব বিব-জ্জিত দৈতোর নাায় **অভীয়মান হইতেন**। সাংসারিক লোক ভিন্ন শার্মিক লোক জ-नट्ड यपि निवास मा कडिड, डोश लेक्स-निভाटक रचात्र नाश्मात्रिक यनिशा स्थाय हरेका वास्त्रिक मसूबाबाई मनूदबाई निक्रे के-बरता कुछ जानमां तीरे कुछ बान

কিন্তু সেই আত্মার তাবং প্রাকৃতি এবং গতিনিপি আলোচনার অভাবে বে বাক্তির নিকট অপরিচিত রহিল, তমিহিত তাবং মহত্বই বাহার বৃদ্ধির অগমা রহিল, বিশুক্ত বিচার অভাবে বাহার আত্মা আপদার 'শ্রেষ্ঠ কোম মধ্যে' ঈশ্বরের প্রতিমূর্ত্তি না দেখিতে পাইল তবে দেই হান অনুমত পশ্বং মনুষা কি কপে জীবনের লক্ষ্য সাগন করিবে, কি কপে ঈশ্বরকে প্রাপ্ত হইবে? অভএব বিশিক্ত ধর্মোল্লির পক্ষে মনোবিজ্ঞান আলোচনা যে কত দূর আবিশাক ভাগা সহক্ষেত্র সকলের বোধনামা হইবে।

महमात मसूरपात छेललका, मसूरा मः मारतत लका। केचत मसूरपात लका, এবং मसूरा केचरतत छेललका। केचत छित जात मक्त लगर्थ जरलकारे जाणा महस्त। स्मेर तंकतारकचत कर्षक श्वातित हरेगा ॥ हे स्मास विभाताका जाणा बाक्य कृतिरहरू। छेललकारक लेका ज्ञास लगरक विभातक विभाव हरेगा मध्याती हता. अदर लकारक छेललकारक लेका ज्ञास क्षेत्र सीह क्षाता

HAN AIRAN MATIN MANE & AND वाक स्टेटक स्टेटक डीहान छन्तका नकता मापात उपारिनीनामत् क्रमान जीहात निरंक लंदेशा पारेट करेटन, जबर ভাষা করের তত্ত্ব নির্বাণ করিয়া তথ্যধ্যে जारात अमृतित किस क्षिटिक हरे हैं. मत्मा-विकान है है होत कि मत्नी दक्ष উপায়। एक निम मश्मादत आहि छई দিন ভতুপ্ৰোমী অনেক কর্ম করিতে रहेदव दर्हे, किन्छ कीवंद्रस्त गांव कर्याहे আজোমতি সাধন করা। ধাঁদার সাংস্রিক অভাৰ এত যে, তিনি তাহার জন্য আপন্তর क्रमट्राः भिःक प्राप्ते क्रिकेट व्यवसङ्ग शीम मा, তিনি আভি জুজাগা; আগ্র ঈশার-এমেটেদ নাঁশাব **সক্ল অবস্থাতে হীন পার্গিব অভাব স**কল বিশেব ৰূপে অনুভূত হল না,ছিনি গৌ খানা मम्भन्न। दिन्ह मक्टल्ड्रे पार्डा करा छै। চিত যে, আত্মহি আত্মার এক্যা, সংসাব নছে, मेश्वत्रे आधार कथा। मःगांत नरहः 🙄 (थंड वियश अहे (य. डाक्सथम এ अटनरम व्यवहोनं रुखा। घयाय हेरात खमाक्षकात क्रमण अपनीत कडेटरहरू। कृषे अधक्रुष **छेटम**ा मुद्र क्षेत्रा जन्दम कीवटनद यथार्थ क्तान अदन्दकर अदन बङ्गामिक =हेरहरणः এবং উলিপিত প্রকার জাতীয় দৈশবাবস্থা षांडिकांच महेच। मध्यत्रद्वत् घटन अकुन मसूचा ७। इ. भक्षति वर्द इत्ह । ভাগু তদেহ मसद्ध भरम्पानस्थान भारत्यतः भगामतः रुहेटव ভাহার আশর্য্য কি ? মত এব এই ছুব্রছ -विषय अर्था(लाइन। क्तिवात कना यनि चा-मता अध्यमत स्टेट्ड महिनी स्टे, त्वाथ कति माधातत्वत व्यायायपूर्णान ८० की क्लेट्न ना । ফলত এত্ত্বিবরে স্বার্থের সৃষ্ট্র আ মরা আপনাদিগের অসুপযুক্তা দীকার ক্রিতেছি। আমরা বিলেশ বংগ অবগত भाकि ए नगरम मगरम अटलाटकारमान या-

পর্যাদ্ধার ক্ষিতাক্ষিত হলে মিপ্রিছ চুইব। বিশ্ব প্রশান্তচারত দ্যাদীল ফি
মান পাঠক রগের নিকট আমাদিগের
এই নিনেদ্য থে উচ্চারা অনুগ্রহ করিয়া
আমাদিগের অনুভ্রতাসমূত দোদ মাত্রনা করেন, কারণ ধদিও আমাদিগের
আন ভাদুক উন্নত না ভারত আমাদিগের
উদ্দেশ্য বিশ্বকঃ

ভদ্ধবোধনী পতিকা বিরকাশই ঈশ্ব-दब्ब भौतिष्ठाविका, खोकापदर्यात मक्कोतिनी। " একংমর ভিতীয়ে " ঈশ্বর তাতার হাদণের भन, 'अकरमयाधिकीयः' केम्प्य क्रिकात राष्ट्रकत्र भूकरे । यथन (य श्रास्ट व केस्ट्र ह একটিত হুইয়াছে ইশ্ব মানুস্কান্ট ভাইব হ্ব্যা উদ্দেশ্য এবং পশ্ম প্রচারত্তী ভাষ্ট্র এঞ प्रश्व नका। दिने उस किटम भाग गरेश। ত্রোভ আলিবাহিড হঠতেছে, নানা বিপদ পাৰ আগ শক্ষ্য কথা হতে, কিন্তু অধৈত জাবে চিত্তকাল ভাতুতে ফিলী সেই অংশত-ভদ্ত প্রমেশ্বের মণিয়া ভীক্ষন করিয়া-(छ। अनि (अ) वे, विष्ठात विष्ठान, अनिक এস্থান প্রাল্লান নকলের মধ্য স্কলেই জিং व्यक्तिक व्याप्ता एको भाषां व्यक्तिक भक्ति-গ্রাচে - প্রত্তে সলন মলোবিজ্ঞান বিষয়ে आपना को को को कित करित इ अक्षेत्रन करेगाम, ভারত ও তার্ল ম্রিমা স্থেম্বর ক্রিব, প্রাপা ন্ত মানুর গাবে, ক্রেণ যে প্রকার **মভা** इस्त, मुक्त का । एक भ्या**रमभ्यात्व म**हिमा । ছোল্ডা এবং ব্ৰেক্ষ্যৰ্থ **প্ৰচার। পাঠকৰণে**র ार्क अप भिरत्तन त्य सुकन सुकत केली-বিত মতা জ্যোভিতে যেন ভাষারা মেই মত্ত স্বৰূপের নুগ জোতি নিবীকাণ করেন, खबर शास्त्रक गएक **मररवांत दर्शराया (यन** क्षेत्रकाल चार्ना भागत महिक अकेल्क्स विच-কেই প্ৰতিল্যালয় অব্ভাইন 🗀

নদিনা পুৰাৰ **অন্তাপন কাৰ**ং-সারিক ব্রা**শ্**সমাজের বজ্জুতা।

大电子性 打探 5%计像 神像 1 5 次次 1

शृथिवीत भुताकृष्ठ आदनांग्रम कतितन প্রতীত হটনে যে, এখনই ধর্মা পিরুতাবত। ধাষণ করিয়াছিল তথমই তাহার পরিবর্তন करा लाएकर व्यवस देखा क्रिशिक्षित उ ভজনা প্রত আনেশলন উপস্থিত কট্যা conta मनाक निश्रशं । इनेशाहिल। धर्भ निः कुकारक राजन करिएस भरमान कीवन केमर भी जि त्वादकत कानट्स व्यवस्थित करत्या, অলীক জিলা কলাপ্ৰসাধ বাহা আলুটানেন श्रांत छोडात्मत मन्त्रान महत्वात्याच पुके वनः खाइकि (कराम (गर्द) भक्त शहा अस्पार्थः गरक हे शुक्ति अक योज हें भार दलिया छ,त ঞ্ব । তাহাুদিলের ২ মে সতেরে কোটি-क्रमभः भूति क्लीया भारतिहाः अने भवस्यदः লোকে দর্ম্ম হাজক্ষদিধ্যের একান্ত বহঁটালু ১ ध्यु । छोडांची भरम करत (य. स्मर्ड गरुल भन्न যাত্রক, ঈশার ও মালুমেরে মাধ্যক স্বার্ধ ও দারা এমত বিশ্বাস করে যে, সেই কক্ট भन्न मांक्रक क्रेम्परहरू गांड विवास छिनि लार. क बार्यका । अर्थ भाकरकदां ७ (आरकत धर क्तिन चगरक आश्रमांटक्त मध्ये माल्टनत सेनात করিতে কটি করে না। ভালার অগ্ল ভাশার বাছ জিলা-কলাপের মংখ্যা রুজি कहिए राष्ट्र करन, आधारा विकास कारन (या, घडने किया कनारभक्त मध्या विभिन्न क-ইবে ভত্ত ডাছাদিপেরই মুদ্রাখারের পূরণ কাৰ্য্যের প্রতি মহকাবিতা করিবে : ভাহারা নর্মানাধন জন্য লোককে পীড়ন করিডেও সংক্রাচ করে নাঞ্জাহারা শিকাদিবের স म्हान इप्रत्य मा प्रामादयाती इक्षेत्र एक्यन

নিত্র হালে মনোবোরী কা বিরেশ কিন্তুল কার্যান করিছা করু আমার করিছা করু আমার করিছা করু আমার করিছা করু আমার করিছা করু করিছা করু করিছা করু করিছা করিছা করু করিছা করিছা করিছা করে ও করে ও করিছা লাক্ষ্যান করিছা কর্মানি করে ও করিছা লাক্ষ্যান করিছা কর্মানি করে ও করিছা লাক্ষ্যান করিছা কর্মানি করে ও করিছা লাক্ষ্যান করেছা লাক্ষ্যান করিছা লাক্ষ্যান করিছা লাক্ষ্যান করিছা লাক্ষ্যান করিছা লাক্ষ্যান কর

क्रेन्द्रिय अंक्षी शह (अध्य न्ह्राह्य स रथम्हे प्रम् स्थास चितिक स्थ, छन्मर्रे छ(है। ানবারণের উপায় আপনা পাপনির ঘটিয়া छटो । अने कतानि र निरुधानक वानव के भारत क्राहात क्रीताईम कमा स्वारक्त कर প্রবল ১৮৯। ছল্ম ও জন্তুন। প্রভুত আ भाषां अवस्थित हरेगा रशक महास विभागाभ रतः जेलद्वतं च्याप्रभागरम् असे भागावात्। वादन शशह फेल्ट्याली वट्या १ भग्नादिभिक्षे विकास केस्त्र शक्का करी প্ৰতি প্ৰায়া তীও পুৰুষ গকলল অৰ্ণী-র প্রাক্ত সংগ্রাক ক্রিন্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্র शास्त्र व्यक्ति । काम अतिहास्त्र महस्य किस्ति । क्टे**टक ऋ**ठछ। अस्त्रिक पाटकोतक २ क ल पहारतिकिक अर्थ किया स्वकार क াদিবেশার মবেলা আভাবি আলা এক এল ন इरेशा के छात्र। अकत अमर्थ ७ मकः, ध ্**টনার উপর সংবক্ত পুরুবে**র একটা স্থাধারণ **बिश्नुद आहर कवन हेट्।** विश्वान कविर' তাঁহার। সম্ভট হয়েন না। প্রত্যেক কুর ঘট না প্রাস্ত তাঁহার ইন্দা ৰশতঃ হইয়া থাকে, यामात व्यमीम भाष्टि महत्त्व किंदूरे उट्ट ं नदहः याद्यत्र मस्तर्क्त त्रक् मश्रदक कि हुने क्ष्य नदक अगड विद्यान कहा डीमानिटलर व अंतिमक् स्रेश यात्र। जेन्यत्रक कांगा,

मेम्राट्ड बाब्ध रहणांका, मेम्राटक डेन्डान क्रवा के क्रिक्टिशव की बदनत कर म लका। अना অন্য ধর্ণাসম্পু দারীরা আগ্রাত্মিক উপা-मनाद्र छोटन त्व भक्त भगान्न धनीक जिन्हा-कनांश-कर वांधा अमुक्तात्मत्र द्वार्थस करत्. त्व गकल शहा असुकानता की हाता अखास कृष्ट् करतनः माधरकता मधतरक (वयन বিভাতের ন্যায় একএক বাব দেখিতে পান, डीहाता दमसूरा एक अकरोह (मर्याम मू के भिष्य मक्तार अस्य किताब किताबिक कि प्रविक्तित्व (१८वन ७ मध्य शक्य सङ्घा सर्वि केरिया भारत सहस्या ७ सामास कर्यमा बर करा द्यान्य पक्षांची स्थान श्रीकी বৈধ্যের ভাজিল। জ্বেল ভাইলে জনাদ बाहो है। १४० कान हमार असा । दोन (एकू 製作表演 如仁人中科目 "黄河湖 田田村" 开门中 ক্ষায়া উষ্টোর প্রান্তিপ্স ও জনু মুক্তব্য केंक्ट रेट्टम : मान इ.डा.म. समिष्ट करा ক্ৰেড় ও বা,ৰাধ্যাৰ একে আনুজ্ঞাত প্ৰ ্রান ভারেত্র কিন্তু মাপুনিবেল পর্যান सम्प्राप्तः अञ्चलस्यातः स्थापः । १९४ विद्यापः स्था म व्याप्त स्थाद को ए किए। काला किए प्र , बहुमार माला १७६१ हो। असे असे माला स्वाहरू र 化价分析分别用料 配行 带电池 机木黄皮料 对抗两人引作抗心 物质电子 网络鲁巴城区 म्यः व व्यामहत्याच व्यक्ति व्यक्ति व्यन्तर ৪৪৯ তিলৈবি তেন মক্ত্রণ গ্রিস্ক্রত আগ্রেক : वैष्टि तिस्पत किंद्रमञ्जन संस्था कल काता भिष्याच निरुक्षण भदर छ। इपनिद्धन मुक्ती पानम्बर मुकुछ, काच्या कास नाट । दार्थीरै ধনাচা অধ্যা কুলানাদাগের প্রাক্ত ভাঁড়ে(দেন ए छ। जापा नाइ। डीवाता भार्थित वर्तन भनी नतः म, केंद्रितः भवम भद्धः धन्ति । ज्ञानकः। অনমান-পূৰ্ণ শব্দাভ্যমযুক্ত ৰাক্য বিন্যামে পটু নংখ্ন,শ্ৰল্ভালস্ক সভ্যই উণ্ছাদিৰেগ্ৰ

रक छात्रे अक गांच व्यवसात । जीशेनिद्रशेष কুলীনত্ব কোন মউলেলাকের রাজা কর্তৃক্ अभक्ष सदर, जारा (महे हाकात काला कर्क्स श्रमक, योष्ट्रिक शिर्वागम श्राद्यादय अञ्चला- श्रांकिक इशिंग्रहा यथन मिदे स्कक्त भूक्ष के। शक्तित्त वाभगात मगीभ-ণ্ডী কারবার নিখিও সর্বদা লাম কহিয়া-हम, कशम कीश्रीता कि श्रदान वाछि नरहन? कालि क्रिक्टी विनये इस. उथापि मधन কেছোল বিভাননে থাকিবেন তথ্য ভাঁচাবা क संकल्मायिक वर्गान नाइन २ किलामिटलेनरे শ্रु मान्य सन। अध्येत कर्नुक कुछ कर्राल्ड गरेसा-मकल विह्ड ४०शाहिन । छैकिछ-ুলর ই জানা রাম্যা সকল উচ্চত, উল্লভ ে বি-्यं इहेश्हिल, धर्याहरा महासूक्य तकल अस्य ध्रम् क्रियोक्ट्रिंगः। ने। निर्मत्ने ংশেল জন বেশ এতের ৩৮মিডা সক্ষ ধর্ম अल् अक्त बहरा। कांब्रा (प्राप्ट्र व । किंदू।-।भः, श्रेक् अञ्चल काम; पद्म ध्वेव वेर ५३। धारा वाका कर ५ मिश्रक महा वाद्वार शिशाद्वस । भार (मा अहर अवस्थाका) (महे रका-धातहरू किटलंब व किञ्चलिक उन्नमवादा विविधन प्रेशां ाक्रल । ज्योगावराविष्ठ स्क्रम क्रमा डीमाटका িলা-নিংমারিক শোনিত ভূতালে পতিত रहार्शिकाः। काञ्चाः शेहातः वालनाभिन्नहरू लक्षतक क्षेत्र ए १ करवन ना । क्षित्रीया छ-পীৰ্মাজ্ঞ এইড়। সংগ্ৰান স্বাচ্চের বিচয়ৰ কারেন। গলম এবস্পাকার ধার্মিক পুরুষেরা ঈশ্ববের দ্পাদ্দর প্রিং করেন, ভরন ভালানিসের মাজন্ত বোম হয়ণ প্রতি জাক্তির অ-भागांदव तका । भक्त मुक्त २३। हिस्ता যদ্যপি লোলবশতঃ কেনি একটা কুত্র কু-कच करतल ७ ७ व्हेर्स्स केर्नितित्र चाम्भिक योजनांत छ। इ.मी.शं वांटक सः, वन वसः वरकाहः मध्य मगुक्तः कि व्यादनानिक रुष ः जिस्सिनिरंगत सम ज्यस ध्यमि छत्यनः

इहेबा छाठे। **कें**|होबा अक्षेत्र विशेष:१८% পতिত बरेसा भारे चार्डबान करावन (स "कि-स्क्रम बङ्ग कें शिव मूच जामाब निक्के क्रेट्ड नुकाशिक ताथिशाट्य । यथम काराज ळ-সাদ আমি হারাইয়াছি তথ্য আমার কি विस्ति ? ं शकारमः कीयन गंतरग कीयरन ফি কা**জ** আমার 🗥 ভাঁচারা উপাসনার সময় মনের এপ্রকার উদ্বেলতা প্রকাশ কু-(त्र किन्छ भारमादिक कार्या मण्योकन मनद्र ভাঁহার সম্পূর রূপে ভির্বী ধারেন। আ क्टर्यात कियत अहे स्य, माश्मारिक कार्या मन्त्राप्तम मगर्म जनकात भरवत छित्रहा है।-मिटलात संरम्भालियाक स्वेतक्वे छिलला स्या অনঃ ভাব সকলকে এটা ক্রিয়া কেলে। कॅशिएमत राध (धय, क्यां छ, छत, मक्यां स किकारमत् परस्थात्मारस्य अनीम । मृङ्गः स्त्रा क्षानत निकार जन्मान नर्ग, कारानीन जीहा रमत सिक्छे भएनाइत स्ट्रा 💆 हिएएएए। भागा काम्ब्र हिलाम १ स्थान धार्क वर्षे क्षेत्र लोहा माल्माविक वस्त्रव क्रम साहा भरमाध्याव विकारमव मनदक व्यक्तवस्य ५ कांत्र करत. केंक्स**रम**त कामग्र कशरक कारम প্রতি এবং পক্ষপতি দুরীকুত কলে এবং हारात्मत विश्वत्य विश्वम् ७ व्यव्याच्ट्रस्य পরাক্রমের অভীত করে। ভাগার। পৃথি दौरक (लोक्षरखंत नत्त्र भगम कर्द्रम । मञ्जूरकात महत्र कें।इहरमत मध्यान व्याह्य वहरे, কিন্ত তাঁহারা মানবীয় ফাল ভাবের উপর, ম্বৰ ছংৰ আন্ত ও কক্ষ নৰস্বোতাহার মতবং। ভাঁহার। অত্র ছার। শাক্ষত হ্রেন না, বিশ্ব বিপত্তি ছারা প্রাতহত হয়েন নাঞ ভাঁচারা ক্ষতিকে লাভ বােধ করেন, লজ্জা-क को इन भरन करतन, कवर मृङ्गारक का জ্ঞান করেন। তাঁহাপিলের চিত শান্তীয় क्लीनका विषय शास्त्रत्व करहात कि छ । भक्

বিষয়ে ভাষা অভান্ত কৌনন। মনুবোর খাপ জনা তাল কি পৰ্যান্ত ব্যবিত হয় ভাছা বৰ্ণনা করা যাইতে পারে না। পাপী मसूटवात शित्रजांग बना ठीहाता गर्यनाहे কাতর চিত্তে ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করেন। কোন বাজি বেনন ভাষার ভাষার ছ্রবস্থা ভনা ক্রন্দন করে তেমনি পতিত মনুধার জন্য ভাঁহার। সর্বহাই ক্রন্দন করেন। মনু-যোর পাপ জনা বিসাপোক্তি তাঁগদিগের বক্তাতে মর্কাশই উপলক্ষিত হয়। ভাঁহার। कुमबरताचे कुरलाकभूनं मगारकचे कम शब्स करतम। लाक ममोरकत रच मकन प्लीम उ অম দাধারণ লোক দারা অনুভূত হয় না, त्म मकल (मांग ७ अम डिलित। श्रीय अर्ग ধারণ বীশক্তি দার। অনুভব করেন। ভাঁহা-रमंत्र छोट्या रकवन जनवाम विमन् ७ मि-গ্রহই ঘটিরা থাকে। তুট লোকেরা তাঁ-হাদিবের সম্পূর্ণ শক্ততা করে এবং মে পর্যান্ত তাঁহার৷ না নিহত হয়েন সে পর্যান্ত ठै। इंग्लिंग क नाती तिक जनना माश्मातिक মন্ত্রণা দিতে সমান্ত হয় না। কিন্তু হত চই-वात मधरप्र डीहाडा श्रीम निधक्षांक्रीम भटक मदनत माङ्ङ जामीकीम कहिया जातः नान्दिशंत अनादात अमावातन अनाया अ **কাশ করেন।** এঞ্চকার বীরপুরুবেরা ভারি मसुवान्दिशत अक्टन्त शमनाशमन कमा निद्धा কতক ৰার। কতবিক্ষত শোণিতাক্তপ্র **হইরাও মহা কম্ফে তুর্গমন্থানে লুভন স্থাম** পথ শঙ্গত করিতে যত্ন করেন। এই প্র कांत्र मसूचा बांता है जनसे जाएका लिए हरा। এতজ্ঞপ মহাত্মা-বিগের ধর্মোপ্রেলর এত वन (व छोरा वर्गना कहा साह नहा भीत अधियात। छीहाटमत अस्ता अति-नम रुप, डीस्टन्स मुख्या विश्वट्या नाति व्यक्ति भारत कटर, यक्तमन्तरमञ्जू महिक जीवारमङ क्ष रहेर्ड मका विकिश्च स्था

ৰয়ং বাখীতা আসিয়। ভাষাদের ওতো-शति आविष् उ हमा अनी विषदम वाल-रात्र गमत्र काराती काम क्याबार भक्र हिल्ल হন না। যদ্যপিও মেদিনী তাহাদিপের কথায় কম্পিত হয় তথাপি যে আমি তীহাদিনের मर्डटक जनिएडटए जान धर्मीन में क রিয়া কথনই কান্ত থাকিতে পারেন না। ভাঁহার। দকল সাংসারিক কার্য। পরি-काटका ध्यञ्च ভাগি করিয়া এর্ম প্রচার करमन डाँगांदा यमि धना कांद्री धामुद इत्यम जोश क्षेत्रा (क याम जीशीतेत 🛠 भाकिर्मन कविया केल्यानियास्य व्यव्याव कार्ट्या नियुक्त करतः। है। शहा साहे कार्य। मान्यामन জন্য বিশ্রাম আগারের আর্টাম ও প্রিয় ব জুদিগের মনোরম সংসধ পরিতালৈ করেন। नके अन्ति अनुष्ठि छोड़ानिशतक निकास ने १ প্রিয় ও নিজ্যে প্রতি মিষ্টুর করে। দেই শর্জ জাঁহাদিশকে নিজা হটতে বঞ্চিত্র करत ७ गातवाम विवास वाधि चूना करत। তাঁহার। বলি স্বভাবতঃ ভীয়ে ও কোমল शक्रिक श्रद्धम फवालि डिश्तिता राग देवन तल काला जामधातम माक्ष्मी ७ करो-महिक्ष क्हों। छेट्टेम। शृथिबीटक मापि क्यांनन-নের অভিসালে ভাষারা এখানে আগমন करवम किन्छ कार्र्या ८२४ एरेन छेटन ना। ত্ৰীকার। চতুর্জিকে আনি প্রজাতিক করেন व्यात त्य वर्षास्थ नः त्यरे अधि अकृतिस् हर काँहिशिश्यत मन ध्वयम् वर्षमः। मक्दलः ब है मदक की हाएमब दिवाम विमान के शक्तिक इत्। व्याभाषकः को नाम त्याम इत् 🕏 🕒 हाता (धन दक्षण मःहात कांब्र करे मुर्बि-विद्या अन अहन कतिशादसम विकास विश्व विश्व कर যেমন ভাঁহার। পুরাতন অ**উালিকা** বিনাশ করেন ভেষনি নৃত্ন অভানিকা ও নিশাণ করিয়া বান। যে পর্যন্ত না নেই ছুওন অ-जिनिका निर्मिक देश त्में अब्रेख कार्राता

ভাষ্ট্ৰ হলেৰ ক্ৰান্ত্ৰাদ পুৱাতন অউলি-कान रसाम अपने उडम थाटक ଓ जोराटक রক্ষা ভ্রিকে পারেন ভবে ভাঁহারা ভাহা রক্ষা করা লৌভালোর বিষয় জ্ঞান করেন, किछ ग्रमाणि कोन अश्महे छेख्य ना पोटक करव (म भूडां इन अजी निकास्क ममाक्बर्श ভাক্কিয়া ফেলিতে তাঁহারা কিছু মাত স-ঞা**চ করেন** না। স্তরাং সকল লোকই ভাষাদিনের শত্ত হয় এবং বিপদ্যাগর প্রামিশ্য ভাঁছানিগকে বেউন করে, কিন্তু স্থার স্থাহাদিগবে কথনই পরিত্যাগ কবেন া। তিনি কগন উচ্চান্তেগর আত্মাতক अवसङ्ख्मिश्रमान् स्ट्रेट्ड एमन मः। डीही াণ**লের কারাগালে**র প্রচিটরে তিনি স্থলীয় স্থের ছবি চিত্রিত করেন। ভাঁহাদিগের अम् । कृष्टित ४८ यत् (क्यांकिः मस्त्रेत्। रे मीलि भाष्ठ कथनहे निकाण रत ना। कें।होता ने ध রের অন্তুচর ভাঁছাদের ভবের কোন কারণ नाई।

विदिह्म। क्ट्रिक शकीं क्टेंदि थ्य, পুরবর্ণিত ধর্মের বিক্রমাবস্থার জন্মণ ম व्यक्ति। तत्र काग्रह्मि ভाরতবর্ষ कृष्णे इहें (३८६ ७वः धर्मा शतिन्छंन क्रमा entera arti श्रवत देखान क्रांगाटह अन्द करे जमानांतन कानास्याधी जनानाः রণ ধর্মো দেকী,ও ধর্ম সংস্কার কার্য্যে স্থ-ম্ধারণ কলে যঙ্গান্, একান্ত ঈশ্বর পরা-यन, कन्छे निहस्यु त्लाक नक्लेख आंशिक्टिनंद बद्धा छिपिछ इरेगार्इन । त्मरे मकल जाति-श्रीकादकांद्री नाङ्गिनित्शत मत्था व्यक्तिशंभ খাকি বিছান্ ওধনবান্ নহেন কিন্ত ভাঁহারা लदा विकास विकास ७ शहम थटन धनी, धन यश्या विभा शिक्षं इ सा किया के शिनिगदक कारम मां प्रमणीन कराया विषास् मत्या कार्राप्तराव सार्गि खहातिक नार्दे क्षि जेनक है। हानिशदक छे छन् कट्टा कारिना त्वव मर्थनी मत्या केशिलत्यन स्थानिक भोत्र विकासिक स्टेटफटक के की सीनिएन हु নায় শান্ত সমাহিত ন্যু স্বভাব তিতিকু ब्लाटकरे के बटात थिय ग्रहान कामा वाकि वार्यका डीशबिदनबर बाता के-শ্ব অধিক কার্য্য করিয়া লয়েন। স্থান यमन गांतु वाक्तित अत्यासन इस के ब्र তখনই তেমনি সাধু ব্যক্তি শ্রের। করেন। यथम এथकार वाकि मकन वामानियात मरधा উদিত হইয়াছেন তথন ধর্ম পরিবর্তনের প্রবাহ আমাদিগের দেশে প্রবাহিত হইতে আর বড় আপেক। নাই। যেমন বণার পুর্বের নদীর উপর ফেনা দৃষ্ট হয় ও বলার শক্ষার উদ্রেক করে,তেমনি ধর্ম পরিবর্জনের ব্রানুর পূৰ্ব্য চিফ সৰূপ কোন কোন নহাত্ম ব্যক্তি দারা পৌভলিকতা পরিভাক্ত হইয়াছে ও পরিবর্ত্তন প্রতিপক্ষদিখের শক্ষা উপস্থিত करें (७१५; (यमन दनशंत शंक्त न आदन न विस्म भूक तेगीत र एका मकता तमहें बनाति कता मिनितात क्या व्यक्ति क्या, व्याम यश्य दाक-নৰ্শের অনুষ্ঠান এচানত হইতে থাকিবে ৬ तका भारतका क्रिक क्यांटका वस भारतका ক্ল পাৰণ করিবে, ভখন পৌত্তলিকতা ৰূপ প্ৰিণ ভড়াগেবছ ব্ৰাহ্মপৰ্যানুৱানী লো-क्तिता त्मरे श्रेतिवर्कत्म योश मियोत कमा অস্থির হইবে। যেমন বণ্যার দ্বারা আপা-তঙঃ নানা প্রকার হানী হয়, কিন্তু পরে ভূমি উঠার। হইয়া যেখানে বণার कन ভরক্ষিত হয় যেখানে শস্তা পূর্ণ উদ্যান ছাঞ করিতে থাকে ও শাস্তি ও সচ্ছন্দ্তা বিরা**জ** করে, তেমনি ধর্ম পরিবর্তনের দারা স্বাপা ততঃ অনেক লোকে: ক্ষ্ট হইবে কিছ ভ বিষ্যাদংশীয়েরা সক্ষমতা লাভ ক্ষরিবেন অনেকে এই ৰূপ বলেন যে ক্লেক্ষণে কেম্বর্যা धर्म मिका (नंध ; अधिकाश्म क्लांटिक संबद्ध निर्माण पर्मा कांग नांच कतिर्देश कुर्मा है। कार हरे विमुक श्रेटव, कथन का कति। প্রামাধর্শের অনুষ্ঠান প্রবর্ত্তিত করিলৈ তাহা महत्क अविनिष्ठ हहेर्द आंत्र कांन कर्षे পাইতে হইবে না। ঘাঁহারা এৰপ বলেন छै। श्रीता वित्तरमा कदान ना त्य, त्य महल চিত্ত সহাদয় ব্যক্তি নির্মাণ জ্ঞান লাভ করি-য়াছেন তিনি দেই জ্ঞানামুদারে কার্যা না করিয়া কতক্ষণ ক্ষান্ত থাকিতে পারেন ১ তিনি সেই দর্শদূর পুরুষের দৃষ্টিতে কত-क्रम कर्पा इहेशा थाकिए पादतन ? जिनि পুরুলিকা উপায়না ছারা আপনার প্রিয়ভয় **ঈশ্বরকে** কতকণ অন্মাননা কবিতে পা त्तम ? हेहा सथार्थ तटि य व्यक्ति ममाख-ফুত না হইলে তাহার আনক উপকার করা ধায়, ভিন্ত স্থাদেশ ও ঈশার এই ত্যের অনু-বোগের মণো কাহার অমুবে'গ রাখা ব र्डेका ? क्रेश्वरत्तत्व अ*नु*रत्ताच त्रका कता व्यदमाः कर्षना, किन्छ ने महत्त्वत अर्थान नित्रम इस कैं। হার অ**নু**রেপে রক্ষা করিছে গেলেই দেশের सेमकात पाशनि पाशनि हरेता सेटो। সীয়ে দুটান্ত ছারা দেশীয় লোকদিগের স্থ পরে কপটভার প্রতি বিষেধ উৎপানন করা অপেকা দেশের হিডকর जात कि चार्छ? रामन भरताभका कमा मिथा। कहा फेठिए बटह एक बि एएट अ शकांत्र करा धर्मा विषया कशरे जीव अवस्था कर्ता कर्डता इस जो। विश्वक छेटलना हो-ধন জন্য অবিশুদ্ধ উপায় অবলম্বন করা কথ-बहै উচিত হয় না। ধর্মা বিষয়ে অকপটা হইয়া বিবিধ একারে কি দেশের উপকার कता राष्ट्रिक शीटत ना ? मल कतिया धटमाँव **অনুষ্ঠান আরম্ভ কবার বিষয়ে পুরার্ভ্ত** সাঞ্জ্য थानाम करत्र मा। मका शास्त्र अक अकजन করিয়া মুতন ধর্মা ও তাহার অনুষ্ঠান সব-नबरमञ्ज मुकील धामनीन कत्रिशाहिल, छोटारमञ मरेशा भटत एल स्टेशांहिल। यक विनय

अनुष्ठीन अधिक रहेक मा (तम अंश्रेट्स अधि-अक्क ट्रांचत्रन *अर्थेट* छहे हहेटव । প্রতীত হইতেছে যে ধর্ম পরিবর্তনের স্থ-থসেবা উপায় নাই। ধর্ম পরিবর্তন সাধন করিবার জন্য ঈশ্বর সহজ সূপন রাজনার্গ বিধান করেন নাই। সমাজের শান্তি ভক মা করিয়া কোন মহৎ কার্যা সম্পাদিত হই-রাক্রিশব বাভীত বোন রা-জ্যের দোষাবহ শাসনপ্রধানী পরিবর্তিও হই-যাছে ? আপাডজঃ অনেক গুলি লোকের কফ বাতীত কোন্ দানাজিক কুরীতি উন্ निक इरेगाएए । यमन शक गांकनी सार्कीड त्रांतकः स्वस्तांवदारमानगर स्वातीरण क् কিও হয়তে প্রামান যেমন মহা যাত্রা ব্যতীত সনুষ্য প্রবেটাকৈক স্বয়েগ্য অবস্থান উন্ত্ৰীৰ্ণ হইতে সাবেলা, ভেমান কৰি ও বেন্ন বিপত্তি বাতীত ধর্ম শ্রিবর্তন কার্যোর मायम करेट र शास्त्र रहा। जिल्हां स्टान, ध ধ্যে নক্ষ সাধারণ লোকের মধে। প্রচালিত इड्टन भव नव एटिशी आस्वेरिन सङ्ख हर्देव बस्सा करें क्षण कड़ है आदिएड गाँउक, অধিৰ চইটেই ইশ্ব এবলী আন্যামণ পুৰুষ ceang करहम, विभि प्रपूर्णिय के क्योंगि हा व लिक क्यांक कर्य भाग वस्त्राहर लेका ४० बर्गाहरू मुक्कामान सर्वन । भवतः विश्वस्थि এই বালে পদ্ম প্ৰতিশ্ব কাষ্ট্য সম্পাদিত চ টারাজে। ভারতবংগ কিছু নিমালিক নিধ-। यत्र विक्रिके नाम् । व्यन्तानः दनाम धर्षः मा काद कार्या ट्या बटना मन्ना किए व्हेराहरू क्षेत्रकरसंव कोर्। लाहे कार्य गण्याणिक क्षेत्राहरू ७ स्बेरन ।

श्रह्म कारगांकका ।

() () ()

अपूर्शत्यत श्रावष्ठावर्षि अत्नदक अत्नक अ-শার তক উপাছিত করিয়া ইহার অনাবদাকতা अक्षान क्राइटल सबुबुक इंद्रेशहरून। अनुक्रीन काली आक्षानन व्यविक ७ छाहुः। मनौ तनिया नाथा-রণ সমক্ষে পরিচিত হইতেতেন। ব্দিও উছির। ংশশপ্রচলিত যাবতীয় কুত্রথা ও কুসংস্কার मकालम् व्यवस्थाती रहेशा हिन्दल्हान, यनिष ভাঁছারা পৌডুলিক ধর্মারূপ বিষম জ্বলাল হইতে আপেনাদিশকে সম্পূর্ণ রূপে উন্মুক্ত করিয়া এক মাত্র সভা পর্যের প্র অনুসরণ কবিগাছেন, তথা-পিও অনেকে ভাঁমাদিককে খোর কুনংকারাকন রূপে পরিচয় দিক্তে কিঞ্চিন্নাত্রও সঙ্গাচন্ত নহেন। এমন কি উহোৱা যেমন পৌতলিক ও জনাান। ধৰ্মাৰলৰীদিগকে ক ক ভ্ৰমকলুক নভ ও বিশ্বাস এবং ছুবিক আচার ব্যবহার সকল পরিভাগি কর্থানস্কর ব্রাক্ষ্মিবের সূতৃকী ও অনুকরণ করিতে অকুতে;ভয়ে আহ্বান করিডেছেন, ডেমনি অপর असमे ाजाक अ कृष्टे कम् गाँकातः। च्यापासन माधारम मंगकारमध्य व्यक्तिस्माली जोकान भट्टाक प्रमुख শ্বাহতি পারতে প্রকাশের উপদেশ কিলেছেন: এই রূপে অনুষ্ঠানে গুরুষ ক্ষমাচেচন বলিছা সর্প স্পুটক্ষিশসক আক্ষাকলনেত স্থারণের সুগা-भाकातं कवियोतं ८०कि। ब्हाटम स्वीटम स्वीक्तिकं देवी-**ंकराज । या विस्त एमिकामांग के कि विश्व वर्ष का**-ভরিঃ বলিয়াও সংখাপন করা অইয়াছে: আপচ क्ष्मित संख्यात क्षित्र क्षित्र स्थापन स्थापन नंद्यांन खेशिंडिङ क्रियांट्डम ध्रमम न्या, किन् क्यान क्यांच आक्रांच जेवात मण्यू व दिखाशी देवेश উচিয়াডেন ৷ যাঁহারা একা নকেন উহিলে খীয় খীয় সন্ক নগে প্রভুত ক্ষতাশালী ও বিজ ক্রিয়া জামিত্ত হর্তদেও উলিচাদের অনুষ্ঠান বিষয়ক भक्त मरुद्ध कर्यकरे आहा रुप्टेट्ड शास्त्र हा, किन्द ক্রাক্ষেরাও যে ভাঁহাদের বাকেয়ে মুখ্য হইয়া অনু-के। तमत्र नारण खिलिश (बेर्ट्रन देश आर्थिक) आर्थिक-পোর বিষয় कि আছে १ লোক-তর অংবা কোন খাৰ্থের ক্ষীভূত হইয়া বে ভাঁহারা অনুষ্ঠানের গ্রেক্লে দ্রায়মান হইরাছেন, আমি একণে সে विष्ठा कि कू विवाद । इंग विश्व निकार है. ব্রাক্ষদিশের মধ্যে এই অনুষ্ঠান জনিত অনেতে অ- ८५२ पट लेक्षाविक कांत्रप्रोटक। असुक्रीम विवास वर्षम् মতের এতাচুশ বিভিন্নতা দেখা যাইতেছে, তথ্ন ভাগা যে একবার সাবশেষ আফোলন করা व्यापनाक जाहारण जाह मत्बद नाहि। वसुर्वान काती जामानन श्लीविभिक्त मर्द्याः क्रेमाञ्चलि निर्मा

Andre in minte entidienen an ente mirig वातदात्रकांक्रण वाजिएकत देशक कांत्रण कि १०० প্রয়ের সহস্তর প্রকাশ স্বার সকলের স্বভরত্ব বি-वाम छक्षन करा जांछ कर्डका हरेशारह। बदमहा-धिक वाडीक हरेन काशामिक्तर शहर तथान-ভালন क्विकांडा जोक्तनभारका जाठानी मही-শয় ভবানীপুরের ব্রাহ্মগদাক্স-দন্দিরে "ব্রাহ্ম সমাজ ও সামাজিক সংস্কারের? বিষয়ে যে ৰজুতা করিয়াছিলেন, ভাছাতে অষ্টান লইয়া প্রকৃত ক্লপে সমালোচনা করেন। ভিনি ভাষাতে বিক-কণ ব্যাইয়াদেন খে, ধনৌর সাহায্য গ্রহণ না করিলে সামাজিক সংস্থার কোন প্রকারেই সম্পা দিত হইবার মতে; এবং নাজিকদিণেও ত ক্ষাই माहे, यांहात्रा मर्सना विखाएक है साल, यांहात। নেবলগার সুন্দর্বিনাস্ত ভাষাবলিপরিপূর্ণ সং মাজ সংখার বিষয়ক গ্রন্থাদি বিধিয়া এবং অস্থি শয় বাক্গটুভার সহিত বজুজা করিয়া পরে ক্রিয়া কালে হতেকে সজ্জিত করিশ। রাজেন, টিল তারা বেমন আগনাদের সক্ষাপ শিক্ষ করিয়া ও भिटक प्राविद्यम मां, एक्सीम सोझांहा दमनाक्षेत्रक হ্বিত্র প্রভাগ অভিশয় উৎসাহিত হইয়া সংঘাঞ্চিক সকল প্রকার আচার ব'বহার কুসংস্থার এক কংগে विषये कतिरस दिलास इत. यीवति। व क्षांकिकाः। রূপ বিশালি রুজ সহতঃ সহতঃ বংগর কাল ন্যাপিন। ৰুল ৰন্ধ কুইয়াডে, ভাহা এক দিবসে উৎপাটিত করিছে অগ্রসর জন, পরে স্বাহ্নকে কি নিগলে শৃষ্ঠালাকৰ কৰিবেন্-- ভাষাকে পৌৰুলিকভায় ক্স **হউতে ফেন্ন** উদ্ধার করিলেন ভেমনি জালার নিমিত্ত কি আশ্রহতান গুড়ত করিবেন, ৬ ৯-कल व्यक्षणणार तक बादल भागा भागा व्यापना लन मा कावन, छीशास्त्र मानन तमदे खुल अम ম্পূর্ণ থাকিলে! ডিমি ইহাও নকলের অভীতি क विशामिशा घटलम या. जाकानमाज अहे छूटे मध्मत মধ্য পথে অবলম্বন করিয়াছেন, অর্থাৎ এক মাত্র ৰাক্ষের ওপর নির্ভাব না করিয়া হস্তকে ভিনি পরিচালনা ধরিতেছেন, এবং যেমন পৌতলিক আচার ব্যবহার দক্ল আপনার সীমা হইতে দুর করিয়া দিভে। চন্তেমনি আবার ভৎপরিবর্তে উনক ও ধর্মানুমোদিও বিশুদ্ধ আচার বাবহার সকল আপদার পুতাগণ নাথ্য, প্রবর্তিত করিছে-एकत्। काञ्चव द्वामामा**ल निकार कृष्ण**ः कन्य इटेटवन् । किन्न ज़िलात्र बन्नु छ। अखिलाना व्हरजल जाश विद्यांच करनामधीकी हैं। माहै। देशक कामन मरदल है स्वीयनाक बहेरक लगाइ. मध्म छाहा रक्षण अन्य मध्याक माक्रिके अन्य कुरात कारामा कतियादिन, वश्रम जावा प्रश्नमा-कार्य कार्याण कांत्रका गांवाझराज त्वाच्य क्या क्या

নাই, ভাল বৈ ভালারা বিশেষ উপকার সংআছি পূর্ম নাই আক্টা কি ? ভাবে তাই।
ইতিয়ান শিক্তরে পত্রে প্রকাশিত ইয়াছিল।
বাঁহাগদের অনুঠানের কর্ত্তবাতা বিবন্ধে সন্দেহ
উপস্থিত হয় ওাঁহাদের সকলকেই ভংপাঠে আনি
বিশেষ ক্রিয়া অনুরোধ ক্রিভেচি, অনুগ্রহ পুরুক
ভাহারা বেন ভাহা পাঠ ক্রিভেচি, অনুগ্রহ পুরুক
ভাহারা বেন ভাহা পাঠ ক্রিভেচি উদাশা না কবেন। একণে আমার ইহাও অভিনাই যে প্রামান্য সমাজ গেই বন্ধু ভা শুক্তকাকারে যুদ্রিত ক্রিয়া
সাগান্তব্যর পোচ্য করেন।

ক্রেমশ্রেজকাশ্য)

सहवान गांत।

বিহল এক চলনা কোষ লিগছ বিনালের পারেলি আমেটের দীপাই পুনর্নিটারিক হইবে। ছাঁছান দাহান ব্যের জন্য ইংলকে ভার্ম স্থিতি ইইছেছে। আনন্দ ভারতাক, এবং ভারতিকানের সাজী পায়ত তার-নাম দান করিজেছেন। আজ্বান সংস্কৃতি বাহালেন হইবে ইংল্ডের বার্ডিকান ক্ত ন্য উত্ত নিজ্পান পক্ষ, এবং ভারার ধর্মীয়ান ধর্মেন ক্ত ভারতা

শ্রীযুক্ত কেশবচন্দ্র সেন প্রজাব-ল প্রথাবি এবং কটার অপ্য একটি ব্রাক্ষ ছাতা যে বে গাই ও শাক্রাজ নেশে প্রাক্ষপর্য থেকার করিবে লিয়াছি লেন উাহাদিনের ভ্রমনের স্বিশেষ কুত্তান চিত্র জ্ঞানা করাবাইভেছে। ভালোঠে বোল ক্ষরি লোট-ক্রম্ বিশেষ কৌতুক ও জান লাভ করিবেন।

মনুদ্রের অ**ভিনুবে খনন বরিভে** আরম্ভ কবিল। 🦠 জীরত সহচরগণের নিকট বিদায় জইলাম.ক্রনে হাঁ-शटनत निक्**षे रहेटल मूद्रनकी रहेटल मा**निवाय, अ-ষং আমাদিলের সেহা**ক্ষপূর্বলোচন পরিলে**খে পার किश्हितिभारक रस्थितक अधिन सा। एक माज्यस्थ यस्टान्स : व्यामाणिशादयः विकास मान्त, प्रकः लेकियाः वर्ग । आभाविभदक काशीर्वाम कर, एवं खांच भंग । 🖙 अभिज्ञाननी (कांगारभव मकलरार समकाता। कांबरमह गर्वाञ्यथाम् जिल्लामा भाषमः कतिगाः क्या चणः-**८७ [क्षामिर्णत् रसहम्या मञ्**त्र करी, कर्ने क्रम क्रिके लाम कवर निरमभन्नार्थी केंगलांग। तम शांत्रक लागर নল্পান করিবান আন্তামন দুরামনে নাম্রাজ ও বান करम्दर्भ पंजन कविटलाङ । स्टाम मक्का ४३क, जन्ह दमने ताकराक्ष्य नदीत्वाक प्राक्षः प्रत्यावसम् कामः ्यास्य भाषाम् व्याप्त त्राच्या । च्या प्राप्त विषय ন্পার(র ১৭ট শহরের বিদ্য

斯斯特纳加州人門 医电影网络 经分价管理联合 有效 ोर्शियमः। पारमः। बाध्यदः। दावनि क्षुतः कारानः न दिल्लाव् भाकीत राह्म इतिहास्क । १८८ वटा उवकरण यहारि प्रोक <mark>भाषास कर</mark>िसाल प्रश्निस रहता चनका नामहाहारी हा खामर्ग्यदश्व मर् ग्राहीब में ग्राह स्ट्राफ र न, क्ला জুৰিলো সালনাত্ৰ প্ৰচুল কাই ক' ''ইডাৰিক' চলা হ'ছ विचार्क (ब) हमांकिया हमी वामा अवस्था में प्राप्त पराज राव विस्तान कर का भारतमी प्राप्त कर লোকিকেটেরভার 🖯 🗸 **বালি** ৬লা - শোলিক চ্চালিকেটা 🕆 কিন্ 阿佛郎 电轮换 明经识别 经管理书事的人的人 经证 ক্ষাপ্ত চিদ্ৰ কৰিছে আছিল, জাত বালা স্থান জ্ঞান কাৰ্য্য বিশ্ব - বিশ্ববে ক্ৰান্ত কাজ কান্ত্ৰিক िकाल के अन्य अनेहा का मानिक ए ए लाक्क देवरम् अस्य सर्दिस्टाट १ . ए एक अन् 納門 可能的 网络外牙 不少点者 "你了去,你有什么好。 प्राप्तम् है,ब्रिक्षां मिन्न लान्तिकप्र न्युक्ति । भ्या भिर्मित भर्मे -- 'क' एकं एकेका मा, १०१ ए. कार है। हो हो से साम कर कर कर कि सामा है। हो है कि साम है 學原 电 化混铁 化分别图图 工作作的 黄芩草 লোপতে শেষ - 1 সংখ্যা প্ৰতিভাগ লাগেৰ ব্যা স্থাতি क्लाफी फल्टक दिस्त वर्ष प्रमुख्य हमन कि है कि कोरी गुक्का शाला, व्यवस्था मुक्का बाह्य साला। विश्व हना क िर्देश के मुख्ये कार लें। । कार्या २ वन किंकेटल कहिन काफोर क्वालार भेज हो वावहात करिया धारक referance francial adaptal alcani ma ভিনে ও ভাষাৰ ভিন্তাৰ শ্বন করে, জন চারিলাচ ाहार धारका केलन छित्र। यस, जबर सम्म व्यक्षतानिज्ञास भावने भिरुष निरुष्ट नहेसा साधः। কলত তাঁহার বলিকভার শোলাই। জনানি পোচ্চান্ত্রাহীদিশ্যে সলেও আমত্তা বিভিন্ন সিহয়ে करपालकथम कतिया थाकि। व्यक्ति उनकानी इसे-

যাত বে সমূহে ক্সারিকাছি ইহাতে জাহারা সকলেই হর্ম- প্রকাশ করিয়া প্রক্রন। আনাদিবের সহস্থ প্রায় সর্বপ্রেদ্ধ ও০টা বালক বালিকা আছে। কেই বা দৌড়িতেছে, কেই নাচিতেছে, কেই কেই ক্রীড়া করিয়া বেড়াইতেছে। ভাষাদিগ্রকে দেখিলো বোধ হয় যেন এখানেও পরিসার মধ্যে বিচর্ন করিছে।

जकराव 🕠 है (कअवाहि :

ননীয়, ষদমীল, গভীর সমূল চতুদ্ধিকে এবং
নামরা ভাষার মপাবলী। আমনা যে রভের
মগানিক প্রদান্তিত আকাশ ও সমুদ্রের সহলোগে ভাষার পানিকি সামালিক ইইলাছে। সমুদ্র
মূলন মনুষোর হাল্য যে রূপ প্রেশন্ত হয়,
লে প্রকার মহদ্রাহে, উন্নত আশাম পরিপুরিত
কা কোন ভার কিছুতেই হয় না। রক্ষ দেশায়
লোকদিলের হীন মন হইতে অপকৃষ্ট চিকাও
ইচ্ছা মকল দুর করিতে সমুদ্রের নভ উপায় আর
কিছুই মাই। মনুদ্রের আগিলের লোকের মে এক
কিছুই মাই। মনুদ্রের আগিলের লোকের মে এক
কিছুই মাই। মনুদ্রের আগিলের লোকের মে এক
কিছুই মাই। মনুদ্রের আগিলের লাক্ষিত্র ক্রপান বাবে হার্য আরি। ক্রাক্ষিত্র ক্রপান বাবে হার আন্তর্গ ক্রিয়া
লাক্ষিত্রের ক্রপান বাবে হার আলার, আম্বান, নাই।
ক্রপানীরত্রের ক্রপান বাবে হার আলার, আম্বান, নাই।

न्यात्रकातः । अति कार्याः ।

खासर क्षाची, प्रदर्भन्न सहरू हिंदी। काल एक किला--机制度规则设计控制 医促尿病 那用人 网络自由军所自 中國門 人 राप्डिका,ब्बर्ब्सल्य स्व व्हिका १८ छ। तुरुकार क्रिक्त होशाल मन्द्र विकासिक । क्लिन ब्रायन (क्लिन -) रभद्रः भोशर्यामग्रातः विकामग्रातः । ध्रमानभामप्रिर्धाः ব্ৰুপ্তি বৰ্ম কেনু মহাল এক। জন্ত হবা বার প্রায়া বাইবেলের অর্থাক্তমতের মত সংকৃষ্টি। আন मानिद्रशत्र खोकां च व्यावस्कर राष्ट्र त्य (लोखनिक')। পরিত্যাগ করিয়া এক ঈশ্বরের উপাদনা করিছেন্দ हेका क्षिया किन अहरक आक्ष्मां प्रकृतिका ! গাহার মতে প্রয়োগারকরাই সর্কোৎকুট্ট প্রচারক। क्षीरलारकदा २७ मक्टल छर २ २७ भीच दमभाश লা াব সংশোধন ও সতা আচার করিছে পারে अर्थ होत रक्ष्मे आहत ना । जिति भाषामिशस्त्र ্লাল পামন করিতে বিশেষরূপ অনুরোধ ক-्र । ज्ञानित्वन : दिवासन म आमिनीस स्कंट कर - . পোর্চত কাপে উল্লেছ ছইয়া ইংলতে ছলেশীয় ्जाकिएरगढ़ बलकार्य जनमं अरम्भ छोरा ५ हरेन क्षीराहा अकासम किकहे हे स्वामनशीय हरेट स्थारतन त्राहर, अकटलंडे ए.इसिन्याट**क मुक्कांग कहिएक** ।

उनिरात १० त्यक्षाहि । १४१ छ।

আছা প্ৰিন্ত। এতি স্থানারেই **জাইকি** ব্যুপ্ত, খুকীলাননিংগর উপাসনা স্থানা **থাকে**। থিকি দ্যাপ এই কার্যা সমাধা করিয়ার জন্য কোলালাকি

उभाजक ना बादकन, जाका क्यान कार्यन PICES WISTER NEW TOWN WILE TO MAKE कांटलम नाट्य नकताक अनव कृतिया कुलानमा করিলেন। এই সান হইতে মাঞ্চার ১৯ ফোন माब, माखारकत याजीमरंगत स्वामि तकन क्य यात्रा উप्काशिक क्षेट्रांट्राइ, ध्रवर नकामहे अरख वारक श्राह्मक स्ट्रेटकर्डू । श्राप्तम पुत्र स्ट्रेट्ड समुद्रा जीवष् वक्षी भवंड ७ कडक्छनी वृक्ष दम्भा रंगन, পরে "কেটামেরাণ" নামক কতকভাল মাজাজী ডিজিনৌকা সমুডের উপর দিয়া জাহাজের স্কৃতি-मूर्य जामित्क नांशिन, अवर करम करम छीत्र इहर ব্ৰহৎ অড়ালিকা ভালানিগের প্ৰাকাণ্ড কাৰা আমা-দিগের চকুর সম্মতে প্রকাশিতে করিল। জাহাতের উপ্রিক্তাণ ৰাজ্ভাগ্ন আচ্চন হইল,সমল্ভ কর্মাচারীপণ लिंदमारह পরিপূর্ব इंडेब, এবং সকলেই मহর্ঘনয়নে জীরাভিমুখে এক দুটো দেখিতে লাগিল। মুহুর্ট্রে-क्तित मध्यर स्मिति भाक्त रहेंगा सकत निश्रास्तिक ক্ষাল এবং লাভ শতে নুর্যোগ ভাপরিষ্কার ক্ষুদ্র दसीकार भारत आगदा शहिद्दाल अहेलाम । ''क्यन ত মানদালে আসিয়া পোঁছিলান, সোখায় যহিত্য এই ক্ল ভাবিভোঁচ এনং সময়ে এক ভাক্তি এক वानि कुछ पन आर्गाम्स्वत ४८स मिन, काष्ट्रास लिशिक भाष्टे व पंक्षितुष्क पायु दक्षिकारत्वन श्वीक-প্র জন্য আপ্রমাণী ভেরী নহাশ্য এই ক্ষুদ্র ल्डमी व्यक्ति वारे विरुद्धान्य । । भागाविद्यार ज्ञाह भाषती ट्राकार लोटेडिया मिलाम, एवं माव-পাৰে ভছপৰি লাফ দিয়া পাড়িলাম, লাশ্দিৰাই मगभ এक हे ज्यमावशान्छ। सम्मा यपि उत्तीकार देशात कि मा भाषा यात, नांदा वहेंद्रम तक कारण मीरत ভরমিত সমুদ্র মধ্যে পভিডে ২ইয়া এছমু স্থাপ্ত রহাতে হয়, উ। কি ভয়ানক ভর্ম। 'ক ভয়ানক कारमान्त्र । भेषि थमा मिलास धमरू। खाङा-দিপের পরিধান একটু ক্ষুদ্র কৌপীন, ভাষারা বিলকণ হট পুন্ট ও বলবান, দেখিতে পাসছের মভ, ভুফানে ও ভয়ে আমাদিগের প্রাণান্ত, কিন্তু ভাহার। मक्टन्स माँ ज्यादिका धनिवादक आधारमञ् विटक उन्दर्भेष केटब ना। आशांतिगरेक कीत्रह कतार काशामित्रात खेलम्या रेशाल आयता 🗗-ষিভই থাকি আর মৃতই হট: প্রাথার মৌকার **एकुमिरक छित्र १ कलक मृद्र । अध्यक्तारक अभव्य स्थिते** রিয়া কুলে পে ভিলাম।। নিয়াপনে তাইডার্থ কি বিশার জনা তথা । ভিরোপরি আক্রাল আক্রাণ खम्भ निर्मिष क्षेणारक । भिष्टे मध्ये क्षेप्रक क्षेप्रक निर्माष्ट (शालान नागिहाटक्। कार्क व्यवसंहन कतिया नगरत छेडिएल अग्र । करण क्रियं निर्माह

ু মূডন গ্ৰন্থ প্ৰাপ্তি।

পাল ক্রিয়ার সীযুক্ত নহেশ্বন বন্দোপালার ক্রিনি কলিকাতা "নিউপ্রেন" যক্তে মুক্তিত।

এই পুস্তকথানি কএকটা সুন্দর নীতি-গর্জ প্রেন্ধ দারা পরিপূর্ণ। প্রস্তাবগুলি উৎকৃষ্ট উৎকৃষ্ট ইংরাজি এই হইতে অনুবাদিত হইরাছে।

অপান্যক্ষ মুবক্তিগের এতং পুস্তক পাঠে নিশেষ
উপকার হইবার সম্ভাবনা।

' বীরুরাক্যাবলি '' শ্রীযুক্ত হরিশ্চন্দ্র বিজ প্র বীত, ঢাকা মাগলটালি স্থলত বিজে মুজিক।

ণ পারনা দর্পণ " এই থাসিক পত্রিকার ছই নংখা প্রাপ্ত হইয়াছি।

" ক্রিন্ধ্যা-ন্তার " প্রান্থারকানাথ ওও পরি-কীন্তিত, কলিকাতা ওপ্তাহকে মুদ্রিত।

এই পুস্তক থানিতে প্রাভঃ মধ্যাক্ষ এবং শা গুংকালের ভিনটী স্থোত্র আছে। ইঙা অমিলাখন চন্দ বিরচিভ, এবং স্থানে স্থানে উৎকৃষ্ট ভাঙে প্রিপূর্ণ। উল্লিখিড় ভিনটী স্থোত্ত গুটতে নিয় গিনিভ অংশ উদ্ধৃত হইন। সোপ কবি পাইকব-

লাভঃকোত।

विदयं कांत्रमा हिन् जासरकत स्थाप । उन औ जि-सूर्या, नारा, मजरे नश्य, ान दक्स भाषा कोशा कविनादत लोदह र উষার শৌভায় ভাতে ভোমার যৌশগা ভক্ত অকণ কৰে। এড্টা কুপুষে: सरह स्वानत्मन धानि युष्ठ गन्त त्यत्त्र निकार कोन्निन, भारतेन निजरत, भारति, जाल, जारहे, मधीकृतन, धानदन, छन्।दिन पूर्णीखन मधीतन, कांद्र ना युक्ता आभ, समि अजांकि-मन्म, भाग सर भागीमल मिलि लक्षार मञ्जूष्ठ-रदम्भदक्ष मा छीटम जान्दरभव व्यादक व टकाबाह भी देशको यात्र जन क्षेत्रका श्रि কে পারে বণিডে তব অন্ত মহিন[ি] গাইজেছে পাথীকুল স্থনে ভোমার ारिमा निकुष्क : जब व्योक्ति-सूधानदः वश्टिक श्रेक् बाद्य बाद्य, मानाहेश्रा भ्रकुमाव कृत कुस्रमात्। निर्माह विद्धारम एउट श्राहक मेलिन, भारताहित्व अक्षांच्य लेखिक विद्रास : इटकात रहेटल क्रथी—श्रीनत दुर्मन— अखाइन करम, करम क्रेन मनिन्। वनास मगरम, नाथ, त्क शांद्र पाकिरण ष्ट्रविष्ठा दिल्लामा ? एवं जानस-कानंदन

করিয়, বসজি, কেবা জুলিবে ভোগ রে ? ভুমি শাস্তি-নিকেজন। ক্ষয়ের পন, অমুল্য-রজন, চির-প্রীতি-প্রজ্ঞবন। ভুমি চিত-বিনোদন, দানস-রঞ্জন।

স্থান কমল-রবি। যে দিকে নির্থিন নগর, কানন, জলে, গলে, অন্তর, আনুবিক, সালরে, পর্যকে, পথে, ঘাটে, গাঠেন-দেলি ভোগারি অচলা-প্রীক্ষি; উগার জুমার, সন্ধার শোভায়, নিশাকালের গান্ধীরে। রয়েছ প্রকাশ ভূমি — রক্ষেছ প্রকাশ প্রিকেশ হ মধ্যাক্ষ কালের শোভায়, রফ্রিয়া ভারুক-ক্ষর ক্রম্য- আকাশ, রফ্রিয়া ভারুক-ক্ষর ক্রম্য- আকাশ,

माथाकि-(अवि।

त्वते विपालक करक विशेषण सूद्रव श्रेष्ठांद्रक रवले क्षण व्यारम्मांद्रक उत्तर कर्मा पूल स्वाला! श्रेष्ठारक उन्ने क्षण उत्तरमुक १ स्ट्रव र स्वारित्रम्मात । उन्न-द्रमाद्र्य तमा व्या राष्ट्राधांत्र र स्वारित्रम्मात प्रकार । स्वाक्त र स्वालक्ष्य श्रेरण्याक क्षण । प्रवार प्रकार र स्वालक्ष्य श्रेरण्याक क्षण । प्रवार स्वालक

्राच नाइन सम्पादिक र कि. उक्ती क्रिजाइक स्थान क्ष्रिक क्ष्रिक

引起(2017年)

পুণাৎশুর বশিংকারে কর্ট-সাদ্ধিন থাশি! স্ট্যাছে থবি কেন্ট ব্যাঞ্জিত এবে দিক্ট্ড! আনা, থেই ভাগালান হ্ন্য-আকাশে নেকে গোক্ন-মুর্ছি তা প্রকাশ, গনা, ভাষার জীবন! কি মুন্দর রূপ তব—সমুপ্রানীয়,— মুদ্ধান্ত ভাগিত গ্রাণ, কারেক দেশিলে टक्रण स्थानि इटक शोहिए। यहाँ स्थानित स्थानित क्रम बन स्थानि क्रूम, शोलंड, लिवि, सम, स्थानित । स्थानाहत क्रम नार्डेशास्त्र क्रमानित । सा लामि क्रम स्थानाह क्रमानित ।

বিজ্ঞাপন

भक्त गर्। भृतकात ।

পুরস্কারের জনা তারী প্রভাব নির্দিণ্ট করা হাইমাছে। প্রস্তাব মাজলা বাগবা ইন রাজি ভাষায়, বেথা এইবে। প্রত্যাক প্রস্থা-বের পারিকেটিক ৫০০ টাকা। এইটির নধ্যে চিনিয়ে প্রস্তাহ লিখিবেন ছিনি সাদপ শ-লের ভাল মানের মধনা জাহা প্রাক্তামাজ-পতি ইন্যুক্ত কেবেলাথ টালুর নহালয়ের নি-কট পাঠাইখা নিবেল। প্রীযুক্ত পোরী-চাদ মিত্র, প্রিযুক্ত কেবিলেল লেন, প্রিয়ুক্ত পারী-চাদ মিত্র, প্রিয়ুক্ত কেবিলেল লেন, প্রিয়ুক্ত পারী-চাদ মিত্র, প্রিয়ুক্ত কেবিলেল গেন, প্রিয়ুক্ত পারী-চাদ মিত্র, প্রিয়ুক্ত কেবিলেল গেন, প্রস্তাহ করিয়া বাহার প্রস্থাব গ্রাহ্ন করিয়েন, উক্ত বৎস্বরের সম্পাধের স্থানা গ্রাহ্ন করিয়েন, উক্ত বৎস্বরের সম্পাধের স্থানা গ্রাহ্ন করিবেক প্রস্তাহ প্রস্তাহের স্থান্ত জিল্ল, কইবেক এবং কেই

প্রথম প্রস্তাব। পুরস্কার ৫০০ টাক। 1

প্রশান্ত দশনের মতের দ্বিত তাতার প্রভাগ কে কর্মানির মতের দ্বিত তাতার প্রভাগ কি কর্মানির রাজ্যবাদ্ধির মত কি প্রেদার বর্মনের মান্তের সহিত তাহার প্রভাগ কি এবং প্রকাশ-বিস্তার হাতির বালের মত কি ও বেন্দার শার্তার সাহত বা ২ মন্ত্রা ব্রাহ্মনশ্রের বৈ যে বছ বেলার বর্ণনের মতের বিরুদ্ধ নেই রেই বছ কোতি দর্শনের মত ভাবেকা কি জন্য উৎকৃতি ও উপাবের

ও প্রয়। ত্রাক্ষ্ণকা দারা প্রিরার-মধ্যে ও সাধারণ সমাজে কি ক্ষপ উপকারের স-ভাবনা ?

দিতীয় প্রস্তাব। পুরস্কার ৫০০ টাকা।

ু প্রান্থ কিন্দার-বিষয়ে, কর্ম্বর-বিষয়ে ও প্রকাল-বিষয়ে ত্তাক্ষধক্ষের মত কি ?

্ প্রশ্ন। আন্ধারণ্ম ছারা পরিবার-মধ্যে ও সাধারণ নমাজে কি রূপ উপকারের সম্ভাবনা ১

७ लक्ष । विक्रि, मङ्ग्रमान् ७ शौकीन् मटाउत महिक विकादध-मटाउत कान् कान् कान् कान् कार्य विकाद विकाद कान् कार्य विकाद विकाद कान् कार्य विकाद कार्य विकाद कार्य कार्

ক্ষ্মি ব্যবহন বিষয় নিশিত প্রস্তাক মাজনাক্ষির মান লক্ষ্ম বারিনের বিষয়ে সালের ম্বানিত চাহপর্যা প্রিত ক্তাক্ষনা বা বোমার কা ক্রিয়ান প্রাক্ষমানীর সাল লগাক, বল ও ্রেছিনী পানিকার প্রকাশ ক্রেয়া নিজন নি

প্রিকার অবিম মূল।।

নিখু কী। ন্বব্দের স্থোৱা মনোণিজান (উপাল্যনিকা) নেদিনীপুরস্থ অফাদশ সাহ্বদারিকা সমাজের হস্ত ভা অমুঠানের আবন্যক্তা (প্রাক্ত) স্ব্রাদ সার বিক্তাপন

प्रकृत्यांपनी প्रक्रिकात प्रमानिकेशन। व्यक्तिम प्रका (क्षिकाकाद क्रमा) (गम्बरम्ब क्रमा) नामिक प्रमा

भूमि रास् २२ देशलीय गमिसीके लेक्स्ट्रेस्टर स्ट्रिक्स्ड्रीके १८२० र



ब्र कर्राक्षक्रियमध्येषांत्रीष्ट्रामा क्रिक्षक्र निष्ठः सर्वस्थाः । उत्तर निष्ठाः ख्रानमस्य भित्रः ख्रुष्ठावित्रस्यत्येक त्मत्रावित्रीहरः सर्वद्याति सर्वनिव्रक्ष सर्वायसम्बद्धियक्षणिक्षणः निष्ठाः व्यवस्थिति । क्रियाः विकरम् विकर्णक्ष

নিশীপ সময়ে সাগরবক্ষে ব্রান্দের স্তোত্ত।

হে বিশ্বাধার বিধাত। পুরুষ। क्रमणार्भ विभाग गणिनमञ् गोत्रेत्र्य का-মরা এখন তোমার অভয়পদ শাশ্রয় করিয়া ভাসিতেছি। এখন স্কৃদিকেই তোমার অনন্ত স্বৰূপের পরিচয় পাইতেছি। উর্দ্ধেতে নয়ন উত্তোলন করিয়া দৃষ্টি করিতেছি আ-কাল তোমাকে পরিমাণ করিতে সক্ষম হই-তেছে না, নিমেতে দেখি সম্পত্তিত বি-স্তীৰ দাগৰকে ভোমার অপার করণা অ-তিক্রম ক্রিমা স্থিতি করিতেছে—ভৌমার महिन कि पूर्व दे जनना इत मा। करे निवास भूमा ल्याकालव भूगा हुतम शर्थ पुसर भा गोदन्त्र (मणा। व्यामदा स्व व्यश्वहिष्ठ तांदका उन की परकाम बनाकात किन्द्र बामि गा। ata i **Mara** aatea minifanta como के तरन, पुष्टि बनवरत आधारिक्त क्रका नत्रः । भारत्ते नद्वद्रभन्ते नीमन द्वा पोत्रुत प्रमुकत गरेबार सहस्र मिता हार्य स्वाप्त स्व

इडेग्रा व्यामादनत ज्वनी दंग Frenifari कतिरहर, अदर मन्त मन्त हिरलाता अके তাপু দুর করিতেছে। হে জ্যোতি সকপ। रयम्म मिकनक आकाम करेटक अहे हत्स भार विभव कित्र मांगवनक मभक्त के রিতেছে, ভোমার শুল করণাম্ত তেমনি जाबकारा अभीत क्राया वर्षिक स्त्रा আতে দেখিলাম তর্ণ ভাস্থ ভোমার যান ঘোৰণ ক্রিতে ক্রিভে সমুদ্রগর্ভ ইইডে অপুর্ব্ব মহিলা সহকারে পুর্ববিদিকে সমুখিত इहेल, अर्पाय कांटल शिन्छम आकामटक লোহিত রঞ্জনে অনুর্ঞ্জিত করিয়া নীক সলিল মর্গণে ভোমারি জ্যোতিঃ ছটা বিকীর্ণ कतिय, आवात होरे निशीय नम्दर अन् क्र के हैं अनक श मिन्द्र मिन्द्र स्वा क्र का किन्द्र मिक इंडेटफ्ट्या जाकारमा जना अनील-माल। जामारमञ्जूषी रुहेश अथ अवस्ति क्तिरण्डह, मगीवरन छत्रमताकी मृद्यमस नक्षानिक हरेगा यथुगत नदक हिन्द्रदे भी-हिक क्रिडिंग्डिं। जिस्ति महान की ई मिविएक (मेबिएक नश्न अनम्म, रामश आह-ৰিত হইবা। "এই বিশাস বিশু তদানৰ বৃদ্

অ'প্ৰতি তেওঁ কেমন মহান তাহা জাবিতে শিয়া মন কিবিয়া আইবেশ। নাথ! কো**নার**া पारताम स्या एक प्रांतका अहे अनस्ना প্রদেশেও আলোক বর্ষণ করিতেছে। ভূমি विटम्पन अभित शुदर्श भागादमत जावि ध्वरक्षा-জন স্পাই দেখিবা সকলি আমাদের অনুকুৰ কৈরিয়া রাশ্বিরাছ। আনশ্ব বেথানে তাই एक <mark>गांत क</mark>रूवा नित्यास्यत **करत**्यामातमत भक्त हरेड़ा इह सा। कोशंद्र करूनोंद्र केन्य নিত্র করিমা আমিরা এই ভরাবিহ সন্তা গলে অঞ্চার ছইতে নাহদ করিলাম ? স্কর মাগর ধনি তোমার আনেশে নিস্তরক हर्न एएव आज आभारमर एक रकाया ? আমানের প্রিক্ষার বন্ধু বাজ্য তেনিট্র হত্তে व्यामाधितरक वस्त्रीय स्थान विक्रिक हरें। शादकत, कृति । अच्छात व्याच व्याचारितराज ক্রোভে এখন ফাবছেছ, এব যে স্পরিচিত रारक्षा चावशंकतर वासेश वास्त्र स्वर्गस्थ रक्षाणीत अगारभ गक्रवादे सांगारम्ब समुगुण स्ट्रेट पर गर नार्थः । एक गटक सावितन की भर त्रमुल नराव निरुक्त समाम इस, अल িতি এ নেৰা সংখ্যাবিতিত বেশ্ব হয়, আগম ছ-প্রমাশীলা নাম পর্যার ৬৬ পরি ফার পথ এক্সজ क्रेश थंतरक वाभग अगर व्या**मार**पर মাজার ভোগ পরিকাশে করিয়া ক্ত মুরে আদিরাহি বেড়ভুনি ক্রমীরনার এখা-নেও বত্ত্বেল পাইত জাভার ও পানীয় দিয়া নি মুনের জন: জালা দিশকে মাভার ও ভাব জ্যানতে পিতে: া—জোমার বজে মাত্ কেন্দ্রে পাত্রা নাই · ^জহে মাত তেগনার ্রক্ষময় চৰণ স্থাপ্তি, দুখ্রস্থিত আত্মণকে ज शान यनिद अझे यांचाटमत नवाग। योगता निरुष के अपने जाकि स्व आसिता केरिक्त प्रभागा कर एक किछा का उन्हेशका लक्षकरम कुळ सार्वास्त्र सम्बद्ध, उपाणि याभागाः लोगाना । सङ्ग्रिस

कन ना इस ट्यामात निक्छे अहे जानाटनत व्यार्थना।

अं बकत्यवाविजीप्रः

वाक्षक थान्ता

सम निर्भात निर्मीय ममत्त्र यदकारम লোকে অধর্ম নিদ্রায় অসাড় ও অচেতন-चात रहेता श्रीतक, सरकारन कूम काद-ि ত্রিত স্বপ্নবৎ ঐহিক ও পারলৌকিক মুখ-লালশায় লোকে অবশেন্তির ও বিহলচিত হট্য়া থাকে, তৎকালে সহস্য জ্ঞান-গগনে ষণি প্রধার ভাপান্তি সভাস্থর্যার আবিজ্ঞান হয় তাহা হইলে গোনাক্ষকারনিম জ্জত মানবীয় অন্তৰ্কু নিভান্ত আকুলৈত ধইয়া भार ५ अवर मकरल मञ्जूत समग्र करा है। আবদ্ধ করে। এডলিশ্রন যত যত ধলা व्यक्तिमान म्योग श्रुविकीत् ममनिक अति-দাৰে প্ৰচলিত হইয়া আসিতেছে ৬-खाव हे अथरम अनगुरुष्टश्चा अमृतिभूक উপায়াবলিতে দেশ পরস্পরাস এলারিড इर्झाधिन । প্রাস্থ্যতঃ নবে স্থাবিজ প্রত্য कांग काटनहें माधारन लाकि मगोदन ओ দর্শীয় হয় নাই। কোভিতে ও হাল-কাৰে বেৰূপ বিয়োগ সভোতে ও জ্বন-ভোজে ভতেগিক। ধাশবিষ নিশাচয় शक्ष भक्तीनन कर्षाक्षद इक्टम विदेश किया लाएक नरम खेयीलमां किरान केन्द्रिक भारत, किल जगजानित्र जात ज्यांकिक रमांक गंगारिकान महा कविएक भारत मा. হ্ৰয়-বাত সক্ষাৱপূৰ্ণ অজ্ঞান প্ৰয়োগ বন্ধিতি করে, এবং ইচ্ছা করে চিন্নদিন সিদুল অবস্থায় জাবন অভিবাহিত ইউক ৷ পরস্ত ক্রমতেরর রাজেটা কোন প্রক্রির অর্জনারই विश्व श्रीशी नटर । जिल्ला श्रीक श्रीशी अवस्ति। रकार र कड़ गरीय गर्गाकामश्रीत उज POST ALLER OF A BURNEY OF THE SECOND

বসনাজনা সকল দেদিনীতে আলোক ও

আনন্দ সঞ্চান করে, অম্যানিনীর অব্যানে

সেইরপ সভাগমীরণ সঞ্চালিত হইতে
থাকে, দকল হুদ্র লাগ্রত ও আলোকিত হয়

এবং প্রফুল করে জ্যোতিষ্কাশ প্রমেশ্রের

মহিমা গুণ গান করে।

বর্ত্তমান সময়ের তিন বৎসর পুর্বের यमि आमोमिनात्क (कह किन्छोमा कहिएका, কি কি উপারে ভারতবর্ষে ত্রাহ্মণর্ম প্রচারিত इहेटर जोशं हरेटलं इसक आमन्न अहे विश्वे नितन्त इरेजाम व्य गिनि खाजावरणात প্রের্য়িভ। ও প্রবর্ত্তক এই সকল উপায় তিনিই জানেন, কেবল এক মাত বিশ্বাস थांगांतिरगंत शरक, रमरे विश्वाम अवलयन ক্রিয়া আমরা সধল চিত্তে আশা ক্রিভে भावि (य "भणादम्य क्रमुट्य"। यहरै काल राहेरलरङ् कहे विशास व्यामाहिरधत इ महा ७७३ एम्बर क्रोडिड जन रेम्ब गटम मटम विश्वस कार्यत्र छै। अक रहे কেচে মন্দ্রার আমরা উল্লিখিত উপায়াবলি ্রান্ত স্পটকপে দেখিতে পাই। কি बना वना योष्ठ ना, किछ विद्वपना क बिटन विनक्तन दर्दाप इच्च दय वङ्गितमावनि ভারতবর্ষে পরিবর্তন এবং উন্নতির চিক্ আয় কিছুই লক্ষিত হর নাই। সাধীনত। **ও ज्लांगाधकदर्वत मदक मदक भृविवीयत** गर्याध्यहे भारमाधन विस्ताव ७ शतिवर्जन मुके बहेश। बादकः, किन्छ ভाরতবর্ধে गकनहे স্থির অচল অবাড়ভাবে চলিয়া আমিতেতে। कि धर्म विसंहत, कि तांक्रनीजि विषया. कि नामाकिक । आहात अवस्था दिवत्य, मकन विषदाष्ट्र हेनुन अवन निर्कीय चार जिक्छ रहे। अञ्जाः संस्कृति खान्नवर्त अस्तरम अमेरिक का इरेन क्यान নেশের শুক্তাৎ অবস্থা দেখিলা, কি ভ शास कारा नगरूकत्थ काहिक रहेता. व्यवदादन करा गर्क द्याध रहा गरि। अख-चित्रदा शिक्षण्डांन ब्यांतर दम्म ७ छ। त्रख्वरचंत्र महश्रा धकरी कां ज जान्यसा मा-দৃশা বিকিত হয়। খৃষ্টীয়ধর্ম য়িছ্দ স্থান क्हेंटच क्षातात क्हेबात भूटक छेळा सम्बद्ध-ৰূপ হীনদশাপর ও অজকারারত হইরা-**ছिल (य एक्ट् रूबन्ट् व्य** लांक्न क्ट्र नाहें কথার স্থাবিত্র খৃষ্টীয়ধর্ম জন্ম এইন ক রিবে, কিয়া জগ-এহণ করিরা প্রচারিত হইতে গারিবে। সংকালে সারব দেশে मञ्जान चीत वर्ष अलाह कात्रन छन्न चात्रन দেশ অভি ভয়নক খনভাতার আগরয়ছিল। क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया (विश्व) মেৰা, অন্ধা, শোণ্ডপতি,এবং পৌষ্ণলিক উপাদনা। মহক্ষা অতি সামানা লোক ছি লেন, ভাঁছার ছাত সংখ্যা অতি অশা ছিল। ভিনি যে এক ঈশ্বরের আর্থান্যা আন্র করিয়া ক্রতকার্য। শ্রীবেন, কি জারন সহীয়া विषय 'अमला अमेरीम्हलांकिन्दिना विकल নিস্তার পাইবেন ভাল্য প্রণমে কেনে ক্রমেই मर्थाविक १९७४ क्स नाहे। वर्षमाम १०% বেছ কিছু পূবেদ ভায়ত এর্ছনে মনপারে! गांति शैगांदश शिशाहलः র্ষের মধ্যে বন্ধদেশ আবিকৈ গ্রেস্ক জ अत्। अविरुख ग्रीश्रीसरातः बाह्य अवस्य ব্ৰাহ্মণৰ অবভিত ও প্ৰকাশিত হুইগাছিল किर्मिया पक्ष दल्यान व गरमान स्मिन स्मिन ণতিপতি সম্পত্ন নহেন। এতন্বস্থায় যে সাধ্রেণ লোকের ত্রাজ্যক অভার বিঘণে সন্দেহ উপস্থিত হুইবে আহার আচ আ-न्ध्या कि ?

কিন্তু একটো একটালে দক্ল সন্দেহ

দূর হইছেছে। ভারতবর্ষের মৃত্যদেহে

নব জীবন সঞ্চার হইতেছে এবং ভারিদর্শক আশা উৎসাহ কার্যাকলাপ সকল
ভানকেই উজ্জুল ক্রিতেছে। পুরাতন

क्षांत्र छ्यटेसर मन स्थायन भूनत्राग्य स्टेस, কাহার মুখতী পরিবর্তিত হইল দেখিরা কাছার মন না আশা ও বিশ্বাদে পরিপূর্ণ हन्न। किल अनकन किरमत सना हैशात कि काम উप्पना, कान वर्ष नाहे ? वि-মাত বিজ্ঞ সম্পদ বছদিন পরে বিনি পুন तानवन कतित्वन छोशत अहे हेव्हा त्य नत्वा-**पिछ मण्णामीट्याटक ভाরতবর্ষ छाँहाর गए।** क्यां कि मन्दर्भन कटन अवर **डीहां**ने का-দিইট সন্তের ধর্ম অধ্বার্ন করিয়া সেই भन्नाम्टक वित्रकांची कटड ।

ভারতবর্ষের পূর্বেরাজ চব্বলভার একটা প্রধান কারণ ধর্মাজ্ঞানের আসন্তবি, এবং ভাষার বর্তমান সজীব ভাবের একটা প্র ধান কারণ জ্ঞানোমতি: পৃথিবীর ইতি-तृष्ठ भाष्ठे कतिरमं अमन दक्षान तमगई नुष्ठे इस मा यहा এक समरह लिकिशक्स निवास एटर नारे : सम्बद्धा जिल्ला निक्रका-বহুটেছ কোন অকাদ না কোন **প্ৰকা**ৰ পৌ-ললিক ছা এছণ কর এছ স্বাভাবিক, যে : পাতিরে: : কান বিশেষ মান্ধ **জা**তির बर्गाविक इरेटक भारत किना मर्न्स् । বিস্কু আবার ইহাও সভা যে কথনই কোন अंजुल। क्लास्ति मर्पा (भोजनिक्षण हित-शाही का मारे, जिन जिन अकाटत रेश व्यक्ति (मर्ग्यहे डेब्मन् क्रांख हरेश्रोटहा (भी-ভুলিক ধর্ম গ্রহণ করা যেকপ স্বাভাবিক পরিত্যাপ করাল ভজ্ঞাপ স্বাভাবিক। অজানতা হেতু সৰ্বতেই পৌডালকতা এক कात्म श्राप्त्रकृष्ण इस जाहात जनगरनहे गंडा ধর্ম প্রচারিত হয় ৷ অতএব অক্তানও জ্ঞান মন্ত্ৰটোর শক্ষে যেৰপ প্ৰভিবিক গৈণীভূলি-कड़ों ५ म्डामक मञ्जूत्यात शहक

शाजिक। जामत के दे कांत्रन क्लोम देशीन धर्म मन्य महोपिटाह मके देशों के लिक्सिक একহালে পর্যেশতের পতিত নতাইও ক্র

मस्मद्रका उभयुक्त विद्युष्टा कहिना। विक ष्ट्राटनीयर तर्ज महत्र है है है कि कि कि कि रेश करव बिकामा रहेर है लाई देश जमा विधि छात्रकत्रव स्टेट्फ कि केन्। कुनारकात्रवत्र ভিরোহিত হইতেতে মা কি খনা ইহার गैर्काटकरे आणार्य थानात रहेटल हुए मी र कर করিত রাজারামমোহন তার স্বদেশের মঞ্জা-উদ্দেশে সভা থচার করিবার জন্য প্রাণপণে यञ्ज कतियां कि अमा त्यांदकेत विषम विद्या ভাজন হইয়া ছিলেন, পিডা মাতা কইতে বিচ্যাত, গৃহ **ংইতে নির্বাদিত পর্য্যন্ত হ**ইয়। ছিলেন) ছুর্দিনে জন্মগ্রহণ করিয়া উহির জীবদ কি জন্য পরিশ্রমে ও যন্ত্রণায় অভি বাহিত করিয়াছিলেন, স্বীয় আনগত শোলি ভাক্ত চেন্টার কিঞ্চিমাত্র কল ভোগে করিয়াও ইহলোক হইতে বিদায় হইতে পারেন নাই ১ একাকী নিশীথ সময়ে ধর্মাবলৈ জাঞ্জ ধা কিয়া যথা-গাখো কি জন্য ভিনি ভারতনর্থের শুভাগধন করিতে নিযুক্ত ছিলেন, লোকে তাঁহার উদ্দেশ্য বুঝিতে পারে নাই,জাঁহাতে কত তিরকার করিয়াছিল, অবমাননা কার য়াছিল, তাঁহার জীবন পর্যান্ত বিনাশ করি-বার অভিসন্ধি করিয়াছিল 🤊 এ দকল 🕮 **ন্মের প্রতিবাদে আমরা মৃক্তকতে** প্রলিভে পারি যে দেশের যে অবস্থার মহাদ্রা রাজ। तामरमाहत तांत्र क्रयाश्य क्रित्रोहिटलन ভাঁহার উদ্দেশ্য অদমুক্প ছিল,এবং তাঁহার থাবল পরিশ্রমেও তাঁহার শিষাগ্রণের সমুহ यदक् तम जिल्ला मश्मिक इहेश्रीट्स । দেশকে কুদংকার ও পৌস্তলিকভার হস্ত हरेट मूक क्वारे काराव बिटनेव रेम्हा हिंग, रेश्वर बमार्ट बजिन शरत रे रेक् मल्लाम हरेगाटल. ट्रानीम राजदलीक जाक-द्वाहे थात्र अवनिक हिन्दू पट्यात वागीतक। नवार बर्ल इकिएज शाहिबार्ट । इका अंगरमान्त आह अकारन रेच किंगह करे आह

किल कर्मन किनि शकन-मेटनोर्ड्स दरेशे। अहरते अनुनीचन्नद्रक धनायोप कृतिहरू छन्।

हर्द स्वना श्रीकर्घा (स. क्रकट्न दम्द्रमञ প্রাণ সকল ভয় সমাজেই পৌত্রনিকতার व वि अधका कांग्रशास्त्र । किन्न मानुन त्नी-ভেগিকভার উপর অভক্তি কমিয়াছে ভাদুশ गकल चार्न गणा धर्मात छेलत दिखान कद्रण नाइ। माहिजा, भुमार्थ-विज्ञानांपि বিবিধ অপরা বিদ্যা নিগঢ় ৰূপে অভাস क्षित्व निकार लाटका भन रहेटड (भी छ-লিক্সংস্কারলাত ভ্রম অপনীত হইতে পারে बर्ट, किन्तु जन्म विष्ता ७ मानवश्रक्ति छन्। गमाक् कटल अञ्चर्यादन मः कविदल मट्डात প্ৰতি একান্ত আদ্ধা এবং আক্ষধৰ্ণোৰ প্ৰতি একাস্ত অনুরাগ হইবার সন্তাবনা নাই। মহাত্মারাজা রামমোহন রায় তক থড় গ হজে লইয়া পৌডলিকতাস্বৰূপ নিবি**ড় অ**রণ্য ছেদন করিবার উপায় প্রদর্শন করিয়া গিরা-ছেন। প্রমপিতার অনুগ্রহে তাঁলার আরব্ধ महर कारी। कडकपूर ममाशिष्ठ रहेगाएछ, এক্ষণে সেই পরিষ্ঠ ভূমিতে, বিশ্বাস ওরু রোপ্র করিতে হইতে, ধা**হা**র কল ফুলে ভারতবর্ঘীদের৷ পুরুষামুক্তমে ইছ লোকে এবং পরলোকে অমন্তকাল পর্যাত স্বর্গীয় ষানন্দের আস্থাদন মস্তোগ করিতে পারে।

तक्ष-विनाद चाता अकाल गर्गास तक त्वरनत त्व कजनूत উপकात करेशांट जारा कामना त्वथनी चाता राज्य कतिर्क जगमर्थ। तामणूक त्यता त्य कारन खारन देशांकि अर तक्ष्यत्वनालय तत्यालय कतियांट्यन ज्व्यत्व जाशांत्रित चामता पूर्व क्ष्यत्व प्रशांत्रित कति। विस्त ज्वातिनारे स्वातात्वत स्वरूप्त प्रशांत्र त्वात कात्वन। व्यवस्था करे अक्षय मन्त्रालय ज्वात कात्वन। व्यवस्था करे अक्षय मन्त्रालय ज्वात कात्वन। व्यवस्था कर्माला स्वर्णात्व

भरत काशानरगत मा रव कार निगन के वन খানি মানিক প্রকা নিয়মিতবংশে একা-শিত কৰিখা বিশুল তত্মালোক স্থানারত মাতৃত্যির সক্ষয়নে বিকীপ করিতে লা-तिरलन। छ९भटत मगटग्रह महास्रासनाम् गोरह अक्री **उ**म-विमानस मः शांतिक हरेता। अके थकादत वक् रहेट वक् भरधा, शक्तिका হুইতে পাঠক মধ্যে, বিদ্যালয় হুইতে ছাত্ৰ मस्या द्वणविमा-स्माणि श्रदमं कविया ध करन क रमनीय मकन लाकि; मकन शकिनी, সকল বিশ্যালয়ের মূল উচ্চ্যুল করিয়াছে। त्म कारन श्रमन कति भगा नियदस्तरे जारला। हमा (मियर इ शाहे । क्वांदमा युवक-दुम्स क कुंक मरकाशिक माओ भागा, व्यक्तिकित मा প্তাহিক পাক্ষিক মানিক দায়ৎদারিক নকল প্রকার ন্যাদপ্ত মধ্যে, বিদ্যালয়স্থ শিক্ষক ও শিষ্যগণ মধ্যে সকলের মধ্যেই াজ দেশে अकारलाइनः सम्ब इरा । 国新州河 অকারে ত্রেন্স বিদ্যার ছারা প্রকৃত দেশো মতি ও ত্রাক্ষরশের গালর কার্য। সংসাধিত **इट्टिइः। योगता मधूनाम क्रन्ट्यन ग**् हिंछ ऋरमनीम खोडा छ जनिनीनगरक छैर-मारु थानान कविटल्फि त्य, केंकिस व्यवि কতর অধ্যবসায়্যতকাৰে প্রাণ্যংগ বর্গা-लाहनाम नियुक्त क्छेन, छैक्तिन सञ्चल क्हेत्यः चटपतमात्र वर्गीतत् तुष्ति कहेट्यः व्यवः भंतकादम केंद्रास्त्र मुक्ति वांच स्टेस्तः (सक्ष वक्रटमन मत्य) खक्तरिमात क्रोटनांहन। হ্ইতেছে এবং ভাগরে দারা অভুত উপকার लक्ष इंट्रेट्ड्, ममञ्ज लाल्ड्ड्य गयर्थ क्रांश्य प्रदेश, मान्स्य नारे।

বিসিচ হিন্দু ধন্দের গা ভার সন্দর্শন কুরিলে প্রতীতিহয় থে, দেশীর আঁচার নামহারের সঞ্জে ভাহার অভেনা নয়ক। হিন্দু বর্গকে বিনাশ করিতে গেলে দেশীর প্রধাপরত্যরাকেও বিন্দী করিয়া কেলিকে

रंग, बन्द अकेसीका मणीकपूर र रेडक स्त्र जामहिर्देश मेर्श अवदीत वास्त्रीत कृष का ना बाबा दिन्छ पटनात महिल नाह कटल সংযুক্ত নহে। কি সামাজিক কি সার্থায় मरका य मक्ता वाकात असू की म हे हिन्छ धर भेत जमुद्रमानिङ छ प्रक्रम्बार्ग, मांगा करू धर्मा-পরত্যরা পরিতার্জ কইলে হিন্দুধর্ম শুনা ार्थि इस अर्थ अञ्च महत्करे विवर्धे हरेटङ হিম্পুধর্ণ গভ পৌত নিকভার উপর यात मनत्त्रहे अविश्वाम आहर, किंख व्यक्षांगर २८९ छ। । अतिकारत करो धरे জন্য কঠিন যে তাহা হইলে আয় নামাজিক সকল আচার সাবহান - অলাপ্তলি দিতে इत्रें अवर मन् किहार एवंट रहा। খনা কোন মহত্তর ধর্শের আভায় এচ্ন म। कविशा हिल्ह्यपर्शाटक विनाम পেলে, সামাজিক 'শুগুলা বিপ্র্যাস হট্যা अलग खर्म कुमः जादत **अम्मू**त्ङ হইয়াও অন্যাব্ধি অনেকে অকান্য ক্রেপ श्रीत विश्वनाञ्चराधिक कार्रा कविष्टक ममर्भ হয়েন নাই। কিছ সভা ও পবিত্র ধর্মের महित्या केलिकिंड प्रभागित ममुस्टक श्रीत বহিত ও সুমাজিত করিলে পৌন্তবিক কুনংস্কার তেরোহিত হয় ও সামাজিক প্রথা ब्लाइकर व्यक्तादवाभागी हिकदत महा। িক্তুখণা রচারতাদিনোর কি কৌশল। *শা*মাং-ফিক শাস্ত্রে ভালদিবের কি অপুর্বে দক্ষতা। চন্দ্ৰিক সমাজপরিপোষক, **এবং সমাজকে** প্রস্থাবক করিয়া দিয়া **ক্রাহারা স্থাব-**লাগত মতাবলিকে একুপ বিষয় তুৰ্বাৰ ছিছ করিয়া বিশ্বাহেন যে, শত বুধনবৈর বিশ্বাস শে কেটাতেও তাহার প্রাথান ক্লভি ক-বিতে পারে মাই।

পার্গেরে আক্ষর্ম সেই কৌশুনিংক গোড়াকুত জনিনাছে। বেনিক "আনিটেকির পায়াকার ' কমানি আনাদিকের কিন্তিক্র

निविष्ठे बहेबा त्मरे विनायांचा मध्यात अस रूकन पूर्वी आमानित्यव मन्नव ८गान्य करे-TICE I TESTION AMILY CONCOR AS विशानिक स्मानिक सहस्त्राभारक त्र वाष्ट्रभन्न वार्किक मध्यक छ विकास विकास भार अन्य कार्य नामाना ज्यारकत क्रमायक ध्येश की बरमज जाणाव स्माहम कहिए जोहज नाः अप्योर खोकार्य त्य कान स्रोटन सम्ब ভারতবর্ধের ধর্ম হইবে এমত বিশ্বাস কোন जन्दमरे मजरद ना। किन्छ अकरण दम अन দুর হইরাছে। প্রশাস্ত গভীর উর্ভর্ম ভাৰসম্পন্ন আভাবেগ্যির মনোগভ মেকল অতাৰ মোচন ক্রিয়া कारम कारम कह স্থীয় ধর্ম উপাদনা অনুভাপ দ্য়া কমা विश्वाम नाम निर्फार्षिक। ष्यञ्चक्तयक शः नज क्षर्य प्यवस्त्र । **८७६ष्ट**, এदः ष्यक्रनामिरशत भद्रम स्रुटकी-ঞ্বেশ कतिता छाहामिश-मल क्रप्र কেও চরিতার্থ कति (उ.क.) (कतन हेश নহে, আবার মূহ ও সামাজিক কার্মের সজে সামালিত হইয়া ভক্তাদিলের ভাগিনে গ্ৰুকপে নিহিত হুইতেহে। ধর্মা, কোবায় কোন ফালে প্রকাশিত হই-शाहिल ३ दिन्छ्रसभारक खाच्यरक श्रद्धाना করিয়া দুয়িত সামাজিক কিয়াকলাপকে स्मार्किंड क्षिएटर्छ, अक्रीकास्त्र ८७म ক্রিয়া পাছণ্ড আছার ব্যবহারকে পাবিক क्रिट्ट्रेट्ट, बांगक वांतिका, पूर्वक, इक दक्ती, मकरणत आंखिक नांधू हेन्छ। यक्न भूति कतिशा व्यरक्ता व्यवेश व्यविस्थत त्रवरह আপনার শরীরকে আবেন্ডি করিভেছে 🖟 वर्षनाम काटल विष्णुगमान मर्थ। कि कुर रग । त्ववन विवास, विद्वास, चन्क्ष विदेश-कारात, क्यांचेका, माधिकका । अञ्चलका त्यांकी रहेरच उर्लंग स्टेशारह । मनाव्यक कु नीव अवस्थित स्ट्रेट्डा इन मगडिनक पाछ

बाबस्थेक तमाचक लाकिन्त्रिक देखी केवर चा चाटवत गरक त्य शांत्रवाटन विक्रित देशके श्रीतमादन दमहे गणाच छत्रक्ष अन्त्र अवश्रीक পরিমাণে উলিখিত আচার বার্মার লোক निरंगत च अंदनत डेमेंट्यांनी ट्याई महिमादन गमान स्थी ७ डेनडिनीन विन्धू नरा-জের প্রধাবলি উন্নতজ্ঞান উত্থানোলুখ व्यवज्ञात्र-मन्ध्रम नवा मन्ध्र नाटमत् हेका विक्रक, क्रम विक्रक कान विक्रक, धर्म-বুদ্ধি বিরুদ্ধ। অভএন হিন্দুসমাল অভি जिक्ताम्बरुष्य र भागाः इहेशाटह । **छेकु निक हरेटन** वतः **काश्वा**त मागाना বালুকা বন্ধনে আবন্ধ করিও, আভ্যের-গিরিগজার নিস্ত গাতুদ্ম প্রস্তর অগ্নি নি-জনগতে বরং নিশাস ছার্য নিশাণ করিতে চেন্ট। করিও, তথাপি মন্তব্যাকার নিমেনি-বিত বজুসম বলবতী আশাকে অবরোধ ক-ति अ ना । तमने कृत्क को दिन्हें कांत्र कदर धर अहे हत्वत्या, व**क्टन्ट्नह अहे ह्यि**न !

একবিকে ভ্রমসন্ধুল অপবিত্র দালাজিক দেশাগার, অপর দিকে বিরুত অস্তাভাবিক विदनभी प्रवादकारतत हीन अनुकान छ मः माविद्यां छ। अविभित्त कुमः कात्र व्यक्ति छ। পৌন্তলিকতা, অপর দিকে সংশয় নাক্তি কতা, অথবা ক্রিয়াকলাপশূনা ভক্তিজ্ঞান रीन गृश्नमाकतिविक्ति व वंशहदूकिनम्भन কাৰ্যা-কারণ-সন্তুদ্ধ স্থান্তম ছবেরাধ্য বি-জ্ঞান ধৰ্ম। আসংশ্ৰ ইহার মধ্যবন্তী रहेश मकदनद भाषा गाँउ गांचक्षमा मन्ता-पन कडिएडएड। वर्गाका छाटन मकन व्यक्ति जनवाने जनिकान करिया जन्म-तित्र भारत सक्ता सम्बाध्यकाच हरेएउएए, क्रवर मस्या मान्य कानमण विश्वान कति-एक हा। अशानक श्रीकार की न, पतिक, धनी, विकास, कुल , आला कांग्री सकटनत क्रन्टरात मजीन प्राटक केलिए जार कुलावेस

सहरोन संगानीत्व गांगांकिक मुखला निवक ক্ত্ৰিভেছে, বিদেশীয় বাৰহার পদাতির সভা-मात्र मध्यक् कतिरण्ड , मामानिक भारतर विश्वक उर्शरमण करन ममाजदक धरा धर्मारक प्रकृतिक क्षिता संशोष्ट ७ घटनमा बटल আৰিন্দ করিতেটে, এবং নাল্ডিকতা ও সংশা-अभिन विकास भटनेत शर्थ करहर । कहिटक **८ए। ८२ वक्र वोकीवेश '८२ व्यक्ति।** वर्ड मिनाकी ভাতৃপন। জাগ্রত হ'ব, অজ্ঞানত। পরিহার कत, भुत्रक् रहेता **लंदरमध्यदंद अन्तर** का ম্পানিক ধর্মা প্রিক্যাগ কর, এবং নিকা সকা ধর্ণাকে অবিলয়ে আক্সর করিয়া চির্দিন প্রথ সম্পদ্উপভোগ কর: " मडारंश অম্পিতবাং বর্ণান অস্পিতবাং व्यमिष्ठवार। महार इत मंकार मेटक्सर् ভূতানাং মধুঃ। কাল্পনিক গর্মের গ্র পরিত্যাগ করিয়া বতাকে আভার কর, এ-পকে আতার কর, এবং উহিত্ত আদিউ লো দাধর্মকে আত্রয় কর।

--

गदनाविष्द्रान।

अविभूके कहिर्छाए। विश्वाम अविभाक इंडर्गक्षांसमापि वित्यप्रकत किया वार्थना अभिमि मन्नव रहेत गहिएएहैं। सन्यस म्बर्येश प्रकार अकृषि अटकाव मातीतिक व-প্রই বিটিত্র ও বুদ্ধির অগম্য বেধি হইতেছে। কিও আবার যদাপি মহত্তর আক্ষাত্র छ होके भरनांमिन्द्रत थिकि नम्न निर्केश कवि छार कल है जा विस्माहिए এवर लख-श्रुकारक पूर्व रहेगा श्रीष् । य गातीव्रविषाः জালোচনা করিয়া সহস্র নান্তিকের কঠিন क्रम गुरुवार्थ जिल्हि तरम चाक हरेगा याहे-তেছে, পরীর বহিজ্ ত যে বাহ্যবিজ্ঞান আ-- रब्त्वाक्ष बंदुभा अस्ति পर्छ ७ बस्या ने छाउ। विविश्वका मानद्र एक काट्सव यावयांनटक कंकियम क्रिया वाहित्यह, यनई छोहात मियांग कृति : मटनद अथवा क्रांटनह निहं-ख्राबंद क्षांत मिलत्याय हरेया अहे ममल व्यविश्विक किंद्रिटल्टरम्, अवर दय श्रांदम भदमङ যে, ৰূপ অভয়, মে স্থানে ভাছাদিগের क्रांमुक्त व्यवश्र ।

वस्रदः क्लारनावादित अन्ति नेपृत्र वरिष् মে কাছা এক বিষয়ে সংঘটিত হইলে তং-मश्रुतीय मकल नियदप्रति छेथकर्म माधन करत এবং দূরভিত অলক্ষিত অনেকানেক বিষয়ের बहुक्कार स्टाइति लीए मक्क निरक्ष करत । मान तीत्रवित्रतथ रग किकिथमा मार्ज्यत्र छेन्नवि ক্টাং, বাস্পত্ত জানে <mark>যে যন্ত্রিজ্ঞানে</mark>র क्रकर्म लांच इट्रेंब हेंह। मण्यू व बेंद्र्य म-स्रोविक, किन्नु क्लिकिविनांत्र नाविक्टो শালের উমতি হইবে, রসায়নশাত্রে রুবি काइराष्ट्र े छेन् कोत्र हरेरत, छोड़िश्चिकारन कार वर्राव वर्षक नाम हर्देश्व (काय-क्ताना क्षेत्रमं क्रिक क्रिकेट महरे अहे था जीक हरेटच दश विकास संख्यात महत्रा अकरी। र्भाट गाँउ समझ रिकेट । विषे समझ पाता अकेरी दिशाव उदा - ३वेटन मुक्त असि-

हाई छन्नाच करा। किस मानिल अनाच गरवानव ब क्या जरुमा क्षेत्रकार के मिलि श्र स्ट्रिंग (प्राप्त) गमल कातानि वाटकाणिय रहे कर गरा-জাত তরক মালা ক্রমণা প্রশাসীরত হইয়া कुनारक वाणिकन करत, त्मर बन हिट्छा-लिङ विका मत्रगीत उत्तमत्राक्ति निग्न विस्तु इक्ट बाटक अवर श्रीतदगढेन छाउँद म लिलतामिटक जोव्हन करतः। शहेख मकेन विमाति मेदनत मदक गमान सब्दा किला र्केटक विक्रिय-मंबक्ष स्टेटन मटखरकात करा কান বিদ্যাই তিষ্ঠিতে পারে না। খনই বিদ্যা লাজোর রাজধানী,ভাগ শবিকার করিলে আর मकल हे अरिकृत हए, छ हात एस अवश्र हरेटन गकन उड़्हें अवगंड इत्रश्च मातः। কারণ যে কোন প্রকার জ্ঞান অনুধারিভ হটক মনোকৃত্তির পরিচালনাই ডাইরে ম-পরিতাজা উপায়, তদাভিরেকে কোন দিলা: त्र है छेन्छ अञ्चातिक बदश नि राष्ट्रभौति বিদ্যা বিষারদ পণ্ডিতগণ, কি স্থানিপুন চিত্রত: দল,কি সুমাজ্জি তবুদ্ধি ধর্মশাব্রজ্ঞগণ, কি ক ঠোর পরিশ্রমী পদার্থ বিংবর্গ, কি সুবস্তাত भट्टे भश्चिक मन्ने, मकदलहरू गर्दशहरू करन माना हिंडित गोशीया धरुव कतिए रूप, ७२० মনভত্ত্ব অবগত হউতে হয় ৷ সকল বিদাং সম্বেক্ত মনোবিজ্ঞান এৰূপ আবিশ্যক ও মহত ৷ মনোবিজ্ঞানের এবস্থিধ মহত্তকে সাম্বস্থিক महद् कटह। किन्नु अहे मन्निक सहद् रा-चित्रदक देश्व अक्ति चेक्क अ अक्क सर्व

शृथिदीत मरण मञ्चाह गर्सारशका

रहार शर्मार, कवर महरणात मरमा मन्दे

गर्दारशका स्थार्छ। क्रांत्रेम कीम स्मार् गर्दारशका स्थार्छ। क्रांत्रेम कीम स्मार् गर्दारशका स्थार्थकान्त्र होसात स्मार्थका ग्रांत्र किलामा स्थारमा रह सम्बद्धाः व्याप्त विमार्गिका क्रांत्रिया स्थारी स्थान गर्देशः स्मार्थका उत्तर क्रांत्रियम स्थार स्थान विमार्थका

CHICA CHA TIN MA ANN ANN ANN ANN ANN ANN ANN TO ALL AND CONTRACT COLOR WIS RESIDENCE WIN WAS ARREST LAND. ক্ষাকাৰ বাতে ভূমি এককে মুখ্যাকৰাৰ ভাষা তোনাকে পরিক্ত কর্ম কোটি ছোটি ছোনন উর্কে সন্তান সমুক ব্যোক সঞ্জাকে সারণ क्तिमा मनाठी ए सनत्वत्र शद्य उड्टबाड रहेग्रा विकि कृतिएक्टह । अहे बाकारणत महत्यादभरे त्यरे छ्रांग छ्रावनारा व्यारचा বোক নিচয়ের বৃহিত্ব কোমারক্ত শরীরের পটির সহন্ধ ভূমি অমুভব করিভেছ, এবং ज्ञाहानित्वत सानि चन्छ भर्यात्माक्ता कतिग्रा कारनत समीमणा सन्गत कतिरवह । किन्त छान पृष्टिक अञ्चलक मायधादन पर्नान कत् अन्तर्ग लाक मश्चिक अमीम आकाम अ-পেকা মহত্ত ৰূপে অনুষ্ঠেত্তাৰ ভোমার আয়ার প্রতিভাত ধ্**ইবে—স্থনস্কান স্থ** নস্তপ্রীতি অনন্ত পরিত্রতার আভাগ উপলক্ষি कतिशां कृष्यं इहेरन। महान् धाकां ध গৌর লগতের উপমান ভোষার শরীর ধলি-रुपायस यहनामाना । এक निर्क मश्याणिक অপরিষেয় লোকরাশি সহস্র মহস্র বৎসর व्यक्तिम ब्रांक जागमान इट्टंड्ड्, बात निःक की प्रेवर मागवरमञ् स्त्रादश स्मादक मीर्न रहेगा भूषियो छरत यह दक्रान विष्युत कति-**उट्ट केवर गर्ड बरमत्र मणाभित्र मा स्ट्रा**ङ एरेटक श्विकात महित विजिल हेस्टका है। अड्येन निश्च कंगटें सहित आक्रीलिटेंगर निर्देश निर्धास कारणाती महक्क- धनर कर-नवरक नामक किरासकी क्यान सामित न TATERARI FAUTCHMACARECTERS THE PERSON NAMED IN THE PARTY OF THE PARTY O A STORY OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE

বান প্ৰকৃত ইইটোই বৈটক্য অহাত হালোক বঙালৈ প্ৰকৃত আই কে কাছে নেই আনেতে ই
অক্ষাৰ বিষয় কাছিল হা অভিনিত্ত
কালানিকৈ নাতি প্ৰিভাৱে কাছ নাই
কাং হুৰ্যা নিকান হুইয়া বাইকে, কিল কেছু
ভাম হুইয়া বাইকে, আকৰ্ষণ বিকৰণ কিল
কান্তৰ চুৰ্গ হুইয়া বাইকে, জন্মতি আলান্ত কিলাক হুৰ্যা বাইকে, জন্মতি আলান্ত কান্তৰ চুৰ্গ হুয়া বাইকে, জন্মতি আলান্ত কিলাক হুকে না ইম্বানের অভিকৃতি
আলা, অনিক্ষাৰ নতা স্বৰ্গের প্রভিকৃতি।
এবস্থাকার আলাব স্বতল মহন্ম

বহিজ্ঞাতে ঈশ্বর প্রক্রমভাবে অবস্থিতি করিতেভেন, অন্তরেই তাঁহার উজ্জুল ৩:-প্রাকৃতিক ঘটমাপরস্পরা মনের मद्भ विक्रित मश्स हरेटन पर्य होम लाका হীন কঠোর কার্যাকারণ-শ্রাক্ষা মাজ একাল করে, কারণ শক্তি সৌন্দর্যাও কৌশল বাহা किहू मकनरे भरनतः जाव। **अहे कहा या-**হারা জমাল ও আগ্রহন্ত্রিমূচ হইয়া মনো-বিজ্ঞানকৈ অঞাহ করে, তাহারা অঞ্জিকে भोक्या मिक ७ अधे। विहीन अन्य कार्या-কারণ জ্রোভ বিবৈচনা করে, এবং গৌর नाल्किडा भटक निमध रहा। किछ दर बीत পরতি মহাহারা আত্মানুসম্বান করিল তদ-कर्ज्ज ब्लान बीहि ७ श्रापीनका मच्ची । विविध मत्नात्रस्टिक উक्कृतकाटम উপन्नि करतन अवर उदगोहाटमा क्षत्र जिन्द मकल विषद्यक অর্থ সদয়ক্ষম করেন. ঠাহারাই ঈশ্বর-গরারণ: धर्मनीम, जाहाबाहे मध्यात अटहिनकात य-থাৰ্ব ভন্ত অৰণত হয়েন। আআনুস্কানে आंखादनाहमात्र विदेश हहेशा वाक् आंद्रमादन উন্মন্ত হইলে, কিয়া শুল ভৌতিকপদার্থ-বিজ্ঞানে নিমগ্ন ক্টলে, মনের প্রকৃত মহত্ব ধর্ম করিয়া বহিজ্ঞ গতকে তছুপরি উদ্ভো-भव केतिएन, व्यास मोखिकछा छ । अधार्य चान हेटम । शस्तिक आश्राजिमानी विकाससून।

यांनाविकारते आविक्षते व वटल म-े इ. ां ज्याच ४ में से, क्यारण (मांशर अ ४ मेर व क कियादम काम अम्बीम माना। अयोद्देश मुक्ता अधिक्रित् है कराय कहा पहिलाका क्षित्र भाषाक्षः विश्वेषः सम्दर्भवद्याः स्मित्रे 實行者 在如何 一個打造成的 一門間 行情分析 化光线线 翻出 祖母祖 《沙河公 下母 小生性 阿山谷斯南南西西 网络阿利拉丁 直电影时间 बैरेत, कि अक्सानगर अस्त्र ने उद्योक मंत्रीत, है कि जीन भीन एक स्वीद, मकारन है है। किक सार अन्तियक स्टब्स जानीयो अपनेदक ল্পান্ত্ৰ চাৰ্চাট্টেল কিও মানেৰ ভাৰ wer differ to brillian the ad भीत तम, क्यांकिक सर, छ।शा समू व्यक्तकांद्र ্ৰা তাহ জান গ্ৰীজি স্বাধীনতা সুস্পন্ন ্যান প্ৰাথ স্থান বৃহিদ্দিনিতে ভারাকে (मिन्हार काल्टर शास मा । सिंहमदस्त सद्धाः ংখ্য কাই তেওঁ কন্ত শভ্য শভ্য ভাষা উদয় হয় क् डाइ ह मध्या कतिहरू साहब, अवर ८४ ह 打 阿斯特特 有事的行行 计价 阿拉达 भारतः विश्वारकेत माध्य अधे सन्दर्भ कार्य र्याप्य करते थेएत इष्ट्रा तिष्ट्रारास्त्र नाम्य वि-পুঞ্চ হ্য আৰু ভাই দিহেগ্ৰ কিছা মান সু-राणि पृष्ट २२ व । ज्याना व्यवस्थित प्र-সংখ্যা চলত জনভাৱী ইন্সিয়াট্যত জাব-

চৰকে এক নীভুক কমা কৰাই হৈ ব্ৰিচনের দলে ভারাদিনের প্রকানিক করা, একং এই দনত শাধারণ প্রকৃতি ভারধারণ করিয়া নবাতীত কান লীতি ইচ্ছার সাহত ভাষা দিবের সমভাব অনুস্থি ইয়া ভাতাত পরি-শুন্দাধা। এই চুর্হ কার্য্যে ভ্রিষ্যতে ভানাদিগকে প্রস্ত হইতে হইবে।

ত্রাক বিবাই।

यामता जाकास जाक्योरनस महिल था-লাশ ক্ষরিছোছ যে, বিগত ২০কে ভৈয়ন্ত (अभिनी पुरुष अमुक्त क्षेत्र आस्त्रीमन प्रस्तु अस् শাহ্যত আপমাৰ্ভন্তন্ত মহিল জীমুল্য কুণ্ডন . यहिसर अभिनम किली १५ कि तीक्षात प्रमार श्रामिक करण मधील कर्षेत्र, विश्वविद्या । क रमरकरे अवश्रक बारिता में शहरतन शिश्रक का अलाक्ष्मिन बस् महाकतः राष्ट्रीपुर रा १००५क रेरतां कि अभागित्यन क्षांच भाषाक करा खिलामक भारति कार न्यांत्रेसन १ प्राक्रमः রাষ্ট্রণ বঞ্জর অক্সাঞ্চা । পুঞ্চা দর রাস্চাস সং । दर्वभाव महर कार्या श्रोतो आमहानहान हे अर स्क्रम वार-गांत्राचन नश्च मक्त्रभास खानव्हमास महाभारि मायम चारतभन, अष्टकारुखिए মুখণীয় সামাজিক নিয়মাক পরিবর্তিত কবিয়া বেশের মুখোক্ষ্য ল করিলেন, আধানার ক্রলটে পৰিজ করিজেন,এবং একটা বেংশ পরিষাজের প্রতিষ্ঠা করিবেন । জীহালে মাধ্যাদ প্রদান না করিয়া আখন নির্প্ত হতে পারি না চ পাত্রটী শ্বনি স্থলী শ ধর্মপরায়ণ ও কডেবিল্যা िन वरे व्यमस्य भिज्ञान कार्यसम् ইংরাজি শ্রেণীর শেষ পরিকাষ উত্তর্নি ইং शाहिन वरः शर्थाहिल किलानि बार करे बार्टन । दर्शवस्त्र जन्मरन हिद्रिस्मानीय-,माथ भारत म तिया कीश असिदादिक मेम्बिक । शास्त्रातिक उपानि भाषकं कतिरकति केमोजि

संभाकता, मर्गाताम धार वास वास वास. केशित नशक्त व्यात क्लूमेंस करें। रेगम-त्राविष निक् निवंशादन मेटचीने क्षेत्र, सोख इन्हें। विकादकत भूटका है जिसि विका तिया। উন্নজি এবং উপাৰ্যনাদি শিক্ষা করিরাছিলেন, क्रकार व्य कल न द लिखिक्ट अनल क्रेग्राट्यन नी प्रकेश विषय अधिक वर्त छेदक व मां अ कतित्वन भटकह मारे। विवाह छेपनाक পথের অস্থ্রিস। জন্য অত্তয় 'অনেক রে।স বরের অনুষ্ত্র স্থতে প্রেন ন্ই, কিন্ত ध्यक्तिम् पुरुष् । अदस्य महत् ७ वश्चिक् व्याप्तिहे রাজনায়ামণ বাবুর ভবনে সমাগত হইসা लायामटक छीड्डिक छेल्माई ल महिला आतान ক ব্যাভিবেন, এমন কৈ কেছ কেছ ক্ৰিছ দিংগর পরিবারাদি পর্যান্ত টংগের নিকেতকে / 2014 के ब्रिट र नक्षीत ठ घटनार माहे / 14वाक कार भागविद्यान भुक्तिक भाग्यक्त श्रहेश्वाक्रकः -भारतीयुरत धककारत छमु अ मुन्साधि-श्रुष्टिल । त्रारी चिल्लाक प्राट्ट शतकालोध वर्ष कीया भूका आधान मक्की इंक. वामारा इनदत ারপুন, স্তাজান ক্ষাত (কি)পাত্রে প্রতিষ্ঠানত গ্রহার, কড়াজিক রেলাকের আলান্দ-স্কৃতিক কল-तत्व व्याकृत कर्ना, व्याधिकारमाव निवन वर्न क्षािकट्ट चाट्यांकड क्षेत्र जवः चवक ভীর শক্তে শস্থারমান চইতে লাগিল। সকল अर्टन हे फिलाम मर्ट्स एमव, का हात अ युर्ग च-মতে বিষাদের চিহ্ন লাফিড কয় নাই।

कानम युक्षण श्रवतमधारात लेगाल व कारणान जान्नवामात न्या नां क कहेगाव आप किंकू व्यवनिक तिहान गां। जान्नवामात व्यव कान हाता व्याचा, श्रीवाद क्ष म्यादकत श्राव-क्रका क्षव व्याचन गर्निक कहेटलहा, क्षवः पंकरे लांक कुमःसात विविद्धां क क्षवः महा-श्रवाद करेटल क्षके क्षावा व्याच क्षेत्रवाद के क्षेत्रवाद विविद्धां क्षाव व्याच क्षेत्रवाद के क्षेत्रवाद विविद्धां क्षाव व्याच काता मकत क्षकात क्षेत्रवाद क्षाव्यक्षिण कु

मएक्कांत अतिकाक रंगे अवर केम्ब्रकांत नि-क्कि वर्गीय नकादकारिक रनाटकत हिराउट अंगा भाषतीं छटन गमानी छ एतः । ए अर्थ দ্বারা প্রীতির রাজা পুলিবীর সীমা চইতে भीषास्त्र शर्यास गाल इस. ट्यं बर्ट्य लिखा পুত, खोड़ा 'ভिशिती, खी भूक्ष मध्या शतम প্ৰিত্ৰ ক্ষেহ্ স্থল আৰম্ভ হল, পাৰিবাহিক मकल क्षकात भक्षण गरमाधिक कर मभारसत पुष्तिक ब्यागीनी हय निमाने क्या अवर एक পরিবর্তে বিশ্বস্থ কর্ত্বনানুসোদিত আচার रादकत आंत्रिक हर्ने मभस प्रिवेटिक क्षाकरमी, धारकत स्थिक वशीवन समन्तिक क्स्, दब्र कला ५ शुक्त विद्वान व्यवसान स्व ८५ र पर्याते मध्य (गरे पर्याट अस्ट्राय अस्त शिकुण तका करियों। संदर्श कर्ना करिकरें करा अक्ष करते साही। होश काली किंगाकुन के पान (朝)中、明都 国家、美国代别公司、李沙村县 6 (安 स्ट्रेंदर १

त्राक्षां मरभव मानातन भारते ।

ান্দ্র বাবের কাষ্ট্রশন্ত বার্তি ক্রিবর এইর ক্রীচরী নিযুক্ত করিবর জনত তাই টাইবর সন্ধান্ত পর আন্ধান্ত করিছে চিক্তির স্থান বিজ্ দ্বিশ্ব প্রায়েশ্ব ৮৮৮ চ্

শ্বিষ্ণ করে কৰা দক্ত তেও গান্ত নত্ত প্রাথিত এতন জন্ত হৈছে আগান এই শ্বেড্ডাল স্কাপেনি প্রশাসনের ভাগ শ্বেড়ান বন্ধ্যান শ্বীষ্ণাল করে বিভাগনাম শ্বন কর্মান বন্ধা শ্বীষ্ণাল করে ব্যাহিত প্রিলেশ প্রাথ

			. ,		3 '
			SQ T		
	吉维 统 网络赛运	देश भाष	भ्य र ्%	$\mu_{\infty,\vec{Q}}$	
	भगास				1
	श्रुका होते किल		,		· · · · · · · · · · · · ·
f					m fee ma
,					· harmage.
1			100°		

বংশ প্রান্ধ প্রকার বিশাস্থ পর্যায় হৈছিল।
পর্যাপ্ত প্রান্ধ প্রান্ধ পর্যায় হৈছিল।
প্রান্ধ প্র

পরবাদ বর্ষের কর্মচানী গণকে ধন্যবাদ আর্থত বছলে পাতৃরে ছাটাত প্রিয়ন্ত নার সেকেন্সনার ঠাকুর মাহান্তের প্রভাবে ও প্রিয়ন্ত রাজারাম মুখোপ্রায়ের পোনকভায় বস্তুনান রর্থের কর্মচারী নিকুক্ত করা ক্রিন্ত, ব্যা

अवशिक्तिः।

विष्ण भारतस्मन्। विष्णः

जिल्लाकः।

विष्णः कार्यमानं वद्यः

विष्णाः कार्यमानं वद्यः

विषणः वद्यः

विषणः वद्यः

विषणः वद्यः

विषणः वद्यः

विषणः वद्यः

विष्णाः वद्यः

विषणः वद्यः

वद्यः

विषणः वद्यः

वद्यः

वद्यः

विषणः वद्यः

वद्यः

वद्यः

विषणः वद्यः

श्चिमुक देवयुर्वास्त्र (व इक्स -

ं ने शिक्ति महाराष्ट्र कियुक्त रेट प्रस्कृत द्वाप्त्र की नार विश्व की काम में अन्तर हो है ते नहीं के कि कि कियुक्त किस्मिक स्वित्व, किया किया कि यक दिन्द्र अन्तरे क्वित्यक्त

一种医疗性 医二种 医二种 医二种 医二种 医二种 医二种 ·胡太雅皇 (2)[2][4] 出京[4] (4) (4)[4] (4) [4][4] (4] (4] क्षेत्र के विकास मान्य १ अस्ति के विकास 沙黄酸 江星 对于可证 网络 化十氢红素 海人的 形形 明确的 重新建筑的 计多数 计自然记录 可作的 "你不说 · in a little office of - १६.५५ अन्ति , तस्ति ने स्थित भारत हाहिलाह किए। अपने करान करेगा आहे. रात्र रेपा.सर व्यक्ति विषय कान, प्रयत् व्यक्ति स्थन वाल पूर्व अहेश होते. उकारियाल शासनन समन समझ छारू-्यक्रमः कविनाः सिक् निकास । जिल्हास । म क्रिकास अधि । र हेर स्वर्षे अधिकार्य किरार्ट केर मध्य াঁপাৰে । অংগৰ এই তাকুও উপায়ে**ন্ধী অৰল্পন ক**ৰেৱং া া া শত্ত্ত্ত্ত হ'লে প্রাথমতঃ কবি মানের क्षेत्रके अपने अपने के अपने के अपने का का किए के अपने के ेमर्स फ वनद्रभ निर्मिक कहेरकरहा

া ক্ৰিশ্ছে ব্ৰহ্মস্থাক। এখনৰ সংক্ৰিপ্ৰাস্থাক কাল ক্ৰিয়ে, বাৰিশ শংপ্ৰিক ভালা ব্ৰহ্মসম্ভ

ে স্থাকটা কলিকাত। প্টল্ডাকাতিত !

পি তথাংন উপাচাগোর কার্যা করিয়া থাকি.

প্রায়লার পরে এক একটা বক্তা করিয়া

লোগ এখানে সর্বশুদ্ধ প্রায় ডিশ্রী সক্তাভা

বিশ্বহি

া বেল্যুদ্ধা ব্ৰাক্ষমম্ভ । তেই সমাজ কলিকান্ত **প্ৰাক্তিটোলান্তিত** । ১৯৬৮ জানি উপাদাৰ্থ্যৰ কৰ্মা স্ক্ৰিয় থাকি। वरा उनामबाद शह क्षेत्रको रक्ष्या विश्व क्षात्म क्षाप ३ में क्षेत्रक का क्षित्रकि ।

ह । वाग्रुक्षात्व जानामगोक ।

व्यक्ति सक्त नेवादि गेकादि शत करे समाक हरेगा पाटक १ व्याप यह करे समाहिक किन प्रियम विधा-किमान, व्याज नितंस कर क्षेत्रकी बक्क जा कदिए। किसाम १

व । माजानाही आक्रममान ।

खेळ श्रीतम काण्डि इविवास मधानि शह अर्थ, भवाष्ट्र स्ट्रेस श्रीतमा अधीमकात मधा मध्या ५ २० रूस। त्याप इस अर्थ मभारक किल निवम शिमाडिकाम, अदर काष्ट्र मिनम तक अपनी १९० छ। कविश्व हि। काणित भीजाणां छोल का छलात न जिल भवाकाल, केलोमना, शर्म, अर्थ करकर्र नेत्रात्म मन्त्रात्म हिना, रष्ट्र शृक्षक दमर्थ मथान अराहर हुनी-कृष्ट विश्वति करा ८०वी किल्याहर ।

८। दक, माम श्रह ,ह्या पर भरा के ।

ণ জীৱাসপুর রেজিমণ্ড :

व्यक्तिमान महानि शहर एके ममाल कर्या भारत । अयानकार मला मर्गा अग्य १०१४ क्रम । अयानकार मला मर्गा अग्य १०१४ क्रम । अयानकार प्रियम विश्व अव्यक्ति गुल्कु क्रम किर्यामनाय व्यक्तिमानका । विश्व अव्यक्ति व्यक्तियाँ किर्यामनाय व्यक्ति किर्याभिक विश्व व्यक्तियाँ अञ्च किरियम । विश्व किर्यामना । विश्व किर्यामना अञ्चल अक्ति स्थापना किर्यामना ।

५ । मासिश्व बाकगयास।

শান্তিপুর প্রাধানমাজে এক দিবস প্রমন্ত্র করিয়া সেখানে বিশ্বাস, পীতে অস্থ্যম নিই জিন্দী বিষয়ে বস্তাতা করিয়াজিব স

ক্ষি বল ভাষে স্থানে প্রাধাননী বাদ স্থানি কিয়া বীয় উদ্দেশ্য সাগম ক্ষিত্তে আবিবাদিন পত্র ১৭৮৫ সংক্র ১০ই পৌধে আহার্য মহান্ত্র ক্ষেত্র অংশানুসায়ে ইয়ারীপ জ্যোর অর্মণাতি श्राम्य । श्री विकास क्षिण्य, छ उ व्याप क्षिणां श्री प्रशासन व्याप वर क्ष्मान व्यवन । नाक्षीन मंग्रेड व्यादण डाक्मार व्यवन्त्र प्रस्क व्यवक्ष व्यवन क्षण व्यव श्री श्री नित्र श्री स्था । क्षाम व्यवन व्यवन व्यवकार्य व्याद्य श्री श्री नाप

ানিটে লগে গমল করিছে আরম্ভ করিলা প্রায় হটার সময় বাগ্ডাঁচড়ায় উপস্থিত চইলাল বিভিন্ন প্রথম বাগ্ডাঁচড়ায় উপস্থিত চইলাল বিভাগ প্রথমিক পরিবার করিলা বিশ্ব প্রথমিক পরিবার করিলা বালিক পরিবারের পরতাহা ও এর্জনিত করিলার জন্য বালিক পরিবারের পরতাহা ও এর্জনিত করিলার জন্য বালিক পরিবারের প্রথম সকল লোকেই ব্রাহ্মগণ্যের কন্য বালিক পরিবারের ক্রেন্য সকল লোকেই ব্রাহ্মগণ্যের কন্য বালিক ক্রিন্ত ক্রিন্ত নিক্ত অলিকার্ম ক্রিন্ত নিক্ত অলিকার ক্রিন্ত নিক্ত অলিকার ক্রিন্ত ক্রেন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রেন্ত ক্রিন্ত ক্র

中心 (1944) (第二十二萬) 明明 (1944) 中央 होर प्रभावता दुन्। विक् १०० म म्यूनिमाम १ । प्रमान धर ब्रोक्त इंभावराहर एक म जार १७ १६ेमा अभिनेषं अभात स्था अधिकृतः क्रमेशः विकित्सन । अभूतः की शास्त्रात्तात প্রিক প্রকাশ ভাষ্ট্রেল এমস্কুলকা বালবা উচ্চোক रम प्रतास मध्ये होएक न्यू स्वतंत्रका ग्री हेन्द्र का मार्थ वह कदिलास । व्यक्ति स्मर्थाल । विनय दिलाक अकार राजा २७के आहरतात ज बालमां अवस करिन ब्लम् । हिनीचा **जानाममा धृष्य काद्या** ६४, १५०० इतिसाक्षात मानक मन्द्रात सीमिहनन काली नत्त्र. क्षाभाभार्य अवस्थान महस्र महस्र 'अिव्हालिक किया कर 例19 的数数12m 心理性的 数180数数 1 मनात्र क्षाय निर्मनी, जारमकाक विषयात्रव जना उंक्के व्यक्तित्व एशा किन्द्र हेर्हे १८५५ वर्षा नवा मसार् श्रेटक्थ स्थानिक प्रदेश क्रिकि : हेंहाई 物門 医硫氰基 (四旬)对写 [安]市 要[[四日 图]。写明[]介 क्रीनि जिन्न, कुलकाराटल देशीएमत स्थाप श्री **इहेब्रा (बन** । यं होता **जूबि जूबि भूखक** अधाया করিয়া বিদ্বান বলিয়া গরিক্ষিত হইয়াছেন, बाँकात्मत व्यार्थत समा करें नाहेट इस ना, उँ। क्षता अकरात के विभाग वृष्टिकीन निष्यु दलाकिनि निष धनी पत्र त्रांकाक हतियो निका करूने त्य, अभिना रकरेन धनी के अखिहानर सना महर, हैं श लुचि बीच मधुमाय अनुसामार्थनं दिवसमाहि । अनस्त. रमकारम अवसी जानामान जाना करिया काल-मामाम अवाक्षित मामाना का

विकास उपाममाध्यक नीमंदमक्तिक नमाएक

नेयम क्रियाडिनाम। प्रमान मिस्ट्रिंग व्याप्तः नाटण श्रीयुक्त व्याद्रीलान मिस्ट्रिंग द्वाहित अभागमान इहेबाडिन, व्यथाटम स्थाद नाज विषया धकरी व स्ट्रिंग क्रिया डिनाम। वाजिकाटन डेवाडाटा व

३३ हे रेडल भारता सम्माल वयस कविष्टः डिलाम ।

निक जीवनांत्र इन्हें बाणममाक लाइक ।

खाणि भागतात असाम लव नावना नेश्वाधि विभागताम खागान मिकल खोगुछ। एवं द्राक्यभावन बारमब नागम धार्की त्राक्षमा क भीषा गाउक मनगटण किन धारम केश्विक गंद्रसम्भा भी रिजा मिन्द्रस क्रियान क्रियान में स्थापन त स्थाकि, अव जिल्लामान, बोर्ग क्रियान मान्यस्थान हिन्द्राकि ।

स्थित का का वृत्त स्थान का निर्माणक विकित्य स्थान का का का विकास का निर्माणक का का का विकास का निर्माणक का निर्मा

भारत्य प्रकार । व्याप्त व्याप्त प्रकार प्रश्ति । व्याप्त व्याप्त प्रवास । व्याप्त व्याप्त व्याप्त । व्याप्त । व्याप्त व्यापत व्य

্পানু ভাবনোর আবিদাকিত।) (গাঁভ গাবের পর। , কোকে;

क करन । यम लामि को जनार सन मगरक ক্রিণান্তিক সর্কাল। আমার ভাষাসালের বিষয় আমি বিস্কাণ খাৰ্ডাক আছি ৷ কিছু পিয় ৰস্কু "祖尔姆拉特集""明智信息信息,他都心,他"安门证明这一代款"于29年 भाग र अपरे जारगाजाकांक व्यक्तिक किया रुकिया আন্ধান স্কুলা একালে একালে সংগ্ৰাক ভাগাণ্ড। 化二硫酸邻氢硫 电影的一大 賴母縣 机环烷 化二烯 海门斯 网络门城 古价 (海)、新旗松台、西京松台、西港中(4)、河南湖(群) 经决定 ना कर जारिक पुरिष्ठ को ताल लक्ष्य । एक यास १गी-लगाम क्यांचान काम्ब्राम एउमा नान कर्निय मार्गि 工作主义 饱暖器 人名德格 "连红"一声响 "好吗?这分时就这一 "曹东西",张明建设,在第二个地区、全主工、四部、中国李剛等 好食工工作的证 婚一件 (各位)人 在此。 饰行社 化 (各价)书 राष्ट्र १ १० किसा, १०४ मा मिल के द्वेत कोर्ट है। दारे 医性神经 化化物 化抗糖 人名斯特 医腹膜 电二十四 化费尔德二铁厂 计一卷作用 计多形像 万家人

一如此 化 表一致激化的 绿色有多 भंदर र देंगा भाग र क्रिकेश आरेगांका इस्पी वर्ष विसे १, १०१८ ८ एक एक एक ए से रेसिकी सम्बद्धां छ ा । त क्षा द्रिकाराज्याः to the state of the state of the state of ः १४ स् ४४ छ। स्थापित 医甲二乙酰 鐵戶 新 . इ. . व्यक्त प्रवास के अपने कार के अपने का अपने का कि समिति (名は だいしょう とうしゅ) こうはい (の) (報 (報) 報 (報) 的复数形式人名 医二甲甲甲基磺酚 电自动 电磁带 化二乙烷基 करिका, इसकाम प्रमान का व भदिनको हिन्छ। The design and the control of the state of the control of the cont 人名阿米特 经证明证 医二乙酰 化烷烷 重新联 化硬化矿 रक्ष प्रदेश कि प्रशासक को स्टब्स् अर्थिक, अवस्थित अर्थित · 4 1279、阿拉州中的 化电子通过数据工具 有制度 有外数 经人 ারত কইন্ডে বার্গিল ৷ স্ক্রেন্ত্র বাংসাধিক ाय बहारतक एक एस्ट्रांसम्भ च प्राप्त वर्गेख का निवन ur ; त्याः व विष्ठभीः निमात् १६ गीतः त्यांक श्रीकः ्याकीत् क्षांकः एकिनीहः शक्तिम स्वीतंत्रः व्यक्तिमा 1、19 碳流 班底的 网络种类物 內有利 ा । ज्ञानी क्षेत्र दक्षानि न्याराष्ट्र भनावाल-বার বিজ্ঞান প্রায়েশন **প্রায়েশ্য পূর্বাংশগুলিক বন্দশ** अभारत्य कर्णक न हिं विशिधिक खेर्स्सकल खालाउ यो भव १७ ११ पुर प्रारम के किया और के हैं कि है। कि . क. क्षेत्र कामाता नगर, का<mark>टिक क्षेत्रिक केकिशन</mark> crem with the crew whitehatters we

जिम्रत्य आश्रमप्र हेहें। जारा हेहेरेन स्मिश्क नाह বে পর্যানুষ্ঠানের জোষ্ঠ কথম আন্তি প্রবল, করম या मुद्दरभ यावटकाण कावाहित इवेश कार्गन-থাছে। এক্ষণে জিজাস। ক্রি কেন্ট্ চড়ফিকে এই तकन परेना आमारमह इनका**नत्व शांक**ङ इद्र*्* कम हे मन्यानन अनम स्टेड अकृति जहीं। বাল্য সমত্ত কইবাছে। প্টীয় সম্পূদায় কাহা मि (८०) अर्थ) ए विक एर नास्त्रिक विविधा मुन्। कतिएक भारतम जावर मसुरा जी म कामिक जाविक निर्देश यन थ। श्रष्टेरक शहिबारी अवैद्या कावानाडम्पद्भात न्दर्भः तरः क क्रमार्गः कार्यन्तियं व्यवक बहुसार्कनः ইং! ৰণিকা ভাসংগ্ৰেয় সংক্ষাকৃষিত্ৰ প্ৰথতি একগাৰে १७ विश्व १६८७ था ५०, किन्न खारपंत्रा भेरे अ-क्ष १३४१ इ.६के अञ्चरमञ्ज अवलाज्ञीक निषद्ध वर्ष होंगू हैं काम के ज़िक्षाभी तथ भी, बदर एक्सार ब লিফালের 'অ**ভ্রে** পরিব্রম্ক বিশাস করেনে ১৬ नम रा अपापन सम्भ विकित्याः स्वयुर्गातः, ज्यापान्य प्राथित एक १ एक १ जान में जान है । अधिक सम्बद्धा डिकार्ष १९४१ साक्ष साक्षाता ५० त्याचाच वर्गा 医圆面性 化硫酸二甲醛(阿拉二二) 原文 经上年 经收益 一个环境 地名 网络明 寶川 外籍 "曹"的故障了影响 國家教授 法审计下,对此一直感说。如何的一种位于一个。 क्रिक्ट हो। १९६५ में मन्द्राक्षाक्ष १६०९ । १८ ता । १५० में १५० है। · ,司书则 为事李子 () a 41. 微 1 m , c) (第一般如) \$1. \$1. 电减量性 查找什么不会开个 每少的信息性 (4 字) 所证。 सन्तर 🖎 **भटमा** ६ वन्ध्रहरू । सम्बन्धः पूरिका 😿 🤏 वन् ाक्ष करदम किसे एक लिए एक लिए हर्ने असर, सर्व क्रिक ह ব্ৰিল জ' ইন্দ্ৰেছ মিট্টি জ হয় ৷৷ বৰ্ষা ক'িয়া হৈ ল'হ লিছে ক্ৰিক্সিয় ক্ৰান্ত ল'লেন চৰ্চ প্ৰত প্ৰনি व्यक्ति कवित्रा । के ज्यामध्य अन्त्र १४४, । स्वर्गाते । ज्यान जीत के ने त्थार साम, न्यूनि रिश्त समाप्ति भिष् পালিকাস কুপাহিতা হয়, জন্ম কামনা ভাগাবে কি निहिट्ड अन्दर्भाकन क्लि है एणन है के देशिये पृक्ति বেশাচৰ প্ৰতি না বেল কে নকটেৰ সম্ভূতিখা নাত করা বাছ দে জাবলি ব্যাকার সহিত্ত ভাতা व्यालक विश्वयं क्यांच्य क्यांक क्यांच्या व्यालक व्यात কোনটা ভাষার আছিতের হয় ভারনত সে বুরিটেড পারে নাই কিছা শুখার উচেব হওয়াজেই নে रम सन्माहाः। अधिक अवस्य मञ्जूत व्यक्ति शांविक हरू. ८०१४ कोत् ६७६३ एका अधीर**ात कविद्यम ना।** ন্ত্রের ভাষার ভারেশ। প্রায় ভারের আর্থরে रार्थ कुथ, लागा वरिष्यों , शिक्षिक क्षियारक्ये , ब्री-ভরতে বাদত আগমে ভারতি ক্রান্ত সামানতার প্র-तिरुष्ठते क्षापान, करत, यशिक टम क्षा**परम् शास**्क्री टलका एकवन किर्मक्षांक रेकके क्रिका लेकिनी करह, भावाभि स्वरंग पुके, छाहाझ जैगरत स्व धर-

संग अका वर्डपाम 'वाकिया वीर्य' वर्गातराय में जि ও ভেজঃ প্রভাবে এই সমস্ত সৃষ্টি করিয়া ভাষা-भिरशत अविदेशका कार्या निकार केविएकहरू विदे विचान अथम इहेरफई लाकात गरनीबर्या जीति ভূতি হয় ৷ ভাষার আছরিক ধর্ম ভাব সকল **७**थन ७ व्यन्तुर्धं ७ इम्र मार्चे, दम दक्शान व्यक्तोदक व्यकृष्टे बार्श ब्हास्ट इहेरदरे भुक्द्रीर साहारकहे নিয়ত প্রিমাণে মন্ত্র ভাষ দেখিতে পায়, বাহা-তেই একটু অসাগায়ণ শভিজ ও ডেজ নি**রীক্ষণ করে**, खाशतक खमनि त्महे :मवा मरभव निवया शदि-कड़े कवाहे वृत्ते हम (ध मर) ८७ व-সাহল ক্ষে শানী প্রভাকর ও আগ্রাক, প্রচণ্ড প্রান্ত:র বিশিষ্ট मायदक 'अनद्भव व्यक्तिया क्रीयन गर्ख मान एदक वालि आर्थ ने समुष्टरक जनः सारमाय घटनाम मामगः कारिकी उद्योश प्रकीशिक 😉 मदनास्त्र किन्नम नर्मन 🗆 क वि द्विष्ठ हम्मगाक मञ्जू आफ्रिम कार्तातम লাও প্ৰায়েও কেটোৰে ক্ৰিডেই

(क्षेत्रचा: भाषाचा)

...कराजा हुँ **द**ाकार

गरवाभवात ।

नाम कि नगरत तम भाग नाम कुकति श क्रमण के मरणाशिय नियाग्छ। मणा के शिक्योल। नाम क्षेणुक दोन्य किया, जावल महस्त्राच करमणीय कावाब केशामना कार्या मणाम कित्रान कार्य कर्यानिय नियद कहेटक केशाक किश्रुक खरमा मणानम क तक खामाणियां दोक्याणी भुक्राक्य नाम्य कर्यानिय भुक्रक तक्रमा किश्रुक किया कार्या कर्यानिय भुक्रक तक्रमा किश्रुक किया कार्याक खाला कि दोक्यन किया कार्यात क्ष्म क्ष्मिक कार्याक भूक्या यात्र ना आकारनदा मकापिर्यंत क्षांक व्यक्ति मध्य वित्रक बुद्देगाहरू क्ष्मान क्ष्मिक क्ष्मिक क्ष्मिक मध्य वित्रक बुद्देगाहरू क्ष्मान क्ष्मिक क्ष्मिक क्ष्मिक क्ष्मिक क्ष्मिक क्ष्मिक क्ष्मिक व्यक्ति क्ष्मिक क्षमिक क्ष्मिक क्ष्मिक क्षमिक क्ष्मिक क्ष्मिक क्षमिक क्षमिक क्षमिक क्ष्मिक क्ष्मिक क्षमिक क्षमिक क्ष्मिक क्षमिक क्ष्मिक क्ष्मिक क्षमिक क्षमिक क्षमिक क्षमिक क्ष्मिक क्षमिक क्

नरम मंगत्र के जिलेश लाली अबर भाषाता के है।

युक्क कांद्रा बर्ग मंदर अकहें। जा कांक्या के क्षांक हिंच स्था कां । माग कांकि हिंक भ्यारक त विर्मा विद-त्र कां कां के हरेल लाक्रेक तर्प के उपाइत विद्या कांकि हरेल लाक्रेक तर्प के उपाइत कांकि के कांकि कां

निष्ण क्रीष्ठिक् । इतिस्व सक्त श्रुटक्के, न्तिक्रकात क्षेत्रका निर्माण क्षेत्रका क्षेत्रका का प्राप्त निर्माण क्षेत्रका क्षेत्रका का प्राप्त निर्माण क्षेत्रका क्षेत्रका का प्राप्त क्षेत्रका क्षेत

ক্ষুকুটনেৰ ক্ষেত্ৰ হার্য হছন। আৰ্থি নিয় বিশিষ্ট হানে চিত্ৰ নিয়াবিট্যাত সমূঠনে চিত্ৰ হ ক্ষুক্তম্মতিক।

बिहाक वाकत्मित्र हाना । भागमत् भूरकतः हः । ६ । (१८) ११ । ११ ।

জীপতা দেৱন্দ্রনান সংখ্যারৰ সময়ত বিষয়ে (
তেনে (স্থানিক)

জীয়ত স্থান নাম ঠালুমরর গৈতির ভাষাক্র ছে। স্থান্ত প্রায়োগ স্থান স্থান স্থান ক্র

श्चित्राणाः व्यापः १५६मः सद्भागातः । १५ मात्रः । । अन् १६३३)

শীয়ুকালকশন্তক তাওলিও পুলের সংগ্রেকটা ভ নামকর্মার বিক্রাকীর হ

अधिपूर्त स्वयुक्ति। ल तः १ पुरस्ति स्वयुक्ति।

(। वितिद्वीका)

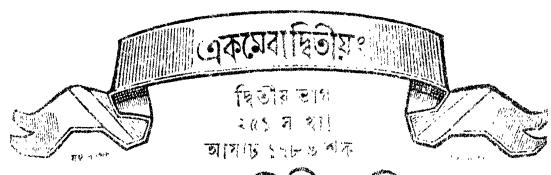
শ্রীপ্রক প্রস্থান ক্রমের সংগ্রেমর প্রজের লাগকরণ ।

(নাজপুরার হ

भीतुम्ब अक्षर्यूमाव मन्त्रप्रतिष्य कमात्रतः अत्यक्षर्यः अस्यान्त्रस्य (कस्ट्राह्यः)

क्षियूक विद्यासमाथ केष्ट्राहरू श्रदान काल्यकाः स्थापकृत्यः (देशकाश्रदकाः)

शिक्षक नावमाध्यमात्र गरमानागारावयं क्यांति व्या	
ভেৰুৱ প্ৰামক্ষণ (বোড়াৰ চৰা)	STATISTE STR
अपूक्त कानीना॰ म्टडन लिखात आहा।	
স্থিত উপ্পদ্ধ সংখ্যা পিডামহীর প্রান্ধ।	
allowed to your town town to the first collection of the	A STATE OF THE PARTY OF THE PAR
भारक अक्षानागास अक्षानीय निषात जान	ा भारति स्टब्स् स्थापात्र । भारति स्टब्स् स्थापात्र
with the same of the same and the same and the	TO PRODUCE PROPERTY CONTROL CANDED
	त्रक प्रतिकाश्च प्राप्तिकार्तन
প্রিক কার্কণারের কার্তার আবার আবার আবার আবার আবার আবার কার্বার বি	A first grown and mark mark thinks
() A LANGE ()	Francisco et tradition forme
भोगुक नीजनाथ श्वचनावश चित्रागरण्य भागः ज्यान्। (नेत्रमादेश व्यक्ति	i managaman -
	209110
भित्रक प्रकास राम (स्वाद्ध प्रदेश विवाद । १ मी वर्षाओं)	মাসিক দান। শ্রীমুক্ত কালীদাস পালিত
ন্ত্রিপুরু হল দুর ১০৯০ না প্রদূর্য ক্রান্ত বিষয়ে 🗀	2.3 mod 21 months and the
्राष्ट्रीय यह देश १८७० । विश्वति सम्बद्धाः स्पर्यास्य । इ.स.च्या	THE CHARLES OF THE CONTROL OF THE CO
अधुक ताक्षात्रका भूत कर्मात विश्व	ि क्षण्यास्य श्रीमा । १६ त्याच्यास्य श्रीमा
(४५६ में सम्बद्धाः) (४५६ में में सम्बद्धाः)	Activities at the contract of
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	ি গ্ৰিক্ত বিদ্যাস্থিৰ দি
भोधुक एक्षण । १९५४ ए हास् (स्वामी १५४)	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
many of the second of the later of the second of the secon	. I will de tilbert fan ster
The second secon	Maria and Latifulla.
May consider the property and	the state of the contract of the state of th
वर्त्तिक क्रिक ने प्रकृष कि व्यक्ति व्यवसारिक क्रिका।	किंदिशासिक ने भेकित
the second of administration of	भी भी के कि कि स्थाप के प्राप्त के प्राप्त के कि
· · ·	ि देश के बाक्ष मा
· 如何可以行言 通行時代間行為什 ~ 1000 可见如人	the state of the s
·	
海中國軍 地 "然不 不 (1 1) 51 年 "神明"的	ल्यानकराज्यात । स्तर्भः
अनेर्या प्रमान्य नास निवनम्।	相待要 代目物生物 网络鸡门鱼
N . 1 . 1 . 1	े अक्षण्यम् सहस्रान्यस्य
national states and the states of the states	一个人们的时间 对话
280 9145	(80)
	अक्यांसींभ स्व
	्रकार्य का का सम्मान का का का (का भारता) ।
শেলাপু (সিংগ্রাকার নিজেপ্র) । প্রশাস পশাস্থারী	Chima King Land Com
作業性的、明月の初に、 こうしょう シェージ 海底線 こ	
· 一直 100	अभितास लेकात ।
To the state of th	विष्युष्य क्षुष्णराजायम् एक्षा ।
স্থাত্য তেওঁ লেভিক্লাভ সাম্বর্গতিক দান।	नामाधार, भारतामाधार १ १७७०
किंदि १ १०१ में व्यापन स्थापन के अपने स्थापन स्थापन	1
關於一大行為性的 化二种类性 排除性 一一一一一一一一一一	AT THE
्रे क्रिक्स्पृतिक के अञ्चल का प्राचित्रक राज्य स्टब्स्प्रेस्ट्रिक्स्प्र राज्य स्टब्स्प्रेस्ट्रिक्स्प्र राज्य स्टब्स्प्रेस्ट्	ी के
the matter of the same of the latter of the	विभीष भेगदः नागवज्ञाक न्यदिकार स्थिकः ।
The programme of the second	南海州市 (2017年)
536.	नामानिकास
The responsibility of the second of the seco	विश्वा विश्वा
स्थाप करणा है। इस स्याप करणा है। इस स्थाप है। इस स्य	जाम्बार्यका भाष्ट्र भाषा १४
or enter hitself	व्यक्षात्त्व कार्यात्मा (बार्य) : ५०%
The second of th	गर्दोमभारा
	गर्दोममात्र ए।ए पुरुष विश्ववर्गः
The market will be a server the first freeze	The state of the s
MAC HISTORY	• इति भिन्ने अविकार भूना निक्रान
ंब्रिट्स असे तर्प	का अभ भना । कानका कार्य कार्य ।
ंश्रिकार असे शरण । अधिकार असे	्रेश (स्थापात कामा)
	The state of the s
一片 一本情報 南东城市 建槽槽 人。 一、《门中门》 第二次	
· 性 · 力持續分別式的 推荐符 /	Contract to the second of the
一片 一本情報 南东城市 建槽槽 人。 一、《门中门》 第二次	THE RESERVE THE SOLE WINDOWS AND ADDRESS OF THE PARTY OF



- जबवारनी थांनेना

्रभार द्वार्तास्त्रक्षात्रकार्त्रम् । हेन्स्कार्क्षे द्वानिक काकार क्या । एद्वार विराण देश, निर्देश कार्त्र ए रक्ष्ट्रिन हरिया । रक्षा १ कोर्ग काक्ष्राद्वार कार्यान थ सम्बद्धियामस्त्री ए राज्य रेज्य । स्त्र विद्यार कार्यान एक्ट्रिक स्वार्टिक रोजन क्षित्रकार सम्बद्धित ख्रांकार १८८ विकार दिस्ता के रक्षे रक्ष्र विद्यार देश

इ।लश्रसार के शामः

() Tall of State のは存在している。
 () とかしたましたとなった。

四月日 日下 中 事事事

भागाः कामानसर्छ नामा-दरः मद्रशासीस्थायमस्या भागाः भागाः शीटास्मास्य दिनिशाः धुःसः मसुद्रमिष्ट् म थार्थन्यस्य ॥

বালকের।—নিক্রেন্ধেরা বহিন্দিন্দ্রন্ত প্রতি মনকে থাবিত হইতে দেয়। তালান মোলাজন হটমা ইন্দ্রিয়ের বিষয়—ক্ষ্ম কামনার বিষয়েরই পশ্চাহ গমন করে। 'তে মুডোনি,ও বিত্তদা পাশং' ভালার বিশ্বীণ মুকুর পাশে বন্ধ হয়। ভালারদের অমৃত লাভ হয় না —ভালারা সংসাতের আ স্থায়ী ক্ষমনীল ফ্ল বিষয় স্থল লাভ করি। ধাই ভৃষ্টি পাকে। কিন্তু বীরের। দেই প্রব

राष्ट्र का शिक्षा नात । । । स्ट्रिक्ट राष्ट्र का स्थान । । । स्ट्रिक्ट का स्थान । । । स्ट्रिक्ट का स्थान । । । स्ट्रिक का स्थान । । । स्ट्रिक का स्थान । । । स्ट्रिक का स्थान । स्ट्रिक का स्थान । । स्ट्रिक का स्थान । स्ट्रिक का स्थान । । स्ट्रिक का स्थान । । स्ट्रिक का स्थान । स्ट्रिक का स्थान । स्ट्रिक का स्थान । । स्ट्रिक का स्थान । । स्ट्रिक का स्थान । स्ट्रिक का स्ट्रिक का स्थान । स्ट्रिक का स्ट्र

আছে, নিম্প্র আছে— সুযোর আলোকপ্র আছে। বলনীর অধার্থ আছে। সেই কল এখানে ক্রাঞ্চল আছেন, বিষয়ীও আল জেন এখানে ক্রাঞ্চল আছেন, বিষয়ীও আল জেন এখানে ক্রাঞ্চল করিছেছেন বিশ্বালি দিলালে করিছেছেন বিশ্বালি দলে সংস্কৃতি আলোক্ষণ আলোক্ষ করিছেছেন বিশ্বালি গালেনেশা, ভালোক্ষ মানু বিশ্বালি গালেনেশা, আজেই মানি বিজ্ঞানিক ক্রাঞ্চল বিশ্বালি গালেনেশা, আজেই মানি বিজ্ঞানিক বিশ্বালি বিশ্বালি প্রস্কৃতি বিশ্বালি বিশ্বালি প্রস্কৃতি ক্রাঞ্জ্লা, হলা নিব্রালি করেনেশা, আজেই মানু বিশ্বালি প্রস্কৃতি ক্রাঞ্জ্লা, হলা নিব্রালি করেনেশা, আজেই স্বাঞ্জ্লা, হলা নিব্রালি করেনেশা, আজেই স্বাঞ্জ্লা, হলা নিব্রালি করেনেশা, আজেই স্বাঞ্জ্লা, হলা নিব্রালি করেনিশা, করিবল প্রস্কৃতি ক্রাঞ্জ্লা, হলা নিব্রালি করেনিশা, করিবল প্রস্কৃতি ক্রাঞ্জলা, হলা নিব্রালি করেনিশা, করিবল করেনেশা, করিবল করেনেশা, করিবল করেনিশা, করেনিশা, করিবল করেনিশা, করিবল করেনিশা, করেনিশা, করিবল করেনিশা, করেনিশা,

रिश्रम श्रीक प्रतम्य लच्चा चेन्स्त खाहार লেক্ট উপুৰি ৮ - ত কেনে জন্মক পদ্ধান্ত মানুনের মাজ জনজন কেন্দ্র বর্ল 💢 হা ভিবেদের 羅賴語 粉稿 经工作 医二氏红斑 医红斑 网络 क्रोर अध्यक्ष देश्य एवंदर अधिक अधिक अधिक के संदेशक (देवरा स्थान लाइसन छ्रात्र करता) জে (ক্রি) আলোল আনু বিদ্যান আৰু ব্যাস্থ্য প্র (甲丸、丸) (甲丸) 引强(交) 例(四)中的 (十世間) 李阳(1) 南西山 野山西京(富分配 五川野河 [春 ·新香香的 林飞香的 2 · 唐·书子 · 李珍的女。 2 · 解醉解 रस्य 👉 क्रान्ट्र, ज्ञानीय अर्थि 🗝 "सि बाब एर्क संभावत् १,००० छन् प्राप्तिनातः विश्व भिराद गण भगपर जासुक्त प्रतिक েহামারি ৷ - তাংগোর এম আম্বরিক আর্থনা नरम भून इस, ७५२ हो इति इन्हा इही उ ক্রজন্মরে^{(ন্}র বিজ্যাত হইয়া **ঈশ্**রের চরতে ধ্বিভ হয়। বেমন উ।র বিষয়-তৃ-মাল নির্ভি ২৪---**যেমন** তিনি **সংস্থামূত** লালে তাবেল বেমন ভাঁহার স্থাশন্ত **প্রদা**র আছে: ১ ইপ্রকে বিরাজিত দেখেন; ভিনি अक्षार्थः ११६। त्रक् कद्रमः " आक्षार्थाः। ला कार्या । - जाक्या जायां प्रा, कार्यामा । অংশ্যান ভোমার করুল্ন-ভার্মি কে গ্রে শান কে ভূমি দেখা। দিতেছে 🔭 ভিনি ক্রত-

অভা কোথায় রাখিবেন, কি প্রকারে ব্যক্ত করিবেন, তাহা তিনি জানেন না। তাঁহার প্রেমার্ক ক্ষয় ঈশ্বরের মন্তাতে পূর্ণ হইল— তিনি কি করিবেন, কি বলিবেন, কিছুই স্থির পান না।

পর্যা তথ্য তাঁহার অনুক্র। যে ধর্ম আফারনের এই পৃথিনীর অন্ধ — যে ধর্ম স্থানি বন্ধু— যিনি আমারদের হস্ত বারণ
থারিয়া পারম পিতার নিকটে লাইয়া গাম,
মোই বর্ম উহিলে স্কেশ ও মন্ত্রী । তিনি
উলি মান্তরে হস্ত দিয়া লগেল। আলাত কি
থিনি তোমার নিকটো পোরণ কলিয়ালেন উহিলে আলেশ এই লে আলা তোমাকে
ইলার্ড্ নিকটো লাইলে শাহন । শামা উহিলে এই মন্ত্রা গাহন । শামা উহিলে এই মন্ত্রা বালেশিয়া লালে নথা বিহার অনুবামী হন দেলে শাহন নথা বিহার সম্প্রামী হন দেলে শাহন কলে বিহার সম্প্রামী হন দেলে শাহন কলে

दक्षे इंद्रिकेश प्रश्नुभन्नः दिर्दाहरू १००० करिकृत। वर्षा रथन धार्राटक भागी। ५०-खाः । व ह्यां च लावस्टातः क्या । व । य यस র্থমর বিষয় তার্ল ক্রিব্র আংশেশ ব্যাল ওখন ভাগার মনে ফে আছেশ কি কটোচ-ক্লিক স্ণিভাত কামনার (4)4 3 1 ! বিষয় পরিভাগ করিতে যে কেমন কুঠি ভ হর! সে পর্নাকে কটোর শিক্ষাকের সম্মান দেখে, ভারার মণুমল ভার গ্রহণ করিতে পারে ন ৷ সমৎসৰ কাল পরিশ্রম করিয়া यथन म छ। श्रां अतिव्यस्यत वियमस कल. নীচ প্রবৃত্তির পাপ-দ্রাদত বিষয়, লাভ করি-বার জনা হস্ত অসার্গ করিতেছে—ধর্ম বলিতেছেন, মিধা৷ সাক্ষ্য, প্রবঞ্না, শঠতা পরিত্যাগ কর, এখনি পরিত্যাগ কর— অ-নার কপে পর-দ্রব্য গ্রহণ করিও না—নি-

র্জোনকে ছুর্জনকে প্রীড়ন করিও না—পান-एग्स, वाक्तितात एग्स जांत्र कत- এই भक्न আদেশ তাহার প্রবণে যেন বজুপতি হয়। याङ्ग्रा मर्व-धारञ्ज विषय-सूर्यदक्षे मर्वा করিতেছে, তাহারা ধর্মের জনা তাগি ক-রিরেও মূত তুলা হয়! ''ধর্মাং চর ''ধর্মা-भुक्षान करा, এই अर्थ-भूर्व श्रुक्र जा जारमम ण्डिति एवं निकटिं अटनक गमत अर्थ-ण्ना माजुर्देशिक कञ्जा । उद्योगात्रा भागात्क परार्थात कना, জ্পতের জনঃ আব্বিজন করে না, ভাছারং অপ্তায়, সুধ জায়— সাংখ লভে ক্ষভির विष्धारहबुडमां कहता। धरे छमा प्रया छ। স্থানের নিকট কলেবে ওক্ত, ভাইবেদের স্থ সালে ক্রতভারের বিপ্রবারী ৷ ভাইরো भारतन समार्थ यदमात शृष्टम अन्तरमानि ব্কাসকল অব্যান্ম করিল সহা ভগালি 型一個一個可以

বিশ্ব গ্রির শ্রেনির, রক্ষা থাইর লক্ষ্য,
বিশ্ব দি হার গায়ন্ত্র হাইরা উহারই প্রাথ
নার প্রিরেশনেক উলের নিক্টি অনিয়া
দেন। শ্রেনিক জনের ক্ষেত্র শিক্ষণেক
আরি এক জনের ক্ষণেকর । করেন জুই
জনের লক্ষ্য মন্ত্র বিশ্রীত। একজন
স্বাধাপনত। চরিহাপ করিবর জন্য সংসারে
ভ্রমণ করেন, আরি এক জন সিশ্বর-নাড়ের
ভিনেশে সম্যার-ধন্য প্রেন করেন।

যাহরেদের ঈশুরেতে বিরাগ ও বিশযেতে অনুরাগ, ভাহারা স্বীয় হৃদ্ধে ঈশ্বরের আনন্দ-কপ অন্ত-কপ দেখিতে পায়
না। বিষয়-লোলুপ ও নোহাল্ধ হইয়া পাপাগ্লিকে রন্ধ বোধে এহণ করিতে যায়, দক্ষ
হইয়া কিরিয়া আইদে। মস্তকে ধন্ম-দণ্ড
সহু করে, ঈশ্বরকে দেখে যে তিনি উদ্যাত
বন্দ্রে ন্যায় ভয়ানক। ভাহারা অন্যায়াজ্জি ভ
সম্পত্তি ও পাপ-প্রের্ভিকে বিসক্তন দিয়া
তাঁহার শরণাপন হইতে চাহে না, তাহারা

ভাঁহা দ্ইতে দুরেই যার এবং দুরে থাকি বার অভিনাধ করে—স্তরাং নির্ভন্ন হনতে থারে না, সংদার-মোহে মুগ্ধ থাকিয়। শোকই করিতে থাকে। ভাহারদিগকে এই সকল যত্রণা ভাড়না কেন ভোগ করিতে হয়। ঈশ্বরের অভিশার এই যে ভাহারা বিষয়-স্থেমতেই তৃপ্ত না থাকুক। ভাহারা আপনার হীন লক্ষ্য পরিতালে কর্কে। ভাহারা প্রতাল সক্রক। ভাহারা প্রতাল সক্রক। ভাহারা ভাগন প্রতাল কর্কে। ভাহারা ভাগন প্রতাল কর্কে। ভাহারা ভাগন প্রতাল কর্কে। তাহারা তাহারা তাহারা ভাগন প্রতাল কর্কে। তাহারা ভাগন প্রতাল কর্কে। তাহারা ভাগন প্রতাল কর্কে। তাহারা তাহারা তাহারা তাহারা ভাগন প্রতাল কর্কে। তাহারা ভাগন ভাগন প্রতাল কর্কে। তাহারা ভাগন প্রতাল কর্কে। তাহারা তাহারা ভাগন প্রতাল কর্কে। তাহারা ভাগন প্রতাল ভাগন প্রতাল কর্কে। তাহারা ভাগন প্রতাল কর্কে। তাহারা

विधास भाषायातमा हामा, स्टा हिला ह काशहरकत भी विकास । (राजनीर थर दक्ष वन विषय स्टब्स्ट भारमुन । भिन्तो वनक মুকুরে গতেও পুথিবীর পলিকে করে। সইয়া হালিজে লাজে। জিলি মূলি জগত্য 🏥 ৮% विवस स्थय श्रांति कारण सर्टन्स--। यो ग्रांशिद्यव क्रमा मका श्रीतरासर क्रमा करणांत्रक वेशकोत कर्षान, जार्य भग्रय चा स्थान राज्य ता उत्थासन দ্ৰূপ আৰু জন্ম ক্ষিত্ৰে সুব্ৰোৱান্ত ভাগানু ক্ষান্ত राण निषय ना ७ इत्यान । १७% म् अत्राहान काम नार्य क्या क्रमा र र प्राप्त अवस् राजिक र्रिकारक विश्वास राज्यात राज्यात है। कृष्णम । "उपानीसरमह क्षेत्र प्राप्त के के किया है कृताः। जन् कर्रे खाक्रदाम कादण--" পরাচঃ কার্মান্ত্রাক্তি ন্রাংগ্র ক্রেছ, হবি निष्ठमा अर्भशो। (सहस्रातना वश्किस्त-बद्धत्रे लक्षा संत्याः । इतः विकीनं মৃত্যুর পালে বজ ধ্যা ।

কিন্ত নামান বিশালনের হিন্দানা, কি আ-ভিলাষ। তেনি এক্লিয়া করিতেছেন স্থ-নোতে স্থানের সমল মূর্ত্তি দেখিতে পাই-বেন, ভারতেক বিশুক্ত প্রাভি আরেণ অবিক দিতে পারিবেন। ভারার জন্য এক স্থল নয়—দেব-লোক হইতে দেব-লোক তাঁহার क्रमा श्रञ्ज विशाहकः; উरक्करे ज्वान-श्रीजि-সমস্থিত দেবতা-সকল ভাঁছাকে প্রতীকা করিয়া আছেন ৷ অনন্ত স্বৰূপ ভাঁছবৈ লক্ষ্য — সন্ত কাল ভাঁছার জীবন। তিনি স্বর্গ ≠২তিক স্থা-লোকে জনিকই **ঈশ্বে**র স্লি-**्रिक क्षेट्रक थाकित्वन : व्यक्ति फिनरे कौरा**त भाकारमञ्ज्य ४ केट्ट। ध्यामहा अहे अर्थाटनके প্ৰশ্বৰে জ্বীতি দান কৰিয়া য**ত টুকু আনন্দ** সপ্তভাগ করি, যাদ ভাহার এক মাত্রা আর आभित इन, उद्भारम (ध्येम, १म आर्मनम वि भाग ४ वर्ष ६२. मा या ११७० (८५ मा १८०० ४४) : राउ स्थानलाहरू हैं। मीत अविक आनम स्हा উপত্তেগ করিছে পাইব, তাহা এ পুথিবী रहरक कि एक्कारक खन्न इस क्वरत ? आमरः कर्म स्थिती कर्षाक विभावतास्त स्थापन क्षी : एवं डेबंड करेगा गयन केश्रातन महस्र कोट्डा ताफ-कर्भ मामिति हरेव, उश्व धार्मात भारति का गास्त्र गरेता है। अहे बाली শারে লে না উচ্চন যা ্রামার্শ্র অ সার্বেদ্য মধ্যে এই উন্ত আশা পোরণ করি। ব্যালকা তিকি লিগদেশ দিতেত্বেক্ত যে আমরা উপ্রের প্রিণ সম্ভান ক্ষি। আম্রা প্রম। পিতার ভাগ-পুত নহি। আমরা অমূতের পুজ্ঞ-শমূত-লাভের অধিকারী। দেবতাদের भटक आंगोतरम्ब सभीन जानकात। आंकारम অগ্না অগ্না ক্ষাড় আৰু লোক-মণ্ডলে ন্দান পৰ্যা প্ৰীতিকে ভয়ত দেবতা-সকল যা-প্রমাহমা সহত্রে পরে পান করিতেছেন, ভাষার মত্ত্রে আমারদের নিতা কালের যোগ । এই সময়েই বধন **আমারদের স্তুতি**-গানে আকাশ পুন কইতেছে, এথনি কভ ক্ত ১ছন্ডিকাৰ গোক হইতে **ঈশ্বের ম**-হন-প্রতি মারিত হঠতেতে। যে যেখান एडेएडर इस्ति भुक्त करत, मकन शूजिंद ভাঁহার প্রকাল ওক্ত কইয়। মি**লিভ হয়।**

হে পরমান্ত্রন্থ । আমারদের থতি ভোনার কপা বিতরণ কর। এই বন্ধ দেশের দীন হীন সন্তানগণ পাপেতে মলিন রহিন্যাছে। যেখানে দেগি, লোকেরা ভোনাকে ছাড়িয়া কেবল বিষয়-স্থথে উন্মন্ত রহিনাছে। হে পরমান্ত্রন্থ উন্মন্ত রহিনাত ভাবে প্রথমা করি, তুমি আমারদের ক্রম্যকে পরিত্র করে। ব্রাক্ত ধর্মের উন্নত লক্ষ্য সর্বত্র প্রকাশ করিয়া এই বন্ধ দেশের দ্বিত ভাব পরিস্কার কর। হে নাথ। তোমা ভিন্ন আর আমারদের গতি নাই।

उं এकस्मवाधिकीयः।

बीग-िछ।!

भगन्त्र अन्य-एकरान जनः भीनव-कीनरः भक्त मगर्य ५ मक्त व्यवस्टि केश्टनर মাজ্য প্রকাশিত ব্রতিয়াকে। প্রকারন ञ्चममः मध्य जि र तम छ-भगीतव कु स्वीं र विक् কিন্ত্ৰীটি স্মান্ত শক্ষা বহন কৰে ওখনও জ্ঞান महिमा, आंत अपेस (श शतन धीम जाइस)त विकलाञ्च ७ मेथ्य (भर) इस्मा भृशितीत সমস্ভাব হাহাকার করিচেছে এখনও তাঁহার মহিমা। যথকালে কাট-সাধ্য ধলা-ত্রত প্রাণন করিয়া প্রশাহ চরিত্র ধার্মিকের क्रमग्राकारम यानमः (क्रां प्रका शकां भट হয় তথনত ভাঁহার মঙ্গল ভাব, এবং আল-প্রামি ও অনুমোচনার করাবাকে আকুলিত হুইয়া পাপী ধুখন হা হতে পিয় শব্দে ইভ স্ততঃ ভ্রমণ করে তথনও তাঁহার মঙ্গল ভাব উজ্ঞানপে প্রতাক হয়।

এই ভয়ন্ধর প্রায় কালে কেন্ত কেন্ত্রিনম অসভাপে সমস্ত রাত্রি জাগরণ করত স্থেদ-সিক্ত শয্যা পরিত্যাণ করিয়া জুর্বল কুর্মা। ক্ষম শরীরে প্রাতঃকালে গাজোপান করি-

लब, এবং जानम्या जाकूल हहे से जर्ज-মুক্তিত অবসল নরনে বারছার ধরাশারী **इहेटक लागिटलन। कान कटमहे निवांत**-•ভের মধুরতা উপলব্বি করিতে পারিলেন मा। क्रम्ह कम् वा नाइस्य यामिनीत मकन क्रिम निवादन मनिटम व्याज्यकाटन वह कन শ্যাবলুঠিত হইয়া অধিকতর নির্বীর্যাও নিজ্যুভ শরীরে নিতার অনিজ্য-ক্রমে দি-বদের নিয়মিত কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতেছেন। ध्यश्रत (कह तकह ममस्य तकनी छेदमत-तक।-लाहरल उग्रेख हिर्लिन, এवर अयुद्ध कराना আমোদে শরীর-মনের তাবৎ বল নিঃশেষিত করিয়া, অধোবদনে, মৃতকম্প শরীরে, লজ্জা अ ब्रानिशूर्व इनरव, अकर्ष वाशन। निर्धित क्र रुविद्वार विषय भावन कतिरुव्हिन। था-কৃতির প্রফুল মুখ ক্ষম অবধি মুখন ও বি^ষধ বেগৰ হইতেছে। স্বীয় অধিকার-কাল আরম্ভ ন: হইতে হইডে কুপিত বিভাবস্থ সহস্ৰ াৰ্থময় খাত্রন্মিজাল জারা**অন্মতে বস্তুস্করার** শান্তি-নৈশভ্যকে বিন্দী করিতেছে। উযার শিশির-হার ছ্রাব্যনকে পরিত্যাগ করিল, পकिशन नीत्व इहेल, धवर मदमा भार আহলকুল্লমরাজি অকালে মিলমাণ হইযা পড়িল। ক্রমাগতই দিবমের ভারস্কর ভাব র্জি হইতেছে! গ্রীমাজজ্জারত অবদন্ধ শরীরে, হে সর্বনঞ্জনময় প্রম্পিত। । প্রাত-দিন প্রাতঃকালে প্রভাক ব্রাক্ষ প্রেমাক্রপূর্ নয়নে তোমার স্নেহ্ স্থরণ করিতেছেন, প্রতি তেছে, এবং সকল তাপ সকল ক্লেশ বিস্ফৃত হইয়া প্রতিজনেই অন্তর-জগৎ-মধ্যে বসস্থ-শোভা সন্দর্শন করিতেছেন। তুমি ভক্ত-वरमन-मीन भवन, जूमि धनी निर्धन मकटलवरू বিমল বাসনা পরিপূর্ণ করিতেছ, ও সকলের শারীরিক ও মানসিক ক্লেশ নিবারণ করিভেছ। त्र नाथ । (कामोदक धनावान कति ; कीवदनत

ছৃংখ-ছতাশনে যেন তোমার প্রসাদ-বারি আমাদিনের আত্মার পতিত হর, এবং যথন পাপদক্ষ অনুতাপিত ও নিতান্ত মুমুক্ হইব, তথন যেন তোমার প্রযান মুখ দর্শন করিয়া নিরাপদ্ এবং ক্লতার্থ গইতে পারি।

अरे बीश कांटन स्थांक नमश्रक ভয়ানক! প্রচণ্ড রবিনিঃসত অগ্নিক্র লিক দহনে সমত্ত জগৎ-ক্ষেত্র দাহামান হইয়া **छेठिल,** काठाव माधा विङ्डीटश করে। চতুর্দিক নিওক, পশুপকী নীরব, পথ ঘটি জলন্ত অঙ্গাবদদান উত্তপ্ত, এবং गद्यांच्यमानन वियम छेक महोशा छेठिएक एछ । मकल इ नीतन, किनल भएषा भएषा मृहिष्डिए इरकालविक निकान प्रांत नेपारमत स्वाद **স্চক শব্দ আকাশ**েচন কবিয়া অণু কৃষ্ট্ৰ অবেশ করিতেছে; স্বর। কোন শেরি। दूरा अनेनी खेकारिकानी अनावृत्व नद्यायत् **ঠিত হ**ইয়া **প্রাণ্যম** প্রেল্গ বিখোগ ব্যাপার স্মাবৰ কৰিতেচেল, এল চুলিবান্ত শোক বের মমরণ করিলে অকল লেইন ব্রেল্র **উटेकः य**टत ७३ कर्ण वित्राण कविरुग्धनः ভাঁহরে রোদনধান মলে মংগ্র জনক্তরে অবিষ্টি ছইডেছে এবং জনগ্ৰে জান্ত্ৰ क ब्रह्म । अहे अधीव मण्डा ३० शह-মামান্। আমরা কোমার শ্রাণ্ড ১টা ब कर्न ग्रीमंत्री रक्षांमारक क्रमरत व्हान किंग्बा ममुख्यमान प्रश्न কার য়াডেন व्यानाम প्रतिभूगं दक्षिण्डन । जिंक नशानत वाख्या ७ कर्मात्मानाश्तमत्वा, क नज़ी-আমন্ত নিজৰা গভীর শাভিমানা, কি মান গরবক্ষঃস্কিত পোলেনলে, কিন্তা ড় অর-लाइ विकास ग्राम्बन्स्याला, व्यक्ति ভাঁহার৷ অবান্ধতি করিতেছেন দেখানেই সাধ্কমজনিত নিকা শাখত ত্থা বড়োল করিয়া তোমার নাম কীর্ত্তন করিতেছেন। अहे कोटनत मटक अवश्भृद्वात मटक निश्

मामुना लक्षिक इष्ठ, हेरू। यम नित्रकर मृजादक न्मात्न क्रियो निटफर्ट । मृजूत मिखक नीतव অসংগর ভাব বেন ইহাতে মুক্তিত হইয়া त्रश्रितात्ह। हेकात नाति मृजूात गमत गकन हे নি মন্ত্র ও গভীর। এক্ষণকার ন্যায় ছৎকানে महीत व्यवमञ्च ७ विकल इहेरव अवः ममरत ममरत्र ऋषु अस्म। मत्या वित्र পরিজনের রোপনধনি আভিবোচর হইবে! আত্মা ८म्डे ज्यास (भाव शत (मात्कत पिटक) दीत्व बीत्व अभन क्षित्य, अवर मज्य छ একাগ্রচিত্তে স্বীয় কর্মানাকল চিন্তা ক-রিতে করিতে মেই কেন্দনশব্দে চাক্ত क्षेट्रा मः भर्त्रधन्कृति **अश**्कृत्यम नीत् কাবনভরুকে প্রভাগে করিবে এবং মান-শুষ্ক ও সৌরভ বিহীন চইয়া পৃথিবীর ধূলিতে প্তিত ছইবে, বিলেশ বিদেশ বোধ হৃহতে, স্বদেশ স্বদেশ (বঃ৭ চইবে ে প্রাপ-ছার্ডাশন महत्व **७%-**अन्य ३०व (कर क्रिके क्रिके विभावन " श । (रायाम वागिसां हिलांस, কোনায় গদন এলিডেডি, কাছার নিমিস্ত, কিদের জন্য এও দিন পরিশ্রম করিলাম? का। अबे ज्ञामध्य अक विन्धू माखिवाति मान क्रिशा अधे निराध्यय विटमशीत यखना কি কেছ নিৰ্বেশ করিবে না ২ বফু-বান্ধব-ক্রা-পুত্র কেবার র**হিলে? কে পতিত-পা**-বন ছ্ৰীডন জীবন প্রমেশ্বর ৷ ভোষাকে विमा ७ इटेरा शामामिरशेत जना अंड मिन মন প্রাণ দমর্পণ করিয়াছিলাম ভাহারা এই বোর বিপদের সময় আমাকে পরিত্যাপ ধ্রিল। তুমি পাণী তাপী কাছাকেওপ-রিতর্গ কর না, এই ভরসায় **আমি সন**-ন্যাগণি চইয়া ছার্থনা করিতেছি বে ভোষার নাারারুগত বাজিম্মিটে আমার অপবিত্র আত্মানেক পরিশোধিত করিয়া চরণধূলিতে श्रीन पाछ। ' स्रांत याँशाता कीवटनत मीज বনস্ত জীম সকল কালেই সমভাবে মুধা-

নাধ্য ধর্মের আদেশ পালম করিয়াছেন তাঁহারা এই সময়ে বলিবেন "যে দিনের জনা এত কাল পরিশ্রম করিয়া প্রস্তুত হই-য়াছি, অদ্য সেই দিন উপন্থিত। হে অ-• মাথের নাথ পরমেশ্বর! চিরন্ধীবন একা-দিক্রমে যে সমস্ত স্থাসম্পদ্ অজন্তমারে বিতরণ করিয়াছ ভাহার জন্য ক্রভক্ত হৃদয়ে ভোমাকে ধন্যবাদ করি। স্ত্রী-পুত্র-পরিবার, ধন-জন-ঐশ্বর্যা ঘালা কিছু আমাকে প্রদান করিয়াছিলে সকলই ভোমার হল্তে প্রত্যা-পণ করিয়া বিদায় হইতেছি, ভুগি সকলই রক্ষা কর; আমি একাকী একনাত্র ধর্ম মন্ত্রল এহণ করিয়া অনত্যের প্রথ যাত্রা ক-রিভেছি, ভুনি আমার সহায় হও।

মৃত্যুর পরে পর লোক যেরপ মধাক্ क दिन इ भव मन्नागिमन (महेनभ ? रूपा ज् স্তামত কইলো **প্রকৃতি** অপুনা শোভা ধারণ कृत्त । नडिशंग अल ममुक्तु ल स्थापित व्यव-শুকিত হয়, এবং ভাগিরখীপারে পশ্চিম দিক্ মহাপ্ৰ ভূমীল পীত গোছি গাদি বিধিধ বর্ণান্ত্রপ্রিক্ত স্থানন্ত ষ্বনিকার স্থানাভিত হয়; পরিশ্রান্ত বিভাবস্থ তাহার অবরালে নিষ্কু শ্ভ হয় এবং প্রকৃতি রক্ষভূমিতে ভূতন মূতন অভিনেতার সাবিজাব হইতে থাকে। শোভনতমা স্থকুমারী মেদিনী ছরিদ্দরে পীতজ্ঞটা ধারণ করে, মুকুলিভ সন্ধানুকৃষ্ণ একে একে अक्तूष्ठि इत, घन-शिक्षानिक विश्वक मकिन मभीवन ह्यूफिटक ध्वतिहरू হয়, এবং নিজ নিজ বাসরুকে বিচিত্রকার क्रूक दृह्द अकल विहत्रम একতে लिख कनत्व वांत्र करत्। এই ममस्य भत-লোকের ভাব সারণ মা করিয়া কে নিরস্ত ধাকিতে পারে? ইহলোক ও পরলোকের মধ্যে মৃত্যুই ব্যবধান। স্থ্যা বেমন পশ্চিম আ কানে অক্তমিত হইয়া অন্য স্থানে উদিত হয়, तिहेबले की बटमत्र भीन जीन नित्रिक्षम नोज

করিরা ধার্ম্মিক জনের আছা মৃত্যুববনিকার অন্তরালে অভিক্রান্ত হয়। স্থ্যান্তসময়ে পশ্চিম আকাশ যেৰপ দেদীপ্যমান বোধ •হয়, ধার্মিক আত্মার নিকট মৃত্যুও ডক্রপ বোধ হয়, কারণ মৃত্যুই উজ্জুল ব্রহ্মধানের व्यटंबमदात । अर्गीत आनम्-ममीतर्ग धा-শিক আত্মার পবিত্র আশা-কুন্মন বিক্সিত হয়, ক্লয়ভার লঘু ছইয়া যায়. প্রীতি নবীন तिन शह्भ करत, अन्ना चिक्क व्यनिवारी। বেগে উচ্চলিত হর, এবং তাহার কণ্ঠ-নিঃস্ত ব্ৰহ্মনাম ममञ् অমর-লোকে প্ৰতিধনিত হউতে থাকে। এই ৰূপে বীত-শোক, বীতপাপ, হৃদয় ভার বিমূক্ত হইয়া পুথিবী হইতে শ্রতি দিন কত আত্মা পর-लांक निरम्जरन शमन कतिरज्हा, वरः वित्रकाल है भगन कहित्य।

কিন্তু প্রতিদিবসই ত প্রকৃতি শোভা ধারণ कटत मां। कथन कथन पिवावमादन औषा-তাপ সমভাবে অবস্থিতি করে। বায়ু অব-ৰুজ হয়, নিশ্বাদ প্ৰসাদ প্রিচালন কট্ট দাবা दरेश छेटरे, आकाम म अन अभितिक् हे मनिन বৰ্ণ মেছে আচ্ছন হয়, স্থালোক প্ৰয়ন্ত ममाक्-कर्ण पृष्टिशावत इस मा। त्रक-लेकवत ন্থির হয়, এবং পক্ষিণ্য নীরবে আকাশ-योर्गमधा निज्ञा च च कूलांद्य शनोधन करत। গভীর ক্লফবর্ণ পর্বভায়তন অক্সাং स्मयमाना पनवक रहेगा चाउतीरक रवटन विष्ठत्रभ करत, अवः निरमस्यत्र मरया भृषिवीरक স্বাকারার্ড করিয়া ফেলে। প্রধার তেজ-विभी विश्वास्त्रका मर्गीकर्तात मात्रिकरन करन ৰহিৰ্গত হয়, এবং দকল লোক ভৱে ভটক হর। পরিশেষে অতীব ভরত্কর নির্ঘোধিত नम्बिनाहादत थन्त वाद्या পृथि-বীকে ছিল ভিন করিয়া কেলে, ভক ভ-त्री जनमध रत, कड कड मराम् इक तम्रत ধরাগাৎ হয়, কত অটালিকা চুর্ণ হট্যা

বার, কত লোক হাহাকার করে। পাপাত্মার জীবনও এই পাকার। যতই জীবন তাবদান হয়, ততই মৃত্যু তাহার নিকট ভরঙ্গর বেশ ধারণকরে। তাহার শেষাবস্থা
শোভা শুন্য, শাস্তি শুন্য, অন্ধাকারারত। মৃত্যু
নিকটবর্ত্তী হইলে তাহার পাপা-চিন্তা হৃদরমধ্যে ভয়য়র বেশে বিচরণ করে। পারে সে
যথন পার লোকে উপস্থিত হয় ও পারমেশ্বরের রুদ্র মৃত্তি দর্শন করে ভখন ভয়ে
কাম্পিত হয় এবং নিতাৎ, বজু, প্রবল বাত্যা
তাহার আত্মাকে বিষম অর্দিশাগ্রস্ত করে।
সে শোকদাগরে নিমগ্রহার হয় ও নির্মেশ্ব
হইয়া হাহাকার করে। প্রতি দিন এবশ্পুকার তরবস্থাপন্ন হইয়া কত কত লোক
সংসার হইতে অবস্ত হয়্তেছে।

The second secon

তথাপি অদাবিধি একটা আলাও বি
নিক হয় নাই! ঘাঁহার অলুলির চিপে
সমস্ত্মেঘনালা, বলু, বিছাৎ কড়, হুটি গগনমধ্যে সঞ্জন করে তাঁহাবই অলভ্যা আজায়
তাহারা নিজ নিজ ছানে প্রস্তান করে।
পুনবার অযুভভারকমালা পরিবৃদ্ধ স্থাতে
নির্দাল নভামগুলে অভ্যানত হয়, এবং
মুছহিলোলিত সর্গা-স্লিলে প্রাল্থিছিচ
হুইয়া আনন্দে নৃত্য করে। ইম্বর গ্যাতে
পাপান্তার জাবন-আকাশও এক দিন প্রিশুদ্ধ হুইবে এবং তাহার ছ্রম্মন্থাতে
প্রিভিপাবনের করুণাক্ষ্যি প্রতিবিধিক
হুইবে।

হে পুণাপাপদর্শী পাবনেশ্বর। এই বিষয়
সংদারদাগরের পর পাবে নির্ক্তিম উপ-,
নীত হইবার জনা আঘোনত সনে ভোমারই প্রতি নয়ন নিক্ষেপ করিতেছি, আমাদিগের দোদসক্ষম আঘাকে রক্ষা কর।
পৃথিবীর ঘটনাবনী দেখিরা আশ্চর্যা হই,
এবং ফত সময় ভাহাদিগের ঘণার্থ ভাব
গ্রহণ করিতে মা পারিয়া হৃদ্দের বড় আ-

কুলিত হই। মন্ত জীবনকে যথার্থ পথে
নিয়োগ করিতে না পারিয়া শোকে ভাপে
কত সময় বিষয় হই, কোন স্থানেই বিশ্রাম
প্রাপ্ত হই না। জোমার নিকট প্রাথনা
যেন সকল অবস্থাতে ভোমার মঙ্গলভাব
ক্লয়ঙ্গন করিতে পারি। যথন গ্রীম ভাড়
নায় বাকিল হইব, যথন বিকারতাপে
কোপশ্যাকে নিপ্যান্ত করিব, যথন মারীভয়-প্রভাবে সমস পরিবার ও সমস্ত দেশের উল্লাম আশালা করিব, যথন ফুডিকা
লীজান জীব লাব প্রাপ্তিশালবাশ্যে হইব,
হর্মান বেন ভোমার জবিচালত মাত্রিকা
ক্রিন বেন ভোমার জবিচালত মাত্রিকা
ক্রিন করিতে মন্ত্রিকা

রাজতর্মিনী।

· 解、柳木对片 对情况是什么 () 一对神经 对法主

fateg-करन्त ग ाडरडीक तक राज्यो चिक्षत्र कर्रावर होने सर्वार्थम नामक दन क्षति अभिन काल्या हिटलाहा ाउन्दर्द**ः** भारत कि किस्ताम, दारमान्त्री, ग्राह्म वर्ग भागम कर् 解放 医野食同年四十五日 副代献代的司 副二四十八日 日 व्यक्तित् भूतः । शालामितः। । शक्मित्वास्य व्योध कहरा यात्र अवस्थित एकत्वका छ জাজ্পেলেন কেন্দ্ৰ আজিশ্ব বিধাৰি কইয়ান ছেলেন - নাদানে প্রজানর হিন্দুধর্মায়-शकी स्वाप्त रुक्षान व्यक्तिभाजन करत जनः হিন্দুশ্বিষ্টে ও কক্ষক ও অন্তর্ভান করে তদ্ বিসংগ্রহ ভূগতি।বনেশ এরবান্ছিলেন। म्बर्क अन्दरायद राज्य ५वेट । क्रम्रावीन् **अ** मम्पानी जानान गरक ममामत भूका व ২০৯ ত ১৮৮ ক্রিল্ডিলে**ন** জপর াম প্রত্য প্রাল্য জগ্ডাবে**ড্রান্ট ইইরাছিল ত**্রি হলেন্দ্র বি কিন্তেদ করিয়া দণ্ডিত করিক্তর এবং ভিত্তি সঞ্জ वाडीड পশুক্তিনা এতে বাংলে প্রতির করিয়। দিয়া

ছিলেন। গোপাৰিত্যের পর গোকর্ণ, তৎ-পারে নরেন্দ্রাদিতা, তদনস্তর যুধিষ্ঠির নামক নরপতি সিংহাসনত্ত হইয়াছিলেন। সুপিতির প্রথমত মুপ্রণালীক্রমে রাজত্ব করিয়া-, ছিলেন কিন্তু কালক্ৰমে দৌভাগ্যমদে মন্ত হট্যা নিতান্ত গঢ়ি তাচারে প্রবৃত্ত ও অসং-পাথাবলগী হইলেন। তিনি এক বারে সমস্ত রাজক যা পরিক্যাগ করিয়া ই ক্রিয়-দেবায় আপনাকে বিসক্তনি করিলেন। দি-বারাত অসংপুরে থাকিয়। স্থরাপান ও স্ত্রী मरमदर्भ कानहरम कतिएक नाभित्नम। वा-জকান। স্করাং বিশৃশ্বল চইরা গেল, স্থানে স্থানে বিজ্ঞাহ উপত্তিও হইতে ল'বিল এব' নিকটন্ত ব্রাক্তগণ অবকাশ পাইয়া ক্রমশার! কোর আক্তার আক্রমণ পুরুত অবিকার कतिएक जाशिया अहे कार व बारकान চন্ত্ৰত লোখন। প্ৰিশেষে কজ মান্তৰ্গ ्राम्भ क्षिम देमना मध्यक भूक्यक लेखा ভব্ন আক্রমণ কার্রল ৷ ভাষণ্ড ভোগ-अभागाल बतुलांक स्थानासाय औड दहेत्र. রাজ্য ৪ টক্তে প্লায়ন করিলেন। খমাত।-প্ৰকাল্পান্দভা নামক ভিন্ন দেশীয় এক নরগ,ডিকে আংবান করিয়া ব্যক্তপদে অ-ি,ধার করিল , তাই ভুপতি বহু দিবস নিকোরেও প্রশাস্তভাবে কাজ্য শাসন করিয়া लोरान्द्रिण भगा ज्यमात करलोक मो নত উচ্চার পুর লাজা হন। জলোকের তন্য কুল্লানের রাজকুকালে কাশ্মারে অভিমাত্র তুষার পতন হেতু ভয়ানক চুকিক উপস্থিত ক্ট্রাছিল। ইহ্তে অ**সংখ্য লোক অন্না**-ভাবে মৃত্যুত্রামে প্রিত হট্যাছিল। এজা সকল একে বাবে শীৰ্ণকায় মৃতপ্ৰায় হইয়া স্বীয় আত্রবের মৃত দেহই আছার করিতে वाधा इक्षाहिल। त्रांका ध्यकामिटगत अहे ছুংস্ফ সাত্ন! নিবারণার্থ **স্বীয় ধনাগার মুক্ত** করিল দিয়াভিদেন। তি**নি অন্যান্য দেশ** হইতে ধান্যাদি আনয়ন করিয়া বিভরণ ক-রিতে লাগিলেন। ইহাতে কিছু কালমধ্যে রাজভাগ্রার শুনা হইয়। গেল। পরে অমাতা গণেরও দর্বাহ্ এবং রাণীদিগের অলকারাদি भुरेकाल धारत रहेन; उथालि उ इर्डिकात উপশম হইল ন।। ভূপতি নিভান্ত কাতর ও হতাশ হইয়া স্বীয় প্রাণ ত্যাগ করিবার প্র-তিজ্ঞ। করিলেন, কিন্তু দৈববশত এই সময়ে এক অতি বৃহৎ কপোতপাল উড়িয়া আ-দিয়া পড়িতে লাগিন। তাঁহাতে লোকের কথাঞ্চ আণ্যারণের উপায় হইল, এবং পরে শদ্যাদি উৎপন্ন হইলে ছুর্ভিফের শাস্তি हरेल। पूक्षीनताक ७ डीहात महश्रिमी छ इट्स्ट्रे भ्रम धार्मिक छिएलन, किन्छ ठीरांत অপত্য ছিল না, এই ছেতু তঁংহার মৃত্যুর পর বিষ্ণার নামক অপর এক বংশার ভূপতি রাজ্যাভিবিক্ত হইলেন। বিশ্বরের পুত্র জ-রেন্দ্রে সময়ে সঞ্জিনতি নামক এক অভিশয় निकारत अधामाना-बौगाकि-मण्याम वाकि य-माठा भागिविक्क इहेताहित्वन। हैनि রাজকার্যা স্কুচারুজপে নিব্বাহ করিয়। বিশেষ প্রতিপত্তি লাভ করিয়াছিলেন, কিন্তু রাজা ছুট লোকের কুমন্ত্রণায় মন্ত্রিবরের প্রতি বিরাগযুক্ত হইয়া তাখাকে পদচাত করি-লেন। সন্ধিমতি এইৰলেপ চুত্ৰস্থায় পভিত হইয়া অতিকটে দিনপাত করিতে লাগি-লেন এবং দেবার্চনা ও ধর্মচিন্তায় আ্পনাকে সমর্পণ করিলেন। ইছাতে তিনি লোকের নিকট অধিকতর পূজা হইরা উঠিলেন, এবং कत्म धरेकण खनका छ हरेल एव (मर्वासू-पृशेष मित्रिकि ब्राइम्भ व्याख इट्ट्रिक। রাজা জয়েক্ত এই কথা শুনিবামাত্র আশ-কাযুক্ত হইলেন, এবং পাছে সন্ধিমতি জা-হাকে রাজাচ্যুত করে এই চিন্তা করিয়া তা-হাকে ধৃত করিয়া কারারুদ্ধ করিলেন। ক্ষিমতি বহু কাল এই প্ৰকাৰে কারাবন্ধ থা-

কিয়া অভিশয় ফ্লেশ ভোগ করিলেন। পরে करमस्य भृजूति शृत्व कातावक ইতিকে শূলে স্থাপনীন্তর বধ করিলেন। ইভিহাদ কর্ত্ত। লিখিয়াছেন, যে, স্থামিতি দৈবনিকান্ত বশতঃ পুনজ্জীবিত হইয়া প্ৰজাগণ कर्जुक कर्यसम्बद्धाः मिश्होन्त अधिष्ठ रुरेग्राहित्नम। এবং जिनि चार्मात्रां नाम খ্যাতহইরাছিলেন। আর্যালাজ স্বয়ং অভি-শায় শিবভক্ত ছিলেন, এবং দেশমধ্যে শিব-লিক্ষের অর্চনা গঠি প্রশস্তকপে প্রচলিত ক-রিয়াছিলেন। তিনি যতিও সন্নাদীদিগকে বিস্তর সমাদর করিতেন এবং সর্বাদাই তা-হাদের দহিত আলাপ ও মহবাস করিতেন। আর্যারাজ প্রায় ৪৭ বংগর রাজনের পর স্বীয় ঐশ্বয়া ত্যাগ করিয়া তার্থ গমনের মান্স कतिदलन, এবং এक नित्म माभाना (दर्भ অনার্ছ পদে পদারজে পুরী হত্তে ব্লিগন্দ করিলেন। পৌরগণ রাজার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিলে পরে আর্যাল জ নগর হইতে কোশাধিক গমনায়ে এক তমুভলে উপ-বেশন করিয়া প্রজাণগতে লেখ্বাকে বু-কাইয়া গৃহে অভিগনন করিছে কাহলেন, এবং তিনি স্বলং নন্দীকেল নামক ভীর্থে যাতা করিবেন। রাজনিংলাদন এইকপে শ্না হইলে পর প্রজাগণ সন্ত হর্য। মে-ঘবাহন নামক রাজবংশীয় এক ব্যক্তিকে রাজপদা ভিষিক্ত করিল। (मध्यक्त রাজ্যাভিবেকের পূবের ছুরবস্থাঞ্জ ১ইগা গাঁকার-দেশাবিপ্তির আশ্রয় লইয়া ছি-লেন। পরে ভিনি প্রাগ্ভেয়ভিষ দেশীর মূপকন্যার পাণিঞ্ছণ করিয়া নৌ ভাগাশালী হইয়াছিলেন। মেঘ্বাহন যুক্তিয় ছি-লেন। তিনি পাপবিতী রাজগণের সহিত সংগ্রামে নিয়ত ব্যস্ত থাকিতেন, এবং ক্রিড चारह रय जिनि रेमना मामस लहेश लहा-ধীপ পর্যান্ত গমন করিয়াছিলেন ও তথায়

हाक्यमत्राक्ष विजीयनटक भराक्षप्त कतियां ध-ভাগেদন করিয় ছিলেন। মেঘবাছনের মৃ-ভুরে পর তৎপুত্র প্রবরদেন রাজত্ব করিয়া ষীয় ডুই পুৰকে কাশ্মীরের সামাজা ও থৌৰৱাজা প্ৰদান করিয়া লোকান্ডরিত হন। এই ছই রাজপুতের নাম হিরণ্য এবং ইহাঁরা অভাপা কাল মাত্র ভোরনার। একত নিলিক হুটাং, রাজত্ব করিতে পারি-য়াছিলেন: সুবরাজ ভোরমাণ স্বীয় নামে युक्ता अवस्तिक सहाटक है के हित (का केंद्र म-হিত বিবাদ উপত্তিত এইল। হিরণা পরা-ক্রম সহকালে ক্রিউকে গ্রান্ড ও কারা-বন্ধ ক্রিলেন। ক্রেম্পের পান্নী এই সময়ে গাৰ্ভৰতী ভিলেন : ডিনি শ্বামীর এইৰাপ निभम् (मधिशा ध्वान्डदश नगत क्रेटड भ-नार्य क वर्षा क्रक कुमकारतत १८६ अक्रम-काद्द त्रविधान क्रांच करे शादन का बन्दन चित्र क्रिक्ट श्रुट अन्त क्रिट्ट्याः हिद-গারান্ধ অনেক অনুসন্ধানের পর ইহাদেনও मकार पहिंग, जापक जानदा नहेंगा लालन, अवर याहोटड ट्रांतमाटनत मुख म স্থান হইবার কথা কোন ক্রমে প্রকাশ না ছ্য় এই অভিপ্রায়ে তিনি তোরমাণের সহ-ধর্মিণী ও ভাঁহরে শিশু সন্তানকে সংগো-প্রেরাখিলেন: কিছুকাল পরে তোর-मान काहाभारत धानकान कतिरलन, अव হিরণারাছ স্বীয় জাতার প্রতি নিষ্ঠুরাচরণ-क्रानिङ অন্তর্কেদনা হেতুই ইউক অথবা অ-পর কোন কারণ নশতই হউক এই ঘটনার পরেই ভ্রাতৃষ্পুত্রকে সঙ্গে লইয়া দেশ ও তীর্থ পর্যাটনে গমন করিলেন। কিছু কাল পরে বিদেশেই তাঁহার মৃত্যু হইল। পার।জের পুত্র ছিল না এবং তাঁহার ভাতু-স্পুত্রও তংকালে অপরিচিত ছিল এই হেডু কিছু কাল কাশ্মীর রাজ্য ভূপতিপুনা হই-शक्ति। श्रात्र এই कथा मिन विष्टिम

প্রচারিত হইলে উজ্জান্ত্রনী নগরাধিপতি
প্রীমান্ হর্ষ বিজ্ঞাদিত্য বিনি এই সময়ে
মহা-প্রতাপানিত ছিলেন। তিনি তাহা প্রবণ
করিয়া তাঁহার সভাসদ মাতৃগুপু নামক এক
রাহ্মণ কুলান্তব ব্যক্তিকে রাজপদ প্রদানার্গ্র কাশ্মীরীয় সন্ত্রাস্ত ব্যক্তিদিগের নিকটে প্রেরণ করিলেন। তাহারা হর্ষরাজ্যের কথা
প্রবেহলা করিতে না পারিয়া অগভ্যা মাতৃগুপ্তকে রাজত্ব প্রদান করিল

गटना विख्डान।

কোন বিষয় অনুধাবন করিবার প্রকা সকলেরই স্থির চিত্তে বিবেচনা করা উচ্চত य भानवीय छुक्तन भटनात्रखित माश्रीया जाह! क्छ मृत প्रधास अ'स्ता विष्टांत कतिए। समर्थ, এবং কত দূরই বা উক্ত বিষয় আমেণ্দিগের বিবেচনার অধীন হইতে পারে: যেমন জল-পত্য ভরণী সঞ্চালন করিবাব প্রকে ভাঙার দূলতা ও গঠন-কৌশল পরীক্ষা কর: এবং সমা্থস্থিত জলরাশির গভীরতাও বিগবি পদের পরিমাণ করা কর্ত্তব্য, দেইরূপ কোন বিদ্যাবিষয় আলোচনা করিতে গেলে মনের প্রকৃতি ও ক্ষমতা বিশেষকপে অব-গত হওয়া এবং আলোচ্য বিষয়ের স্বভাব ও কাঠিন্যাদি অনুভব করা নিছান্ত ক-র্ত্তব্য। কারণ এতদ্বারা আমর। বুঝিতে পারি যে উপস্থিত কার্য্যে আমাদিগের অ-প্রশর হওয়া উচিত কি না। এই সামান্য উ-भटनम दिन्य ७ इहेशा अदनकादनक महाभ-বিত এমত বিষম জনজালে জড়িত হইয়া-ছেন যে তাঁহাদিগের নাম চিরকাল জ্ঞান-জ গতের তুরপনের কলঙ্ক-শ্বৰূপ হইয়া **অ**ৰ-স্থিতি করিতেছে।

मसुद्यात छ्यांन व्याप्तिक्त, त्य छ्यान मच्नृर्व-क्राप च जाव-व्यवख व्यव् खि-मकरनत প্রতি অপেকা করিতেছে! পরমেশ্বর ম-মুব্যের মনকে নিরপেক্ষ ও পরিপূর্ণ করিয়া श्रिष्ठि करत्रेन माहे। ज्यापिर गत्र गांती तिक ও মানসিক কল্যাণের নিমিত্ত তিনি আ-मा। मर शत मतीरत ७ मरना मरधा कडक छ नि প্রবৃত্তিকে সলিবেশিত করিয়াছেন। এই ছি-বিধ প্রবৃত্তির পরিচালনে থিবিধ জ্ঞান লাভ क्रिया आमता उँ हित भन्न नमशी रेष्ट्री नापन করিতেছি। চকু কর্ণ নাদিকাদি ইন্দ্রিয়-নিচরের নিয়মিত কার্যো আমর। বাহা জ-शटजत-विषय मकल व्यवशं केश्व कीवन ধারণের উপযুক্ত উপার অবলম্ব করি-**्ठिहि ; এবং छ्वान श्रीकि डेक्ड्**मि मानिमक প্রবৃত্তির পরিচালনে মনোগত তাবং ঘটনা অবপত হইয়া আলাব সমূহ উলচি লাভ क्तिट्छिछ्। हेश्त गए। माश्त ए धात-ন্তির অসন্তাব, ভাহার জ্ঞান সেই পরিমাণে मकीर्प कर एक श्रीतमाए। याहात करे भ-मल धवृत्ति উन्नड त्मरे পরিমাণে ক্রান প্রানস্থা কামরা বাহা কিছু জানি েছি যাহা কিছু দেখিতেছি তৎদমুদায়ই আলেকিক, তৎনমুদানই সম্পূৰ্বপে আ মাদিগের শরীর ও মন সাপেক্ষ, তাহা-**मिरशत मशका इहेटज विक्रिश इहेटल आंग**त। সমৃত্ত জ্ঞান বিবজ্জিত হইয়া পড়ি। অপিচ উলিখিত সকল বৃত্তিই কুদ্ৰ, অসলপূৰ্ণ ও **जग्गीन, ञ्रु**कतार **जागानिर**शत कावर स्थ-नरे अमुल्मुर्वे खम्भीता विश्वक्रवेश मध-ন্ধীয় অনেকানেক বিষয় আহে যাহা আমর! উপযুক্ত বৃত্তির অসম্ভাবে কিছুমাত্র উপলবি করিতে পারিতেছি না; তক্ষেষ্টা আপাততঃ আমাদিতের পক্তে মুখ छ।। আমাদিতের স্বাভাবসিদ্ধ শক্তি দারা জড় পদার্থের ক-তক থালি খণ উপলব্ধি করিভেছি এবং

সেই সক্ত গুণ ঘটিত কা স্থানে দর্শন করিতেছি ; ি এৰপ গুণ থাকিতে পারে गातीतिक ও मानमिक दर সংলগ্ন হয় না, স্ত্রাং ত কিছুই জানিতে পারি না। ৰূপ আত্মার বিষয়েও দেই আন্না হইতে এৰূপ প্ৰবৃ পারে যাহার বিষয় আম: চিতাকরি না। বাঁহারা রিস্থিত উন্নত ধামে कै हिर्गापदशंत উন্নত শক্তিসম্পন্ন इरेग्ना অধিকাংশ অনুভব করি হাদিগের জ্ঞানত আপো ता अ चीत चीत वृष्टि-मभर চালন করি**তেছে**ন। পর্মেশ্বরই নির্দেশ্ফ ৬ হার চন্দ্র দক্ষ্,থে জনি-ম সকল সভা প্রকাশিত রহিং প্রাণিমাতেরই নিকট অ অন্তরের অন্তর্ভম ভাব-ম न्त्रके-धर्कीयमान बहिगाद মন্তুদ্যদিগোর পরস্পর এবং हितकाल अध्यक्तिक शा জ্বাধা ব্যক্তি অকমাং ই প্ৰবয়ন হইলে হেমন আৰু অসদৃশ শোভাদে খিয়া অ হয়, চির-বধির ব্যক্তি জ **रहेटन (यक्तश ग**र्साधन क অপুর্যন আনন্দ অন্তভ্র ই তুঃখ-শোক-অন্ধকারময় স স্ত হইয়া আমরা মহত্র করিব, ভূডন ভূতন মত্য निरमय मर्पा विश्व-धरक হুদক্ষম করিরা বিস্ময় ও

এই প্রকারে পর্যেশ্বর মন্তুব্যের মঞ্চ-লের জনা বিশ্বজগৎ-সর্কীয় বছ বিষয় ভাঁহার নিকট প্রকাশিত না করিয়া স্বকীয় ছ্রবগাহ্ম জ্ঞান গর্জে নিহিত রাখিয়াছেন। যে প্রশান্ত এক্তি স্থারা আপনাদিবের ছকলতার মধ্যে সর্বপ্রকার গুড় অভিগ্রায় র্ঝিতে পারিয়াছেম জীহারা সেই দেই বিষয়ের অ্যঞ্ভ আলোচনা হইতে বিনীত-ভাবে দুরে অবস্থিতি করিয়াছেন, এবং সাধাা-বুগত স্থীয় জ্ঞান উন্নত করিয়া পৃথিবীর পরম मध्यत माधन कतिहारहन। जार गाहोरी ছুবিবিনীত হাদয়ে আপনাদিবের বুজিকে স-कं निक-मन्त्रात महम कविशे निविष्ठ प्रदोहना -छ। विषदात व्यादनांचनांस शहा स्टेसाट्ड, তাহারা লাভি-সর্প আবিহ্মান কাল নকল লোকের তিরস্কার-ভাঙ্গন হইরা আদিতেছে: करे समारे विष्ठानमाञ्च महत्स अकाल ४-र्याच रम्भन रकमश्थाक महान् गरा वाकः শিত ২ইরা মরুধোর মুখলে উল্লক-तिभारिक, रमरे कर्ण व्यवना व्यक्तिया ज्यान জ্বাকাশকে অজকারে খাজন করিয়াছে। পুথিনীতে মন্ত্রাবিদ্ধ সভা প্রাক্ত মংখ্যা অধিক কি ভ্ৰমমংখ্যা অধিক ভাষা সিজাত কর নিভাত সহল নহে।

কথিত কইল আমাদিগের জ্ঞানের নিমিন্ত থিপ্রকার উপায় প্রদন্ত হইয়াছে,
শার্নীয়িক প্রকৃত্তি এবং মানসিক প্রকৃতি। এই
উপায়ছয়মন্ত্রত জ্ঞান ভইপ্রকার বিভক্ত
হইতে পারে, পারিদর্শানক জ্ঞান এবং
নৈমিত্তিক জ্ঞান। বহিবিশের দর্শন করিয়া,
পুরারত্ত্ব পাঠ করিয়া, গুরুমুখে উপদেশ
প্রবাধ জ্ঞান কহা মাইতে পারে। এন্দ্রনক্তান করি জ্ঞান করি গ্রাক্তির
কার জ্ঞান উপার্জ্জন করিতে মনোইতির
ভাদশ প্রিচালনা হয় মা, ইহা অপেক্ষা-

রুত সুশাধা। পৃথিবীয় ঘটনাবলী এবং
পদার্থ-নিচনের অন্তিত্ব মাত্র অবগত হওরাই ইহার উদ্দেশা। চিরজীবন পরিক্রম
করিয়া পৃথিবীর পূর্বতন পণ্ডিতগণ জ্ঞানবিষয়ে যত দূর উমতি সাধন করিতে না
পারিয়াছিলেন, অভি সামানা চেন্টার অভি
অপে কালের মধ্যে আমরা এ ক্ষণে তাহা
হইতে অনেক গুণে অধিক উমতি লাভ
করিতে সমর্থ হই। মাহাত্মা ব্যাস, বাল্যোকি, শক্ষরাচার্যা, সক্রেটিসাদি আমৃত্যু যত্ম
করিয়া যত শিক্ষা না করিয়াছিলেন, বিংশলি ব্যীয় বিশ্ববিদ্যালয়ন্ত একজন মুবা শুদ্ধ
প্রুক্ত পাঠে ভাহা হইতে অনেক গুণে
অপিক শিক্ষা লাভ করিয়া থাকে। এবির্ধ্ব

কিন্তু এতখ্যতিরেকে অপর একপ্র-कात छहान अ नाक नय। शर्मार्थ निष्दास्त खः থবা ঘটনাবলীর কেবল স্বস্থিত্ব মাত্র অবগত ছইরাই লোকে নিরন্ত হয় না, কিন্ত ভাহার কারণ অনুমঙ্গান করে। এই রূপ কাব্ণ अञ्चलकांन कर्त्रवात्र हेक्हां विद्यवन्त्रा कर्तिन मकत्नद्र भरधा है निकिष्ठ इस, छत्व (यः त्य পরিমানে ভর্নস্পন, নে নেই পরিমানে পুড় করেণের তত্ত্ব করিয়া থাকে ৷ টেলবাং কোন শব্দ অৰণ করিলে অজ্ঞান শিশু তা-হার কারণ জানিবার নিমিত্ত চতুর্ক্তিকে দৃট্টি পাত করে, দৈবাৎ কোন আশ্চর্যা ঘটনা দৃষ্টি করিলে প্রাপ্তবয়ক্ষ মনুষ্য তাহার কা-রণ জিজ্ঞানা করে /এবং উন্নতজ্ঞান পণ্ডিত প্রাক্তিক সকল বিষয়ে বিশ্বিত হইরা পদার্থমাত্রেরই করিণ অনুসন্ধান করেন। বস্তুতঃ কার্য্য দেখিলে তাহার কারণের প্রতি বিশাস এবং তজ্জিজাসা মনুষ্টের পক্ষে নিতান্ত সভাব-দিছা। কিন্ত বিশেষ বিশেষ কার্য্য দেখিলে তাহার বিশেষ বিশেষ কার-ণের প্রতি প্রভায় খাছে বলিয়া যে আমরা

দকল কার্যার কারণ অবপত আছি বা হইতে পারি এমত নহে। শুল্ধ কারণ অন্দল্লান করাই আনারদিপের স্বভাবদিছা।
এই অনুসন্ধান দ্বারা স্বকীর পরিশ্রমে আমরা যে জ্ঞান লাভ করি তাহারই নাম
বৈশ্বিত্তিক জ্ঞান। অতএব নৈমিত্তিক জ্ঞান
কঠিন ও কই সাধা, ইহাতে মনোর্ত্তির
বিশেষ পরিশ্রম হইরা থাকে। স্বীর যত্রে,
স্বীর চেইটার, চির জীবনে যিনি বিদ্যাম ওলীস্থ একটা বিষয়েরও গৃড় তত্ত্ব অনুসন্ধান
করিতে সমর্থ হয়েন। তিনি সহস্র পুত্তক
অধ্যাসনাপেকা অধিক কার্য্য সম্পন্ন করেন,
ভাহার দ্বারাই প্রকৃত জ্ঞানের উন্নতি হয়।

रेमम्बिक घंडेमा श्रुक्शता व्यवस्माकन ও ডাহাদিপের ওক্ত নির্ণয়কে বিজ্ঞান শাস্ত্র কছে। বাহা জগতে নিয়ত নানা প্রকার प्यान्हरी। वर्शिश्च एक इंट्रेट्ड्रिं अरे ममन्द्र দুষ্ট বিষয়কে উপযুক্ত মতে বিভক্ত ক্রিয়া त्य त्य कावन मरद्यादध डाइन्ता निष्णन हरे-য়াছে তাহায় নিৰ্ণয় করাকে প্রাকৃতিক বি-জ্ঞান কহে। জনৎ মংখ্য যে সকল পদাৰ্থ अञाक क्रेट्टरक् उद्मयुष्यिके विर्धाय বিশেষ কার্যা। কতক গুলি কারণের একত্র মিলন ও নিগড় সমুদ্ধ হইতেই তাহারা উৎ-পন रहेशा थोटक ; ग्रूफवार এই ममस्र का-যোর কারণ জিজামা ও নির্ণয় করিতে পা-तिहल हे भगोर्थ विष्ठात्न तुर्भि खिलान। আকাশ পথে দৃষ্টি করিলে ধুমকেতু, ইন্দ্র-ধরু, বা স্থর্যা গ্রহণ দৃষ্ট হয়। কি কি কারণ मिनात्त पुमरकचू हेस्प्रस्यू वा ऋर्याधाहन দৃষ্টি গোচর ইইল ভাহার বিশেষ নিদর্শনকে প্রাকৃতিক বিজ্ঞান কহে। মনো বিজ্ঞানও সেই ৰূপ! মনুষ্যের বিশেষ বিশেষ কার্য্য ও মনের গতি দেখিয়া কোন কোন প্রবৃত্তি এবং কি কি কারণ সংযোগে তত্ত্বাবৎ উৎপদ হইভেছে, তাহার তত্ত্ব নির্ণয়কে মনোবিজ্ঞান কহে। অতএব সম্ক্ ৰূপে ভৌতিক ও মানসিক কাৰ্য। নিচয়ের কারন নির্দেশ করার নাম বিজ্ঞান শাস্ত্র, বিজ্ঞান শাস্ত্রে যে জ্ঞান জন্মে তাহা নৈমিভিক জ্ঞান।*

পৃথিবীর নর্বা স্থানেই কার্যাকারণ শু-ষ্থলা বর্ত্তমান রহিয়াছে। যতই বিশ বা পার পর্যালোচনা করি ভতই প্রশস্ত কর্মো কারণ শৃত্যলায় উত্থান করিতে থাকি। সমুদ্র গজ্জনি, বজ নিঘেষিণে, ভূনিকম্পে, আ-(ध्रम शिवि डिक्सीवर्ग, मक्टनब भट्यारे स्वित-চিত্ত বিজ্ঞানবিং বাক্তি কাষ্য কারণের পরি-एश आश्र हत्यन । किन्न विश्वमत्या पविश्व निर्मम विर्मय क्रांट्यांड निर्मय टिर्मम কারণ দ্টেছ্ইতেচে ভগ্পি এই সকল क्रिश्चे अर अक्ती कार्या याता । याहारक আপাতত কারণ বলিয়া নির্ফেশ করা বা তেছে বিবেচনা করিলে পর ভালত কোন মহন্তর করিবের কার্যা মজে প্রভীয়মান হয়: ভাৰাই প্ৰকৃত কাৰণ লামেৰ ৰাচ্য যাতা একা-জ্ঞেষ্ঠ, মহো কালার দারা স্থাট নহে। এই कारा मन्द्रदाश्च भाषान्त्रकी वाक्ति कांत्रन. পরমেধ্র ভিন্ন অপ্র কেচ কইতে পারে না এই महाका । स्वित्व है। हात्वे महद खक्कित छेशयुक्त । यमाभि क्या १८१ लावन धन वन्नीन कराई तिकां- भारति है। फिल्म, व्या ऋति ভাষা মির্ভ জন্মতের দিলে বাজ্যা। পথ পরিষ্কার করিয়। ক্রেছে। বিন্টুলীল স্কঃ বিজ্ঞান ভাগৰান ব্যক্তি এই কলে কলে। ভ্ৰতিভ করিণেপিরি আরোহণ করিণা নমস্

[&]quot;Some of the defination of places to be a considerable philosope as, are as to assemble for each of things divine real terms of the Same set and other times are contained." Orders, at the Same set and other by their causes." It shows as to escence of sufficient reason." I doubt a "Tree Science of the telephone of the knowledge to the case of triangle change as the supported of the set of philosophical knowledges at other and dependent are not their causes." It William Hamilton

ভূলোক ও ছালোককে অভিক্রন করত প-विस्मारन रम**रे मृत काहन, रमरे कां**वरनंत्र का- इक्त शतरमभदत्र मण्डद छिन्नीङ অল্জা কার্যকোরণ र्राय । जगः थ। আসরণে আবেটিত হইয়া তিনি প্রজ্ঞা ভাবে পুথিশীয় সকল বিষয়ই নির্ব্ধাহ করিতেছেন। भात राज्य है काशा त्वरण डिनिहे क्रांतर। निय करण मालिन यस्त्र, जित्रे कार्निन (क उस, घर 5 सिटक्छन। **म्टक्**पेनित **डेब्रड** गुक्त भीवन कि । ११। ११। १९मन अक्स प्रदान किमाउल 'याक्षानदक टाइक एउक भिन्नक क्रायान्हे বিকে উন্নত ভ্ৰিছাতে, দেই ৰূপ অপ্রিমীন কাম, বারণ রাশি উপযুদ্ধরি বেরস্থিতি ক্ৰিয়া প্ৰতি ক্ষিত্ৰ জিলোক চাৰ স্পাৰ্শ করিয়া র্থিন্ত্র। সমার ফটিকার। প্রা-লোচনা কডিয়া বিশেষকলে উল্লেখন জগ-ল, ন করা স্থাদ আশু,ব(শিক্ট মধু,বেং)র প্রাক্ 'থা হ'ং হ'ং নি ত'ন্ত অসমূল গোপ্তৰ তৈ পাতি तहरूक जो १ कि तु ते हारी बाबल अ'बरबह कित्सवर, शेराके महत्वनिकारमात के फामा।

आहर्गात ।

ं लिविक भारताचे सर्वता व्याचिति व क्षेत्रिया रव পুরেশ্বর বার্লাচেড। এলম্ম নে ক্রাক্স পর্বিধ্রেচয়ের বিষয় পাসনতে উনিংখত ভগ্যাচিক উ,হারা লেশ্যাদ আশ্ৰাদিশের আনে একটা ব্ৰাক্ষণাজ क्षांच्या कशिषात्रस्य जरु ज मार्ग्य गर्ड छ रे किति বাং কান্য সম্পন্ন ক্ষেণ্ডেন 🔻 প্রস্তাম্পদ আযুক্ত বিভান্তাভ ভোগামী মহাশ্র উছোর্দিরগর উপ-प्रकृति । 🖙 🗷 स्थापनिवादीमदर्गे विवरस्य विदर्शन নভূতে এই মে উচ্চের্নিমের সরস্তা ও ধর্মপর্ন-নলভা অভি আশচন্ত। তথাকার জীলোকদিণের ए। प्राक्तिका क्या । अकल अकात ध्रकारी जवर দকল প্রকার আমোদ প্রমোদ পরিত্যাপ করিয়া যে সালে উপারের উপাসনা হয় ভখার ভাঁহারা হা ক্রতিতে প বিভ হয়েন, এবং সর্বাদ্ধি এমজ প্রতির জড়ি আদ্ধবি পরিচয় **এনে।ন করেন যে** श्रक्षात्र वर्षकः भाष्यकारे **छनवत्वाकरन अछाछ** ीक्ट्रेट्ट एवं। वैश्वस्त्र निक्रें आर्थना स

এই পর্যা জিজামু সরল লোকদিগের ক্ষয়ে জ্ঞান ও পবিজ্ঞা প্রেরণ করেন। সকলেরই প্রক্তি আমাদিগের বিশেষ অনুরোধ যে ভাঁহারা ত্রায় বাগাঁচড়। গ্রায়ে একটা বিদ্যালয় সংস্থাপন ক-রিভে টেউডি হয়েন।

সিল্রাপটি নিবাসী মৃত প্রাযুক্ত কাশীনাথ
মিল্লক মহাশয় মৃত্যু কালীন দেশ হিডাবেংপঞ্চ
লক্ষ্মা দান করিয়া পিয়াছেন। এই অর্থ হহাছি
ছইটী সংক্ষ্ ত বিদ্যালয় সংস্থাপিত হইবে, দুগায়
দালেরা অবৈতনিক শিক্ষা ও পাঠাবস্থায় জ্বল পোবন ভাবতি প্রাপ্ত কইবে। ভাপর কতক শুলি অন্ধ গঞ্জানি দীন হীন বাজিও সময়ে সময়ে সাহায় লাভ করিবে। ফর্ণীয় প্রীষ্ক্ত কাশীনাথ মলিক মহাশালের এই মহৎকালোর জনা সকলেরই কুচ্ছে

মান্ত্রাক্তির কেন্দ্রের ক্রেন্ত্রান ক্রেন্ত্রান বিনী পজিকা জ্ঞানেধে প্রকাশিত ৩ই তে আর্ড क्षेत्राटक । जला काळ्ला एए हेंद्रा फाउक्का-क्रांच किं है जिल्लामा के कर्नन (अपन करादक) है। किरमत 'जनावनाम छ महच मस्पतिक कर करा कामना अभावा मालाक हार । 粉帶 斯克斯特 化甲磺二丙甲酰丁酯 上海上上 দা জানাতে ভাইটো কাইই বুণিতে লা ৮০% এই ভারভর্যের ভিছ জিল স্থানত্র হটতে ভারত গিনী গালিকা প্রকাশিত হইছে আয়ন্ত শ্লিগুড় ক,নকাছা বৈধ্বেলি এবং মাজানে । সংখ্যা , ভ সম্ভিত্ত সম্পান্তন মহাশ্যেষ্ট্ৰ হয় প্ৰত্তে বিগ্ৰহ 🛒 🦠 🦠 ন্থৰ নিৰ্বেশ্ব জন্ত জন্ত মাৰ্কিন কোনা কোনা কিছিল কোনা নিৰ্বাহন কৰিছে ল লাখন স্পাধ্য প্রাথমর। সকলেই প্রিভান এক ক্ষেত্রি, কলা, যেনি আম্মানিবের বলাও সভা ভিনান कामा किनि भाग केटे १७५६मा, किन्र किन्ना के कामग्र ভারত্রিজ হাইব লা, কারণ আমরা গর্মেরণেরে मैक्टबुब (क्षित्रां मुठे। दस्त । यद्य व्यामन क्रेटक्टि আনসর হও। সাধুমাহার ইচ্ছা উপর ভাহার भ**ङ्गा** !

বর্দ্ধনান ব্রাক্ষনবাজের নিশেষ উন্নতি হইছেছে।
তরত ব্রাক্ষ নহানিয়ের। একটি ব্রন্ধবিদ্যালয় সংথাপিত করিয়াছেন এবং প্রায় মধ্যে মধ্যে নিকটত্ত্ ঘানে ব্রাক্ষপর্ম প্রচার মানুষ্পে গমন করিয়া পাকেন। বোধহয় ভাঁহাদিগের দৃষ্টাত্তে ও বড্লে বর্দ্ধনান নগরের অনেক উন্নতি হইবে।

সম্পুতি বিসাতে এতদেশীয় স্থীবোকদিনের মঙ্গল উদ্দেশে একটী সভা হইয়াছিল। তথায় আমাদিগের মদেশস্থ্ই ব্যক্তি উপস্থিত ছিলেন। স্থিয় হইয়াছে যে ইংলগু হইতে কতকণ্ডলি মুনি-পুণা শিক্ষিকা বলদেশে আগমন করিবেন, এসং তার পরিবার ঘারা আহুত হইকে অতি শামানা বেভনে শিক্ষা প্রদান করিবেন। ভারতবর্ধের উ-মভির জনা বিদেশীয়েরা যাত্র চিভিড, নিবা-সীরা তভদুর নহে।

বলীয় জীদিগের যেরপে পরিক্ষদ ভাহাতে প্রেকাশান্তলে গমন করা দূরে পাকুক, ভাহারা স্থীয় ধীয় পিতা ভাতা ও অন্যান্য সম্প্ৰীয় লোক-/ দিগের নিকটে উপস্থিত হউতে সঙ্কৃতিত হয়। की लाकमिटशंत्र याधीनका विषयः, विस्मय कान অনুষ্ঠান না করিয়া, ঘাঁহারা কেবল একণে বিষ্ম গওগোল আরম্ভ করিয়াছেন, ভাঁহাদিগের প্রতি নিবেদন যে প্রথমে ভালারা সংদেশীয় ম(হল) দিলের পরিজ্জন পরিবর্ত্তন বিদংয় বিশেষ মনে(ছে। গা হয়েন। কলিকাভা ব্রাহ্মসঙ্গতের ाउँ ता, अकिनियम उँच्छ विषया आदनक विधवना प्रविद्या श्रीहरणय श्रीय श्रीय श्रीहरतांत्र मरशा व्यवसी-শ্রুলের পরিক্রম পরিকর্ত্তন ক্ষিত্রকল্প ইউয়াতেন, ক্রিপেক্সি বস্ত্র ভাষিশাক ভাষা নিশ্বর ইইলো ্ৰাণ হয় সকলেই ভালা নিজ নিজ আলেয়ে एतर्ज्**क क**िंदरास । शदिष्कम विभक्ष लाग्सानि লোও আৰু ব্য সার্থান্ হওরা উচিত। স্থান্তর। ্মৰ্শভেও ঘটে কে! বিশেষ জগতির বজের स्तुरद्ध कवि लाग श्रेट्य काम कलागे लाग यम मन्द्रम व्यवसिंख दर्गनात महारम। महर्च, ज्यादकत भरभर कत्मको दक्षत मौतांत्रम कर्यादश नेश्रधानान्त्रम इक्रेस

একনে বাদাবোধিনী পরিকাধে প্রকার মু
চাক মণে নিকাঠিত ছইছেডে ভাহাতে জাহা বে
শীঘ বিশেষ উলভি লাভ করিবে এবং এতদেশপ্র
বামাদিকের বিশেষ উপকার সাধন করিবে ভাহাতে আমাদিকের সংক্ষা মাজ নাই। তার্বোদিনী পরিকার গাহক মহাশাদিকের প্রভি
নিবেদন যে যেমন উহিরা ভার্বোধিনী গাজিকা পাঠ করিয়া নিজ নিজ আল্লার উলভি
শাধন করিবেন, ভেমনি বীয় সীয় পরিবার্থ অঞ্জনাদিগের উপক্রের নিমিত বা্মাবোধিনী প্রিকা গ্রহণ করেন।

আগামী ২১ আগাড় হালিসহর ব্রাক্ষসনাকের সামৎসরিক সভা চইবে। কোন কোন ব্রাক্ষের অসদাচরণ প্রযুক্ত এবং উৎসাহী ব্রাক্ষাদিগের বি-দেশ গমন জন্য যদিও মধ্যে হালিসহর ব্রাক্ষামাজ কিঞ্চিং ছ্রবস্থাপ্রস্ত হই্যাছিল, কিন্তু একণে পার-দেশরের প্রসাদে ভাষা এরপে উন্নতি লাভ করি-ভেছে যে নিশ্চরই তদ্বারা ব্রামন্থ লোকদিগের সমূহ মলল ইইবে।

বেহালা ব্রাহ্মসমাজের অধীনে ব্রাহ্মধর্ম্ম প্র-চারিণী নামী একটী সভা সংস্থাপিত হইয়াছে। যাহাতে সাধারণ ব্রাহ্মদিণের মধ্যে বিশেষ ক্লপে প্রাক্ষপর্য প্রচারিত হয় ভাহাই এই সভার উদ্দেশ্য, প্রাক্ষপর্য প্রচারিণী সভায় কার্যাপ্রগল্প সহাপরের নিকট নিবেদন দে সভার কার্যা প্রগালী অনুপ্রহ করিয়া বিশেষ রূপে সাপারণ স্বাক্ষ্যণকে অবগ্রহ করেন।

বিগত ১৫ ট্রান্ট কোননগর প্রাক্ষান্থাকের দ্বিতীয় সাম্বংসরিক সভা হেইছা পিলাচেছ। স্থাক হওয়া গোল ভর্পলাকে ভাবন্ধ লো, দ স্থাগাভ হইয়াছিলেন। কলিকাভাস্থ এক থানি ইংবাজি সংবাদ পত্রে সভার ভার্ম্য বিশেষ কলে প্রস্থানিভ হইয়াছে।

আমরা শ্রুভ ইইনাছি কাশী নগরে একটা ব্রাহ্মসনাক গুড়িষ্ঠিত ইইয়াছে। এ নগরত কএক ক্ষন ভাল কাশীয় ও কুজাবিদা বাজিই এবিসংগ্র নিশোগ উল্লেখ্য ও কুজাবিদা বাজিই এবিসংগ্র কাশীধামে এদি দিল্ল কুজানক্ষার নিগড় ছুর্গপন কাশীধামে এদি দিল্ল কুজানক্ষার প্রতিষ্ঠিত পূ সমাকৃত কটাল ভবে কালার বিকাশ লা হয় যে সন্ গয়ে প্রাহ্মপ্রা ক্ষম ভারতবর্গক অধিকার করিবে।

আমান অভ্যাত আহ্বোদের সভিভ সম্মান হৈ **ডেছি যে** জ্বেপ্ৰেয়ার বিষার 'অবৈবাকি জ্বেণ কলে বোলাদিপের অক্ষপুর প্রাপ্ত প্রবিটি ক্লিড্রের भक्ति है जालक द्वाराकिकी व्यक्तिकाल श्रमान भारताम व्यापन करा १०७ । अ ब्राउनार्यक मुम्बन् कर्ता यात्र । हेर्, १८ क्ष्रजूत विश्वकि छ प्रमुशाह विका ভাহোৰলিয়া, লেশ্য ফর্টোয়ে নাচ তল্পন নং लक्ष्मां औरजादकक्षा निवास क्षाक्षांत हवस यह নি দা ও কুসংক্ষার পরিভাগি করিয়া সভা প্রেয়ত্ত 'কা'ব্ৰেম শ্ৰহণ কৰিবে জন্ত কেটেবলেন মতে স্বৰ্ণত জ্ঞান লাভ কাইবে ও ভানন কথন্ট ব্জান্ধের প্র-কুন্ত উন্ধৃতি শুইবাৰ সম্ভাৱন। ন্তি। 🛮 💥 🖰 কেন্ট্ৰ নিশ্চয় সম্প্রসাধনারের মধ্য ৭৬০০ তে সংগ্র राप्तराः स्टेरनाम निरम्ब मृत्रः ।अशस्त्रिक १०% एक्षि अस्य धिवयाती इंडेस्स। र लस्या তিরদিন পুশিবীতে জনগ্রাজ ধ্রিয়া আফিলেভে। জন্মীর স্থনা ইয়া যেমন শেশুর শরীলে ক্রমত স্তুত্র মাধ্য ও অভিন্ন সক্ষাণ করে। । সন স্ক্রণ, । ১৮৮৮ প্রকৃতি ও মংক্ষার ভারার মন্ত্র । কি ৮ চবি । ক **থাকে। ব্যারেদ্রি সহ**কারে মুখ্য হন্ত ছেলা ক্রিছ मन्त्रविष्ट म् । दक्त, द्य कार्ति कारी १६०० व्यक्ति वाला मण्यति । भारतिमातिक आर्थक शान्स् পরিতানে করিছে পারে - দেই জনাই অনেকে कुछितिमा क ज्याप्त नग्राम स्टेमाच भग्ना बुद्धिः। व्यक्षातिक भागा क्रिटिक श्राप्तिटक्टफल मा। व्यं क्रि भी छ राहारङ अङ्ग्रह्म अलगि निरंशव घटना श्रामी द ভাব এবেশ করে ভজনা আনাদিবের বিশেষ क्ति। कर्रा लेक्टिं। अञ्जूष्मार्य आमाहित्यत अस्ति বে থেমন পুরুষদিগের জন্য প্রকাশ্য স্থানে একটী ব্রাক্ষদমাজ আছে, দেই রূপ কোন একটী তজ প-রিবারে কিয়া স্থানাস্তরে স্ত্রীলোকদিগের হিডার্থে একটী ব্রাক্ষদমাজ প্রাভিষ্ঠিত হয়।

মূতন গাস্ প্রাপ্তি।

আদরা কৃতজ্ঞতার সহিত নিম্ন লিখিত পুস্তক শুলি আজি ধীকার করিতেছি। "বিবিশ পুস্তক প্রকাশিক। সাহিত্য-সংগ্রহ" ভূতীয় সংখ্যা। "মুদ্রমানদিধের অভ্যুদ্ধের সংক্ষেপ বিবরণ। 'বিদেশার্মান সংঘাসনের উপায়।''

रिक्डाशन।

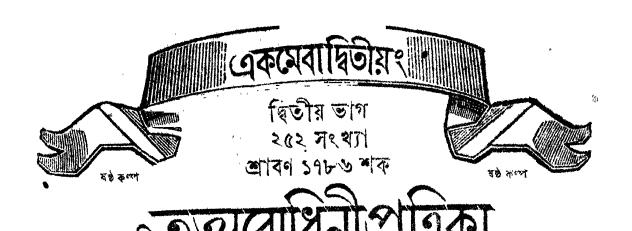
আগামী ২১ আবাদ রবিবার প্রতিত কালে হালিসহর ব্রাক্ষদমাজের সাধ্বদরিক সভা হইবে রোজ মহাশ্যু দিগের প্রতি নিবেদন বে তাঁহারা উক্ত দিবমে থালিসহর প্রামে উপন্ত কণ্যা বেক্ষোগ্যুনা করেন।

কলিক্তি ব্যক্ষমম্কের এপচছ শ্রের কৈটে মানের জায় ব্যস্তিবরণ

竹藏市	ब्रि रिप्रेंडि	٠	9	15 br 4/ e

			251	80 1/0
4) ¥			6	65 /W
Hassi I	स्टल्य कटल्ड		G	(384):
	এভ	भुः		
1141	n 4月15年			2400
्क्ष	*19		(800
	an and a section of the section of			
त् न	ন্দিগের প্রতিজাত ম	[ব্যুক্ত	দরিক	मान।
	ুক্লগেপোৰ সেন	••		ર α
	ैरेनकूर्यनाथ सम		. •	२.७
	त्यत्य का क नग्न		• •	>
**	গণেশালে স্থিত			>
46	泰州烈山西 山			5
	राषाचामा द्राव	٠,	• •	>
	•			

'' भीकर्मान घटकाशाधात्र >	
" टक्नवनाम मझीक >	
" नविनशीन विकास ১	
49	
মালিক দান।	
ঞীযুক্ত রাজা সভাশরণ ঘোষাল ৫০	•
" যড়েশ্ব সিৎহ ১২	į
ं कांभी श्रमाम रचाय ১२	
" क्यरगाशान स्म	
Amplication and the same and the same	
^{ন ৪} শুভকর্মের দান।	
শ্রীযুক্ত রাজারাম মুখেলাগায় ৮	
् इंडरशंबिन्ह छोधुनि	
autona per la estada en auto.	
্ এককালীন দ∤ন !	
ি শ্রীযুক্ত কালীকুমার সাব	
दानाधर्मा अणांत क्या मान्।	
श्रीषु कुळाममञूषीत (अस् <i>क्षात्</i> कार ए	
অহ্রচ⊕৮√ফাফ	
'' পোপালচক্ত মলিক ়াণ	
440	
बिश के कि ।	
নিঘ্ণী পাছ। পুঠা	
নিঘ ণ্ট প্র। পৃষ্ঠ। ব্রাক্ষধর্মের ব্যাখ্যান	
পুঠ। ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান	
পৃষ্ঠ। ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান	
পৃষ্ঠ। ব্ৰাহ্মধৰ্মের ব্যাখ্যান	
প্রাক্ষধর্মের ব্যাখ্যান	
পৃষ্ঠ। ব্ৰাহ্মধৰ্মের ব্যাখ্যান	
পৃষ্ঠ। ত্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান	
পুণ্ঠ। ব্ৰাহ্মধৰ্ণের ব্যাখ্যান	
পুণ্ঠ। ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান ব্রাহ্ম চিস্কা রাজ ভরন্ধিনী সংবাদ সংবাদ ভাগ ব্যাগ বিবরণ	
পুণ্ঠ। ব্রাহ্মধর্মের ব্যাথ্যান ব্রাহ্মধর্মের ব্যাথ্যান ব্রাহ্ম চরজনী মনোবিদ্ধান সংবাদ স্ক্রি স্কর্মা স্কর্মা সংবাদ স্কর্মা সংবাদ স্কর্মা সংবাদ স্কর্মা সংবাদ সং	
পুণ্ঠ। ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান ব্রাহ্ম চিন্তা ব্রাহ্ম তর্মিনী সংবাদ তাম ব্যায় বিবরণ তাম বিবরণ তাম বিবরণ তাম বিবরণ তাম বিবরণ তাম বিবরণ তাম বিবরণ তাম বিবরণ তাম বিবরণ তাম বিবরণ তাম বিবরণ তাম বিবরণ তাম বিবরণ তাম বি	
পুণ্ঠ। ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান ব্রাহ্ম চরজনী মনোবিজ্ঞান সংবাদ স্থানিক স্বা স্পা স্পা স্পা স্পা স্পা স্পা স্পা স্পা সংবাদ স্পা স্প	
পুণ্ঠ। ব্রাহ্মধর্মের ব্যাথ্যান ব্রাহ্মধর্মের ব্যাথ্যান ব্রাহ্ম চরজনী মনোবিদ্ধান সংবাদ স্ক্রি স্কর্মা স্কর্মা সংবাদ স্কর্মা সংবাদ স্কর্মা সংবাদ স্কর্মা সংবাদ সং	
প্রান্ধপর্যের ব্যাখ্যান ত্রীক্ষা চিন্তা রাজ ভরজিনী রাজ ভরজিনী সংবাদ স	



প্রকর্গতিকনিদমপ্রকাসীয়ান্য কিঞ্নাসীজনিদং সর্ক্ষ্মসক্ত। তারেও (নি চাং জ্ঞান্মনভূত শিবং স্বভাচনির্বয়বন্ধেক-মেবারিতীয়ং সর্কার্যালি সর্ক্ষনিয়ন্ত্র সর্ক্ষাশ্রয়সর্ক্ষাকিন ক্রন্থে ক্রিন্তি ক্রিন্তি। একল্য ভূটেগ্রেগাল্নম্য গার ত্রিকনৈত্বিক শুভান্ধবিত। ভূমিন জ্ঞাতিত দ্য জ্ঞিয়তাই।সাধনক তদ্পদেন নি ব

डाक्थरम्ब नाथान।

~}

ভিতীত প্রকরণ--একাদশ আদেশ।
১ ৮৩ শকের ১০ মাথে কলিকান্ডা ব্রাক্ষেদ্যাজে
প্রধান আচার্যা কর্ত্তক
বিরুত্ত হয়।

যএতিষদুরমৃতাত্তে ভবন্তি।

* ঈশর আত্মার প্রাণ; তিনিই তাহার আলোক, তিনিই তাহার অমৃত। তাঁহার আলাক, তিনিই তাহার অমৃত। তাঁহার আলাকারে মান্ন হয়। তাঁহাকে কে মান্র গাঁহাকে এক মান্র গাঁহ আত্মা জীবন পায়, তাঁহাকে এক মান্র গাঁহ জানিয়াই দে নির্জয় হয়। তিনি বধন আলাকারে প্রকাশিত হন, তথান তাহা মধুমর হর। মেই মধুমর আত্মা ঈশ্বরকে মধু-স্বরূপর নির্দিষ্টার দেই মঙ্গল-কিরণে জগৎ সংলারকে উজ্জান নেথেন। তাঁহার নিকটে পৃথিবী, নদী, সমুদ্রা, চক্র হ্রা, সকলি মধুমর হয়। ফেই অমৃত্রের সঙ্গে, সকলি মধুমর হয়। ফেই অমৃত্রের সঙ্গে হোগ করিয়া তিনি অমৃত লাভের-প্রতি ছির নিক্তর থাকেন।

रच नालि सीन आंशाटि अतमाओंट मर्भन करत नांडे, या छोड़। एड्राफ हित जिन বাঞ্চত রহিল—নে ভাঁছাকে প্রীতি দার। পূকানা করিয়া, ইচ্ছা পূবেক কাঁরে কায়ঃ সম্পন্ন না করিরা, বিষয় সেবাতেই জীবনকে क्रम कविन ; धिक् छोत्र (मर्डे छोत्र । छोत ছুর্গতির আর ঋষু নাই- সে ক্লেশ হইডে ক্লেন, চ্ডিক হইতে ছড়িকে, পদ নি-কেপ করে। এ প্রকার দীন হান প্রায়ত वालगाव कर জীবনে কি প্ররোজন। मिलन क्षत्र लहेश है कि व्यानाइतनत की नग অবসান হইবে / চতুৰ্দ্ধিকে পাণ ভাপ प्रश्च भारतित मस्या योकिया गाँप मिन् পবিত্র-ম্বৰূপের উপক নিভর করিছে ন। পারিলাম, তবে আর শান্তি কোপায় পাইব? व्यागांतरमत बना स्गा, हन्त्र, नक्षक व्यानीक ৰৰ্ষণ করিতেছে—বায়ু অবিজ্ঞানে বহুমান **ছरेग्रा आभात्रत्मत की**तन तका कतिटल्टि — वृष्टि आमांत्ररमत अना मिनिनेदक করিয়া আমারদেব শরীর পোষণ করি-তেছে—অজত্ম কামনার বিষয়ে আমরা পরিরুত রহিয়াছি। এই দকল ভোগই বি আমারদের ভাবৎ? ইহার মধ্যে কি আমরা সকা-স্থাদতোকে কৃতজ্ঞতা উপহার দিতে পারিব না ? যেমন এই পৃথিবী
নিঃশব্দে সূর্যাকে প্রদক্ষিণ করিয়া আলোক
লাভ করিতেছে, আমরাও কি সেই ৰূপ
অচেতন হইয়া তাঁহার প্রদন্ত কামনার বিধ্যু-সকল উপজোগ করিব ৷ না আমারদের কঠ হইতে মৃতজ্ঞতা-ধনি উথিত হইয়া
সমস্থ জগংকে ধনিত করিবে ৷

ঈশ্বর হটতে বে বিচ্যুত রহিয়াছে, সে মৃত্যুর অহীত শক্তিকে—সেই মৃত-সঞ্জী-বনী শক্তিকে আর হৃদয়ে অমুভব করিতে পার মা ৷ সে অমৃতের অভাবে এই জগৎ সংগারকে শ্বাশান তুল্য বোপ করে। মৃত্যুর মূতি দেখিরা ভাষার অমৃতের ভাব উদয় इय ना। त्य महीरतत व्यक्ति हन्सं मांश्नहें দেহেখ্---অন্তরের আগ্রোকে পেথে না। তা-হার নিকটে পর লোক প্রকাশ পার না! टग । महिला करेंगा महन करते, श्रुभियो अधा-महें श्रीवन-मृद्धा करेल छि। लाव करेल। নে পুনিবীতে কথন কথন পাঁপের জয় পর্কোর পরাষ্ট্র দেখিয়া ধর্মাবহ পর্মেশ্বরের অকর ন্যার মনে করিতে পাবেনা। বে-খানে ধর্মালার মকল জ্বধের অবসান হ-ইবে, যেথা**নে অ**ন্যার অভ্যাচারের শাসন कर्टतः क्ष्मम स्थान एम एक खिटक शास ना। স্ত্রং মনুখার ঘটনা তাহার নিকট থাহে-जियांत मण्य परिक।

নৃত্যুর নিকটে কাছারোঁ বিচার নাই—
ধনা দরিজ, পাপী পুণ্যবান্ দে সকলকেই
ব্যক্তমণ করে। এখন থিনি স্তবর্ণ পর্যাক্তে
বেল করিতেছেন—যিনি বীণা বেণু মূদক্ত
থনি অবং করিয়া মনে করিতেছেন, তাঁহার
প্রের আর বিরাম হইবেনা: মৃত্যু এক
নামর ভাঁহার স্বথের শরীর হইতে সম্ভ মাতরণ হরণ করিবে। তিনি শাশানেশব
সইনা পড়িলা থাকিবেন। তিনি মথন দ

র্পণে আপনার স্থান্দর মুখ দেখেন, তথন আর মনে করিতে পারেন নাবে এই মুখ **এक ममन्न क्यांक्टीन अ**खंहीन हरेगा घा-हेटव । यनि क्यादन मुङ्गादक भावन कतिला আপনাকে জিজানা করেন, মৃত্যুই কি আ-मात रात ? ना मृजात शदत आतं कि हू আছে? আপনার মোহ-মেযাক্তন আপ্রী হইতে ইহার কোন উত্তর পান না। দিন দিন অপেকা করেন, মৃত্যুর পর দেশে কি আছে তথাপি তাহার সংবাদ কেহ তাঁহাকে আনিয়াদের না। যদি কোন লোকের নি-কট জানিতে যান, তবে কেহবলেন, "চ-ন্রলোকে গিয়া পুণোর সমুদার ফল ভোগ করিয়া পুনর্কার পৃথিব্লীতে আসিতে হ-ইবে।" কেছ বলেন, " পুণ্যাত্মাকে তিনি অনন্ত স্থগ প্রদান করিবেন--পাপীকে অ নন্ত নরক-ঘাতনার দক্ষ করিবেন। 🕆 ইহাতে তাঁহার ভর যায় না! ভিনি কোন কথ: গ্রহণ করিবেন ? কাহার বাক্যে বিশাস করিবেন ? আমারদের আত্মাতে যদি ঈ শ্বরের আলোক প্রকাশ না পায়, যদি উচ্ হার মঙ্গে যোগ না করি, ভবে এই সংশয় অজকার কিছুতে বিমোচন করিতে পারি मा। किन्दु राथम जिन्द्रदात महत्र यांश नि-বদ্ধ করি—যথন তাঁহার মঞ্চল ভাব হৃদয়ে প্রতিভাত হয়, তখন সংশয় অন্ধকার হৃদ-য়কে আচ্ছন্ন করে না। তখন আপনাপনি বুর্ষিতে পারি, ঈশ্বরের সঙ্গে আমার যে যোগ ভাহ। চির কাল থাকিবে। তথন নিঃ-সংশল্পে বলিতে পারি 'যএত্তিসূর্যুভাতে ভবত্তি ' याँ हाता अहे शतरमधतरक कारनन, ভাঁহার। অমর হরেম। বনিও মৃত্যুর পরে কি হইবে, ভাহার সকল জানিতে না পারি; কিন্ত জানিতে পারি, আমরা ইবরেরই আ-खदा शांकिय। अथारम याच स्त्रान, याच धर्मा, यत्र श्रीकि छेशाक्त कतिर; प्रमूनादत

উন্নত লোকে গিয়া উন্নত হইব। यদি আ-মরা কৃটিল পালে বিক্ত হইয়া এবং ঈশ-Cतत मंत्रगाणम मा रहेता हेर लाक र-इटड व्यवस्ट इहे, छत् यामात्रदमत निःमश्मुत घटधांगणि स्टेटवः, किन्तु रमथाटम তাঁহার ন্যায়-দণ্ড ভোগ করিয়া পরিশুদ্ধ হইয়া পুনর্বার তাঁহার সৎপথে ফিরিয়া আ-मित्। अन्छ यक्ष्टलत त्रांटका अन्छ न्तरक নাই; যিনি আমারদের প্রম পিতা, যিনি ইহারই জন্য শাস্তি দেন যে আমরা ভাঁহার পথে ফিরিয়া আদি; তিনি কি পাপীকে ध्यन स्वत्क मक्ष क्षिद्यन ? हेश यनि मठा হয়, তবে আর মকলি নিখ্যা। দেই মঙ্গ-ল-স্বৰূপের উপর যথন আমারদের বি-শ্বাদ যায়, তথন মনে করিতে পারি না যে তিনি পাপের জয় করিবেন—অনস্থলের जा कति वन-नद्रकाधिक अनन्न कांन क-লিতে দিবেন। যদিও চতুদিকে রোগ শোক পাপ তাপ দেখিয়া তাহার অর্থ সু-বিতেনা পারি, কিন্তু ইহা নিশ্চর জানি যে ঈশ্বর ভাঁছার সংসারকে বিন্ট হইতে দিবেন না। তিনি সম্প্র উপায় ছারা মঞ্জ-লেরই জয় করিবেন। ভাঁহার সংসারের একটি প্রাণীকেও তিনি পরিত্যাগ করিবেন না। তিনি সকলকে উন্নতি হইতে উন-তিতে লইয়া যাইবেন। পাণীকে ছুংখ क्रिम मध मित्रा—भूगावान्तक व्यानटननत छ-পর আনন্দে মাবিত করিয়া, আপনার দি-क्टे चार्क्य कड़िद्वन।

এই প্রকার, উত্থরের সঙ্গে বিনি আআর বোগ করেন, তিনি কালের হস্ত দে
থিয়া তীত হন না। ইশ্বরের আলোক
বাঁহার হৃদয়ে আঁখারের দীপ হইয়া প্রজ্বাত হয়, তিনি লেই আলোকে সকল
দর্শন করেন। তিনি তাঁহার পরম গতি ইরম গতিকে দেখিয়া ভার-শ্বনা হন। প-

কিরা যেমন অরণ্যে গিরা আপন আপন मत्नत উल्लाटन मध्यत्र करत्र, किन्नि तारे कथ শরীর পিঞ্জর হইতে স্কুক্ত হইয়া ঈশ্বরের निक्षे यादेवात श्राज्ञिमाय करतन। अश्वातत উচ্চুল মুখ দেখিয়া তাঁহার জ্ঞান উচ্চুল হয়। যে আলোক তাঁহার হৃদয়ে প্রজ্ঞালত হয়, তাহাতে তিনি মৃত্যুর পর পার জ্যোতি-র্মার ব্রহ্ম-ধাম দেখিতে পান। ঈশ্বরকে পা ইয়া তিনি সকল অক্ষকারের আলোক পান। শত শত এছ পাঠ করিলে—শত শত বা-ক্তির উপদেশ জ্ঞাবণ করিলে যে বিশ্বাস ন। হয়, এক বার কম্বরের আলোক দেখিলোলা-हेरल व्यक्तितरमत हक्ष्यु खेबालम इत्र । धक বার তাঁহার অয়ত-রমের আস্বাদন পাইলে রাশি রাশি গরল ধংদ হয়। ঈশ্বরের সঙ্গে যোগ করিলেই আমরা নুক্তির পুর্মাভাম পাই! বিনি এক বার পরমান্তাকে দেখিতে পান, দিন দিন তাঁহাকে অধিক দেখিতে পাইবেন, এই আশাতে ভিনি উৎফুল থা-কেন। বিপদ্ ভাঁছার নিকট সম্পদ্তুল। হয়— মৃত্যু অমৃতের সোপান হয় : দিনি পর লোকের প্রতি সংশ্যু-শূনা হইতে চা हिन, छ। होत्क अहे मांज चिन्छ भाति स्थ পৰিত ऋषद्य केश्रद्धत निरुद्ध शयन क्य कैशित मञ्जन मूर्कि पद्मीन दत्त, प्यदमाई गश्मतः भूता इरेरव। " जिनारक अन्तर्वः खिल्हिनाटस मर्कमः भगः। ° डीझ्टिक (४-बिटल "क्ष**रततं शक्ति जग** इत्, मकन नश्मत ছিল হয়।' আমর। যদি পাপেতে কলাহিত रहे, छथानि आमता नितान हरे ना! आ-মরা অনুতাপিত হুদরে তাঁহার শরণাপন্ন হ্-ইলেই তিনি আমার্দিগকে এইণ করেন। তাঁহার ইচ্ছা এই যে আমর। পাপ তাপ হইতে নিজ্তি লাভ করি। আমরা যদি আপনার ইচ্ছাতেই পাপ ভাপ হইতে নি-ষ্ঠি পাইবার নিমেত্তে তাঁহার শরণাপন হই, ভবে দে ইচ্ছা পূর্ন হইকে না ভো আর কোন ইচ্ছা পূর্ন হইবে; ভাঁহার শূরণাপর হইলে তিনি আমারদিগকে অভয় প্রদান করিয়া বলেন "বংস ভীত হইও না—আমি ভোমাকে গ্রহণ করিব।" তাঁহার অভয়-বারে গেলে তিনি আমারদিগকে দূর ক-রিয়া দেন না। এই পূথিবাতেই হউক, অন্যত্রই হউক, যথন যে অবস্থাতে আমরা ভাঁহার শরণাপর হইতে যাইব, তথনি আ-মারদের সন্তাপাল্য মার্জনা করিয়া আপন আলিজন পাশে বন্ধ করিবেন। "পাপী ভা সাধু অসাধু দিবেন স্বারে মঞ্জন-ভোয়া—কেবা জানে কত স্থে রভ দিবেন নাভা লয়ে ভাঁর অমৃত নিকেতনে।"

হে প্রমান্ত্র । তুলি আমারদের সক-লকে তোমার অভিত করিয়া তোমাকে প্রীতি ও তোম'র কার্য্য করিবার জন্য প্রে-রণ করিয়াছ: আমর: এখান হইতে শিক্ষা লাভ করিয়া ক্রমে ক্রমে উল্লভ লোকে গিয়া ভোমার অভিনুধে অগ্রসর হট্র। মে অ-भूना भाषास्त्रक्षत्र जूनि व्यानांत्रद्वत्र कमा ग-ধিংত করিয়াছ, আমরা খেন আপনার দোধে जार। रहेतः विकिए मा रहे। आभाइत्मत् আত্মানে উন্নত ও পৰিত্ৰ করিয়া যেন তো-মারই পদত্রে স্থানিয়া ককা করিছে পারি। কুমি আমরেদিগকে যে সকল অমূল্য অধি-কার নিয়াছ, তাহা যেন তোমারই হল্তে এ-ভূমি সহায় না হ-ভাগণ করিছে পারি! ইলে আমরা আপনার যত্নে কিছুই করিতে পারি না; অতএব তোমার অক্ষ সাহায্য শার্থনা করিতেছি, তুমি আমারদিগকে তো-সার অমৃত পথে লইয়া যাও।

উএকমেবাদ্বিতীয়ং

আশ্বচিন্তা।

''যত দিন পুথিবাতে জীবত থাকিব তত দিনই অংশে অংশে ধর্ম সঞ্চয় করিতে हरेटव । माश्मादिक व्यवसा यक्तरे मन्द्र रूके ना किन क्लान करमहे था। मटइ कर्डवा সাধনে উদাসীন থাকিতে পারিব না। ঈশ্ব-त्र कीवत्नत **उत्म**ना, जन्धत्र कीवत्नत সুখ-নিকেতন, ষতইকাল অভিবাহিত হইবে তত তাঁহারই দিকে অগ্রসর হইব এই আ-মার আশা। তবে কি জন্য তাঁহা হইতে ব-ঞ্চিত রহিয়াছি, তাঁহা হইতে বঞ্চিত থাকিয়া कि धकारत कीवन-जात महा कतित ? এই পৃথিবীর সকল বস্তু চির কাল সমান ৫ছি-বিংশতি মহন্ত বংগর পূর্বে য়াছে। **এখানে যে ক্রপ গোনদর্যা নহকারে সুর্গোর** উদায়ান্ত হইত এখনও দেই ৰূপ হইতেছে, নে ৰূপ শোভা সহকারে বিংশতি সহস্ৰ বংসর পুর্বেচন্ত নক্ষত্র নিংশদ নিশীগ সময়ে ৰাগণ মণ্ডলে বিচরণ করিত এখনও **দেই ৰূপ করিতে**ছে, ঘেৰূপ স্মহের স হিত আমাদিগের পূর্ব্ধ পুরুষগণ জনক জননী ও প্রিয় জনের স্নেহ লাভ করিভেন আমরাও দেই ৰূপ করিতেছি। কিন্ত भेचत जिल्ल এই পৃথিবীর সকলই শূনা শোভা হীন, সকলই অক্সকার ও বিষধ্ন দে-থায়। হা কি প্রকারে উ।হার সহিত পুন-র্ম্মিলন হইবে ? '' একবার যে তাঁহাকে জ্ঞান-চক্ষুতে খীতি-চক্ষুতে দৃষ্টি করি-য়াছে, তাঁহার অদর্শনে ভাহার পক্ষে এই ৰূপ বিলাপ-উক্তি করা নিতান্ত অস্বাভাবিক नदङ्

কিন্ত প্রতি নিরতই কত প্রকারে আমর। তাঁহা হইতে বিজ্ঞা হইডেছি। কত বার জ্ঞানবশতঃ ধর্মা উপাক্তানে বিরত ও বিফল-যত্ন হইডেছি! অনুসন্ধান করিলে

এবজ্ঞকার ভূরকতার কারণ আত্ম-चर्चार विश्व चांत्र किष्ट्ररे येजीक स्त्र ना সকল বস্তুর মূতনতা এবং পুরাতনতা আছে। व्यवत्य स्थानः भाभ-भाष-भाषी मसूरवात मत्न ধর্মের দৌন্দর্যা এবং পাপের কদর্যাতা প্রকাশ পায় তথন সে অতি আগ্রহ পূর্বক भर्मातक व्यवनयन करत, এवः मिरे पर्माक প্রতিপালন করিতে শরীর মনের সমস্ত শক্তিকে নিয়োগ করে। এই জনঃॐ দৃঊ হয় যে ব্রাহ্মধর্ম প্রহণ করিয়া প্রথমতঃ ব্রা-ক্ষের। তাহার আদেশ পালনে যৎপরোনান্তি যত্ন করিয়া থাকেন, এবং পিডা মাতাও গুরুজনের অনুরোধ পর্য্যন্ত পরিত্যাগ ক-রির। কেবল **ঈশ্বরেরই পথে অগ্রসর হও**য়া জীবনের সার কর্মাবিবেচনা করেন। কিন্তু আজ-চিভার বিরহে, এবং আয়ার গৃঢ় অ-ভাব সকলের অজ্ঞানতা জন্য, কিছু দিন পরে **क**े छेटगाह **क**रे **चां थह भी उन रहे** सां सांत, বর্মের শোভা পুরাতন ও বিলুপ্ত হইয়া আ हेटम, এनং नव मोन्प्रया महकादत माश्मा-রিকতা স্বীয় স্থ-সম্পদ্ আমাদিগের হৃদয়-नश्रदनत नमरक ध्वकां करत। मन विरमा-ফিত হইয়া যায়, **ঈশ্বকে বিশৃ**ত হয়, ধর্মের এতি অস্বাহয়, পর লোকের প্রতি गन्मिक्ष इरा, এवং व्यनक्रुहिङ हिट्छ मर्ख-माकी शत्रामश्रदतत ममत्क सर्थक्क्षात्रादत প্রবৃত্ত হয়। অনুশোচনা ও আত্মানি আ-हेटन, छूडन सूडन सूथासूधात्न छेलाटन णाहाता भाता**मिछ ए**स, **এবং क्रमम**ई श्रमस অধোগানী इहेट**७ थाटक। अर्थ-हिन्छ। द्वि**न-कत्र ७ तम्यूना इरेग्ना भटफ, जन्दम क्रांट्स গাভীষ্য পরিত্যক্ত হর, পর-নিন্দার আ-व्यान करम, बानाव्यकात स्कोकूक-त्रश्मा गमानां १ ७ जनात्नांक्यांत भरम व्यविष्ठि হয়, নভোর প্রতি আহা ভিরোহিত হইতে थांदक, अवर वकुमिरशत मानम विस्तानन

উল্লেখ্যে অনৃত বিভংগ ভাষা প্র্যান্ত সময়ে मभटम जानत्नीय स्टेश উट्ट। यानात চরিত্র স্বভাবতঃ যে সকল দোষ-সম্পন काश्रंत कार्या (महे लावश्राम अटक अटक मुक्टि-(गांठत इहेटड शांदक, अवर नक्डा, ভয়, অমুরোধ, ভক্তি, শ্রহ্না, আরত-বদনে একে একে প্রস্থান করে। যে গবিত, थमाजिमादन, विमाजिमादन, कूनाजिमादन ক্ষীত, দে কিছু দিন ধর্মের ভাতৃনে কল্টে ক্লেশে স্থীয় কুমভাবজাত অহকার দনন করিয়া এখন নির্ভয়ে বিক্ষারিত বক্ষে লো-কের পৃতেঠ পদাঘাত করিয়া চলিয়া 🍑য়; य धन लाखी, रम धर्मात व्यक्ति रेनत्राका प्यवन्धन कतिया (क्यम नश्रद्धत प्रसूगकारन हैउछ ७३ खमन करत, धनः स्य हेन्त्रिस क्षिय, নে ইন্দ্রির নেবায় উন্মন্ত ইইয়া মান ম र्या। ना धर्मा व्यर्थ भाक भकत है विमञ्जल पत्र । किन्छ इंश्रीतन्त्र मत्था मक्टलई रव এक कारण **ঈশ্বরের নাম ও ধর্মের উল্লেখ পর্যান্ত পরি-**ভাগি করিয়াছে, কি মবলভায় ও সাধু ব্যবহারে এক কালে জলাগুলি দিয়া কপ-**নিযুক্ত করিয়াতে এনত নহে। উন**িও ও মান श्चादकर्वरवद रय क्षेत्र भाषान चार्छ, शांश ও আন্ন-বিকর্ষণেরও ডক্রেগ্রনোগান লাছে। रियम प्रतिष्ठ । इहेट ज क क दिन जार्जान-তির শিপর-দেশে উত্থান করিতে পারা যায় नां, तक आयारम करम करम आरहारम করিতে হয়, সেই ৰূপ এক বার উন্নতি লাভ করিয়া এক কালে অধর্ম ছুর্গহির অধস্তম रूप व्यवज्ञन कता यात ना, करम करम নিম্নামী হইতে ২র। বিদ্যাচলত্ত অভুচ্চ অধিতাকা-ভূমির প্রস্তর-মণ্ডিত অগ্রভাগে দণ্ডায়মান হইয়া বছ দুরে নিম্নত্তি প্রান্তরে অধঃপতিত হইয়া চুৰ্বইতে কাহার হৃদয় না ভাষে বিকম্পিত হয়? অদাবিধি যাঁহার।

তুৰ্গতির শাধাকান্তা আপ্ত না হইরাছেন, আদ্যাধি বাঁহাদিগের চিতে ধর্ম লাভ করিনান ইচ্চান লেশ মান অবস্থিতি কবিডেনে:
তাঁহারা অবশ্য স্কুল্য বন্ধু-বাক্য ক্যাচ
অবক্লেন করিবেন না। এবং বেখান হইতে
বর্মোপদেশ লক ইউক না কেন তাহা গ্রহণ
করিয়া মনুষা জীবনের মহত্ব লাভ করিবেন
তাহাতে সন্দেহ নাই।

এই পৃথিবী পরীক্ষার স্থান। এখা-নকার বিশ্ব বিপা**ন্ত ঈশার প্রেরিত। সে**ই বিশ্ব বিপত্তি সত্ত্বে খাঁহার৷ যে পরিমাণে কর্তব্য কর্মনাধন করিতে পারিবেন, সেই পরি-মানে তাঁহারা পর লোকে অতুলা শাশ্বত পুরস্কার আপ্ত ছইবেন। পরমেশ্বর স্বীয় অপরিদাম করুণাগুণে মনুব্যকে ধর্ম দা-ধনের অধিকারী করিয়াছেন। কিন্তু পাছে ভাহার গৌরব ও মহত্ব লঘীয়ান হয়, এই জনা সেই ধর্মকে কট্যাধ্য তুর্লভ ও বছ-প্রলোভনে বেধনীয় করিয়াছেন। সমুষ্যের স্বভাব এৱপে স্ফ হইয়াছে ফে ধর্ম বা অধর্মকে অবলয়ন করা তাঁহার পক্ষে সম্পূৰ্ণ ৰূপে স্বেচ্ছাধীন ৷ মনুষ্য বেমন স-ন্তণ দেখিলে তাহার অন্ত**র্গত** আধ্যাত্মিক भोन्मट्या भूक इटयन, अवश्यक मूत्र माथा ভাহার অনুকরণ করিতে ক্ষণ কালের জনাও উৎস্ক হয়েন, সেই ৰূপ পাপকাৰ্যা ও অপরিশুক্ষ সূথ-ভোগ **সন্দর্শনে তাঁহার পক্ষ**া প্রকৃতি উত্তেজিত হয়, তিনি বিষম মোহে মুধ্ব হইয়া স্বীয় দেবভাবকে উৎসন্ন করিডে সহজেই প্রবৃত্ত হয়েন। বাত্তবিক পাপাচ-वन कविवाद क्रमण चाटक विनदार भका-টরণ ভাঁহার সম্বয়ে বিশে<mark>ব আদরণীয় ও পু-</mark> াকানের উপযুক্ত। ইশ্বর **ধর্মের প্রবর্তক**। মনুষ্যকে কেবল **সাধুর্ভিতে ভূকিত করি**-যাই ক্ষাস্ত না থাকিয়া **তিনি স্বয়ং ভাহাকে** সভা ধর্মের পথ প্রদর্শন করিতেছে**ন। সেই**

भय गर्नन क्रिज्ञा अवर छम्दलदन सनिङ বিশুক্ত আনক্ষতিপতভাগ করিয়াও যদি কেহ মুছতা বশতং ভাহাকে পরিত্যাগ করে তবে তাহার অপরাধ সন্দূর্ণ ববেশ ভাহাকে ভিন্ন আর কাহাকে অর্শিতে শারে? যে সভা ধর্ম অবলয়ন করিয়া তাহাকে সামান্য আয়াস-माथा मरन करत अनः वहिर्वियस्त्र हे निमध हरे য়া আত্মাকে নৈদ্যালিক গড়িতে ঈশ্বরের मि**र्ञ**ामन कतिरङ चारमण रमस्र मिर कनन काश्रुक्तरवत खत्मत नीमा बाहे। 😎 छ ऋषा পরমেশ্বর মমুষ্য-হাদরে আবিভূতি হইয়া ধর্মসাধনের উপায় ও আনন্দ নির্দেশ করত অভ্রতি হয়েন, এবং স্বেহভরে অলফিড় कदल तम्हे भर्ष छाहात भरवातन मिटी-ক্ষণ করেন, যত বার সে তাঁহার নিকট মাহাঘ্য প্রার্থনা করে ভত বার ভাহা প্রদান करद्रम। किन्छ इच्छा थाडिखा এবং धर्मा সাধনোপ্ৰোগী আত্ম-পরিশুদ্ধি স্মাক্রপে মনুষ্যের স্বাধীনতা-সন্তুত। আক্রচিস্ত: ক-রিরা আপনার দোষ সমূহ অবগত হইতে হুইবে, কেবল সজ্জন সঙ্গে ও উপাসনা-গৃহে গমন করিলে ফ্টবেনা। যে **আ**ছচিন্ত:-বিরহিত হইয়া সাধু-সঙ্গে গমন করে, সে ভত্তস্থ বাহ্যিক ক্রীড়া কৌডুকে সংসক্ত থাকে এবং দাধু দঙ্গকে অদাধু দক্ষেতে পরিণত कृद्र। এই व्यक्तात्त्र कोशं कार्त्रा मञ्जून निर्वात চরিত্র পর্যান্ত দূবিত হয়। যদি পরমেশ্বরের मिटक शमन कविवाद हेक्स शास्क नियुष्ट् আত্মচিতা ও আত্মানুসন্ধানে এবৃত্ত হও, আপুনার অভাব-সকল আপুনার ছোব-সকল দর্শন করিয়া অকপট চিত্তে ভাঁহার নিকট आर्थनां कत्, माधुनिरशत छेश्ररमण अर्ग कत, **এবং मन्द्र विद्युत अक्टूबन्दर्ग कड । जीवटन**ह দকল কালই অতি ভয়কর। ৰান অত্যন্ত সাব-थानको পूर्वक मर्वान। व्याचारक ना क्रका क्रज, এবং সর্বাদাই যদি তাহার বর্জনশীল প্রকৃতি- बिहत्तरक **चेत्रु गवानि । ७ जदश**रय निर्द्यां भ না কর, ভাষা হইলে নিক্যই আত্মা গৃঢ় बाल गारमादिक जनका कि सांख कहेरव, वरर **এयड मगदत निष्ण अकृष्टिः अनर्गन कतिए**व যথন চরিত্রসংশোধন চেন্টাবহিভূ ত হইরা নিরাছে। কারণ মনুব্য খধন যে অবস্থায় অবস্থিতি করে তথন আপনার প্রবৃত্তিকে সম্পূৰ্ণ ৰূপে তাহারি উপযোগী করিয়া লয়, এবং পরিণত প্রকৃতি পরিশুক্ত কর। তা-काल भरक निकास एःमाधा क्हेना उटिहा অভএব উপযুক্ত সময়ে আক্ষচিন্তা ধারা চরিতা সংশোধন করিবে, এবং মনকে ধ-র্ম্মেকে উন্নত করিবে, আত্মচিন্তা না থাকিলে व्यविक्ट शृर्ट्य नात रूपरा वह ध्वकात পাপ-তক্ষর প্রবেশ করে, এবং অমূল্য ধর্ম-রত্নকে অচিরে অভ্যতিশারে অপহরণ कदत्र ।

সম্পূৰ্ণৰূপে আত্মচিন্তা **হৃদরে বর্ত্তমান** না থাকিলে, কোন মতেই উপযুক্ত উপা-মনা সন্তাবিত হয় না। আমাদিগের উপস্থিত ভূরবস্থার একটা প্রধান কারণ অনুপযুক্ত भेषादार्थामनः। यनि ध्वितिनि क्नटव्रत अ-ভাব জানিয়া সমান আহ্বা ভক্তি ও বিনয় मङ्काद्य भवरमश्रद्धव निक्षे वार्थना क-রিতে পারি, তাহা হইলে আত্মার উন্নতির मीमा थाटक ना। किन्न छेलामनाभूट भमन করিয়াঁকি অভাবের জন্য প্রার্থনা করিব ভাহা না জানিলে কি প্রকারে প্রার্থনা স-खद्द ? ने बद्दात कान थीं कि मन्नाकाद मा অনুভব করিলে কি একারে ভাঁহার এতি অকাও ক্তজতা উথিত হইতে পারে? অভএব यमि **चे स**द्ध-अভाবে बाक्न इहेत्रा থাক, যদি ভাঁছাকে লাভ করিবার একান্ত वागना हरेता थाटक, उट्ट महल स्नट्स ना-পনার সান্ধাকে অসুসন্ধান কর, রাশি রাশি नीरिंगत कम जन्द ए इहें इस वियोगिक मूर्न লোচনে ভয় ক্ষরে তাঁহার নিকট প্রাথনা কর, তিনি ভোমার ক্ষরতক ক্তভ্ততাও জ্ঞাতে পরিপূর্ণ করিবেন, তোমার অপরাধ মাজ্জনা করিবেন, তোমার দূষিত চরিত্রকে সংশোধন করিবেন।

গুরু জনের প্রতি শ্রদ্ধা ও রুডজ্ঞতা না থাকা আন্ধ-বিশ্বতির কার্য্য। যে আপনার मिय मा (मदर्श मिह शदत दर्भाष अकूमकाम करत। व्यागता निष्म याश गरन केति छोहा অভান্ত নহে। জগতের আর সকলে व्यामानिद्यात मःकण्यासूयासी कार्या कदत না বলিয়া ভাহার। অবিশুদ্ধ চরিত্র নীরে। আমাদিনের স্বীয় অপরাধের সংখ্যা এত দে তৎ সমুদায় পরিশোধন করিতে গেলে আর কাগরও দোবালুসন্ধান বা দোব কীর্তন করিবার অবকাশ থাকে দা,এবং দেই 🗱 ল দোষের প্রতি যথোচিত ঘূণা থাকিলে অপর काहांत्र अपायरक मांच विनाश है स्वाध है। যদি দকল ত্রাক্ষ আত্মচিন্তা-প্রাযণ हरेश वीस सीम तमा ममाक् कल मः हमां बन করত প্রাক্ষধর্মের ১মডি চেকা করিভেন ভাহা হইলে এত দিলে ভাঁহাদিবের আভা: কত দূর সদ্গতি প্রো: হইত এবং ব্রাক্ষর্মের মুখ কতদুর উজ্জ্ব । ইড়া বিনীত ভাবে করযোজে নক্স ত্রাগ ক্রাহাগণের প্রক্তি আ। মাদিগের নিবেদন যে ভাহার। প্রতিনিয়ন্ত যেন আত্মচিস্তা ছারা আপনাদিব্যের রুদ্রের বছ অভাব দুর করেন, এবং যে দমক চরিত্র-গত দোৰ ও অসম্পূর্ণতা জন্য ত্রাকাধর্মের ध्यं क्रेंक महेख् अन्ध-मः । উপवर्षि कतिएक **श**ितिटकटक्त ना, भेश्वत-धागारन जांश इरेटक অচিরে মুক্ত হইতে সাধ্যান্ত্রসারে চেন্টা करता। नकन-चन्त्र भत्राम्बत व्यामानि-পের মধ্য হইতে ছেষ, হিংসা, অহঙ্কার, পর-निमन ७ क्र विज्ञातिक विज्ञातिक क्रम अवर . আমরা বেন পুণোর পবিত্রহা ও অমৃতভু

অবিলয়ে লাভ করিয়া সমস্ত পৃথিবীময় ত্রান্ধ ধর্মকে ব্যাপ্ত করিতে সচেট হই।

মনোবিজ্ঞান।

মনোবিজ্ঞানের প্রকৃতি, আবশ্যকত।, महत्र, कार्य। ७ फिल्मभा-विवदः आमानिरगत সাধারণ মভামত পাঠকবর্গ সমীপে যথা-श्री अक्षिण इंडेल : आंशिंग्रित (हरी) কভ দুর ফলবভা হইয়াছে বলিতে পারি না। মন অতীন্দ্রিয়, দৃষ্টির বহিভূতি প-দার্থ, তৎ সমন্ত্রীর কোন ভাব, কোন গুণ, ব' কোন ঘটনা, শারীরিক শব্দির ক্রিয়া ধারা কিছু মাত্র অনুভূত হর না! কঠোর, একাত্র, এবং অবিজ্ঞান্ত চিম্বা ও পামুদ্র্টি দার্ম তাহার তন্ত্র নির্ণয় করিতে হয়। সেই ৰূপ চিস্তা ও দেই ৰূপ আত্ম দৃটি সহকারে আন্ধার প্রবৃত্তি শক্তি ভাব নিয়ম ও উদ্দেশ্য নির্ণয় করাই মনোবিজ্ঞানের প্রকৃতি। মন বিশ্ব জগতের মধ্যবিন্দু এবং মনোবি-জ্ঞান জ্ঞান-রাজোর রাজধানী-প্রনপ। সমস্ত স্টি-পরিধি প্রদক্ষিণ করিয়া ঈশ্বর প্রতি-ষ্ঠিত নিয়ম কৌশল ও সৌনদ্যা ক্দয়জন করণার্থে মনের মধ্যেই প্রবেশ করিতে হয়, কারণ মনুষ্য রুম্বের এতভাবৎই মনের श्रवृद्धि-मादशक ।

অপিচ চিন্তাশক্তির কার্যা একপ অ
ত্ব ত যে যত অধিক পরিমাণে এক বি
যয়ে তাহা পরিচালিত হইবে, তত অধিক
পরিমাণে সর্ববিষয়ক জ্ঞান উপাজ্জন

করিতে মনকে প্রেন্ত প্রস্তুত ও সমর্থ ক
রিবে। মনোবিজ্ঞান আলোচনায় যেমন

চিন্তা-শক্তির পরিচালন হয় এমত আর কিছুতেই নহে, সেই জন্য আত্ম-জ্ঞানই সকল

স্তানের উপায়। বিশেষভঃ যে শাস্ত্রই অমুগাবিত হউক মনের প্রস্তুত্তি ও কার্যা ভিন্ন

কোন ক্রমেই ভাষাকে সুন্ধ্যতি জলে না,
তবে যে বিদ্যা মনের তত্ত্ব নিদর্শন করে
তাহা যে সর্বাদেশকা মহৎ ভাষাতে আর সক্ষেহ কি ? মনোবিজ্ঞানের ঘারা যে অন্যান্য
শাস্ত্রাভ্যাসের সৌকর্য্য হয় ইয়া ভাষার
আপেক্ষিক মহত্ব; আর মনোবিজ্ঞানের ঘারা
যে মনের স্বতন্ত্র উন্নতি জল্মে ইয়া ভাষার
স্বতন্ত্র মহত্ব।

অবিকন্ত ঈশ্বরজ্ঞান যে কপ উচ্ছালতা সহকারে মনোদগতে লক হয় মে থ্রকার অন্য কোথাও হয় না। পৃথিবী মথ্যে জ্ঞান প্রীতি পবিত্রতার সকা শ্রেড প্রতিক্রপ মন্তুষ্যের আলা। যাহারা আপনা দিগের আলার সহন্তাব না ফানিয়া পাপাচ-রণ করে তাহারা পরসেশরের স্থকগেব আ-গৌরব করে, এবং যাহারা আলতল্প অবণ্ড হইয়া নিয়ত জীবনের উদ্দেশ্য সাধন করে তাহার ধর্মের পথ উজ্জ্বল করে এবং স্থার স্থকপের উজ্জ্বল পরিচয় প্রদান করে। অত-এব যে বিদ্যা দ্বারা সেই আল্ল-তল্প ও আ-লান্ত্রার, তাহার মহত্বের কি সীমা আছে ?

দৃষ্ট বিষয়ের কারণ অনুগলান করাই বিজ্ঞানের কার্যা। পৃথিবী জড় ও জীবন-বিহীন
পদার্থ। মনুষোর মনই ভাহার অন্তর্গত
কার্য্য কারণ শৃষ্ণলা অনুভব করে, এবং স্থীয়
স্থভাব অনুগারে কারণের পর কারণ অনুসন্ধান করিতে থাকে। এই প্রকারে উপর্যু
পরি কারণ শৃষ্ণলায় উত্থান করিতে করিতে
পরিশেষে সর্বোপার সেই কারণের কারণ,
সেই আদি কারণ স্থলপ পরনেশরের উজ্জুল
মুখ দেখিতে পায়। বিশ্ব মণ্ডলস্থ ভাবৎ কারণরাশিকে সমাক্ষণে একতীভুত করিয়া তাঁহাকে গ্রহণ করা আপাততঃ মনুষোর পক্ষে
অসাধ্য, কিন্তু ইহাই মনোবিজ্ঞানের উদ্দেশ্য
বলিয়া নিশ্চয় ব্লেপ নির্দিষ্ট হইতে পারে।

ভপরেক্ত বিষয় সকল সহযো আমরা

যাহা কিছু বলিয়াছি ভাষা নিভান্ত অসক্ষু বিভ সামানা সন্দেহ নাই। সকলে সহযোহ ভাহা আয়ন্তীক্ত করিভে সমর্থ হইবেন। কিন্তু আমাদিনের উন্দেশ্য ভৎসমন্ত বর্থা-সাধা আলোচনা করিয়া পাঠকবর্গ ও সকল ব্রাহ্ম জাতুমগুলের হৃদরে মনোবিষয়ক ভিন্তা উদুশ এপ্নিন্দীল করি, যে ভাষারা আমাদিনের নাহাযা অপেকা মহন্তর উ-পায়ে মন্ত্রের প্রকৃতি এবং ভ্রিহিভ ক্ষ-

এ ফণে আমাদিগের গঢ় ৰূপে মনো-বিজ্ঞান শান্ত্রের আলোচনার প্রহৃত হইতে ছটংব। এতাদৃশ আলোচনার পূর্বে বোধ হর আমাদিনের মন শব্দের প্রকৃত অর্থ অব-গত হওয়া, এবং মন-সম্মীয় সর্বাদা ব্যবহার্য্য ক তি পয় শক্ষের ভাৎপর্যা নিরপণ করা একান্ত আবিশ্যক। কারণ সাধারণতঃ বিজ্ঞান শাস্ত্র गत्रदक्ष, विद्यावटः मत्भविष्ठांन मत्रदक्ष, वि-শেষ বিশেষ ভাব-নিদর্শক এঞ্চাদৃশ কভক গুলি শব্দ নিৰূপণ ও তাহাদিনের অদৈধ অর্থ সংগ্রহ করিলে ভবিদ্যালোচনার অ-जिमा दिनोक्या कदम । मफ लहा विक-বিভগু হেতু अमारिबि य कड समात अञा নর্থকর মতামতের উদ্ভাবন ক্ইয়াছে ভাকার সংখ্যা করিয়া শেষ করা যায় না। অধিকন্ত वश्र जायात्र मत्नोविष्ठांन मत्रस्तीतं कान तठ-नामि यमा शर्यास धकामिक इस नाहे, यू-ज्जार **छे ज विषद्ध (य प्रतार भर**ानि বাবহৃত হইবে, ভাছা মাধারণের বোধগ্য্য कर्नादर्थ अशादन विश्व इंडेट्डिट्ट

मन काशांदक वरण, धर्म विषय गरेशा य कछ सामाञ्चान स्रेगांदस (बाध स्य ध-निटक्रे धरणक बाटसना दक्तमन दक्तमहोत्र, दक्र महीत्रदक मन; दक्त स्य बनदक महीत्र छ मन छेजत्र विद्यमा करतन। दक्त या क्षांदरक कांग्र, स्कर् वा त्यांविक, त्कर वा म-श्रिटकत्र वर्ग यांज विटवनमा करतन। এहे क्षकादत मन देव कि अमार्थ है। नहेता हितकाल है विकामविद्मितंत मत्या वन्तु ह-निशंदि । वित्वहना कंत्रिटन व्यक्तीयमान হইবে যে কতকগুলি গুণ ও ভাব দেখিবাই আমরা কোন একটা পদার্থের অন্তিত্ব নি-र्फिन করিয়া থাকি। তেন থাকিলেই তা-হার একটি আধার থাকিবে, সেই আধারকে পদার্থ কহা যায়! এই পদার্থকে অবলয়ন করিয়া সকল ভাব সকল গুণ স্থিতি করি-তেছে, এবং ইছা হইতে বিচ্ছিল হইরা গুণনাত্রই অবস্থিতি করিতে পারে না। আহুতি, বিস্তৃতি, গতি, আকর্ষণাদি কডক-গুলি গুণত্রেণী একটা পদার্থকে আশ্রয় করিয়া রহিয়াছে তাহার নাম জড়পদার্থ : জ্ঞান, প্রীভি, ইচ্ছাদি কভকগুলি গুণ-শ্রেণী অপর একটা পদার্থকে আত্রয় করিয়া রহি-য়াছে, তাহার নাম চেতন পদার্থ অথবা মন। এই দিবিধ পদার্থ হইতে বিচ্ছিন হইয়া কি উপরোল্লিখিত গুণ-মণ্ডলীর মধ্যে একটাও অবস্থিতি করিতে পারে? কেহ কি অ-मार्गियथि वञ्च-विशेष चाक्रिक, यो वञ्च-विशेष বর্ণ নয়ন গোচর করিয়াছেন, না মনোবিংীন জ্ঞান, ও হৃদয়-বিহীন শ্রীতি উপলব্ধি করি-পদার্থ হইতে পৃথক্ করিয়া য়াছেন? গুণ-চিন্তা মনুষা-যভাবের পকে অসম্ভব। অভএব কতকগুলি গুণরাশি দেখিলে তাহা मिशरक रकान अकरी छन्नांनी शमार्थत অন্তর্গত বলিয়া নিশ্বর প্রতীতি হয় ; তাহা मा इउता चरशेफिक ७ चत्राचः दिक। এই গুণরাশি যদি সাধারণত সভুশ হয়, ভাহা **হইলে** তদবলমিত পদাৰ্থত এক স্বভাবাপন হইনে, কেবল তাহানিগের ৰূপান্তর ও অবস্থান্তর নিবন্ধন উক্ত পদার্থের আকুতি ও অবস্থার ভেদ হইবে, এবং তাহা ভিন্ন

ভিন্ন নামে উক্ত হইবে। যথা বায়ু ও थरुत, এवर स्रवर्ग ७ जन हेशिनिद्य (म चिटल निठान विভिन्न अमोर्थ द्वांथ रहे। किन्न यमिछ ইश्वानिटशत विद्रमय विद्रमय अद्भार अटडन चार्ट. ज्वांशि जड़ शर्मार्थंत मा-ধারণ সমস্ত গুণ উভয়েতেই সমান ৰূপে বিদ্যমান রহিয়াছে ইহা অবভা কীকার্য্য; কারণ আকৃতি বিস্তৃতি বর্ণ ও আকর্মণাদি জড়ীয় গুণ উভয়েতেই সমভাবে স্থিত দৃষ্ট হয়। অভএব তাহারা ভিন্ন জব্য মাত্র, ভিন্ন जिन्न अमोर्थ नरह। किन्न यपि छैन्नि-থিত গুণরাশির মধ্যে একটা শ্রেণী অপর त्यानोगि हहेटड मन्भूनं करण विक्रक ७ **डिग्न**-श्रुजान इहेशा উঠে তাই। इस्टेन छम्दनश्रिक পদাৰ্থদয়ও বিভিন্ন-স্বভাব ও বিরুদ্ধ হইবে তাহাতে আর কোন সন্দেহ নাই। একাণে जहरकारे दार्थ रहेरल शांत य अ**ए** शंना-র্থের এবং চেতন প্রদার্থের গুণ্মমন্ত যেমন প্রস্পর বিরুদ্ধ ও অসদুশ-শ্বভাব এমত জ-গতে আর কোন বস্তুই নহে। বাস্তবিক একটা লক্ষণ ও উভয় পদার্থের সাধা-द्रश्**मम्भ**ण्डि नहरू! जाइ द**ञ्चत या ममख** গুণ চেতন বস্তুতে তাহার সম্পূর্ণ বিরহ, এবং চেতন বস্তু অর্থবা মনের যে সমস্ত লক্ষণ জড় পদার্থে অথবা বাহ্য জগতে তা-হার সম্পূর্ণ বিরহ। কেবল বিরহ নহে আ-বার বিরোধ। জড়তা এবং টৈতনা কেমন বিরুদ্ধ যেমন অক্ষকরি ও আলোক, যেমন ক্ৰীবন ও মৃত্যু। অতএব বাহাৰস্ত অথবা জড় পদার্গ, এবং চেডন বস্তু অথবা জ্ঞান পদার্থ নস্পূৰ্ণৰূপে অসদৃশ ও বিভিন্নস্থ ভাব। শরীর यादायस ७ कड़भनार्थ, कड़ीय ममल छन्हे क्षारक विमामान मुके इस्र। अवर मन ाडन श्रमार्थ, (इंडन श्रमार्थत समस्य **छ**न्हे ভাষাতে শঞ্চিত হয়। এই **জন্য "শরীর ও** হন এই ছুই প্রস্<u>পর ভিন্ন বস্ত। যামানা যু-</u>

क्रिटक अवनद्दन कतिहलहे विश्वकृष विश्वाम स्टेटन रच महीतन आहर, मनल आहर, किन मतीत सम महर, समल मतीत नहर, छ-**जात के जब स्ट्रिक किया।** वाहे भारीत छ मरमक विकिश्न विमर्भनार्थ भूतां कालीन এक जन महा পণ্ডিতের বাকা অসুবাদিত হইল। আচার্য্য এবং শিষ্য পরক্ষার কথো-পকধন इहेट्डहा আচার্য। **ভূমি কাহার 'মঞ্জেকথা** কহি-তেছ ? আমার সঙ্গে নছে ? শিষ্য। হঁ। ভগবন্, আপনার ক্রে আলাপ করিতেছি। আচার্যা। আমিও <mark>ভোমার সক্রে</mark> আলাপ করিতেছি ? शिया। यथार्थ। আচাৰ্য্য। তবে আচাৰ্য্য কথা কহিতেছেন 🖟 भिषा। यथार्थ जगतन्। আচার্য্য। এবং শিষ্য শ্রবণ করিতেছেন 🌣 शिषा। यथार्थ। আচার্য্য। আমি শব্দ ছারা তোমার সংস্থ আলাপ করিতেছি? শিযা। ভগবন, ইহাতে আর সন্দেহ কি? আঁচার্যা। আলাপ করা এবং শব্দ ব্যাব-হার করা এ উভয় একই কার্যা ? मिया। এकरे कार्या। আচার্য্য। ব্যবহার-কর্ত্তা এবং ব্যাবহৃত পদার্থ এউভয় কি ভিন্ন নছে? निया। जगरन। कि वनिदनन छेखन कर्प হৃদয়ঙ্গম করিতে পারিলাম না। 🐇 আচার্য্য। বাদ্যকর স্থীয় বাদ্যক্ত হইতে কি বিভিন্ন নহে? কাষ্ঠ ছেদক স্থীয় কুঠার क्हेर**क कि वि**जिन्न नरह ? শিষা। নিঃসন্দেহ ভগবন্। বিভিন্ন। আভাষ্য। আমি ভোমাকে ইহাই জিজানা ক্রিতেছিলাম, বাবহার কর্ত্তা এবং ব্যবহৃত

বস্তু কি পরস্পর ভিন্ন নহে।

निया। देशांद्र यात गरमर कि। व्यागर्था। किंदु में कार्य एए के कि कर्मन তাহার অন্ত ছারা কাঠ ছেশ্ব করে, না তাহার मद्रक चीत्र स्टलन महाराज ध **र्गकदत्र १** माराज्य । १ १ १ अल्लाहरू व्याप्त । विकास स्व निया। इटला महिया अर्थे केटा व्यानार्था। छटव मि श्रीप्त इंखटक वादहात •করে ? लिया। यथार्थ जनवान्। আচার্যা। সে হচ্ছের ন্যায় স্থীয় চকুকেও ব্যবহার করিয়া থাকে ? শ্যা। ভগবন্! করিয়া থাকে व्याहर्षि। उदय क्षेष्ठिष्ट्रमक अवः वांनाकत ভাহাদিগের হস্ত ও চক্ষ্ হইতে বিভিন্ন ? শিখা। ভগৰন্ ইহাই তো বোধ হয়। আচ্ব্যা। কিন্তু কেব**ল হস্ত ও চকু কেন** ? गकत मञ्चाई इस अप ठक्कू कर्नानि ममस অঙ্গের সমর্চিযে শরীর তাহাকেও তো ব্যব-হার করিয়া থাকে। শিया। ভগবন্ ইহাতে আর সন্দেহ কি। আচার্যা। আমাদিগের ইহাই তে। সিদ্ধান্ত श्रेतारह रच वावश्रंत कर्डी **७वः** वावक्रड বস্তু এউভয়ে বিভিন্ন ? 🧃 निवा। ইशेर आंगानित्रत निकास। আচার্ঘ্য । মনুবা তবে ভাহার শরীর হ-ইতে ভিন্ন ? শিষা। ভগবন্ ইহাই তে। আমার প্রতীতি र्रेट्टिष्ट् । , व्यागर्या। जत्त मनुषा कि ? শিষা। ভগৰন আমি জাভ নহি। আচাৰ্যা। তুমি তে ইহা জ্ঞান্ত আছ যে मञ्जूषा महीत नटर, ता कांश्रंत महीतटक वा-বহার করিয়া থাকে। শिया। देश क्षांठ आहि। भागिया। मन जिल्ल नहीत्रक कि स्थात (कर वावरांत कतिए बाहरमा

निया। जात (करहे नटर। व्यक्तिया। यमहे उदद क्षकुष्ठ मसूया। ছोछ। दे जनवन्। मनहै अङ्ग्रं मन्या। আচার্যা এবং শিবের উপরোলিখত मस्रोयन इहेटल जाबता दक्वल इहाई मिका করিলাম না যে শরীর এবং মন এ উভয়ে বিভিন্ন পদার্থ, কিন্তু ইহাও স্পার্টকপে অ-वज्**ठ हरेलाम (य ''मॅनहे** शक्क मनूषा'। **এই मछाँगे क्यम महान्! देश** इहेट আমাদিনের হৃদয়ে কত মহস্তাবের উৎপত্তি हरेटल्ट्स, এवः व्यामानिटनत धर्माटक्ये। उ আত্মোহতির আশা কতই সহায় লাভ করি-তেছে। এই বৃঙ্গ দেশের ছীনাবস্থ সন্তান **पिटशत मट्या गोहाता मारमातिक ऋथ इःट्य** उनानीन थाकिया क्वन चीत चीत धर স্বদেশীয় লোকদিবের মানদিক উর্লাভ সাধন করিবার চেন্টা করিতেছেন, যাহালে এদেশে ধর্মের গৌরব রুদ্ধি হয়, শান্তি কুশল প্রদারিত হয়, ভাছারই জন্য ঘাঁছারদের হৃদর বাকুল, তাঁহারাই এরত মনুযাতার পরিচয় দিতেছেন। ইহলোকে উ।হা-मिरात (य ममन्ड कुन कर्छे इहेर डह. নিষ্ঠুর খত্যাচারী লোকদিলের নিকট ছইতে य बांघांठ य निर्माठन महा कतिएउट्हर, তাহা এক দিন ভাঁহাদিগের জড়ীয় শরীরের गहित ममाश्व हरेता याहेता। उँ। हाता नियां जिन्न कर नियां जोता जी हो पि-গকে বিশ্বত হইবেন, কিন্তু আমৃত্যু প্রাণ-ণত-চেক্টা-মন্তুত বে আছোনতি ভাহা অনম্ভ কাল সুখ শান্তি ও অন্ত সম্পত্তি বিধান করিবে সন্দেহ নাই। महिक भारोदिक ऋथ छः८थत व्यवसाम इस, किछ घडीर कर्फे भारा मान्मिक माना किहे তিরকাল প্রলোকে মনুবোর সম্বল হট্যা * विञि करतः नेश्वत क्यून मा माण्डि इहेर्ड यन करूरे किठ्ठाल में इत्यम।

मत्या मन्यारे न स्वत्यकं अवः मन्द्रयात्र मत्या मनदे मस्त्रत्यकं।

গত ১৫ই জোষ্ঠ কোন্নগর দিতীয় দায়ৎ-দরিক ব্রাহ্মদালে নিম লিখিত বজুতাটী পঠিত হয়।

व्यम्। এই সমাজের नशःक्रम এক स्टमत्र शूर्व हरेल! कङ्गामग्र शहरमभरत्व अनुकम्भारिक स्य এতংকাল পর্যান্ত সমাজের কার্য্য নির্মিল্লে সম্পাদিত হইয়াছে ই২াতে কুডজ গ্ৰহণ সেই মঙ্লময় পুরু-বকে বার বরে নমস্কার করি। বদিচ এই সংক্ষেপ-कृति गर्भा कहे आरुगत अधिकमर्थाक स्नाक ব্ৰাক্ষবৰ্শ্বে অনুৱাগ প্ৰকাশ করেন নাই, ভথাচ যে কয়েকটী যুব। ব্ৰংহ্ম-ৰেছণী ভুকু ২ইয়াছেন ভাঁহারদিগের অকপট-ভা্ব ও ধর্মের প্রতি আন্ত-রিক আদ্ধা পাকাতে বিশেষ তৃত্তিকর হইয়াছে। আর ইহাও আফাদিগের মারণকরা উচিত, ভূ-নিতে বীকা ৰপন করিবানাত ফল লাভ করা যাইতে পারে না, প্রত্যুত কালকে প্রভীকাক-तिए हरेतक। काल गहकाद्व मार्च बीज जन्न-तिष्ठ ७ भव्तविष्ठ इष्टेबा द्वामक्तरभ भविष्ठ स्य, পশ্চাং ভাষ্ট। ফল পুল্পে মুশোভিত হইয়া থাকে। অন্তর্র গত বর্ষে আমাদিগের উদ্যোগ যে কিঞ্চিং গ্রিমাণে সফল হইগ্রছে ভজনা সেই স্লেহ্নয় পরম পিতাকে ধন্যবাদ করি।

ব্রাহ্মপর্যা সহলের স্বাভাবিক পর্যা, ইহা কিছু ইতন ধর্ম নহে--অতি প্রাচীন কাল অবধি--সৃষ্টির আরম্ভ অবধি এই ধর্ম মনুষোর হুদ্গত কইরা আনিতেচে, এবং ক্রনে যে ইহা সমুদায় পৃথিবীতে গারিবাপে হইবে তাহা স্পট উপলব্ধি ক্ইভেচে।

এই সনাতন ধর্মের উন্নতি সাধনই ব্রাহ্মন্যাতের প্রধান উদ্দেশ্য। এবং সেই পর্য্যের ফুল পরমেশরে প্রীতি ও ভাঁগর প্রিয় কার্য্য সাধন। এই পর্যা-বীক্সকে লখ্য করিয়া আনারদের সকলের একতা ও হল্প সহকারে কার্য্য করাই কর্ত্তরা। সমাক্ষের লোকের কুল কুল বিশয়ে যতের বিভিন্তা থাকিছে পারে, কিন্ধ ভাহা বর্ত্তরা না করিয়া নানাক্ষর উদ্দেশ্য সাধনের চেন্টা করাই বিশেয়; নান এই অবনী মণ্ডলে কোন ছইটা বস্তু পরক্ষার আভিচলেন যায় না, ছইটা রক্ষরা ছইটা জীব কথান পর্যাংশ ভূলা ছফিলোচর বন্ধ না করিছিত, কর্মন্ত্রের স্থান পাওয়া বায় না। ফলভার পরনেন্দ্রের সৃতি কিয়াই এই প্রকার বিভিত্ত, ইহাতে

সনাজক সকল বাজির নত নকল বিষয়ে বে সম্পূর্মণে একা হইবে ভাষা করাচ প্রভাগা করা ঘাইছে পারে না।

থিত যানসিক তথের বিভিন্তা প্রযুক্ত অনুসারে সভ্যাতুসন্ধান পূর্বক ভদত্ত-योगी कार्या कतिवात समा शहरमध्येत व्यटकाक मनू-यादक वाधीनका ध्यमान क्रियादकन, এই वाधीन ভাব नेके कहा आयानियात कथन छेडिङ नटह। কেনু না ভাহা হইলে সভা আবিষ্কৃত ও অব-লম্বিত হইতে পারে না, এবং বে পরিমাণে স্বাধী-নতা থর্ম করা হইবেক সেই পরিষাণে সভ্যকে আগ্রায় দেওয়া হইবেক না। পরমেশ্র সন্তাশরূপ, मलाहे প्রমেশ্রের জ্যোভি, সেই मला অৱলয়ন করিলে মঙ্গনের আলমে উপনীত হওয়া ধায়। সভ্য মঙ্গলের ৰীজ, ভাহার একটী বীক রোপণ করিলে রহপ্রকার মঙ্গল ফল প্রাপ্ত হওয়। যায়। অভএব হে ব্ৰাহ্মভাভাগণ! আইম সকলে মিলিয়া মতাকে লক্ষা করিয়া পর্যের উন্নতি কম্পে যত্ত্রদীল হই। আমানের মলো বদি কোন কোন বিখয়ে মতের আংশিক বিভিন্নত। থাকে ভজন্য প্রকানের विद्राप ও विषयाम न। कदिश । प्राथारमञ्ज सकरलव निर्ण्या (व धर्माविक छिविया धेका छारतस्त कति। खेका बाजिद्युदक कान महर काना भन्ना: দিত কইতে পারে না, এবং ছর্মল মন্বোরাড ঐক্য গুণে অভিগুরুত্তর কা্ণ্য সম্পন্ন করিছে সমর্য হয়। অভএর পর্ণের উহ্নতি কল্পে দক*ন* তা-জারই দুঢ় ঐক্য অবলয়ন করা অভান্ত আনুশাক। ষাহাতে বিশুক পর্মা ও জানের মোভি সর্বজ বিকীর্ণ হয়, দেঁশের কুৎসিত আচার ব্যবহার সকল ভিরে'হিভ হুইয়া সদাচার ও সভ্য ব্যবহার সংস্থা-পিত হয় এবং লোকের ছংখ বিদোচন ও সুখ वर्षान इस काम्रमदन् विदिका छोड़ात ६०चे। कहा धा-মাদিগের করিবা।

হে পরনায়ন। তোমার সহায়তা ভিন আমরা কোন বিষয়ে কুজনার্থা হইছে পারি না: কেবল ভোমারই কুপার উপর নির্ভর করিয়া আমর। এই শুরুত্তর কার্থো প্রবৃত্ত হইয়াছি। তুমি আমা-দিগকে এরপ ধর্মাবল প্রেরণ কর, যদ্বারা আমরা সংসারে নানাপ্রকার প্রলোভন ও বিশ্ব অভিক্রম করিয়া ভৌমার মঙ্গলমরী ইচ্ছার অনুগামী হই। আমরা বেন দিন দিন ভৌমার প্রতি অধিক্তর প্রীতি হাগন করি, ভোমার নিয়মিত ধর্মা পালনে বজুশীল হই, এবং সকল মনুষোর বিত চিত্তাতে জীবন অবশান করি। এই আমার

ॐ এकरमवाश्विष्ठीग्न९

অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা।

বৈং সংখ্যক পত্রিকার ৩১ পৃথার পর।

(ঞাবা)

যাহা হউক মনুবোর ধর্ম তৃষা চিরকালই প্রবল, চিরকালই সে ধর্মের জনা লালায়িত। ু সে যে কোন অবস্থায় কেন নিপতিত হউক না, অতি বিস্তীৰ্ণ নামাজোর নমাট হইয়া সংখ্যাতীত লোকের উপর প্রবন পরাক্রনের সহিত আধিপতা ক্রছ, অথবা পূর্ণ কুলীর নিবাদী হইয়া অলাভাবে ক্রিক শরারে অভিদীন ছংখী প্রজার নাায় সময় ক্ষেপণ করুক, প্রাভৃত পন উপার্জনাশায় ছন্তর জ-প্র সকল পার হইয়া বাবসায় বাণিজ্যেই প্রবুড **উটক, অথবা পরিবার-মুল্জ প্রেছ, মনতা, প্রীতি-**ক্ৰপ কোমল বস্ত্ৰন উৎপন্ন অনিৰ্বাচনীয় মুখ লাল-সায় বাসস্থান গৃহকেই সার করুক, সে যদি কিয়ৎ পরিমাণেও প্রকৃতিক থাকে ভাষা হইলে দকল অবস্থাতেই দে ঈশ্বরের দিকে ভূষ্টি না করিয়া থা-কিতে পাবে না। ফলভঃ ইহা নিঃসংশয়-সভা ্য সকল স্থানের এবং সকল কালের লোকেই ধাপার জনা বাংকুলতা প্রদর্শন করিয়াছে; তবে প্রাপাধিক এই মাত্র।

জ্মার মনুষোর অস্তারে পর্মভাব সকল রোপণ করিয়াছেন বলিয়হি দে কথন পর্মহীন অবস্থায় কাল যাপন করে নাই। ভাহার প্রায় সকল किश'ल्डे धर्माचान गाक स्मा কি স্বকীয় কি পরিবার-সম্পর্কীয়, কি সামাজিক কি রাজনীতি-विषयक ভारांत मकल कार्या है भर्मा मिश्री । গ্রিছদীদিগের ধর্মাভাব ভাষাদের নিজ নিজ আচার ব্যবহারে প্রকাশ পাইয়াছিল, এবং হিস্ফু, মুসল-নান, খ্টীয় সম্পুদায়ের রীতি নীভি প্রভৃতির অভান্তরে প্রবেশ করিয়া দেখিলেও আমরা সেই ^{*}সভা উপল্কি করি। ধর্ম মনুষ্যের আত্মাতক এমপ প্রশস্ত ভাবে অধিকার করিয়া রহিয়াছে, যে त्र पूर्वरङ्हें थाकुक, चात्र ह्रश्यरङ्हे थाकुक, কোন অবস্থাতে কোন কালে নে ধর্মকে সর্বতো-ভাবে অভিক্রম করিতে পারে না। পাছে সে কোন मिक् मिश्रा भेलाहेश ने बद्दत आखन हेहेटल हुद्द গিয়া পড়ে এই জনা ধর্ম ভাহার সকল ভাবের नकन कार्यात्र बातरमध्य व्यवन कतिया व्यवहीत ন্যায় অভি সভক ভাবে চতুর্দিক রকা করেন। অনেক মহাত্মা ব্যক্তি ধর্মকে মনুবেরে জীবন রূপ ठ क्रिया विष्णु विनिया छिक क्रिया एइन । काराज সকল কার্যা পরিধি রূপে সেই মধ্য বিস্ফুকে পরি-বেটিত করিয়া রহিয়াছে।

धरमीत नत्व मनूरवात नत्व वर्गन बक्तभ अवि-

त्यान इहेल, उथन योश्ता मन्त्यात ध्वकृति বিশেষ করিয়া দর্শন করে নাই, জাহারা, ভিন্ন জাব কেহই ভাহাকে আদেশ করিতে পারে না, '' ভূমি आश्रनात्र गरन गरनहे धरमात्र आत्नाहन। कवित्र, সাৎসারিক বিষয়ে ধর্মাভাব প্রকাশ করিবে ন।। नामांकिक कार्या भरमात अनूबर्जी हरेरत हरेरज পার, কিন্তু আহলাদের কিন্তা শোক ত্রবের সময় কথনই ভাহাকে অন্তরে স্থান দান করিবে না। বে বাজি কিয়া যে ধর্মা মনুষ্যপ্রকৃতির সনাক উন্নতির অর্থ অন্বগত থাকিয়া ভাষাকে স্থানীন ভাবে পরিচালনা করিতে না দেয়, যে বাভি এবং দে ধর্ম অভি অঞ্**লন্ত অনুদার এবং** কীণ-प्रभी विलिट्ड हरेरवक । एपनम वालकरक छाहाँ व ইন্ধামতে অঙ্গ প্রভাঙ্গ চাল্যা কাবতে ও সঞ্জ জীড়ানুরত হটতে না দিলা ভাষাৰ প্রকৃতি विक्रम्ब कटोर्शव आएममा अकल श्रीलम कविरुष्ट वाधिक कविद्रल, स्म नि*ध्युष्टे खेलाम ७ किन्नि विशीम इड्या कारल मकल ध्यकात जिलाम, माठन, बीर्या पूर्वी रहेशा भएए, ध्यावरे कांगत वाता काम महर कार्या भाजिल केनेवाव महोतनी ধাকে না ; সেই রূপ মনুধাকে ভাহাব প্রকৃতি অনুষায়ী কর্মা করিছে না দিলে তাহার উল্লভি ও मह्दू लोटछत्र পথে विषय वर्गाष्ट्र केर्याच्या कर्या. হয়। ব্লক্ষকে উত্থ্রপ্রপ ফল প্রাথণ করিয়াল দেখিবারে मान्य थाकिरल (त्यन अवसाई डाइ) एक धरन खारन (द्वोभग क्रिट्ड क्रेट्ट, अटम नथा अटम अन की-ভোক্তা হইতে দক্ষিত না থাকে, এবং সামাৰ যে -দিকে ইচ্ছা করে সেই দিকেই শাখা প্রশাসারি खात कतिएक मगर्थ दश, अनुस्थात स्विटक क । भई। ৰূপ স্বভন্ত ভাবে মৰ্কনিকে পাৰিক কৰিছে কেওনা कर्द्धाः शक्ष्य स्थम यन मनी मध्य दश्कातः-শ্যাভিমুখে ধাতা করিলে অত্যুক্ত শিলাম্য রস্থু সমান সূতৃত্ শুপ্রত শ্রাজাও গ্রেজিবাপ করিছে ममर्थ हम मो, राष्ट्रे क्षेत्र मनूना क्नसंख छ त उसार मत প্র**তি সহল্র সহল্য প্রতিবন্ধ** দভাচরণ করিনেও ভাহা কাল সহকায়ে সকল বাপা অভিক্রম কবিয়া, य भटन हिन्दा यहित्वहें गहित्य। মনুৰুদকে স্বভাবেৰ ৰিপরীত কার্ণ। কবিতে নিয়োগ করাতে কেবল আমাদের ছনেচনা ও অজ্ঞানভাই প্রকাশ পায় ৷ আখরা কেবল তজাবা সভবোর उम्रिक त्यांकरक धर्याकारत निर्मिष्ठे जात्म लेल-नीछ इटेल्ड मा निवांत अम, अलावाय जाती

ধন্ম মনুষ্যের সমুদ্ধ জালাকে পরিবাাঞা কবিয়ারহিয়াছে। মনুষ্যের প্রাতি কিয়াই বর্গা। নুগত হইতে পাঃ। সকল কাষ্যই ঈশ্বর-প্রাপ্তির উদ্দেশে সমাধা হইতে পারে। সামান

टेरविकक क्रिका अवधि मान्य जीवरमत अकेल्ब कित्रा डेश्यमम् अर्थास मस्यादके धर्मात्र मास्ट्रा जाना योग । वसन् बहुना जाभनाह कालिकार्या-কেই গর্মের শাসনে শাসিত করেন ভতানই তাঁ-লাকে প্রকৃতিক ৰবিয়া উদ্ধি করা যাইছে পারে। र्थाम जन्नेन भेटक धर्म मधकीय किया माद्रवाहरू আর্ম্ব বুঝায়, ভবে বে রূপ আলোচিত হুইক তাহদেও প্রাক্তীভি হইচে পারে যে যাঁহারা প্রকৃত শাণু ভাঁৰারা হয়ত নিয়তই অনুঠাৰে প্রস্তু হই-· जरधन। किस अमुर्शानक **बरे** नाभक कर्ष নকলে বুঝে না। অনুঠান শকের বাংপক অর্থ নইলে, মুনুযার আখাজিক ও কড়িক কিয়া বিশ্যের ভাষাকে আধ্যাত্তিক ও বাহিক এই ছুই কেনীকে বিজ্ঞ করা হাইভে পাক্ষে। **স্থাক**-ন্ত্রে ক্ষমা, উদার্ঘা, দরা, উপচিকীর্যা, ভক্তি, প্রীতি াপ্রভৃতির অনুষ্ঠানকে আখ্যাত্মিত অনুষ্ঠান করে, खव[ा] मार्मादिक ७ देत्रक्षिक कार्या **बदर** शहरूक्ष भिक्षिण इत्रेश क्षेत्रहात्मरण अनुष्ठिक क्रियादि-म्बर्यत साम राधिक जानूक्षीन। विशासिक অনুষ্ঠান সকলেরই অনুনোদিভ, কেছই ভাহার বিরোগী হউতে পারে না, বাহ্যিক অনুষ্ঠান বিশেষের প্রভিন্ন আপত্তি চুক্ট হয়। এই সকল আপত্তি কত দুৱ মুক্তি সম্ভত ক্ৰমে আলোচনা चन्ना नामित्य ।

বাজিক অনুঠান ছুই প্রকার লক্ষিত বয়। গ্ল ভাষারা আমাদের আন্তরিক ভার **প্রকাশক**, বখন আনাদের ক্ষমে কোন সর্ব ও সাধ্ভাতের উনয় হয় তথ্য আমরা কাহাৰায়। ভাষা বাহিরে অকাশ করি; নয় ভাষারা আমাদের সংসারের ও অংগার উপতি বাধনের উপায়রবেপ অবলম্বিত ্টগা থাকে। অথবোক্ত বালিক অনুষ্ঠানের প্রতি মবরোগ প্রকাশ করা নিতার অসমত, এ হেডুক ভাষা হইলে মানব আকৃতির আছি বি-কর্মতার প্রকাশ করা হয়। আ**দানের আন্তরিক** গণভাৰ সকল ৰাহিৱে প্ৰকাশ ক্ষিতে দা পাইলে জামানের আছেটিক নিজ্ভেক ও **অকর্মান্য হটুরা** 'भगाम महें । अवद तमहे मक्का काहित्व क्षकामां करा ^{কি আ}ন'দের পাভাবিক কার্য্য নহে **৭ প্রেই উ**-ভিথিত হটবাছে বের্মিয়বোর অভারকে সীয়পথে भारति उने कि मां मिंख्याकि श्रीमारमञ्ज क्वतंत्र है-প্রেটাট সক্ষ_াপায়। যাঁছারা মন্ত্রাক্ক নীচ ও মতিন সাৰ প্ৰিকাশ করিয়া **উন্নত ও প্ৰিত্ৰতাৰ**, কুল্লে বিভূদিত দেখিতে অভিলাধ করেন, তাঁহারা এ ছিতীয় জনা। বাহিকে **অনুঠান সকলকে অনু-**িত তেপে হের জান করিবেন **এবিখাসকে** থামি বাধন মনে ভান দান করিছে পারি না। ভবে অনুচান জনেক সময়ে বাহা।ভয়রদার **হইরা**

উঠে, ভাঁহা আমাধিকের আন্তরিক করেবিও প্রকাশ করে না এবং আত্মার উন্নতি সাধন ও করে না। এরপ অনুষ্ঠান অবশাই প্রতি জনের ঘৃণার বিষয় হওয়া করিব।

अबूबीन रमचे ७ कांब टिए जिन्न जिन्न पृष्टे इसः। यथन सकत् (पंशीय व्यादकत् छाव नाना কারণ ৰাশতঃ ভিন্ন ভিন্ন হইয়া গিয়াছে, যখন এক দেশের অভাবের সহিত অন্য নেশের অভাব সং करवात धेकाणा नाहे, यथन कारमत नहिंद शामा-দের ভাব ও অভাব মকল পরিবর্তিত হইভেছে, **७ धन ८५ थ काल निरमारक अनुक्षीन मकल जिल्** ভিন্ন ক্ৰেণ প্ৰকাশ পাইৰে মন্দেহকি ! ঘথন মনু-त्यात महत्व मध्यामकांका थाछि ও भोत्रव नाटम्ह স্পৃহা অভি ৰাধারণ ও বলবতী চিল, তখন ড: হার আতি অনুঠানেই সংগ্রাম স্পৃহার ভার প্রকা-শিক্ত হইত। গ্রীক ও রোমীয়দিগের বিবরণ পাঠে এ সত্যের সহজ্র সহজ্ঞ উদাহরণ প্রাপ্ত হওয়া যায়। যথন জ্ঞানের রাজ্য অধিকতর নিস্তারিত হইয়াছিল তথনকার অনুঠানের ভাব আর সে-क्रभ किस मा। इस्त छ, क्योंग, छ इस्ति हा-मछ। इंडेट्राशीय थुकीय अमुद्रिशत कासर्गंड दम्म ব্যক্তের প্রতি নিরীক্ষ ক্রিলে সে সত্য বিলাধ্ন রপে প্রতিপদ্ধয়। দেখানে আর দেশের যুদ্ধ मध्यक्षीय ভविषाद सक्तनासक्त कासिवात सिंग व त्म (छल्कि तम्बीम कविमामानीक नारे, अवश द्र त्रम प्रतिवृक्ष प्रमान कथा विवास करते मी। मिथादन मिथाएं शाहे लाकि व्याशिवामि श्री ह বিষ্মুভ হইয়া দিন রাত্রি প্রাকৃতিক বিফান, ম-নোবিজ্ঞান, নাায় ও ধর্মাশাক্ত প্রস্তুতি ছক্লহ স্বক্ষ্ **खत्र विमा।-मकल आद्याप्रनाग्र अखिनिक्छिनन**् হইয়াছে। সৃষ্টির অন্তর্শ্বিত মুকৌশল ও নিয়ন সকল আবিষ্ঠ কৰিয়া লোকে সেই অন্তের षासु छ भविमा प्रकृतिहरू मशीयान् कविराख छ, अवर যাহাতে মনোৰুতি সকল চরিতার্থ হয়, এইরূপ • ष्मरथा **छे**भाग **बास्मा**न कतिएक बाहिनास द्रहि-

(ফ্রন্সঃ জ্ঞাক(স্বা)

मश्वाम

গত বারের পত্তিকাতে জ্রীকোকদিগের নিমিত্ত একটি রক্ষোপারনা সমাজ সংস্থাপনের কথা আমর উল্লেখ করিয়া ছিলান। আমরা একংশ অরগত হই-লান বে কতকণ্ডলি মহক্ষরিত ক্রাজের প্রথমে কোন এক ভার পরিবারে নিয়মিত ক্লপে মহিলাদিপের।
উপাসনা কার্য্য সম্পন্ন হইবে। মতদিন না এই
স্থীসমাজন্তী প্রতিষ্ঠিত হইতেছে, ততদিন ইহার স্ববিশেষ ব্রভান্ত আমরা পাঠক বর্গ সমীপে প্রকাশ
করিতে নিরস্ত থাকিব। কারণ কোন আরম্ভ শুভ
কার্য্য সুসম্পন্ন না হইলে ভল্লিষয় লইয়া অকারণ
গোলবোগ করিলে মঙ্গল না হইয়া বরং অনিট
হইতে পারে।

আমরা অভীব আফ্রাদের সহিত অবগত

হইলাম বে শ্রীঘুক্ত বারু কাঁশীশ্বর মিত্র মহা
শব্বের প্রেষড়ে বহরামপুর নগরে একটা ব্রাহ্ম
সমাজ প্রভিষ্ঠিত ২ইয়াছে।

ৰাগাভড়া গ্ৰামে পাঁচটী ব্ৰাহ্ম বিবাহ সুচাক রূপে নির্নাহিত ইইয়া গিয়াছে। দেখানকার লো-কদিগের ভাতৃতার ও সর্লভার কথা প্রবণ করিলে অভ্যন্ত আনন্দ জন্মে। তত্ত্র লোকদিগের মধ্যে অনেকেই পণা বিজেতা; কুদ্র কুদ্র পণা বীথী সং-ভাপন পুৰ্বক যথা কপঞ্চিত আমে জীবন যাত্ৰা निक्षां क्रिया शास्त्रः अञ्चलात् कार्यावदासीमि-भारत भारता याश्रीता जानावर्मा ठाइन ভাগারা কেডাদিকের সভিড বিজেয় দ্রবোর মূলা নিরূপণ প্রথা এককালে পরিস্তাাণ করিয়াছে। কেং কিছু কয় করিতে আসিলে সরল ভাবে এক-क !' व र्वानम् । जैटरे " अ स्टरात अच मुला; हेक्। इस এ২+ কর, না হয় করিওনা ; আমরা ব্রাক্ষ আমরা দর্করিনা।'' দোকানীদিবের দক প্রায় যথ। প্রিমিত রূপে রক্ষিত হয় না, কিন্তু বাগাঁচড়ান্ত ব্রাহ্মরা একক লে এবসিধ অপরিমিত চক পরিবর্ত্ত করিয়া ফেলিয়াছে, এবং সম্পূর্ কুপে ঘ্যার্থ পরিনাণে প্রবাদি বিত্র করে। হাহারা ধকদম। করিলেছিল ভাহারা অসভোর ভয়ে মকদ্দনা পরি-ভ্যাগ করিয়াছে, এবং যাহারা কোন কারণ বশভঃ প্রতিবাদী বা গ্রামস্ত লোকদিগের সহিত বিষয় ঘটিত কোন বিবাদ করিতেছিল, ভাহার৷ আঞ্চ भटमात छे भटन में कटन विवास विश्व में हरेट छ । १३-काटन नितंत्र हरेशांद्य। विमा विदीन व्लाकमिरशंत्र পক্ষে কেবল বিশুদ্ধ ধর্মের বলে এত দুর করিয়া উঠা সহজ নহে। সামান্য লোকলিগের মধ্যে যাঁহারা कान जनस धर्मा ध्याना कतिएक शिवाद्वन छै। हा-রাই স্পান্ত প্রতাক্ষ করিয়াছেন ভাহাদিশকে অব-লম্বিত প্রথা পরিত্যাগ করাইতে রত করা কেমন क्तिन। याँशांता शक्तिक वहरन नक्तिन विनिधा थाटकन य माधार्व लाकमिटगंद महल अक्ष्रिष्ठ क्षमं आकारनीत जाशाश्चिक जाद नकल शह्भ ৰা পালন করিতে পারে না, তাঁহারা এইক্লে वागांवका जामक इस्थी, विमानिकीन-जामनिकान जवहा जवःवाकम करून, जाहा इहेटल दूतिहरू

পারিবেন যে ভাঁছাদিপের বিবেচন। জন মূলক কিলা।

अक्रकार्थक थुंकीय धर्म अकात्रक विमनती यक्षेत्रविद्यात मध्या वर्जमान, नमटक विकासात पन नित्ती किक रता। अरे इस्कि किताहरे द्वाक नमा-জের অনিট নাধন করা নমান অভিসন্ধি। কিন্তু अञ्मादमत भरभा अनिमन विनय क जाकृषादि. সত্তোর অনুবেজির জনা শীয় সংকল্প লাখন ক-রিতে চেটাবান হইয়াছেন, অপ্রাটী নিভান্ত অস-**पृथ्य देवत् छाव ज्ञवसम्ब शूर्वक बाइस्टल ७ वाका** যন্ত্রণায় সমাজকে ছিন্ন ভিন্ন করিছে হোর প্রেভিজ হইয়াছেন। কেই সহক্তা পাঠ করিয়াও ভদ नामित्रोच्र वेच वर्गाहात्रामि व्यहात कतिया गर्भा भिति-মিভ রূপে ব্রাহ্মপর্যোর প্রেভিনাদ্ করিভেছেন, কেছ ৰা মুণা ও ভানুয়াপূৰ্ণ বাকা প্ৰয়োগ করিয়া, এবং স্কৃতিগত দোষ ধানি আরোগ করিয়া ভাগেনা-দিগের পদানত সমাদ পত্রে প্রাকৃতিত কলিতে।৯ন, শেবেভি মহশিয়দিগের ব্যবস্বেশদিও আমর্ সময়ে সময়ে বিরক্ত হই বটে কিন্তু বিশুদ্ধ ঘুক্তি ज्यवन्यस्य कतिया विध्यप्रमा इयः ए। व्यवध्याकः महा-শয়দিগের স্বীয়:ভিস্থি সাধন ভেটা অধিকভঞ কার্যাকর হইৰে স্থলিকিন্ত ধর্মা প্রায়ণ লোকভুত তাঁহাদিগের ভদ্র ও সাধু চেন্টাম উত্তেজিত হইয়া वत् थ्छीय पर्धात ख्लानुमक्तान कांत्रस्त प्रमृत्यूक হইলেও হইতে পারেন কিন্তু অপর জোনীভুক वियम खेषमाही अर्खनीड संदर्गमग्रामिटनंत्र काला-ষিত ও অসদ্ধার সংযুক্ত আচরণে মকলে নিভাস্ত কৌতৃহলাবিউ হয়েন বটে, প্রস্তু জলুরি। কেচই থূটীরধর্মের প্রভি একাদিভ বা অনুরক্ত হইদে नो, कांत्रभ मलागिक', बिन्य जानुसका वित्वधना क्रिएक बाकि बाह्यहै शक्य। मिमनदी क्रांक्रान्टबंद अंजि जामानित्तव बल्वा ८६ छै। साहादक मला बिरवहन। कविरक्तकत छाहा हेन्छ। दश अहात करून, किन्नु निकाकीय डेंबगार्ट डिक्ट इडेया खांड ও প্রতিবাসী দিগের প্রতি জনায় অভ্যাচার ন। करतमे, जार। इहेटल जीहाया मूर्ग स्ट्रमात निकार न। नेश्रद्धत निकडे, काङावत निक व्यक्तिश लास করিছে পারিবেন না। আদয়া কোন দলের বিশেষ নামোজেশ করিতে চাফি না, বােগা করি উহারা স্বীয় স্বীয় গোষ গুল বিচাৰ করিছে সক্ষম হট-दबस ।

বঙ্গদেশে যত যত গ্রাহ্মসনাজ আছে তৎসমুদ্রায়ের কার্য, প্রথালী যতদিন না একটা বিশেষ
শৃষ্ণলা বছা হয় ভতদিন প্রাক্ষধর্মের প্রকৃতভাব
সাধারণ সমক্ষে উজ্জুলকপে প্রকাশিত চইবে না।
যেমন প্রাক্ষ হইয়া অসদাচরণ ক্রণপেকা প্রাহ্ম না
হওয়া ভাল, সেইবপা প্রাহ্মসনাজ সংস্থাপিত হ

ইয়া ব্রাক্ষ ধর্মানমুনোদিত কার্য্যে প্রস্তুত্ত ইওয়া সালক না প্রতিন্তিত ইওয়া ভাল। বেমন ক্ষায় সমকে পৃথিবীতে একটী ধর্মাশাসন আছে সেইরপ মনুষ্য সমকে একটী ধর্মাশাসনের প্রণালী প্রাক্তিত ইওয়া উচিত। যথন আমরা গর্মাকে প্রজ্যোতিত ইওয়া উচিত। যথন আমরা গর্মাকে প্রজ্যোতির কানের কান্য কোটারে আবদ্ধ না রাখিয়া সমাজের মধ্যে প্রেবিন্ট করিয়াতি, পর্তুমান সময়ে ধথন ব্রাক্ষাবর্ম জনসমাজের ধর্মার্থ জনসমাজের ধর্মার্থ জনসমাজের ধর্মার্থ জনসমাজের ধর্মার্থ জনসমাজের ধর্মার জলসাথন করিছে আম্বানিকের উল্লেখ্য করান ক্রেই আম্বানিকের উল্লেখ্য করান ক্রেই আম্বানিকের সাল্যা করান করান ক্রেই আম্বানিকে প্রার্থ সমাজকে সাল্যা করান করাকের বোধ ইইলেভ ইইজে পারে। নাহাতে কর্মদেশস্থ প্রকল ব্রাক্ষ্যমান্ত বিশ্বন্ধ প্রকলি করে ভারার জন্য আম্বানিকের সমূহ করিতে ক্রিবে।

আগানী ভালমানের মানিক সমাকে ব্রাক্ষানমাজের জন, ছই জন উপাচানা অভিনিক্ত ইইবেন।
সমাজের নিয়মিক কান্যানের ইছার। প্রদান আচার্যা মহালারের সমাকে নভারমান ইইয়া উপায়ুক্ত
উপাদেশ লাভ করিবেন। এই কার্যানী অভি
মহালারা, আমরা প্রত্যেক ব্রাহ্ম লাভাকেই
এডদর্শনে নিমন্ত্রণ করিতেচি; বোধ করি নীহার।
উপান্ধিত ইবেন স্কলেই আন্দিন ও উল্লভ
হারে গ্রহে প্রত্যাক্ষ্ম করিকে পারিবেন।

সম্পতি ফে্ডুজফ ইডিয়ানামক সংবাদপতে "जाक्षमभाक्ष" विषया जक्षी खन्डार जिथित दरा। 'लयन कोम्मल ख खादामि मर्नरम प्राप्त दश व লেখক মহাশয় একজন প্রশাস্তাতি ও উদার b-হিত্র বৃষ্টীয়ান ইইবেন। মদাপি আমাদিগের উ क्रिमा मक्क दहेख" खाद। हेटेल "बागरी উলिथिख প্রস্তাবের কোন কোন অংশ উদ্ধ ত বা অনুবাদিত করত প্রকাশ করিয়। পাঠকবর্গকে প্রীত করিতাম। মাহা ছউক প্রস্তাব লেখক বিগত আছিন মানীয় ভদ্ৰোধিনী পত্তিকায় একটী বিজ্ঞাপন অবলয়ন করিয়া গবণ্যেন্টের ধর্মবিবয়ক নির্পেক্ষভার শ্রুভি দোষাহোপ করিয়াচেন! বিজ্ঞাপনে লি-পিত আছে বে "Defence of Brahmeism and the Brahmo Somaj." शुक्तक स्मिन्नीशृद्ध अवर्ष-त्यने तिमानस्य व्याश्च १७३१ गरा। स्कल्पमम् है ধিয়া লেখক এই বিজ্ঞাপন ভাবলয়ন করিয়া ব_ল ालग्राट्य**न व्य शदर्वस्मात्वेत्र भग्ने विषयक निद्यालक**ि नरद्व जांशारमञ्जू विमानिक जान्यभया अवसीत श्र-खक्ष विक्रीं क्रिकार । अवस्थित हे इंडेक र। कार्शक डिएड बलाइ इंडेक, मिनिश्रेत कियात ইন্যাপক্টাৰ নহালং নিদ্যালয়ের গুলান লিক্ষক महानंबरक लिणिशारक्षम य शेवर्गस्यकी मध्कांस বিদ্যালয়ে প্রাপুল্ডক বিক্রয় করা বিধি অসকভ

কার্যা হইয়াছে। আমরা সর্ক্রসাধারণকে অবগল করিতেছি নে নে বিজ্ঞাপন অমুসারে উলিখিজ দোষারোপ কৃত হুইয়াছে তাহা জনাত্মক, ভাহা আনাদিগের এক জন পূর্ব কর্মচারির অনবধানতা জনা নংঘটিত হইয়াছে।

বিজ্ঞাপন।

আগানী ৬ই ভাত রবিবার প্রাভঃকালে ব্রক্ষনিষ্ঠ প্রীযুক্ত বিজয়রুঞ্ধ গোসানী ও প্রীযুক্ত অমলপ্রিসাদ চট্টোপাধায়, মহাশয়গণ ব্রাহ্ম সমাজের উপাচার্য্য পদে অভিয়িক্ত হই বেন। ব্রাহ্ম নহাশয়দিগের প্রতি নিবেদন উক্ত দিব্দ সমাজে উপস্থিত হইয়া আয়ার উন্নতি সাধন করেন ইতি।

> শ্রীপ্রভাপচন্দ্র সঞ্চল্য। সহকারী সংস্থানক।

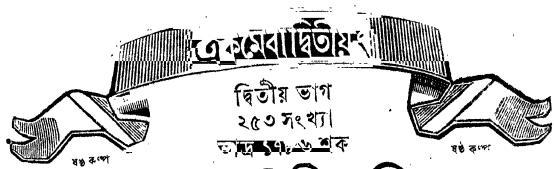
নিঘ'ণ্ট পত্ৰ।

	261
द्राक्षपटक्षंत्र साथान	82
ভার চিন্তা	£ 1,
मानाविकान	4 4
কে মগর ব্রাহ্মসমাজের বক্ত তা	७०
व्यक्तित वानगाकडा	W.
मश्रीम	ঠত
the state of the s	

फब्दराधिनी পতिकात मुना निक्रप्र।

অগ্রিম মূলা (কলিকাডার জনা)	৩
(भकः वात्र क्या)	তদ্ধ ণ
गिक भूवा	10/0
a * 40	ولوا

্তিক্রী এই তন্ত্রেধিনী পরিকা কলিকাতা নগরে যোড়া-দানেক্রিড রাজসমাজের কার্যালয় হইতে প্রতি নাদে প্রকাশিত হয়। ১৭ই জাবণ রবিবার সম্ব ১৯২১ কলিগড়াক ১৯৬৫।



তত্রোধিনীপ্রতিকা

র জবাএকনিদমপ্রকাদীমান্ত কিঞ্নাদীত্তদিদ সর্বন্ধতং তদেব নিতাং জ্ঞান্মন্ত্র লিবং স্থান্ত্রির্বয়ব্যেক।
নেবালিডীয়া সংবাব্যাপি সর্বনিয়ন্ত, সর্বাভায়সর্ববিৎসর্বাশ জিমস্থ বৃষ্পার্নিঞ্জিননিতি। দক্ষ্য তদ্পান্ত্রির্বয়ব্যেক।
তিক্তনিহিত্য প্রভান্তর জিন্ত্রির প্রভান্তর ভিন্ন প্রিভিত্ত সাজিব্যাক্তি ক্রিক্তন্ত্র ভিন্ন ক্রিক্তনিহিত্য প্রভান্তর জিন্ত্র জিন্ত ভিন্ন ক্রিক্তনিহিত্য প্রভান্তর জিন্ত্র জিন্ত ভিন্ন ক্রিক্তনিহিত্য প্রভান্তর জিন্ত্র স্থানিক ভিন্ন ক্রিক্তনিহিত্য প্রভানিক জিন্ত্র স্থানিক জিন্তি স্থানিক জিন্ত্র স্থানিক জিন্ত স্থানিক জিন্ত্র স্থানিক জিন্ত স্থানিক জিন্ত স্থানিক জিন্ত স্থানিক জিন্ত স্থানিক জিন্ত স্থানিক জিন্ত স্থানিক জিন্ত্র স্থানিক জিন্ত স্থানিক জি

কলিকাত। ব্রান্ধ-সমাজের বক্তৃত। 1

২ ফাস্কন ১৭৮৩ শক। বুধবার :

· বক্ষ তলকাস্তাতে। ''

मेश्व मनुषादक मकल कीव अदशक। শ্রেষ্ঠ করিয়া বিচিত্র কামনা ও বিচিত্র ভাবে পূর্ণ করিয়াছেন, এবং বাহিরেও তছ্পযোগী বিষয়-সকল স্থান করিয়াছেন ৮ তাহার স্প্হা, তাহার জ্ঞান ধর্ম প্রীতি, চরিভার্থ कतिवात कना त्य त्य विषद्यत व्यद्तीकन, ঈশর্তাহা দকলই জগতে বিস্তু করিয়া রাখিয়াছেন। **অন্তরে বাহিরে ঈশিরের ক্**-রুণার চিহ্ন ধকটিত রহিয়াছে। আমারদের অন্তরে যত যত কামনা, বাহিরেও তত কা-মনার বিষয়; দেই কামা বিষয়-সকল উ-পভোগ করিয়া সর্বান্তখনাতার এতি ক্বত-জ্ঞতা উচ্চুদিত হইয়া উচে। মধুময় ধ-র্মাকে অবলম্বন করিয়া ভাঁহার এই উদার সদাত্রতে ভাঁহার প্রদন্ত বিষয়-মকল উপ-ভোগ করিলে **আম**রা পাপে লিগু ছই না

''धर्यानि हाः अभागामां कार्यारयां शवहः मना। নাধর্মে কুরুতে বৃদ্ধিং ন'চ পাপে প্রবৰ্তে। "যে প্রশাস্তাত্মা ধর্মকে নিতা আশ্রয় কবিয়া কার্যোপায়ে মদা তৎপর থাকেন, তিনি অধর্মের আলোচনাকরেন না এবং পাপে তেও প্রবৃত্ত হন না।" যিনি কাছারে। প্রতি অন্যায়াচরণ না কবিয়া, কাছারো অ-পকার না করিয়া, অনুত বাক্যানা কহিয়া, मकरलेत्र अंठि मांपू वावकांत्र कृतिहा, शि ভাষাতাকে উক্তি করিয়া, ঈশ্বরের প্রক্রি কুতজ্ঞ হইয়া, কার্য্যোপায়ে তৎপর থাকেন ্রুও শ্রী সম্পত্তি লাভ করেন; তিনি ধর্মকে রক্ষা করিন, ধর্ম ও তাঁছাকে রক্ষা করেন-कीहोत महीत भूके हर, यम मदल हत, জ্ঞান বীঘাবান্ হয়, প্ৰীতি নিৰ্মাণ হয়, আত্মা উন্নত হয়। কুদ্র বিষয় অজ্জ নের **छेशाःत लग्ना क**तिशा धर्माटक ीहाता त्रका করিতে চান, তাঁহারদের ধর্ম-সাধনের অভি होन लका । अटमांत भूशकांत कथेटन। विषय नट्ट: धर्मात शृतकात नेश्वत। এই হীন লক্ষ্য পরিত্যাগ করিয়া ঈশরকে লক্ষ্য কর; ঈশারকে লাভ করিবার জন্য ধর্মকে সাধনু কর। বিষয় তেমেরি শেষ

গতিনছে৷ ভোমার শেষ গভি, ভোমার পরম গতি, সেই অনস্ত-মঙ্গল-স্বর্প ঈশ্বর। তাঁহাকে লাভ করিলে আর আর লাভকে লাভ জান হয় না, ভাঁহার সহিত যুক্ত থা-কিলে শুরু বিগদেও মন বিচলিত হয় না। "ব্রন্দিটোগৃহত্বঃ স্যাৎ তত্ত্বজানপরায়ণঃ যদাৎ কর্মা প্রকৃষ্ধীত্তদুদ্ধণি সমপ্রেৎ।" ''গৃহত্ত বাজি ত্রক্ষনিষ্ঠ ও তত্ত্বজ্ঞান-পরায়ণ হইবেন : যে কোন কর্মা করুন তাহা পরত্র-লেতে সমর্পণ করিবেন। " গৃহস্থ যে কোন কর্ম করিবেক, ভাষা এন্দেতে সম-পণ করিবেক, দকল ধর্মাক্রার্যা ঈশ্বরের উ-ক্ষেশে করিবেক। তত্ত্বজ্ঞান-পরায়ণ সত্য-থ্রিয় ত্রন্দিউ ত্রাকা স্বার্থপর ২ইয়া বিষয়-ञ्चटशत উटफटम वर्ग-कार्या कदत्र ना । किन्छ ঈশ্বরকে লাভ কারবাব নিমিত্তে ভাঁহার মঙ্গল-ভাবের অনুকরণ করিয়। নিদ্ধাম এী-তির সহিত আহরছ নিংশ্ব'র্থ ধর্মা সাধন ক-दरन। य किंडू कर्म करान, य किंडू क-र्गाकल लाभ करत्न, छाहा मकलहे नेश्व-*ति.* इंट मभर्गन करत्ना जैन्होत क्रम्स सन খন প্রাণ সকলই তাঁহার জন্য, আপনার জন্য তিনি কিছুই রাখেন না। আপনার জন্য কেবল ঈশ্বর, আর ঈশ্বরের কার্য্য-মা-ধন জন্য এই সংগার-ক্ষেত্র। যে আন্ধারান্ বির্ত-চকু হট্য়া ঈশ্রের প্রতি আপনার লক্ষ্য স্থির করেন, তিনি ধর্ম্মের সাহায্যে স-ব্যাক্ত লের মঙ্গল-মূর্তি দর্শন করেন, ভাঁছার প্রতি ঈশ্বরেতে উর্ন্নতি হয়, তাঁহার সকল অংশেদ, সকল স্পৃহা, নকল ভোগ উহি!-তেই যায়। **তথনো ধর্ম তাঁহার আশ্রয়**, কিন্তু তথন বিষয়-স্তুখের লোভে ধর্ম সাধন করেন না, তখন ভিনি ভাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধন করিবার জন্য ধর্মা পথ আ**শ্রয় করেন।**

হে অমৃত-নিকেতনের বাজী-সকল ! ভোমারদের লক্ষা ভির রাখিয়, অমৃতধানে অগ্রসর হও। ঈশ্বরকে লাভ করিবার জন্য
নিঃশ্বার্থ ধর্মা অবলম্বন কর। মোহাজা হইয়া বিষয়-স্থাকে ধর্মোর পুরস্কার মনে করিও না। ধন সম্পত্তি কদাপি ধর্মোর পুরকার নহে—সমুদয় জীবন পরিশ্রম করিয়া
রাশি রাশি ধন সঞ্চয় করিলে, ভাহা মুহুর্ভের মধ্যে চলিয়া যাইবে। ধর্মোর পুরকার কেবল ঈশ্বর, ভিনিই কেবল হৃদয়কে
পূর্ণ করিভে পারেন।

হে পরমান্ত্র তুমি সহার না হইলে তোমার পথে অগ্রসর হইতে পারি না।
তুমি আমারদের সহায় হও, তুমি আমারদের
ধর্মকে পোষণ কর, সংসারের মোহ-কোলাহল হইতে মুক্ত করিয়। তোমার কোড়েলইয়া আমারদিগকে শীতল কর।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং

উপাসনা!

महिल मनुस्यात (य महक আছে—'' সেই আশ্র আশ্রিত সময় '— নেই প্রভু ভূতা সম্বন্ধ— সেই পিত। পুত্র স-मक--- (गर्वे गक्षक कानित्वरे शक्र वर्षा वनः যায়। পরমেশ্বর ঈদুশ আশ্চর্য্য রুপে क्टे खानांदनांकरक मञ्रायात क्रमत्र-मरधा নিহিত করিয়া দিয়াছেন যে বয়োরুদ্ধি সহ-কারে তাহা উক্ষ্বলিত ও প্রকাশিত হই-বেই হইবে। ঈশ্বর-জ্ঞান কেমন স্বাভা-বিক, যেমন বাছ জগতের অন্তিত্ব জ্ঞান। বাহ্য জগৎ আছে কি না এ বিষয়ে যেমন কোন জাতীয় মন্ত্রাকেই সন্দিহান দৃষ্ট হয় না, সেই ৰূপ ঈশ্বর আছেন কি না এ-विवरत्र अञ्चया कां जित्र कांग चरण मह्या है অবিশ্বাস দৃষ্ট হয় না,ছেবে মানসিক উৎকর্ষণ অভাবে নে বিশ্বাস ভিন্ন ভিন্ন জ্ববস্থাপন হইতে পারে এই মাজ। আছএব ধর্ম মনুহেনার

স্বাভাবিক ভাব ও সাধারণ সম্পতি। যে স্বভাব-নিহিত ধর্ম,ইহার পরিচয় কো-থায়? উপাসনাই ইহার পরিচয়। পৃথিবীর এক সীমা হইতে সীমান্তর পর্যান্ত যত যত দেশ, যত নূতন নূতন মনুষ্য জাতি স্নাবিষ্ হইয়াছে, তাহার মধ্যে অদ্যাব্ধি কোন স্থান ও কোন জাতিই এৰপ দৃষ্ট হয় নাই যথায় याहामित्रात मत्था धर्माख्यात्मत मण्यूर्ग विद्रह এবং ঈশ্বর উপাদনা প্রচলিত নছে। তৃত্তর ভয়াবহ,সাগর-বক্ষে যে উপদ্বীপ,যাহা অণ্ব-পোতের অগম্য, বথায় গমন করিতে দ-হিফু সাহসিক পরিব্রাজকের হৃদয়ও ভয়ে কম্পিত হয়, সেখানে নিবিড় অরণ্য নি-वांगी वना পশু मनृग मनूरवातां अ मिनां एख একবার ঈশ্বরের নামোচ্চারণ করিয়া থাকে, এবং অপরিক্ষুট ভাষায় তাঁহার নিকট আপনাদিগের সরল ক্রডজ্ঞতা ও সরল প্রা-র্থনা নিবেদন করিয়া থাকে। উপাদনাই धरर्भत महञ्जू. छेशांमनाई धर्म्भत कीवन। যাঁহার সহিত সয়য়া জ্ঞানে ধর্মের উৎপত্তি হয়, তাঁহার দহিত দশ্মিলনকেই উপাদনা এই সন্মিলনে সেই সম্বন্ধ উজ্জুল জীবস্ত ও মধুময় হয়; ইহার বিরহে তাহা মলিন, হীন-বল, মৃতবৎ ও রস-খুনা হইয়া পড়ে। সন্মিলন না হইলৈ সহজ্ব নিক্ষল। যদি কেহ আন্দম পরকর্ত্ত্বি দূর দেশে নীত হইয়া চির কাল পিতা মাতার মুখ না দেখিতে পায়, এবং ক্রমাগত অন্যের ছারা লালিত পালিত হয়, ভাহা হইলে পিতা মা-তার সহিত সম্প্র অবগত হইয়াও মে তাঁ-হাদিগকে প্রীতি কুরিতে সমর্থ হর না এবং তাঁহাদিগকে অবশাদের প্রকাসুরাগ নিশ্চ-ग़रे भारतत थां जिम्म निवास करता तमहें का পরম পিভা পরম মাতার সাহত ক্ষমগুর সমস্ত কেবল ভাবগত হইলা যদি ভামরা কোন কালে তাঁহার সহিত স্মিলিত হইতে সা

পারিভাম, তাঁহার সহখাস-স্থ না জানিতাম, উপাসনা না করিতাম, ভবে নিশ্চয়ই তাঁ-शांदक विष्यूष इरेश। ऋथ-मदस्यान-नागक সংসারের প্রতি, অনিত্য বন্ধু বান্ধব ধন -মানের এতি নিভাত্ত অসুরক্ত হইয়া পড়ি-তাম, এবং বিষম অধর্মে নিম্ম হইতাম। অভএব ঈশ্বরের সহিত সম্বন্ধ নিবন্ধ করা যদি ধর্মা হয়, আর এই সম্বন্ধা হইতে বিচ্ছিল इरेब्रा मश्मादत अञ्चतक इउत्रा यनि व्यथकी হয়, তবে উপাসনা ব্যতীত কখনই ধর্ম স-ন্তব নহে। কঠিন-ছাদ্য কপট কুতা কিঁকের। ঈশ্বর-বিবর্জিত হইয়া উপাসনার অযৌক্তি-কভা ও ধর্মের অনাবশ্যকতা প্রতিপন্ন করিতে চাহে করুক, কিন্তু আমাদিগের বিশ্বাস অন্য প্রকার। ঈশ্বর আমাদিগের পিতা মাতা। যাহার ছারা ভাঁহার মহিত আমাদিগের এই পবিত্র সম্বন্ধ জানিতে ও পালন করিতে পারি তাহার নাম ধর্ম, অতএব ধর্মে আমাদিগের স্বাভাবিক সত্ত ও তাহ। আমাদের চিরস্তন সম্পত্তি। উপাসনা षांता (महे मप्रकः; (महे धर्म छेड्यू व इत्, क्रेश्व-রের সহিত আমরা সন্মিলিত হইতে পারি, তাঁহার দৌন্দর্য্য তাঁহার মহন্তাব উপলব্ধি ক-রিতে পারি, আ্মাদিগের ইহু লোকের ও পর লোকের পথ পরিষ্কারহয় অতএব উপাসনা ধর্মের জীবন ও মনুষ্যের মহজু; তাহা ৃত্রা মাদিগের অতি প্রিয়তম ও মঙ্গলতম কার্য্য।

উপাদনা দিপ্রকার, ভাব বাচক ও শভাব বাচক। পরম পিতার বিচিত্র বিশ্ব-কৌশল দর্শন করিয়া এবং মনুযোর প্রতি তাঁহার অলৌকিক অসদৃশ করুণা হ্-দয়ক্সম করিয়া ননে যে প্রীতি ভক্তি কুত-ক্রতাদি ভাবের উদয় হয়, সেই সমুদায় ভাব ভাঁহার নিকট ব্যক্ত করার নাম ভাব বাচক উপাদনা এবং আ্লার মলিনতা, বিষাদ ও পাপাদি অভাব অনুভব করিয়া হুগতি প- রিচ্রণের নিমিত্ত তাঁহার প্রদাদ প্রার্থনা করার নাম অভাববাচক উপাদনা।

প্রথমোক্ত প্রকার উপাদনা দ্বারা পর-মেশ্বরের মহিমা-স্কুক্ জাব সমস্ত ব্যক্ত হয়; দিজীয় প্রকার উপাদনা দারা আত্মার গভীর অভাব সকল মুক্ত হয়। প্রথমোক্ত প্রকার উপাদনায় আনন্দ উল্লাদ প্রভৃতি বিবিধ হাল্য-প্রাফারটিত কুস্তম-রাজি ভাঁহার চরণে প্রদত্ত হয়: দিতীয় প্রকার উপাসনায় ক তির্ভ। অনুভাপ বিষাদ এবং অঞ্জল উপহারে জাঁহার পিতৃ-মাহায্য লব্ধ হয় এবং হৃদয়ের অভাব অপবিত্রতা প্রকালিত হয়। পারস্ক বিচার-দৌকর্যাংগে উপাদনাকে ছুই ভাগে বিভক্ত করা গেল বলিয়া কি বাক্ বিকই ভাহাবিভিন্ন ই ইশ্বরের প্রতি ভক্তি শ্রহ্মা প্রতিকরিব অথচ ভাষার নিকট আ ন্মার অভাব ক্রাপক কোন প্রকার প্রার্থন: व्यक्ति मा देश कि भाउत ; मा (करल छीड़ांत নিকট নিয়ত প্রার্থনা করিব কিন্তু ভাঁচার মহিমাদি বৰ্না 🗤 তাঁহাল একি শ্ৰন্ধা ভক্তি প্রকাশ করিব ন। ইহাই মন্ত্র এই প্রশ্ किकामा भारताहे हेहात जानशंक हा अधीय মান হইতেছে। ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করিব অথচ ভাঁঃকে শ্রদ্ধা ভক্তি প্রীতি कदिव ना, हैन। वन! यमन व्यमञ्जव १९ व्यक्ती-ক্রিক, ঈশ্বরে শ্রতি প্রীতি ক্রতজ্ঞ। প্রকাশ করিব, অথচ উচ্চার নিক্ট মনের পাপ ও বিষাদ প্রকাশ করিব না, আপনার সহস্র অভাব মোচনার্থে তাঁহার সাহায়া তাঁহার ा हु अमान आर्थन। कतित ना हेहा तनां ह কেমনি অবেটালিক। কিন্তু মত্যন্ত ছংখের विषय अहे भ ज्मातिषि किह किह विलक्ष রুত্বিদ্য এবং সন্ধিবেচক **হইয়াও সামা**ন্য বুদ্ধি পরিহার পুর্বেক **ঈদৃশ** অ**দয়ন্ধ অর্থ**-हीत क्षणां भ वाका विविधा थाटकन । क्रमांकी उटन अंतरमध्यत्व छान् ७ महिमात् हिरू

দেখ, অসংখ্য জীবের প্রতি তাঁহার অনন্ত
করণার পরিচয় এহণ কর, আয়ার রভি ও
রচনা কৌশল হাদয়ক্সম কর এবং তাঁহার
অসীম ত্রবগাহ্য সভাতে নিবিষ্ট হইয়া
তাঁহার মুরুনা কীর্তন কর, তাঁহার আরাধনা
কর, কীর্তনে ধন্যবাদ কর, কিন্ত তাঁহার
অবমাননা করা হয়, তাঁহার নিয়ম ভক্ষ করা
হয়, তাঁহার স্বাক্তহার প্রতি দোঘারোপ
করা হয়। এপ্রকার নীর্ম যুক্তি কত দূর
ন্যায়সক্ষত তাহা আমাদিগকে বিভেচনা
করিতে হইবে।

প্রার্থনার বিপরীতে সর্বদা যাখ কিছু ক্ষিত হইয়া থাকে ভাষা তিন্টা প্ৰধান আপত্তিতে পরিণত হইতে পাবে। : स. ह-শ্র আমাদিগের সকল অভাব জানিতেছেন। यमि आमामिरशत मञ्चरनत कना किछ आव শ্যক হয় তবে তিনি অবশ্যই তাহা বিধান कतिर्दम, मञ्जा छाहात अमग्र क्यारनत ७ ध्यनम् ककृषात्र (नाम स्थार्गः। घर धन धः र्थनी वातकाक नत्ह। २४, क्रेश्वराह ए-টির সকল নিয়মই চিরস্থাী ও অপরিকর্মন শীল। জীবদিগের জীবন ও স্কথের জন্য योह। किंडू अरग्राजन ए९ मकनरे এই मञ् দর নিরমের বশবর্তী ও অনুকূল। প্রার্থন। দারা যে সেই নিয়ম পরিবর্ত্তি হইবে ইহা প্রত্যাশা করা মূর্গত। মাত্র। প্রার্থনা করি-লেও যাহা হটবে, না করিলেও, ভাহাই হ্ইবে। তবে প্রার্থনা নিতান্ত নিক্ষণ স-न्तर नारे। ७३, व्यार्थन। कतिशे आमर् যে উন্নতি লাভ করিয়াছি মনে করি, তাহা আমাদিগের কম্পনা মাত্র। আপনাদিগের দাধু চেফী ও সাধু কামনা জনিত যে সমস্ত পবিত্র ভাব হৃদয় মধ্যে উপিত হয়, তাহা-একটা মনঃক্পিত প্রীতি-স্থতে আৰদ্ধ করিয়া উপাদনা কালীন আ-

থকাছনে বাভ করি। এবং বন্ধ সহকারে
নেই সুমন্ত ভাবকে কার্যেতে পরিনত করিয়া নকে করি বুলি ক ব্যাহার নিকট প্রার্থনা
করিয়া চ করিয়া আনাধারা এই প্রকল সাধ্
কার্যা সম্পান হইল। অতএব প্রার্থনা করা
নিতাপ্ত ভ্রম; তৎপরিবর্তে জগতের হিতকর
কার্যের অনুষ্ঠানে নিযুক্ত হওয়া ভাল।

এই ত্রিবিধ কারণ ছারা কেই কেই স্ক-খবের নিকট আর্থনা কার্য্যের অনাবশ্যকতা. নিক্ষণতা ও অয়োক্তিকত। প্রতিপন্ন করিতে ट्रिकी कतियां शाटकम। शृटखंरे **डेक हरे-**ब्राह्म य डेशामना मण्युर्व ब्राप्ट मनुस्यात পক্ষে স্বাভাবিক, কিন্তু উপাদনার সহিত गत्रका विष्ठित्र कतिशा मिथितम् धार्यनातक সম্পূৰ্ণ কপে স্বাভীবিক বলিয়া বোধ হয়। কোন বস্তু আবেশাক হইলেই আমরা লো-কের নিকট প্রার্থনা করিয়া খাকি, এবং প্রার্থিত বস্তুর মর্যাদা ভেদে অপ্প বা অ-ধিক সময় প্রার্থনা কারো ক্ষেপ্র করি। যদি উক্ত বস্তু নিতান্ত আবশ্যক ও স্পৃহনীয় হয় তবে বার্মার হতাখাস এবং নিক্ষল হইয়া তথাপিও তাহার নিমিত্ত প্রার্থনা করিতে कां छ इसे मा। वां छविक धक्त वावसात मन्त्रानं कटन आमामिटनतं ऋ जावनिक। कि भटमात बना कि माश्मातिक व्यक्तात्वत कना शद्याक मनुषादक किन नम्दा नी कान नमर्स व्यार्थना कतिए है इटेटर । विनि अकाग्रन देश रहत्व नताब न रट्यन, जिनि दकान न। दकान क्षकाटत श्रीत व अविदय विक्रण कतिया किलियार्डन। त्व वा कि समाचारत कीन करनवन स सूत्र ररेश किया नंजा जर पृष्टि कर्णाम् वर्ग रञ रात राक्षक स्रहाट्ड, नक्षक रम बार वर्गमान के का कार्यक इस्ताहर देन हैं 7-48 (44) 40-4 All Molls weekles aller

সহাকরিতেছে, সকল ঔষধ যাহার পকে অকার্যাকর হইরাছে সে বার্যাব অঞ্পুণ व्याप्तराक कि किस्मरक ता निक्षे मार्डि आर्थना कतिट अक्षाक हर है के मून व्यवकार जनर विविध अमानुन विवाद हो। यनि अधिन। मञ्च-रबात भटक आधारिक इहेन, उत्त कि क বল আহ্তিশ্ৰ সরজো অস্বাভাবিক ? পাপ বশবর্জী হতভাগ্য ব্যক্তি কি ঈশ্বর প্রসাদে ধর্ম স্পৃহ হইয়া চির দিন অনুতাপিত হাদয়ের অসহা প্রানি হাদয়েই বিলীন করিবে ১ তা-হার বিষম শোক ভৃঞার যে শাস্তি বারি প্রা-র্থন। তাহা কি কেবল মূর্গতা ও অরণা-রোদন माळ ? तम वनहीन अवः ऋषार्क तम मसुत्याक बिक्षे धार्थना कतिहा धारातीय वस ना न করত তৃপ্ত হইতেছে; গে শুদ্ধকণ্ঠ তৃক্ষার্ত্ত म दिन्छा ७ व्यर्थना महकादत द्वादिकत इन-য়কে দয়াত্র করত জাল ধারা ভূফা নিবারণ করিতেছে; রোগী প্রার্থনা দারা স্বাস্থ্য লাভ করিতেছে, হা। কেবল অনাথ পাপীই कि প्रतम्यदात्र तांटका उक् विशेन, महास-বিহীন থাকিবে: ভাহার প্রার্থনা বাক্যে কি মনুষ্য কর্ণাভ করিবে না; অসীম ধাঁছার करून। मिहे स्त्रहम्म अग्रदम्बत अग्रिक कि তাহাকে এক মৃতি ভিক্ষা দান করিবেন না ? ভাহার মনের অভাব ননের জেশ কি দে अर्जात विकृत्व मत्नत् उदे निहिठ कति त्व ? अमन कथन इट्टेंड भौति ना। नद्गः धानाः **रातीं छ्क्न कटनवत्र म**तिराज्य मक्तंग्य स्वत বারদার আবণ করা যায়, বরং ক্র্ট্টেও মলিন-মূর্ত্তি ভ্যগাহুর ব্যক্তির হাহাকার ধনি व्यंत्रण कता यात्र, वतः श्लाष्टिकमाविभिके বিক্তকার মুম্ব রোগীর অব্রুপুর্ণ তাপোক্তি কৰ্ণ গোচৰ করা যায়, কিন্তু ইশ্বন বিলহিত, भोनियुक, त्माक-मीर्ग भाभीत विमाषिक বৰ্ম ও অনুভাপাত্ৰ দেখিলে জ্নয় রো-नेन किता छ। छ। यत्रक सबल शहर

পিতা কি ভাষার স্থান নিংকত আর্থনায়-ব্যির ছইবেন, ও শ্রুতি দিন ভাষাকে তাঁহার ঘার হইতে দূরীকৃত করিবেন ? হৈ দরল হুদর মনুষ্য তুমিই ইহার বিচার কর।

কিন্তু প্রার্থনা স্বাভাবিক হইন ভাহাতে
কি ? যুক্তি পর তত্র তার্কিকের। বলেন যে
তোমার ভাব পূর্ণ ভাষার মর্মা গ্রহণ করিতে
গারিলাম না। প্রার্থনা যদি আবশ্যক না
হয়, তাহা যদি সম্যক্রপে নিক্ষল যুক্তি
বিরুদ্ধ, কণ্পনা মাত্র হয় তবে ভাহা স্বাভাবিক হইল তাহাতে কি ? পূর্বে প্রার্থনার
আবশাকতা প্রমাণ কর।

ভাল, ঈপর আমাদিগের সমস্ত অভাব জানিতেছেন এবং সেই অভাবের উপযোগী সকল বস্তু বিধান করিতেছেন, কেবল বিধান করিতেছেন এমত নহে কিন্তু যাহাতে প্রদন্ত বস্তুর ছারা আমাদিগের সমাক্ মঞ্লের উৎ-পাত্ত হয় তাহারও অভ্রায়উপায় অবলয়ন করিতেছেন। হয়ত ভাষবশতঃ আমরা সময়ে সময়ে এমন কত অভাব বোধ করি. क्छ विषयात काना थार्थनः कतिसः भाकि, যাহা আমাদিগের প্রফে ভরানক অমঞ্চল-তিনি এবস্প্রকার অভাব ও এবস্পা-কার প্রার্থনা অপ্রাহ্য করেন, এবং ভারাই বিধান করেন ঘালা পরিণামে আমাদিশের मर्विधिक मञ्जलभाविक इहेटव । जटव त्करन মন্ত্রের অভাব অবগত হইয়া তালা মোচন ক্রাই ঈশ্বরের উদ্দেশ্য নছে, কিন্তু তাহার গনাক্ মঞ্চলের জনা উপযুক্ত অভাব মোচন করাই ভাঁহার উদ্দেশ্য। একৰে আমাদিণের पिथिएक एकेएन ये किएमत क्रमा क्रमा ভাবের জনা উহোর নিক্ট পাখাদিরের প্রা-र्थना करी छेडिछ। कामता पन बादनद सना डी हात निक्र वार्थना कति मी जिन्हा मारमातिक विद्य विशेष इहे एउ उद्यात इसे रात करा व ठारात निकित आहेता कति है।

अगमण विवस गरदल छाटात्र अकल काहरह প্রতি सोबक्षा गण्य न बहुन विख्य कहि, महि তৎ সমুদার দের হয় তিনি কারণার দিবেন, অন্তের रत कथनरे निट्यम मा किन्द्र सामानिएना रा मनल धर्मात अञ्चित छन्निविक्रहे छ। हाउ নিকট প্রার্থনা করিয়া থাকি। প্রত্যুক্তিত हरेबाटक एर **केयत** এ**कक**दिन मेलूटकात মভাব সকল মুক্ত করেন যথার। ভারার मर्स्वाध्कृषि अञ्चल मः चिठि इहेता शास्त्र। অতএব বিচার করিতে হইবে যে যে ধর্ম-ভাবের জন্য আমরা তাঁহার নিকট প্রার্থনা করি, তাহা প্রাথনা ব্যতীত পরিতৃগু হইলে मनुर्यात अधिक मलला इस, कि धार्यना मर युक्त रहेशा युक्त रहेटन छात्रांत्र अधिक र अन সংসাধিত হয়। ইহা একটা সাধারণ সভ্য रय यमि कोन वञ्च धार्थना भाषीत लक्ष इस् ওবে তাহা কুভজ্ঞত। বাতীত গৃহীত হয়। যে রাজভনয় জন্মাবধি সাংসারিক কোন প্র-কার অভাব অনুভব করে নাই, চিরকাল সম্পত্তি ও সচ্চলতার ক্রোড়ে ক্রীড়া করিয়া আসিতেছে, সে যদি আবশ্যক কালে উ-পযুক্ত পঞ্ছিদ বা উপযুক্ত আহার প্রাপ্ত হয় তাহা হইলে দে স্বীয় অন্নদান্তা পিতা মাতার প্রতি কিছুমাত্র রুভদ্রভার কি খ্রীডির আধিকা অনুভব করে না, বরং ইচ্ছামত দ্রবা না পাইলে তাঁহাদিলের थि दिनका असे हरेशा उठि 🏋 किंछ যদি কোন চুংখী সন্তান চিরদিন অন্নতিব্রের অভাবে বছ কট পাইরা পরিলেযে শীয় পিতার পরিশ্রম-লক্ষ্ম হইতে কিঞ্ছি ম-क्वठा नांच करत छट्ट स्मर्श निक्क তাহার রুভজভা ও প্রীতি কেমন উল্পাতি रहेट थादक है देन विज्ञानी महत्त्व निक्रिया यक्षणा वक्षणा विकास स्था स्वर अधिका PISTA DAZA MANAMA CANA DEN WA-विधि करते । सेता जिल्ला विश्व विश्व विश्व

पिट्रात आसोदनाटा पाचार स्कूराय प्रकार ट्यावन कडिटचन, चाराव जिनके द्रकान अ-ভারের জনা প্রার্থনা করিছে না **হর্ত**; শ্বক্তমঞানন ও পরিপাক কিয়ার মাায় যদি ধৰ্মাভাব পূৰ্ব হওৱা স্বভাবসিক্ত হইভ তাহা ·হইলে কি ধর্মলাভের তাদৃশ মর্যাদাও আদর থাকিত, না তলাভ জনিত উপযুক্ত ভক্তি প্রজা রুভজ্ঞতা আমাদিগের দূবিত अन्तर ममुर्थि इहेड ? डांहा इहेटन कि আমরা ক্লেশ-সহিষ্ণু ছুংখী সস্তানের ন্যায় অমূল্য ধর্মরত্ব লাভের জন্য পরন পিতার নিকট চিরক্তজ্ঞ ও চিরামুগত ভৃত্য হইয়া থাকিতাম, না সমাদৃত উদ্ধত-স্বভাব রাজ-তনয়ের ন্যায় তাঁহার অপার করুণাকে করু-ণাজ্ঞান না করিয়া অক্তপুণা, ক্তম ও পা-পাচারী হইতান ? ইহাতে কি আমাদিগের সব্বাধিক মঙ্গল ও উম্বতির উৎপত্তি হইত ? একাণে আমরা বহু ক্লেশে, বহু পরিশ্রমে, বছ প্রার্থনার ভারা যাহা কিছু লাভ করি-ভেছি ভাষাতে কুতার্থ ফইতেছি। তই ধর্মের অভাব নিগ্ডুতর্কপে অনু-ভব করি, সেই অভাব পূর্ণ করিবার জন্য যতই কঠোরতর পরিজান করিয়া থাকি, আ-প্রমার চেক্টাকে বিফল ও নির্থক দেখিয়া यर्डे विश्वाम्पूर्व अन्द्रत्र विश्वति व्यार्थना करि, अर महे व्यार्थनात माकार कायको राज्ये बामानिद्यात माधुमारकण्य निक्र रेंग, जर्जे आमानित्त्रत्र क्रमद्र धर्मात ्यतित ७ मधूतका प्रामु कु क क्या अन्य-वन नक হয়, ইশরের অতি ক্তজভা ও বিশাস ক্ষেত্ बीकि करण। (य विवस्तत सना यक क्रिके কৰিব, নেই বিষয় কাৰ জাৰিয়া ছত প্ৰীত तरेत, कर लांका भागत हरेता. यक गा-THE POSITION OF STRANGE OF STRANGE eding, state sign chi alance pa-

নর। আতি পরিতাস সহকারে ধর্মকে লাভ করি তবে ধর্ম আমাদিগের নিকট অতিশর আর হইবে, এবং যদি প্রার্থনা জনিত জ-শরের নারাবো তাহা লব্ধ হয় তবে তাঁহার প্রতি প্রশ্রেষা উপিত হইবে। এ-ক্ষণে হে সরল হাদয় মনুব্য বিবেচনা কর প্রার্থনা আকশ্যক কি না। বদি ধর্মেতে পবিত্রতাতে আবশ্যক থাকে, তবে প্রার্থনা-তেও আবশ্যক আছে, যদি সেই সমস্ত অ-নাবশ্যক হয়, তবে প্রার্থনাও অনাবশ্যক।

কিন্তু যুক্তি প্রিয় তার্কিক মহাশয় ইহা-তেও নিরস্ত নাইইয়া শিক্ষাদা করেন যে যদি প্রার্থনা পরমেশ্বর প্রতিষ্ঠিত নিয়মাবলীর বি-রোধী হইল তবে তাহা কি প্রকারে কলবান্ হইতে পারে? যখন নমুদ্র মধ্যে তোনার ত-রণী জলমগ্র ইরাছে তখন কি প্রার্থনা দার তুমি জীবন লাভ করিতে পার, নাযদি রাজি তোনাকে আক্রমণ করে তবে প্রার্থনা দারা তাহার কবল হইতে নিফ্তি পাও? কদাত নহে। যাহা অপরিবর্ত্তনশীল ঈশ্বরের নিয়-মের অনক্ষত তাহা তোনার প্রার্থনা দারা কি

কিন্ত তার্কিক মহাশয় আমাদিলের প্রাথনার উদ্দেশ্য বিচার করিতেছেন না। আ

মার উন্নতির জনা প্রার্থনা যে প্রমেশ্বরের
নিরম বিরুদ্ধ তাহা কি রূপে নিশ্চিত হইল:
যে প্রার্থনা শারীরিক ও বাহ্নিক অভাব
নোচনার্থে কড় বিশের প্রচলিত প্রথাকে
বিপর্যান্ত করিতে চালে; যে প্রার্থনা জনদীশ্বরের জগৎ সম্বন্ধীয়,গুড় তুভেয় কৌশ
লোর প্রতি দৃতিপাৎ না করিছে ক্লম্মানী
বাহ্নিক অভাবে অন্থির চিন্ত হইরা তাহার
অগরিবর্তনশীল পরিশুদ্ধ ক্রিতে চাহে, তাহা
প্রারম্ভ নিক্ষল সন্দেহ নাই। জল-

मध रहेबाई मगम केंद्र ज भूक भेतास्य वा क मानत कुटल छ्रभनीच इहेबान जना विश्वत्य प्रशुद्धांव कटतम ना, खंदर अंग्रीतक हिर्छा-জন্ত কবলে নিপতিত হইয়াও তিনি ঈশ্বর महरन हेरात मुका कामना करतन नी, किन्ह मकल श्रकात माध्यातिक व्यवस्थात, कीवरन जवर मृद्राद्ध नित्रप्रका शक्ति अकंपरे किरख তিনি নিয়ত তাঁহারি মঙ্গল সংকল্প সিদ্ধির का वार्धनो करतन। जे चरतत याहा देखा তাহাই ভাঁহার প্রার্থনা; সে ইচ্ছায় যদি মৃত্যু হয় ভাছাও তাহার শিরোধার্যা, সে ইচ্ছায় যদি জীবন সংরক্ষিত হয় তাহাও তাঁহার শিরোধার্যা। কিন্তু আত্মার উন্ন-ভির জনা প্রার্থনা অনা প্রকার। আত্মার উন্নতি এবং ধর্ম লাভ যে ঈশ্বরের অভিল-ষিত ভাহার আর কোন সন্দেহ নাই। তাঁ-হার প্রেরিভ ও প্রতিরপ মনুণ্য ইনরস্থিত (च भग्र तुष्कि जांहाई हेहांत माका निटल्ट । পরস্ব এই উনতি এই ধর্ম লাভ কিৰূপে হুখতে পারে? ধর্মের জন্য একটা গ্র আন্তরিক ভাব বোগ হওয়াই ধর্মের মূল। যাহার ধর্মের জাভাব বোধ হয় নাই সে কথনই ধার্মিক হইতে পারেনা, যে ব্যক্তি আপ্লার পাপ মালনতাতেই সম্ভাইচিত্তে অद्ञ्ष्टिक्दत. जेश्वत्त्र कमा ग्राहात ऋमग्र वसकूणिक इस नाहे, मंध्य लहेशा कि अदिरव, **देश**द्र: लहेश कि कदिरव? धर्मी কি বন্ধ সমার কি বন্ধ যে ভাষার পরিচয় ায় নাই ঈশার ভোষাকে দশন দেব না, কারণ ভাঁহার অভি ভাহার **কিছু মাত্র আদর** मार यमि तम व्यमाप्रादम जिल्लाक व्याख रुप्र তৰে অনুষ্ঠানে তাহাকে পরিত্যাক্ত করিব। गार आर्थना कति जीशे था थ रहे, देशहे ्र कगट्ड स्थाक स्मन निवस शिकामीत स्थि। वर्ण भन चार्र बटन कानि छटन साम भटना তন্য কেন চেকা কারব, বেন পরের ব্যার

कतियः पति अधिक अन्य वनक्य स्थानसम् यता छोटर या क्या भागात अवर कार्यत পরিবারের জীবন সক্ষ্টাপুর ইইয়া উঠিতে रेश निक्त अवस्त या के छात्रा इत्राम्ब चामि चर्चत रुके। स्वी, कोहा इहेटलेह আমি সমুদ্য শরীর মন ক্ষা করিয়া ভাষার জন্য পরিশ্রম করি, লজ্জা ভয় ভয়াগ করিয়া श्रदेश श्रदेश बाद्य जिका केतिए कू-ঠিত হই না। ঈদৃশ অবস্থায় ধন লাভ করিলেই আমার কার্য্যে আইনে, আমার উপকার হয়, ঈদৃশ अवश्वाय मसूबादक धन मान कतिदल हे ज्यामानिदशत भूगा हता। शति অম ও প্রার্থনঃ উপাজ্জ নের নিয়ম, আভাব উপাক্ত নের ভূমি। ইহাই এই পৃথিবীয় অগণ্ডনীয় বাবস্থা। যদি ধর্মোপাজ্জন ক-রিতে অভিলাষ থাকে, তাহার জন্য যদি निर्ात्र मीन शैन श्रेश थाक, उत्त किया ও পরিশ্রম করিতে হইবে, এবং সেই স্থানে ভাঁহার নিকট প্রার্থনা ফরিতে হইবে যে তানে, যাঁহার নিকট ত'হ। প্রাপ্ত হওয়া যায়। চেম্টা না করিয়া, প্রার্থনা না করিয়া উপাক্ত न करा इश्यी लाकमिरगत शरक অসম্ভব, তাহা পৃথিবীতে অবৈধ, ঈশ্বরের নিয়ম বিরুদ্ধ, কুতাপি কোন বিষয় ভাহার मुक्तील मुक्ते इस ना। यादामित्शत धर्मीत[े] অভাব নাই, প্রোজন নাই, ভাছারাই প্রা-র্থনা না করিয়া তাহার অযৌত্তিকভা অস্ত্র-সন্ধান করে,কিন্তু ভাহার অভাবে যে নিতান্ত मीन हीन पतिज गर्मान हहेग्रोटह, **पा**र्टिस খারে তাহার জন্য ভিক্ষা পর্যান্ত করিতে याहात मंदर्काठ ना रुग्न: त्मरे निषदात नि कटि धर्म-िका आश्च इत जदः महें महान একার আত্মাধাতী যুক্তিভকে বিধিয় হইয়া मिक्क दम कीवरमंत्र मार्थककी पारखील करते। অতএব প্রার্থনা কার্য 💆 ছবের বিয়ন্ত্রিক न्तर, प्रशासिक स्टब्स्ट

मा कतिका, केलिस निवस **कर्य क**र्य इ.स.

आर्थना विषयक जुजीय आंशिक अहे दन रेष्ट्रा दक्दल सटनत कण्णना । हेरा पाता (य छम्रिक इत छाहा अकुछ छम्रिक नहरू, কেবল মসুযোর মনের ভাবমাত। সমুদ্ধার স্বীয় চেটা দারা যে পবিত্রতা লক হয় সে তাছাকে প্রার্থনা জনিত পবিত্রতা মনে করে। অতএব এই ভ্ৰমাত্মক প্ৰাৰ্থনার ভাব যত শীঘ্ৰ মনুষাদিলের মধা হইতে নিরাক্ত হয় তহই মঙ্গ। উলিখিত প্রকার আপত্তি তাঁহাদিলের ছারাই ক্ত হয় যাঁহারা নিজে প্রার্থন। কার্য্যের অনুষ্ঠান না করিয়া কেবল ভাষার অযৌক্তিকতা প্রতিপন্ন করিতে ক্ল-**७गःकण्ण इहेग्नाइन। धार्यना काहा**क বলে, তাহার কি ফলাফল ভাহা ভাঁহারা জ্ঞাত নহেন, হইতে ইচ্ছাও করেন না, কেবল তাঁহাদের ''বোধ হয়' ইহা সম্পূর্ণৰূপে স-कत्नत्र शतक अकार्या-क्त, अञ्चव उँ। श्रा কোন প্রকারেই তাহার যুক্তিযুক্তা উপ-লবি করিতে সমর্থ হয়েন না। ব্রিন্ত এত-দবস্থায় তাঁহাদিগের প্রতি বক্তবা এই যে প্রার্থনা কার্যোর প্রতি দোষারোপ করিবার পূর্বের ভাষা একবার পরীক্ষা করিরা দেখুন, বরুত প্রার্থনার যাহ। যাহা নিয়ম ভাষ্ পা-नम क्रम्म, उरमञ्जू अ यनि धार्थमात्र कत्रादक ভাষাদের কম্পনা মাত্র বোধ হয় ভবে থেন উহার ইহার অপবাদ রটনা ক্রিতে প্রবৃত্ত स्ट्यम, मञ्जा डांशिमिटनेड आशि थाहा र-रेटि शादि मा। कथिर चार्ड अक्सन मिड জন্মকা বাজি কোন বন্ধু কৰ্ত্ক জিল্ঞানিত रहेशाहिन त्य त्लाहिङ वर्ग किवल? त्य क्षित्रांज कान दिनार मा कहिना विनन (व ला-विष वर्ग लावि क्लिक क्लानः आवाद ''दराय रक हेर जोन बान गाउँ महि अवारा ७ रमह। भाषा सिकाशीपट्या प्रेक्टिना

ৰূপ। তাঁছাদিপের 'বোধ হয়' প্রার্থনা কণ্পন। মাত্র অধ্চ প্রার্থনা যে কি হবে কার্য্য তাহার दकान काटन छोड़ा घटशे अवगण नटहन। दौरांपिटवात "८वाषण श्रात्रक छानिपिटवात नि-क्षे किवन अविदिष्ठमा अ इस्विन सात शतिहरू মাত্র। পরীক্ষার ফল কেবল পরীকার ধা-রাই অনুভূত হইতে পারে। **না**ধ্দিগের অমুথাৎ প্রত হইয়াছি যে ঈশকের নিক্ট প্রার্থনা করিলে ধর্ম লাভ হয়। ইহা ভাঁহা-निर्णत जीवन-कांड श्रीका-कांड मणा, আমারাও মানানা জীবনে ইহার নিশ্য প্র-মাণ প্রাপ্ত হইরাছি। যৎকালে আমি মাতৃ-বিয়োগ-শোকে মৃতকত্প হ্ইয়া ঈশ্রের শর-ণাপন্ন হইরাছিলাম,একান্ত মনে যথন তাঁহা হ-ইতে শান্ত্রাও বৈষ্যা প্রার্থনা করিয়াছিলাম, তথন আনার আত্মা পুনর্জীবিত হইয়াছিল, আমার অপহত শান্তি প্রত্যাগত হইয়াছিল : নেই অবধি আমি মহন্তর কোমলতর জননী প্ৰাপ্ত হইরাছি, যিনি আমার জননী এবং क्शट ब कनरी-हैंग कि कामात सम? যথন পাপে গুৰুভাৱাকান্ত হইয়া একপাৰও গমন করিতে পারি নাই, সংগার ধখন অ-রণাবং বোধ হইয়াছিল তথন তাঁহার নিকট ক্ষমা ও প্রমাদ ভিক্ষা করিয়াছিলাম ; আ মার আখা নূতন ক্রজি নূতন সাহ্য নূতন ভাব লাভ করিয়াছিল, সেই অববি আমি অংশে অংশ তাঁহার পথে অগ্রসর হই-তেছি, ইছা কি আমার अম ? ছুবলভার দ-মর পার্থনা করিয়া বল পাইরাছি, অজ্ঞান ও मःगतिकाकात मरधा, यहकारण आंगात आहा। ক্ষিপ্ত অন্ধ-প্রায় हरेग्राहिल, ज्यन उ প্রার্থনা করিয়া বিশুক্ত সত্য ও জ্ঞান প্রদীপ লাভ করিয়াছি, ইছা কি আমার ভ্রম? এই সরুল যদি আম হয়, তবে সতা কি ১ এক वात मग्न, प्रे बात मन, यन वातरे विमीच वि-योग भून मत्य काशत निक्षे व्यार्थना कति

তত বারই পূর্ব হৃদয়ে কিরিয়া আদি, তেত বারই ভাহার করণা, তাঁহার পবিত্রভা, ভা-হার মঞ্জভাষ, গাঢ়তর রূপে আমার জীবন भुखदक मुच्छ रहा। हो! देश यनि मिथा। रह उद्ध आंगांत कीरन मिथा। क्या निथा, क्रश्र मिथा। तकन स्था। तक्रन व्यथ-র্মাই সভা। সূর্যা কিরণে যেমন অভাকার शृर्ट्ड रक्क कराष्ट्र खेबा छ स्ट्रेटन द्वीक द्रिना তাহার সকল নিভূত স্থানকে আলোকিত करत, आंभात खक रुपग्र माहे क्रम श्रीर्थना দারা উল্লাটিত হইলেই ভাঁহার স্বেহ রাশ্ম ভাহার দকল প্রদেশকে উজ্জ্বল করে। এই জালোক এই উজ্জুলতা আমার আশা এবং क्रिकोत वहिङ्क, अभि मत्म कतित्व है-ছাকে নিবারণ করিতে পারি ন।। সময় আমার ত্রবিত্ত হৃদয়ের ঘোর অহাকার এবং লৌহ কৰাট ভেদ করিয়াও যে জ্যোতি প্রকাশ পাইয়াছে। অভএব হে সরল জ্নয় भड़ा किछा स महुषा ! यार्थनां कण्यना नट्ह, জ্রম নহে, মানের ভাব মাত্র নহে। ইহা প-রমাতার সহিত আত্মার সন্মিলন, ইল জ-ত্যের জিক্ষা, প্রভুর দান; ইহা ধর্ম্যের, পর-ट्लाटकत, भांखित मध्रन। दहं सबल मसूचा প্রাণাম্যে কথন ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা ক-तिएक बितक रहेल ना।

উপরে যাহা কিছু উলিখিত হইল, প্রা-র্থনা কার্য্যের নিষেধ থণ্ডনই তাহার উদ্দেশ্য, ভবিষ্যতে এ বিষয়ের বিধি সংস্থাপন করি-তে চেকী করা যাইবে।

মনে। বিজ্ঞান।

নন। মন শক্তের প্রকৃত অর্থ নির্কারিত ইইল। মনের প্রকৃত অর্থই মদাপি মনুষা হয় তবে "আমি" "আন্তন্" বা "আ্আ্'শন্দে মনক্রেই বুমার, শরীরের কিঞ্মিন্ত অনুকৃত ব্যানা।

चारशक्ति, भनगानिक, निहारन किर । गटमत कान किराप ? कान विविध चारशकिक ७ बिहारशकिक व्यव वनमा পিক। স্ট সীবের প্রকৃতি সম্বন্ধে বিশ্ব मःमात्र विविध भगार्यंत (य कान करम ভাহাকে অপেক্ষিক জ্ঞান কহে। আগ্ন স্থ একতির বহিভুতি বিশ্ব কার্য্যের স্বভন্ত আদ্যন্ত জ্ঞানকে অসমাপিক জ্ঞান কৰে। পূর্বেই কথিত হইয়াছে যে মনুষ্ঠোর তাবৎ জ্ঞানই তাহার অর্তি সাপেক্ষ। ''যে পরি-মাণে মনুষোর শারীরিক বা মানসিক হৃত্তি দেই পরিমাণে তাহার জান। হয়ত এমত কত প্রকার জ্ঞান আছে যাহা উপযুক্ত রুত্তির অভাবেদে জানিতে পারিতেছে না, স্বতরাং তাহার জ্ঞান আপেফিক। কেবল ঈশ্বরের জ্ঞানই অসমাপিক ও নিরপেক। তিনি আমাদিগের ল্যায় স্বাভাবিক ইন্দ্রিয় হারা, इंखि बाता, मौभावक उममाख नरहन। ममन्द्र বিশ্ব হইতে ভাঁহরি মন অনতভাণে শ্রেষ্ঠ, তিনি তাহার আদাও পাভাবিক ক্ষান-ক্রিয়। দারা এককালে জানিভেছেন। তাঁহার জ্ঞান নিরাপেক্ষিক ও অসমাপিক।

পরস্ক আপেক্ষিক ও অসমাপিক বা
নিরাপেক্ষিক শন্দএয়ের মধ্যে যে ইভরেতর
সমস্ত আছে ভাহা যে কেবল জ্ঞান-কার্য্য
উল্লেখে সংলগ্ন হয় এমত নহে। ভাহাদিগের অর্থ বোধক আবশাকতা বিবিধ অন্য
দৃশ বিষয়ে কিরপ উপলক্ষ হয়, মনোকিজ্ঞানের ভবিষ্যদালোচনার ভাহা শাভ ই
প্রতীয়মান হইবে।

গুণ, ভাব, এবং মূল-সন্তু। পূর্বেই কপিত হইয়াছে যে কতকগুলী গুণ লেখিব।
আমরা কোন একটা পদার্থের আত্তর্গনিদেশ করি। আকৃতি, বিজ্ঞান আক্রমান
গুণ উপলক্তি করিয়া সামরা আন্তর্গনিক্তি

चलतं कठकछनी छन्त्रात्री चामत्रा महनत षांच व जानिए शाहि। अप्रकान वा मन कान वर हिन्द अवात अवकारना नगि माजा अप्रवृक्ष नर्मन कतिरम भागता जी-হার আকৃতি বিস্তৃতি বর্ণাদি ভিন্ন সার কি-ছুই দেখিতে পাই নাও জানিতে পারি না; এবং চেতন বস্তু উপলব্ধি করিলেও তাহার জ্ঞান প্রীতি ইচ্ছাদি ভিন্ন আর কিছুই জা-নিতে পারি না। কিন্তু এই দ্বিপ্রকার গুণ-শ্ৰেণীর অন্তর্গত ৰিভিন্ন স্বভাব ছুইটি পদার্থ ष्पांट्य। अहे इहेंगे शनार्थ यनि ३ ष्यामता চকুষারা দেখিতে না পাই, তত্রাপি ভাষাদি-গের প্রতি আমাদিগের অপগুনীয় বিশ্বান আছে,কারণ ভাষা হইতে বিচ্ছিন হট্য়া গুণ মাত্র অবস্থিতি করিতে পারে মা। এই ছইটী भागार्थरे वक्षत मूल-मञ्ज (Substance)। ইहा অগমাদিলের জ্ঞানের বিষয় নহে কিন্তু বিশ্বা-মের বিষয়। কেবল উপরোলিখিত গুণ (Property) আমাদিগের প্রত্যক্ষ দর্শনও ম্ভানের বিষয়।

যে পদর্থে যাহ। কিছু দক্ষিত হয় তাহাই তাহার ভাব। প্রতি দিন মনের মধ্যে দহস্র চিন্তা, এবং দহস্র ইচ্ছা উদয় হই-তেছে, এই রূপ প্রত্যেক চিন্তা ও প্রত্যেক ইচ্ছাই মনের এক একটা স্বতন্ত্র তাব (Phenomenon)।

শক্তি ও রুদ্ভি। এক অবস্থা হইতে অব্যান্তর হইতে পারিবার ক্ষমতার নাম শক্তি; এবং বে যে তিন্ন শারীরিক বা মাননিক উপারে এই শক্তি সাধন করা যায় তাহার নাম রুদ্ভি। মন্ত্র্যা আত্রাণ লইতে পারে। আত্রাণ একটি শক্তি; কারণ মন্ত্র্বারে রাভাবিক অবস্থা হইতে নে আপ্রাক্তি আহ্বান্তর পারে। একটি বিশ্বের আনিতে পারে।

मार्थ इरा. अञ्चत आर्गिस मसूर्तात व কটা শারীরিক হৃত্তি। বৃত্তি বিপ্রকার উদ্যো-निर्मा ७ निरंगानिमी । উদ্যোগিনী রুতি বার। আমরা একটা কার্যা বেচ্ছা সহকারে সাধন করিতে পারে; নিয়োগিনী রুদ্ভি ছার। আ-প্ৰনার উপর অপুরের কার্য্য সহন করিতে পারি। আমার সীয় চেন্টার ছারা স্তি শক্তিকে পরিচালনা করিয়া জ্ঞানের বিষয় স-কলকে চিরকাল মনোমধ্যে আবন্ধ রাধিতে পারি; এবং কোন প্রিয় ব্যক্তিকে অবলো-কন করিলে স্থাভাবতই স্বেহে অভিভূত হইয়া পড়ি। স্মৃতি রুত্তি আমার সেচ্ছাধীন ও কার্য্যাধীন, কিন্তু স্নেছ-রুত্তির দারা আমি স্ব লাবভই নীয়মান হই। অভএৰ স্থৃতি শক্তি व्यामानित्यत अक्षी উদ্যোধিনী প্রবৃত্তি, এবং **अश्-ताथ क्रोंगे निर्धातिनी अतुन्ति गांव** ।

গ্ঢ়, ও বিদ্যমান ৷ মানসিক ভাব এবং রন্ডি ছুই একার অবস্থার অবস্থিতি করিতে পারে! এই তুই অবস্থার নাম গঢ় অবস্থা এবং বিদ্যমান অবস্থা। সনের মধ্যে এঞ্জ স্মনেক স্তা, স্মানিক ভাব, স্মানেক রুত্তি আহে বাহারা দকল দময়ে জ্ঞানের গোচর থাকে না, কেবল কার্য্যের সময় তাহাদিলের পরিচয় থান্ত ইওয়া যায় । যথা, ধর্ণাধ-র্শের স্বভস্তেভান সকলের মনেই নিছিত শংকালে মনুষা জানালোচনায় আছে: বা দাংদারিক কার্য্যে নিযুক্ত খাকে তং-কালে এই জ্ঞান বোধ-গোচর হয় না; কিন্তু যথনই সে কোন একটা ধর্মা কাম্য বা অধর্মা कार्या नितीकन करत ज्यमरे छ। रात्र मतन हेर् कानक रहेन्। उत्ते वर्षेत्र है-শ্বর সকলকেই দিয়াছেন। কিন্তু পাপ ছারা বা কুতর্ক ছারা মনকে পাষাণবং কঠিন ও নিতান্ত অধর্ত কেরিরী ফেলিলে ভাছা महरक अञ्चूक इंग्रनी। यथनहे श्रतीन-্রার পদত্ত সাধু অক্তির আদেশারুযায়িক মনুষা কার্যা করে, তথনই এই প্রবৃত্তি জাগ্রক হয়। উল্লিখিত থকার মানসিক ভাব ও বৃত্তির নিহিভাবস্থাকে গৃঢ়তা কহে, এবং ভাহাদিগের জাগরক অবস্থাকে বিদ্যান-নতা কহে।

আত্মপ্রতায় ৷ যত প্রকার বিজ্ঞান শাক্র আছে তৎগমুদায়ের মধ্যেই কতক थिनि मून-स्व पृष्टेशः। এই হ্রত্ত চয় কোন মতেই বিচার পাপেক নহে, তাহারা স্বাভাবিক বিশ্বাদ দিল, তাংগদিগকে আত্ম-প্রভায় কছে। কোন বিষয় বিচার করিতে হইলে, মূলে ঈদৃশ কতকগুলী সহা স্থী-কার করিয়া লইতে হয় যাচারা বিচার नाटलक नट्ड, मनुषा गाटजत्र रे यांशानिटनत श्राक्त मण्यानं विश्वाम चाराह, এবং याशामि-গ্রেব প্রতিবিশ্বাস না থাকিলে সকল প্রকার यूं जिल्लान ७ विषात अमस्य बहेश छैटि। ৰথা আনি আছি, বাক জগৎ আছে, ঈশ্বর আছেন,এ সকল বিষয়কে সপ্রমাণ করিতে হ-ইলে মনুযোর স্বাভাবিক বিশ্বাদকে জিজ্ঞানা कतिए इत्। मनुत्यात मन यनि हेर्रोनिशटक অস্বীকার করে ভাষা হইলে কোন প্রকার विठात्रहे मछव नरह, कांत्रण यणि आमि ना यांकि, जन्न ना शांकि, अवत ना शांकिन, ভবে কে বিচার করিবে, কিসের রিষয় বিচারিত হইবে, কাছার প্রণীত বস্তু এবং किरमद कोमनाक विष्ठांत कता यारेरव। অভএব ঈদৃশ প্রকার সকল বিষয় এককার্টন স্বাভাবিক বিশ্বান শিল্প, তাহাদিনের নামই মান্ত্রহাত্য ।

আতা চৈতনা। মনে যে সমস্ত ভাব উদয় হ ইতেছে তাহার জানকৈ আতাচৈতনা কহে। আতা চৈতনা না হইলে কোন ভা-বই সম্ভবেনা। আমার মনে জানের উদয় হইতেছে, কিন্তু আতি যদি মেই জানকে না জানিতে পারি ভবে তাহা উদয় হওয়া আর না হওৱা নৰান, বাছনিক ছাহা জিলা হয়

নাই। আমার মনে প্রতিভাবের উদয়

হইতেছে, কিন্তু যদি আমি দেই প্রীতিকে

না জানিতে পারি, ছবে আমি কি প্রকারে

বিশ্বাস করিব বে ভাহা কোন কালে

ভামি বোধ করিয়াছিলাম ? অভএব আম চৈতন্যই মনের অন্তিত্তের নিয়ম। বে সময়

আমু চৈতন্য নাই সে সময় মনও নাই,

কারণ ভাব-বিরহিত মনের অন্তিত্ত পারি না।

অভএব মনের জীবদ্দশার নামই আত্মচৈতন্য।

একাগ্রতা। আত্ম-চৈতনোর, নিগৃতভার নাম একাগ্রতা। বিবিধ ভাব মনোমধ্যে উদয় হইতেছে, এবং আত্মজান
ভারা অনুভূত হইতেছে। যদি ইহার
একটা ভাবের প্রতি গাঢ়রূপ মনঃসংখােগ
করত কাণেকের নিমিন্ত অপরাপর ভাবচয়কে মন হইতে অপসারিত করি ভাহ। হইলে মন একাগ্রতার অবস্থা অবলগন করে।
অত্রব স্বাভাবিক আত্ম-চৈতনাের প্রতি গাঢ়
কাপে মনঃসংখােগের নাম একাগ্রতা। মনােবিজ্ঞান আলােচনার পক্ষে এই কপ
একাগ্রতা একাস্ত আবশাক।

উলিখিত প্রকারে মনোবিজ্ঞান শাস্ত্রে সর্বাদা ব্যবহার্যা ক্তকগুলী শব্দ বির্ত হইল। এতৎশাসের তবিষ্যালালোচনায় এবসিধ অপর অনেক শব্দ সংঘটিত হইবে, যাহাদিগের বিষয় অদ্য কিছুই উল্লেখ ফ্রা গোল না, কিন্তু দেই শেষের মর্ম্ম তত্তৎ-কালে প্রদান ক্রিতে চেন্টা করা ঘাইবে।

अधुष्ठीदन्त्र आत्माक्का।

२०२ मरथाक शक्तिकांत थर गुकेक गड़ी

্আমাদের ভারতবর্ঘ এ বিষয়ের একটী স্থানর ভূটান্তিত্ব। এখানে ষেরপে ভাবের প্রীচ্রভাব ভূট एवं এक প আরু কোন দেশেই দেখা বার না। এদেশ যদিও অজ্ঞানতা ও কুদংকার-তিমিরে ভয়ানকৰণে আছন রহিয়াছে, তথাপি এখানকার পিতা মাভারা বেনন সন্তানের প্রতি অন্তরক্ত, এখানকার জাজা ভগ্নী যেকপ কোমল মেহ-ভতে আবদ্ধ, পুদ্র কন্যাদিগের ষেরপ খাতু ভক্তি ও পিত্র প্রান্ধা, জাহা মনে করিজেগেলে চমৎকুত হইতে ছয়। অন্যান্য দেশের অপেকা এদেশে ভাব প্রেল পাশতে ইহার অনুষ্ঠান সকল ও তদন্তাপ ১ইয়াছে। ভাত্দিতীয়া, জামাতৃ ষ্ঠি, প্রাদাদি অন্তান, সকল স্পট্রপে তাগার সাকা দিভেছে। धीन ७ आयादन इ. १५०। म छ। दन में मगरच्छ । जुलन हि অভি দাণানা দলিয়া প্রিগণিত হয়, ধদিও অ-नाना मकत मध्यम है। जांडि निक्**छे छ**ादा **ञब**् প্রিতি করে, ত্রগাপি জন্যান্য দেশ অংথক। যে । हेरा छोरवरल (शक्षे धरे लोतव कतिरक व्यामता এখনই সশ্চিত হইব ন।। আঘদের দেশের এই ভাবকপ সুদর কুমুম-পরিশেভিত মনোহরদ-ৰ্শনে বিষুধাচিত না হইয়া যে ভালাকে অবজ্ঞাসূচক ष्ट्रिक्टि पर्नम् करव, म। छानि भित्र कर्राद कानग्र! এই ভাররূপ মনোর্য প্রস্থন-নিচয়ের শোভা ন দৰ্শনে পুলকিত-ছ্ৰয় হুইয়া ত্মাপাস্থ বিশৃত্বালত। দুর করত উত্তর্মরূপ কর্মণদ্বারা ভাষাদিপের অধিক-তর শোভা मम्भामन कविद्यन क्लिग्राहे बाद्याता क्छक्छनि कार्या विस्त्रांत छात्रुक्त इंदेशास्त्र । এह কাৰ্য্যস্বারা তীকারা নিজের ভাৰসকলও প্রকাশ करतन, धदर कामारमत एमर्चत छाड नकरनत १ উৎकर्य माधन कति: । भातिद्वन । जानाधरपीत प्रवृक्षीन विवस गाहा अनिक हहेबादक ७ माहा लहेता **এ** जिल्ला किनिष्ड हरेगाड, बहे. कार्याश्वान जरित्रहें अवर्षेत्र हैं भिन्न के किया है।

বশানুঠান করা যে নতুষোর রাভারিক তাহা
এক প্রকার প্রদর্শিত ইইয়াতে, সুভরাং ব্রাক্ষেরা
যদি অনুঠান করেন ভবে এই রালিয়া উন্থাদিগকে
লোযারোপ করা বাইতে পারে বে উন্থানা নতুষা।
বাহ্যিক অনুঠানের যে গুল ব্রুলা আন্দর্শক,
—অর্থাং হয় ভাছারা জালানের আন্দর্শক ভার প্রকাশানুন্দ ভাইলা আনানের উন্থি নাখন করে—
নেই উপ রাজ্যনিক্ষ অনুঠান করে। স্কাল্যাক করিনিভারেক করি না ক্ষানের্ক্তর করি। স্কাল্যাক করিনিভারেক করি না ক্ষানের্ক্তর করি। স্কাল্যাক

ঠানের ব্যাপক অর্থ প্রহণ করিলে বালিক অনুঠানের সংখ্যা অর্থা হইলা উঠে। ব্রাহন্দর প্রতিবাহা কিয়াই ভাষা হইলে অনুঠান শাদেব বাচা
হয়। আমরা একণে অনুঠানের তাব কি কিং
সক্ষ্যাত করিয়া লইব। অর্থাং ব্রাহ্ম দিগের নথে।
প্রচলিত বিশেষ অনুঠান সকলকেই এগণে মনুঠান অভিযান প্রদান করিব। হথা অভেকর্মান
নামকরণ, উপানয়ন, গর্মানীকা, বিবাহ অংক্রান্তি
কিয়া এবং প্রাক্ষা। কেন না এইগুলি লইয়া তব্র বিতর্ক উপান্তিত ইইয়াছে।

যে সপ্তান্তঠানের নাম উলিখিত হউল, বেল कति माधात्रण छाहारमत । छाउछ अर्थ जनगढ ना शांकिटक পाद्रिय, এই जना मः त्करण छाइ।दम्ब অর্থ প্রকাশ করিতেডি। ১ম জাতকর্ম-নিয়ান জ্যালে সকল পিছা ন:ড!রই মনে অনবভূক আহ্বাদের সকার হয়, এবং দেই ক'লাবপি উটার' প্রকৃত সংস্থাই হওয়। তে অসংখ্য অসংখ্য ক ই সেরে গুরু ভার তাঁহে।বের কল্পে আসিয়া পাড়ে; সেই অ-পূর্বা আফলাদের নিমিত্ত তং প্রদাত। করণীময় 'প্র ভাকে কৃতস্কলা উপহার প্রদান করা, এবং উপস্থিত कर्डुबा एवं डिलानस्य मण्युर्गमक्य क्षेत्र क्यां ভাঁছার নিকট বল প্রার্থন। কবাই এই অনুষ্ঠানের উक्तमा। शानागकतन--त्रकःत विविधा स्विद्धत्त उपामना कत्रकः मह्मात्मत्र नाम व्यमान कनिवास कनाहै धरे व्यवकात । ७१ छेलान्यन--रयन दमर्थः ষায় সম্ভানের বুদ্ধ এবং বর্ম্মপ্রান কিন্দুপ রিমাণে পরিপক হইয়া আদিয়াছে, লে ধন্ম। ारमण धन्रण भक्तम हिंद्रेगारह, उथन लिखा धण्डा क्षेत्रे अनुश्रीनदारा महानदम डेलएक मिक्टका इट्ड ममर्भ भरतगा हर्य भग्नीका- महान সদ্যাহরী এক্ষ্রিও শিক্ষকের নিক্ট হথাবিধি भिक्ता शहिए। यथन धर्म कि छाहा द्विटक शाहन, এবং ভার্ধহণে সমুৎস্কু হন, ভাষন জিলি **क्रिश्चरक मार्का केदल मार्शाद्वन मगरक ४८-४**० মূলনতো বিশ্বাস প্রকাশ করিয়া ভংগাড়পাল-सार्थ प्रष्ठ व्यक्तिक। कटत्र,--- ध्रहें गरभ तरहारी भर्मा क्षीका बदन। एम विवाह—हेश मनुषः श्रीवः नत्र अ কটা জীভি উৎকৃষ্ট ও প্রিক্ত শ্রুষ্ঠান। সকল সভ্য জাভিই ইহার প্রকৃত স্থাদর ও সম্প্রনা করিয়া- 🔻 ছেন। ঈশর স্ত্রী ও পুরুষের মধ্যের ক্রেপ্রির সম্বন্ধ সংস্থাপন কার্য়াচেন, ভাহাকে রক্ষণ ও পালন ক-রিবার জনাই এই বিশুক্ত জন্তানের সৃষ্টি। ৬৪ অ रखासिकिय।—बर्ड अपूर्वामेख मर्स स्ट्राम अर्धनिकः बाँहारमञ्जू कायस्त मुख वाद्विक अधि दकाम ना हैकान महारुवत जिएस हुत।" उँ। होता कथन हे हेहारक विद्यापक कवित्रक भारतन मा। नग ७ देनर अनू-क्षेत्रन, आक् । दय भिका मार्चा आमादमह सन्। य'-

वक्कीवन जमर्था जमर्था क्रिम् महा क्रिग्रहाम বাঁহারা আমাদিণের নিমিত কুথার সময়ে আহার. বিরাম সমরে বিশ্রাম করিতে পারেন নাই; আমা-त्मत किरम सम्रल इहेरव स्माहे छेलांच छिहावस করিছে যাঁহারা চিরকাল চিস্তারপ অগ্নিতে দথা-হ্রময় হইয়াছেন, যাঁডারা সর্বা প্রভিপালক প্র-रमश्रदात आजिनिभि त्रकल इट्डा नर्कमा आमारमङ লালনপালন ও নজল সাধন করিয়াছেন, মৃত্য জানত দেই পিভামাভার সহিত দীর্ঘ কালের নিমিত্ত বিচ্ছেদ হটলে ভাঁহাদিগের জনা আমরা ধেকুডজভা, ভক্তি ও শ্রদ্ধা সঞ্চয় করিয়াছিলাম, ভাহার পরিচালনা ও পরিচ্ফট এই অনুষ্ঠানের लका। শুদ্ধ পিতামাডার विद्यार्थ क्नि ? যে আমাদের সমধিক কুতছভা, জীভি, ভক্তি এবং জ্রান্ত পাত্র, তাঁহারই সমস্কে এই অনু-ষ্ঠান অনুষ্ঠিত হইতে পারে।

একট্ট অনুধাবন করিয়া দেখিলেই স্পন্ট লক্ষিত ক্ষ্টবে যে বাহ্যিক অনুষ্ঠানের যে ছুই বিশেষ শুণ থাকা আবশাক এই সকল অনুষ্ঠান ভাষ। হইতে विभिन्न नटक, वहर डिक्डिंग्डिंग्ड मटका समितिक ভাবেট ভাষা দৃষ্ট হয়। ইহারা আমাদেব আশ্তরিক ভাব একাশক কি না, জাত্তম্য, অভোটিনিয়া, ও শ্রাম্বের প্রতি দৃষ্টি করিলেট ভাষ্। জান। যাইরভ পারে। অপিচ ইহারা আমাদের আফারেউ খতি সাপনের পক্ষেও মহত্পকারী। 'সভই আমর। আমাদের আন্তবিক ভার সকল বাধীনরূপে প্র-কাশ করিছে পারি, ভড়ই আনাদের আলা উল্ভ ও ধলিঠ হয়, এ নিয়ন স্ভা হইলে, জাভক্ষা, অন্তোষি ভিয়া ও প্রাদ্ধ দ্বারা আমরা মহত্বপকৃত हरू भटकर नारे। धर्मानीका ७ विवादस्त व्यस्क्रीन ধে মনুষ্য নগ'জের পক্ষে কভ দুর উপকারী ভাহ। লিখিয়া বাক্ত করা যায় না। যাহার। প্রকৃত ধর্মার্থী ছটয়া সংধ্য ওলী মধো **দ ওায়মান ছওত ঈশরের** अर्थ मार्किक् चायुर्व चानुष्ठत क्रियार्ट्न, धार्य পর্মারক পালনে দৃত প্রতিকারত হইয়াছেন, উ-হারাই ধার্মদীকা রূপ অনুষ্ঠানের উপকার হৃদ্গত क्तिग्राट्डन.—निक्ठग्रडे खनाटक हेश वृत्तान छात्। अर्ग्यमीकात अভाद्य मन्द्रशात कीवन ममाक शाह-হ'ব্ড হট্যা ন্ধকীবনের আবিতাৰ হইরা থাকে, काद्य प्रयानीकात व्यक्तारय मनूषा मार मात्रिक मुलिन জীৱন হইতে উত্তীৰ্ ইয়া পৰিত্ৰ স্থানীয় জীৱন भारत श्रम कतिएक मक्तम एस। विवाह क्रम व्यक्तिन দারা কি উপকার হইজে পারে পরে ইণিভ হ-हेटव । अभिकल्ड अनुर्काम खाद्रा क्षांक मनूरवाद्रहे নেমন উপাকার সাধিত হয়, বৈভাগনি আপার একটী ভোঠতর কলাণ নিজ্পাদিত হছিয়া বাকে । रेश भन्तारक खाकुकाव स्टब क्कान क ब्राइ का

मरहाया। धरे अपूर्धान मनत जान बार्जान-शर्क मरशा मरशा अकटक मध्कलिए करत, वदश বিশুদ্ধ কথোপকথন ও উপাননা ভারা সেই প্রেম সরপের সরিধানে উপনীত করে, তাহা-তে ভারাদের পরস্পরেম্ন ভাব আপনাপনিই উদারভা গ্রহণ করে। নিজে ভুর্মল হইলেও উংকৃষ্টভর * পবিত্রভর ব্রাহ্মদিগের আন্তরিক ক্ষতি ও বল দর্শন করিয়া আমরা আধ্যাত্মিক वत्त वलीयांन इहे, बन मरनाद्ध क्टोंब इहेल्ल छ ভাঁহাদের প্রীতি বিক্ষারিত উক্তল নয়ন বিলো-কন করিয়া বিগলিজ হয় ৷ বস্তুতঃ নিয়ত সাধু গঙ্গ করিয়া যে অমৃত ফল লাভ করি, অনুষ্ঠান ए। द्वा ६४ मकल हे लक्ष इहेबाद महातना । जनूकीन-সকল যে আরু কত অগণা কল্যাণ সাধন করে, সময় থাকিলে ভাষা বর্ণনা করিভাম। একণে এই রূপ সামান্য বিবরণ ছারাই সম্ভুট থাকিছে इ.हे. द्वा

পর্যাদীক্ষাই কাল্কি নাতের প্রাথম অনুষ্ঠেয় ক্রিয়া, অভারত ভাষা কইছে আরম্ভ করিয়া পাহি শেষে প্রোত্তের বিষয়েশকল কাজে করিব।

(ক্রমশঃ প্রকাশ্য)

- or condition to -

मःवीम ।

বিগত ৬ই ভাতে প্ৰজ্ঞান্সদ প্ৰযুক্ত বিজয়কুষা त्ताचाभी वतः जीमुक लक्षमा अमान एटफे, लामाध महाभट्यता जाकामभाटलत উপाठायां शरम या अस्यक এই ব্রাহ্মন্তর দেরপ উৎসাহ ও নিঠা সহকারে এতংকাল পর্যান্ত বাহ্মপর্টে-পুদেশ পালন করিয়াছেন ভাষা আলোচনা ক-রিলে ভাঁহাদিগকেই উক্ত পদের বিশেষ উপযুক্ত বোধ হয়। কাহারও অকারণ প্রশংসা করা ত-खुरवाधिनी পত्रिकांत পटक मछरव नां, किन्छ अहै ছুই বান্ডি গর্মের জন্য যেরূপ ক্লেশ, যতমূর অত্যা-চার সহা করিয়াছেন ভাষা সর্বসাধারণ সকল ত্রা-ক্ষের অবগত হইয়া ভাঁহাদিগকে দৃতীভা বরণ জ্ঞান করা উভিত। তাঁহাদিলের মত এক শত ব্ৰাহ্ম প্ৰাপ্ত হইলে ভার্মবর্ধের যে অনেষ মঙ্গল 1 1 9 হয় ভাহার আর সন্দেহ নাই।।

ভাঁহাদিবোর অভিবেক কাকো অধান আচার্য্য মহাশয় বে নিয়োগ পাত্র প্রদান করিয়াছেন ভাহা বিলা প্রকৃতিত হইব।

जूनि जना क्रमेन-सागृह्यः क्रमाणार्थाशहरः च-जन्मक स्टेटन । क्रमानक चानुः क्रमाणान हर्मा

वहम कतिरत । उक्कामान क कर्वनामान जेगी-क दन महाना वजुलील चालिए, धरा नर्मनाचाइन मत्था छाहा विख्यत क्षित्व। अधारम अधारम ७ गृहधर्मी बालान चित्रका इंट्रेंटि । निग्रं धर्मी-क्रोटिन भवित हहेग्रा भवित-यत्तरभव महबादम का-सम्म डिलाटकान कहिट्य धवर महलदम्म अ माध् म-केनक कृति। ज्ञेनारतत भटन मकटलत मनटक जोकर्यन করিবে। গুরুলনকে ভক্তি করিবে, ব্রন্তদিপকে मगोमन कतिरय, ও मकलंटक घरणीर्णयुक्त मन्मान मिरव। श्राधीन इटेग्ना विनशी इटेरव। श्रद्धत অত্যক্তি সকল সহ্য করিবে, কাহারো প্রতি ধেষ করিবে না! অনো হদি ভৌমার প্রভি অসাধু বাবহার করে, তুমি শাধুভাব অবলম্ন করিয়। তা-হাকে শিক্ষা দিবে। "পাপাচারী ব্যক্তির প্রতি आशाहात कतिरव ना, किन्ह मर्खमा माध्**र था**किरव।"? गम्भारम विभारम, ञुक्ति-निम्मारक, मान-व्यर्भमारन অবিচলিত থাকিয়া ব্রাহ্মপর্মা প্রচার করিবে। ঈশ্ব ভোমাকে রখা করন, ভোমার জ্ঞান ধর্মা পোষণ করুন--- ভোমার শরীর বলিষ্ঠ হউক, মন वीर्यानान् इडेक, ब्लान डेब्ल्ल इडेक, अछि श्रीग्र মহান্হউক, ধর্ম নিঃস্বার্থ হউক, জ্নয় প্রিত্ত হউক, জিহবা মধুময় হউক। ভোমার চকু ভাদু রূপ मर्भन करूक, कर्ष छात्र कथा खाउन करूक।

ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ হরিঃ ওঁ।

কলিকাভা ব্রাহ্মসমাজ } ক্রীদেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর।

ব্ৰাহ্ম-সমাজ-প্ৰভ

3

প্রধান আচার্যা।

উপাচার্যাপদে উক্ত মহাত্মাত্ময়কে অভিবিক্ত করিবার উদ্দেশ্য এই যে ব্রাহ্মসমাজের উপাসনার কার্ণোর নিমিত্ত একাল অবধি নিদ্ধারিত কর্মচারি तक्किक स्टेर्टर। উপাসনা कानीन উপাচার্য্যের অনুসন্ধান করিয়া ঘাহাকে ইঞ্ছা ভাহাকে বেদীর উপর উপবিষ্ট করিলে ব্রাহ্মসমাজের অগৌরব করা হয়। কিন্তু উপাচার্যা হিরীকরণ কার্যাধীও অতি মুক্টিন। হাঁহারা ব্রাহাধর্মের প্রতি বিশেষ অন্তাবিউ ও অসুরক্ত, বাঁহারা কি বাহাক কি আ-धााचिक गरुन अकात अनुश्रीदन है जाना स्थनीत चाममं क्राल मधायमान वहेटल शास्त्रमः व विद्वा कि कारन, कि शीखरण, कि शासकात्र नक्षेत्र मग्र जाडेन जारन धन्त्र बार्ड लानन करतन छ। होता है · উপाठाकी शरमत खेशबुक । जा नामाना करता गेंश्रा छेवल भगाविक हरेवा थल किन कीव कीव wighters criters dife bertent afficen diet. II CAN MINISTER AND AND AND ADDRESS OF THE PARTY AND ADDRESS OF THE PAR

কারণ বর্ত্তদান সময়ে জ্ঞান এবং প্রীতি, অনুচান এ ডিনই না থাকিলে লোকের চিড়াকর্ষণ বা আদ্ধা গ্রহণ করা বার না।

াগত ১৯ সে আবর্ণ মঙ্গলবারে ত্রীযুক্ত পার্ব-জীচরণ শুপ্ত মহাশয়ের শুভ বিবাহ সভান হইয়া निग्राट्ड। পরিণীতা বালিকাটী বিপরা কোন এ-কটা প্রকাশা স্ত্রীবিদ্যালয়ে সুশিক্তিন, এবং সতি সক্ষরিতা। শ্রীযুক্ত পার্মভীচরণ প্রেসিডেসী কালে-জের ছাত্র, তিনি স্বরায়ই বিদ্যালয় হইতে উত্তীর্ণ ছইবেন। দম্পতি প্রচলিত সমাজে একজাতি ভূক নহেন : ত্রীযুক্ত পার্শ্বভীচরণের বয়ঃক্রম বোধ হয় ध्यात्र २७ वर्णत, वानिकांत्रित वश्यक्रम असूगांस ১৫ বংসর। এই কার্যাটী অভিশয় নহৎ ইহা সীকার করিতেই হইবে! এতদারা বোদাবিবাহের আর একটী দৃটান্ত প্রদর্শিত হইল, উপযুক্ত বয়সে বি-বাহের প্রথা প্রধর্ত্তিড ও ছচিট চ্ইল, এবং শঙ্কর বিৰাহ অথবা জাতিবিভিনে পরিণয়ের প্রথাও সারম্ভ হইল। ব্রাহ্মদিগের গর্মাবল ও সাহস কত দুর ভাহা এই ব্যাপারটীর দ্বারা সকল সুজ্দম বা-क्तिमिर्गत्र निक्षे अञ्जीयमान इटेरत।

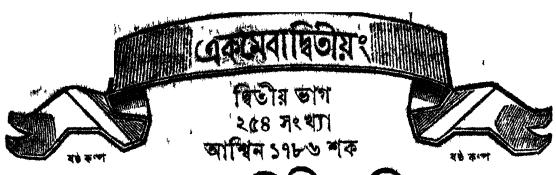
শীযুক্ত রাজা রাথাকান্ত দেব মহাশয়ের পৌন শীযুক্ত এজেন্দ্রনারায়ণ দেব মহাশয়ের পুত্রের জাতকর্মা সম্পুতি প্রাহ্মপর্মা মতে সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। রাজা রাপাকান্ত দেব মহাশয়ের পৌ-ভলিক ধর্মের প্রতি ধেরপে অনুরাগ ভাহাতে উ্নি হার পরিবার মধ্যে প্রাহ্মধন্মের এভ দ্ব উন্নতি দেখিলে মনে অভান্ত আহলাদ জন্ম।

গতবারের পতিকাতে বহরম গুর নমান্ধ উ-লেখে কথিত হইয়াছিল যে শ্রীষ্ট্র কাশীশার মিত্র মহাশারের দ্বারা উক্ত সমান্ত প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে; একণে অবগত হওয়া গেল যে উছোর সে সমাজের সহিত কোন সংআ্ নাই, তাহা বন্ধ্যমপুরস্থ আর কতকওলি ভদুলোক দ্বারা প্রতিষ্ঠিত হইন্দ্রাছে।

বিজ্ঞাপন !

ধর্মশিকা-নামক পুত্তক থানি পুনর্বার সংশোধিত হইয়া ত্রাহ্মসমাজের যন্ত্রাসয়ে মুক্তিত ইইতেছে শীঘ্রই প্রকাশিত হইবে।

कतिवार। आधाननारकः २१४७ गरकत	A THE PARTY OF THE	d.
আ্যাত ও প্রার্থ নানের আয় বার	श्रीपुष्ट कालीन हर त्यन	15
जनका जिनका ।	**	8 100
מאמר מיין איין איין איין איין איין איין איין	• जानाथमा सहात्र समा नाम।	. Margarit
ध्यक्षात विषय	- ব্রিযুক্ত প্রভাপচন্দ্র মজুরদার	٠٠٠ (المُرَّمُّ الْمُوْمِينِ الْمُوْمِينِ الْمُومِينِ الْمُومِينِ الْمُومِينِ الْمُومِينِ الْمُومِينِ الْمُومِ معالمين المُومِينِ المُومِينِ المُومِينِ المُومِينِينِ المُومِينِينِ المُومِينِينِ المُومِينِينِ المُومِينِينِ
And the second s	্ তাগলপুর ব্রাহ্মদনটেজর	்த இதிரும் •
5028	,	> 0
কার ১২ ২২ ৮ ০	क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा	9
সম্পাত্তকর হল্ডে ৩৭১/০	" বিজয়ক্ষ গোষাদী" " প্রসমচন্দ্র সেন শুপ্ত	GC .
এক্রিন	्रवागमण्डा स्थान एउ	C
नामान बारिक	" ছিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর	Œ
在有代本村有面	र रेडकूर्णनाथ रमन	
's Comm	' হালিসহর ব্রাহ্মসমাজের সম্পাদক	৩
ভ্ৰাহ্মদিগের প্রতিজ্ঞান্ত নাম্বংসরিক দান	'' कुम्बन्दिक्षः हो स्त्रम	₹ .
শ্রীযুক্ত হর চনের স্থা ১২	'' दकनात्रमाथ बट्यमां शामा	;
े कुराविक समित्र ।	" দেনেজনাথ ঠাকুর (পাখুরেখাটা)	5
्रिक्स अवस्था । १९ वर्षा	'' গোপালচন্দ্র মনিক	, <u>,</u> ,
ं कानाकार ५०० बुट्यांभाभाष व	" রাজকুনার মলিক	\$
कुछनिवादी हज्यकी 🗼 💈 🕹	•	>
় 🥴 নীল্মাধ্ব মিজ ২	" गांधवहस्त गिरुक	1 2
ं व्यक्तिकृतः विश्व २	" অভয়াচরণ হস্ত	S p C
' एक्सिकेस्स ग्राधानाधान २	" ভাগৰভীচরণ ঘোষ	119/2
ं स्व. भित्र भित्र	" কেদারনাথ রায়	110
" इसाथ रम १		1.000
ि इत्राध्य पङ्गमति १ विभूतोहत्व वटकाः व्याप्त		
git geradister states and in	নিছ'নী প্র।	بكمد
890		भूग।
. महिन्द नाम ।	কলিকাভা ব্রাকাসনাজের বক্ত, 🦮 📝 .	20
এ পুত ঈশান্দদ বহু ২৫	উপাসন।	৬৬
ं लालीस्माञ्च स्थान २०	भटनाविश्वान	98
🤨 स्मरहरू संग प्रोक्त 🔑 👵 🥦	অনুষ্ঠানের আবশাকতা	99
अभाव्यकान् तांत्रअभाव्यकान् तांत्र	सर्वा	9 br
् भाविकामाथ बटकगालाधार 👶 🌣	आग्न वाम्यस्थितवत्रण	
' ঈশ্বচন্দ্র বিদ্যাস্থির 🚓 👵 🥴	Company of the same and the sam	Old I
র্মেচন্দ্র যোগাল ৩	তত্ত্বোধিনী প্রিকার মূল্য নির	
्राग्रियाका भूस	অधिम प्रता (क्लिकाकात कमा)	() ()
े नेवकनव बटेक्स्य शिक्षांस	(यकाश्राम्य क्रमा)	- G40
	भा निक मुन्त विदेशी कर्ना विदेशी कर्ना	10/0
ञ्चकरचेत्रं मान विकर्ण		
विषुक्र सानीनांचं दम् अस्ति है है है है	Sar AF Gereifent effent effectel e	CT CTIC
the second secon	A THE TANK AND THE RESIDENCE A	e perfec a i
The state of the s	1 No. 1 Language and the control of	



তত্ত রোধিনীপ ণিকা

জ্ঞানাঞ্জানীয়ান্য কিকনাসীজনিক সর্থমসূত্র। তদেব নিডাং জানমনস্থ লিডা অভজনিরবয়বামক বেনাবিতীয়া সর্বাসাপি সর্কনিমন্ত্রস্বাভায়স্কীবিৎসর্কাজিনস্কু বিশ্বতিত্রমিতি। এক বা ডাইসাবোপাসন্মা পার-জ্ঞিনৈত্তিক ভাতজাবিত। তাদিন্ প্রতিভাসা বিশেষকার্যসাধনক তদপাসনামন।

বিপদ্কালে ব্ৰহ্ম স্তোত্ৰ।

হে প্রমান্মন্! যে দিবস হইতে আমি এই পৃথিবীর আলোক দর্শন করিয়াছি সেই দিন হইতেই ভোমার করুণামৃত আ-মার প্রতি নিয়ত বর্ষিত হইতেছে। তুনি क्छ ऋथ मन्त्राप बागादक উৎकृत कतिशाह; ভোমার বাহু প্রসারিত হইয়া কত উদ্যত বিপদের আস হইতে আমাকে রক্ষা করি-রাছে-কিন্ত তোমার কুপা-বলে অদ্যকার কটিন পরীকাতে যেন উত্তীর্ণ হইতে পারি। এই সমট সময়ে যদি ভোমার দর্শন পাই তবে আমি ছুৰ্বলু হইরাও ভোমার বলে, কুটিলভম ছরবস্থাকে প্রাস্ত করিতে পারিব। नाष । जामि स्मित्मन विकृष्ट मुर्खि प्रिश्र **छीउ हरेत्रोहि, छः एथेत क्याचाट**ङ खरमन रहेन्नाहि पूर्वि काति पूर्वि कार्तिक ना। भागादक विश्वत अ मीन हीन व्यवस्था नहळ नान-वामान नाइत्वकेन के ब्रिट्ट ह पुनि পরিবাধ কর, বিপল পুনরে একারী अधिका (काशांक अव्दिन १० अशि अवशि नवान्त्र कात्र, कात्र, रहेक्ष, अरुवाहि कृति বিকম্পিত হইতেছে, তুমি আমার হস্ত ধা-রণ কর। চিন্তার পর চিন্তাতে ভয়ের পর ভয়েতে আমার আহা ছিয় ভিন হইল. षामि थामा-विशेन लका-होन ७ गणि-होन হইলাম, এখন ভোমার শীতল হত্তে আমার মলিন মনকে স্পার্শ কর যে আমার সকলু ষাতনা বিদুরিত হউক। এই কঞ্চা রুটি বজ্ বিত্তাৎ আমার হৃদয়াকাশকে অন্ধকারে আন চ্ছনকরিয়াছে ভূমি আমার নয়নের আলোক, আত্মার আশা, চির দিনের সঙ্গল, তুমি আমার कीतरनद कीवन, व्यामादक पर्यन पिता क्र-ভার্থ কর, আমি ভোমাকে দেখিবার জন্য ৰড় আকুল হইয়াছি৷ হে নাগ্ ভুনিই মেই সুষ্য যাহার আলোকে অনন্ত আ কাশের নক্ষত্র-পুঞ্জ শুভা কিরণে অনুরঞ্জিত রছিয়াছে।

নাথ! অতীত কালে কত বার আমি
বিপদ্ লগধিজনে ভাসিতে ভাসিতে ভোমাকে ডাকিয়াছি ভুমি আপনি ভেলক

হইয়া আমাকে কুলে উপনীত করিয়াছ।
কড বার শোকের রিষমতর আঘাতে আমার
মানদ তরনী চূর্ণ হইবার উপক্রম হইয়াছে
পুনর্বার ভোমার আদেশে নিমেনে সকলি

निक्रक श्रीमाण स्टेशाल, पृतिश्रावात करि भाषार (महे जरूपा श्राचीन करें।

्ट **अग्रह नोस्ट** निर्मणन भारि ভোমার পুরুষ্ট্রা ক্রিলের সহিত ক্রম্ব पूर्व बार्क इरेट की ठ रहेर मा, कामि অৰ পরাক্তিয়ের প্রতি লক্ষ্য না রাখিয়া তো মার আদেশ প্রতিপালন করিব। এই সমরে তোমার নিকট কেবল প্রার্থনা যে শোকাতুর হৃদয়ে অঞ্চ পূর্ণ নয়নে ভোমার করুণার উপর নির্ভর করিতে যেন কথ্ন লজ্জিত বা বিশ্নত না হই এবং তোমার আক-পট পিতৃ-সেহের অতি আমাদের বেন-কোন সংশয় না থাকে। কত লোকে তো-মার নত্য প্রতিপালন করিবার জন্য প্রস্থ লিভ অগ্নি-শিখায় এই বছ যত্ত্রে শরীর নিক্ষেপ করিতে তিলার্দ্ধ সক্ষুচিত হন নাই। ভোমার আতিই ভাঁহাদের এক মাত্র লক্ষ্য. দেই প্রীতি অবলয়ন করিয়াই ভাঁহারা পুথি-বীর কঠোর নিষ্ঠুরতা সহু করিয়াছিলেন, এবং এখন ভাঁহারা ভোমার প্রীভিতেই নিময় হইয়া সকল ক্লেশের পুরস্কার লাভ করিতেছেন। আমার জুর্বলতা ভোমার নি-কট অবিদিত নাই, আমি তোমারই ম্বারের चिक्कुक इहेना এकां छ विश्वन्छ स्पटन व्यार्थना করিতেছি আর যেন তোমা ছাড়া হইয়া নিশাএক ব্যক্তির নাায়, এই ভয়াবহ নংসারে বিচরণ না করি, তুমি আমার সূতপ্রার আত্মাতে জীবনের সঞ্চর কর। ছংখ বিপদ্এ পৃথিবীতে নহা করিভেই ≑ইবে, ভাহা ভোমার**ই এেরিড, ভাহা ধ**-র্মের পরীকা, পর লোকের নোপান বরেই ছঃথ বিপদ্ ভার ভোমার ভরমায় ভিন্ন জীক नरे नाथा मटक मछटक उर्व कहिन, किछ यश्रम प्रविश्व होत्र एक भारति । व्यवस्था । ातियात रहेर्त, जबन राम रजामात कर्तन ছারার বিশাস পাই।

বে বিশ্বন । কোনার শক্তিনার মুক্তিরে
পারে বাহার বিশ্বনার অনুরুত্ব নিহন রাজনাগর-নাগত জনালক জনার হার নিহন রাজনাগর-নাগত জনালক জনার হার নিহন রাজনাগর কানি কুটিল বে আন্তরা নেকিরাজেল
নিয়াও নিয়াণ করিছে পারি না। কোনার
আতার এহণ করিলে যদি বিশ্বন সম্পদ্
ভূলা হইল ভবে আর আন্তরা ভোনার করগার অভি কেন সংশয় করি ? একবার আ্নার
সন্মু বে সেই রাজ-রাজেশ্বর মূর্তি শ্রুতাশকর,
আনি ভাহা দর্শন করিয়া বিশ্বণ উৎসাহে
সংসার-সংগ্রাম-ক্ষেত্রে প্রবিষ্ট হই।

छेशामना ।

গতবারের পতিকাতে প্রার্থনা কার্য্যের
নিষেধ্যর নিরাকৃত হইয়াছে। প্রার্থনা
যে স্বাভাবিক, প্রার্থনা যে অটেকীদন্পন্ন,
প্রার্থনা যে ঈশরের আদিই ও নিয়মিত
কার্যা, প্রার্থনা বার্তাত যে আত্মার উন্নতি
সন্তাবিত নহে বোধ হয় তাহা একণে অনে
কেরই প্রতীতি হইয়া থাকিবে। অতএব
মুমুক্তুইয়া ঘাঁহায়া এত কাল একাছ-তদ্যত
ভিত্তে ঈশরের অমোঘ সাহায়্য প্রার্থনা
করিয়াছেন অবশাই তাঁহাদিগের পরিক্র
সংকল্প নিদ্ধ হইয়াছে, অবশাই ভাঁহালা
যথা-পরিমানে আত্মার উন্নতি সাধ্য করিরাছেন।

কিন্ত বধার্থই কি আমাদিনের আছা
উপযুক্ত উল্লিড লাভ করিবাছে? বধার্থই
কি পার্থনা ছারা আমরা উল্লেখ্য হরণ-ছারা
লাভ করত আছোলভির পেন প্রকার
প্রেড ইয়াছি ৷ বর্ম জীবনের ইন্সানার্থাঃ
ন্মি অন্য প্রান্ত করণা মিনানের সম্বানার্থাঃ
নুক্ত করি উল্লেখ্য করিবাছি । স্ক্রিটা

स्तान करान कर किलान किला कर कर स्तान केना कर किला किला किला स्नान क्ष्म क्ष्म क्ष्मिक केना कि स्ना क्ष्मित क्षम क्ष्मिक किला किला स्तान को किला के किला किला स्तान को किला के किला किला किला स्तान का किला के किला किला किला स्तान का किला के किला किला किला किला किला किला किला किला किला स्तान के किला किला किला किला स्तान के किला किला किला किला स्तान के किला किला किला किला किला

এই ৰূপ বিবেচনাম কন্ত কত নির্কোধ বাক্তি আত্মার ও প্রার্থনার প্রকৃত তন্ত্ব না অব-গত হইরা উভয়ের প্রতিই উদাসীন হয়,এবং পরিণামে উভয়েরই অগৌরব সাধনে প্রবৃত্ত হয়। প্রার্থনার সফলতার জন্য যে যে বিধি পালন করা উচিত তাহা না পালন করিলে ভাহাদিগের চেন্টা যে অকৃতকার্যা হইবে ভাহাতে আর সন্দেহ কি ? অভএব প্রার্থনা-বিপক্ষ এবং প্রার্থনা-সাপক্ষ উভয় পক্ষের বিবেচনার নিমিন্তই আমরা প্রার্থনা সম্বন্ধীয় নিশ্ব-লিখিত কভিপয় বিধি নিদর্শনে নি-

পূর্বেই কথিত হইনাছে যে অতাব
তিন্ন প্রার্থনা অনন্তব, যাহার যে বিবরের
অতাব নাই তাহার সে বিষয়ের জনা প্রার্থনাও নাই। অতএব যদাপি অতাবই
প্রার্থনার আদি কারণ হয় তবে কিসে আনাদিকের মনে খর্মের অভাব ভাবে, কিসে
আন্মা আপনাদিনের সহস্র সহস্র পাপবালমতা বৃত্তির লারি, ইম্বরের নিকট মুভিরাজনা প্রার্থনা করিবার পূর্বের তাহা
ন্তাক করে। তুরের হিনার ক্রেরির ক্রিভ ক্রিরাজনা প্রার্থনা করিবার প্রার্থনা করিবার
ক্রিরাজনা প্রার্থনা করিবার প্রার্থনা ক্রিরার
ক্রিরাজনা ক্রিরার প্রার্থনা
ক্রিরাজনা ক্রিরার প্রার্থনা
ক্রিরাজনা ক্রিরার ক্রিরার প্রার্থনা
ক্রিরাজনা ক্রিরার ক্রিরার ক্রিরার
ক্রিরাজনা
করিবাজনা
ক্রিরাজনা
করিবাজনা
ক্রিরাজনা
করিবাজনা
করিবাজ

দ সামর পার্থনা করিভেছি আন দেৱ জীৱনে কিউচুল ভার লক্ষিত रहेक्टर १ स्थार्थन। कानीन कि बारानि-(भार मारनः)नकनः मामायः। होत्र चीत्र चा**र**ाव अंदर्गाय क्रांस्क्र स्ट्रेशांट्स, व्यवः क्रांस निषास निर्मी फिक रहेका कि शतिवादित जमा আসরা ভাষার প্রবাদ অকাজনা করিয়াছি ? व्यामानिकात व्याच-विकासिकाचा ? मनल निम मानादियं गारमातिक कार्या दनक मनदक নিযুক্ত করিয়া অবকাশ কালে আরামাও স্থবের অত্থেষণ করি; বরস্থাবিগের ঝিন্ধ নং-गर्भ, खी পরিবারের মধুরালাপ, আহার বিহার ইত্যাদিতে নিমগ্রহরা আখালুদ্ কান ও আত্মার অভাব সকল বিশ্ত হই, এবং অৰশ্য-কন্তৰ্য কৰ্মায়ে উপাসনা তা-হাকে নিতান্ত ভারবহ জ্ঞান করিয়া ক্ষণ কাল শুনা-হৃদরে শুনা বাক্য ছারা কপট প্রার্থনা শাঙ্গ করি। পরমেশ্বর অন্তর্যানী কে কি ভাবে তাঁহার সমীপে উপনীত হইতেছে, कि मदन काँहात माहाचा आर्थन। कतिएकह তিনি বিশেষ ৰূপে ছৎসমস্তই জানিতে পারেন। যদাপি হৃদরে ধর্মাভাব না বোধ क्रिया क्विन सोथिक आर्थन बाहा कर्डवा জ্ঞানকে পরিভৃপ্ত করিয়। থাকি, তবে কি আনর। ধর্ম লাভ করিবার উপযুক্ত যে छ-শ্বর আমাদিগের সেই প্রার্থনা পূর্ণ করিবেন ? केश्वरतत व्यक्तांदन, धटर्मात व्यक्तांदन स्य वान् কুল হইরা জগৎকে অন্ধকার দেখে ঈশ্বর **डार्शात धार्थना भूर्न करत्रन, य डाँहारक** দেখিখার অভাব বোধ করিতে শিখে দী তাঁহাকে লাভ করিবার তাহার অধিকার নাই। অতএব এত কাল প্রার্থনা করিয়া বে আমরা ভাদৃশ আআর উরভি লাভ ক-तिरंग भाति नाई हेश दर्यन जामानिद्यात्रहे व्यक्षतीय, राखविक अकान भर्यास व्यक्तिता अकुड:बद्ध आर्थनारे कति नारे। युक्त मिन

व्यविष् के बहार कर ना की उन्हें हैं हैं हैं हैं है FIX DIVING SHIPPINE TO FIFT HE निवारिक बर्रान् सर्वादिक विनास कररवाकी কাছ নিকট আৰ্থনা করিছে পারিভাস, নিয়-**एके जाबा**त जाबादित जाबात क्राक्शन ব্যাকুল চিক্ত হইয়া উছোর এলাক জিকা क्रिकांब जारा इरेटन का पिटन व्यामानि-বের হানর কেমন পবিত্র হইড, জীতি কে-श्रम धानस इहेज, छान क्रमन स्माजिक হইত ! াকিছ উপাসনা কালীন অবাৰস্থিত विकिथा अधानीन किन्न थाकि विनग्नाई অদ্য পর্যান্ত আমাদিণের এরপ আন্তরিক प्रतिकात अड्डा वार्थनात अवम विवि আন্ত্ৰাসুসজান এবং আত্মন্তর্ন। যাঁহা-क्रिटशत व्यार्थामात मकन्छ। मन्मर्भन कतिवात অভিনাদ আছে, প্রার্থনা যে কি গুরুতর কার্য্য তন্দারা যে প্রতি মন্তুযোরই কড মঞ্জ সাধা, তাহা ইাহাদিগের জীবনে প্-রীক্ষা করিবার ইচ্ছা আছে তাঁহারা চেক্টা कतिया व्यापनामिटलत गृह व्यक्तांव महन জ্ঞাত হউন এবং অকণট ভক্তিভাবে পরম পিভার নিকট প্রার্থনা করুন, এই আমাদি-গের অনুরোধ। এই প্রকারে কড লোক পাপাক্ষকার হইতে মুক্ত হইয়া মঞ্ল-ক্ষ্মপ প্রমেশ্বরের মুখ জ্যোতি দেখিয়াছে, এবং চিরকাল দেখিবে তাহার আর সংখ্যা নাই।

কিন্ত কেবল অভাব জানিলেই হইবে
না তাহার নিমিত্ত ব্যাকুল হইয়া তলিবারণ
চেন্টা পাইতে হইবে। অনেক ভ্রম্বাচারী
ব্যক্তি আপনাদিলের ধর্মাভাবের বিষয় বিলকণ অবগত আছে, এবং তজ্জনা সময়ে সময়ে
অন্তবে ক্লেণ্ড পায়, কিন্তু উদুল ভ্রম্বারা
নিনিও তাহাদিগের মনে কিছুমাত্ত ব্যক্তিটা
বা চেন্টা জন্মে না তাহারঃ পাল লিক্সা
আছ-মানি সত্ত্বেও চিরকাল পালে নিক্সা
থাকিতে চাহে। যদি আস্কৃতিহার ব্যক্তিটা

THE WALL STREET WEST WEST THE ARE DESCRIBED WE HAVE SPECIAL eres fire vital sis, ale culting wit-मात्र श्रम के निवासक भी करें। व किंदु करें CWINIS ACA NEWS & WES BES 10-यदा नाम निकास सामामा किया कर् कृत्व ट्यामान नामना पूर्व हरेटव, कावन व टीरात बना धकार मेंब रीन रूप कारादकर তিনি আছ দান করেন, তিনি অভি যত্ত্রের धन, निजास चाकिकन ना कतिरल साहरिक थाश रुउता गांत्र मा। चरुवर आर्थनात षिजीव विधि वार्क्नजा। यमन आमीनिटनेत অন্তরন্থিত পাপ সমূহ অবগত হইতে চেকী করিতে হইবে, ভেমনি ভলিমিন্ত ব্যাকুলভা ও কাতরভাকে অবলয়ন করিতে হইবে। অভাব জানিয়া কাতরত। সহকারে যে তাঁ-হার নিকট প্রার্থনা করে তিনি ভাহার প্রা-र्थना मकल कट्रन।

কিন্ত কেবল ব্যাকুলভাতেও সকল কাৰ্য্য শেষ হয় না। আপনার পাপের জন্য যেমন ব্যাকুল হইতে হইবে তেমনি প্রার্থনা কা-**लीन क्रेश्वरतंत्र मक्रम ভাবের প্রতি বিশ্বাস** রাখিতে হইবে। পাপ-ভারে ভগ্ন হইয়া শোকাকুল হৃদয়ে বৎকালে পরম পিতার নিকট আর্থনা করিবে তথন যেন তাঁহার প্রতি একান্ত নির্ভয় ও তাঁহার মাতৃ-ভাবের প্রতি একান্ত বিশ্বাস থাকে। । আমার আ-থনা-বাক্য, আমার কাতরোক্তি পরম পিড়া अनिटबन ना, यं किन कि का किन रिकान कारणहे थार्जिक स्ट्रेट्ड शाहित ना, खेळालाह जार रहेट गर्सनार बाबादन प्रका त्रित्य। यश्रन (मः व्यार्थना **मध्रम काट्य क्रिय**े CBS निक्छ निट्यम्स कडिट्य विषय हिट्य र्शाह रक्षण यहाना केहिरर । श्रीकंत TANK AND STANKS AND THE PARTY OF

विशास कटरम नो अनि त्यामा समस्य क्षामांकड साथु छात्र भाटक, यति कक सार्वे সর্গ চিত্তে তাঁহার নিক্ট স্বীয় শভাব क्षरान क त्रिमा बीजन हहेट ज जान, व्यवनार তিনি ভোমাকে রক্ষা করিবেন। হা। তা-হার অবস্থা কি শোচনীয় যে শোকভারভয় श्रुनदत्र प्रहर्निण जेश्वरतत निक्ठे व्यर्थना করিয়াও মনে করে শূনো রোদন করিলান, কেই আমার যন্ত্রণায় কর্নপাৎ করিল না, ঈশ্বর আমাকে দর্শন দিবেন না, আমি তাঁ-হার তাজ্য সন্তান, চিরদিনই আমি চুংখ-मार्वाधिदक मक्ष रुश्व ! हा ! ताहे वा कि त्मी जागानील, त्म फ्रन्थ विश्वतन मक्तना পরম পিতাকে নিকটে দেখিতে পায়, এবং তাঁহা হইতে নিজ প্রার্থনার সায় পাইয়া, ভক্তিকৃতজ্ঞ। বিশ্বাদে পূর্ব হয়। তপন त्म बदन करत त्य यनि अ आणि नीन छुःशी, ষ্টিও পালে অপ্রিত্তায় নিতান্ত ম্লিন, ততাচ় অনাথ নাথ প্রমেশ্বর আমার প্রার্থনা थं ६१ कतित्वन, आंगात्क छत्रत्। द्वान कि-নেন, আমি চিরকাণ তাঁহার প্রতি ক্রতজ্ঞ থাতিব, চিরকাল ভাঁহার পদানত থাকিয়া कीवनदक मार्थक कतिव।

প্ৰাৰ্থিৰ করে ৷ কিন্তু তাঁহারাই তাকা ঘাঁ-হারা আপুনাদিগের ছুরবাহা ও মলিনতা দৌৰৱাও অঞ্জিহত বিশ্বাদে প্ৰিড-পাৰনের পবিজ্ঞার প্রতি নির্ভন্ন করত দিবা নিশি কাতর-স্বরে তাঁছার নিকট প্রার্থন। करवन, এবং निःगः महा किटख सह धार्यमात्र সফলতা প্রত্যাশা করেম। 🕆 দিখরের ক্রেধি পরিতোষণের জন্য ঈশ্বরারতার चनृग्ठे-शूख गानद्वत चाताधना कता छाँ। দিলের পক্ষে আবিশাক নহে, কারণ ঈশার নর-দেহ গ্রহণ না করিয়াও দীন চুংগীর হৃদয় কুটারে নিয়ত অবতীর্ণ রহিয়াচেন,এবং কা-হার দার। অনুক্রন ন: হইয়াও তাহার রোগ শোক মুক্ত করিতেছেন। অতএব বিশ্বাস, প্রার্থনার দক্ষতার প্রতি বিশ্বাদই প্রার্থনার ज्जीस विधि। यथन त्य विवदस्त काना ध्या-র্থনা করিবে তথ্য ঈশ্বরের সাহায্যে সেই বিষয় দিছা হুট্রে এনত বিশ্বাস করিবে; विश्वाम ना कतिहा व्यर्थिना त्रथा।

কিন্তু অন্তরের অভাব অবগত হইয়া नाकित स्परतं विश्वन्तः महत् व्यार्थमः कतिहल् । কার্য্য কালীন চেট। আবশ্যক। আমি यिन छिलाननाइ ममर आधार, ताकूलठा छ বিশ্বাস প্রদর্শন করি, অথচ কার্য্যকালে षा आंगगण. পारित रेष्ट्ः भूक्वक विश्व रहे, তবে আমার প্রার্থনার বিশ্বাদে ব। প্রীতিতে ।ক কল । শাশ ২২তে মুক্ত ন। হহবার ইচ্ছ। সম্পূৰ্ণৰূপে আনার চরিত্র দ্বারা প্রকাশিত **হইতেছে। যথন আমা**র গৃঢ় ইচ্ছা পা-পেতেই ধাবিত इहेल, अन्तर्श कि आमात्र মৌখিক আর্থনা ভাবণ করিয়া আমাকে পবিত্র করিবেন? কথনই না। निवाकतरणत कांत्रण क्रेश्वटतत निकंषे था-র্থনা করিবে, সেই পাপের প্রলোভন উপ্ন স্থিত হইকে স্বীয় চেকীছারা প্রাণপ্রে আদ षांदक तका कड़ित्व, এवर छीहात माहारा

পুনঃ প্রার্থনা করিবে। তিনি সময়ে সময়ে है। इत उक्त प्रशास्त्र शत्ना ज्या गर्या নিক্ষেপ করিয়া তাহাদিগের সরলত। শ্রহ্মা ও ধর্মান্তুরাগ পরীক্ষা করেন,এবং ভত্নভীর্ণ হই-বার জন্য যে একগুণ চেফা করে তাহাকে তিনি সহস্রত্ব হল বিধান করেন, যে এক-श्वन महिमा व्यार्थन कटत डोशाटक मध्य छन সাহায়। প্রদান কংলে। প্রার্থনাও করিব অবচ পাপানুষ্ঠানত বারিক এ উভয় এককালে म अद्युवा। व्यक्तिः चाद्यात् ८७ निगृष्ट कार्यः। গে উন্মত সমীগে এফবার ভাষা উচ্চারণ করিলে পাণান্ত জান কায়তে ভাষে স্থকক্ষা इश्, कथनरे ७ ाडि व्यक्ति गोत्र मा, অক্ত-ৰূপে প্ৰাৰ্থনা ক্রিলে জীবন ক্ষেত্রে ভাষার চিত প্রাশত হইবেই হইবে, গা-পের বিশ্বীশন কটো ঘাইবেই মার্টের সে-बल लाभेगः जयकृत्व असिक्। गायु ७ वशीन এই ভাৰে লক্ষিত হয় ন) ৷ চেন্টা প্ৰাৰ্থনয়ে নভ্য এবং শেষ বিবি । যে পরি**মাণে** প্রভ ণ্না "বিশ্বৰ প্ৰকৃত ও আন্তবিত সেই প্ৰ विशादन क्षीवन लावेज, माहे लेडिमाएन পালের বিপরীকে চেন্টা বারিছ হয় हेश निश्चारमहरू शङ्या ४८मीत खमन शृष्टलाव পাপেরও দেইরাপ। পাগ-শর্ভি একবার হৃদ্যাকে অধিকার করিলে শীঘ তথাক্ত হওয়া অভান্ত ক্তিন। ঈশ্বরের প্রতি যথ। কথঞিৎ ভক্তি বাকিলেও পাপের প্রতি অ-विक उत्र छ कि ६ किटड शादत. खुकर १ था-जमा १ स्थक्त करेट भारत । ए जैसे क्षार्थनात क्रिनेजम विवि। इं**शेटबरे प्या**-খাল বস্থা ও নিপ্রহাতিশর হয়, কিন্তু ইহা । এন্ও ক্থান **আত্মার প্রকৃত** উন্তি সম্ভা**বিত** तारका अतम नातिकान **अवस्थितरक दक्वन** 'থকে উপহার বা তাকা **উপহার দিলেই হ-**हेटदेना, किन भीवरमा**शशत विटक हरेटन**, জুমি গে পাপকে খুবা কর,এবং ভাঁখার পথে

গমন করিতে প্রতিক্ত হইয়াছ কার্যাধারা তাহা প্রদর্শন করিতে হইবে। তবে তিনি তোমার হন্ত ধারণ করিয়া ধর্মামূত-ধামে লইয়া ঘাইবেন, তবে তিনি ভোমার কুদ্র হৃদয়কে প্রশাস্ত করিবেন, এবং ভোমার ম-নোবাঞ্জা পূর্ণ করিবেন। অভএব কেবল প্রার্থনা করিয়া কার্যাকালে উদাদীন থাকিও না, কিন্ত প্রাণগত চেকা ধারা খায় প্রার্থনা কে সম্পূর্ণ করিও। এই প্রকারে হৃদ্য় ধারা, বাকা-ধারা, কার্যা-ধারা এবং চেকা-দারা প্রার্থনা করিলেই পরম-পিতার নিকট প্রার্থনা করিলেই পরম-পিতার নিকট প্রার্থনা হায়। হয়, নতুবা তাহা অকার্যা-

প্রথম কার্যের বিধি চতুঠর নির্দ্ধারিক হটল। প্রথমতঃ আছাচিতা ছালা হৃদদের অভাব এবং পাপ দকল পরিষ্কার কলো জালিতে হুইবে, ছিতায়তঃ সরলভা,কাভরভা ও আগ্রেছাভিশয় সহকারে ঈশ্বরের নিষ্ট দেই মকল অভাব নিবেদন করিছে হুইবে, অহঃ-পর অভি বিশ্বস্থ বিনীত চিত্তে তাঁহাব দা হাযা প্রার্থনা করিতে হুইবে, এবং প্রবিশ্বের চেন্টা ও কার্যা ছারা নির্দিন্ট পাপ্তেক বর্থা সাব্য প্রিভাগি করিতে হুইবে।

এই প্রার্থনা অভি কঠিন কার্যা, ইহারই
প্রতি আমাদের ধর্ম, ইহারই প্রতি আমাদের জীবন নির্ভর করিভেছে। সমরে সময়ে
এই প্রার্থনাকে পূনা ও বিফল দেখিয়া
আমরা পার্থনীকে পূনা দেখি এবং অস
হার-প্রার হইয়া পাঁড়। প্রকৃত প্রার্থনা
করিবার সামর্থ পুনর্বার ঈশ্বরই প্রেরণ করেন। এককালেই যে প্রার্থনার মকল ভাব
সমাক কপে সকলের ক্লরে প্রস্কৃতিত হইয়া
উঠিবে এমত আমরা প্রত্যাশা করি না,
কিন্তু কালে ভবিষ্তর সকলেরই উম্পিত ও
উংকর্ণতা লাভ হইবে, এবং ভদ্বারী সকলের জীবন পরিশুল হুইবে ইয়াই শামান

দিণের বিশ্বাদ। প্রার্থনী মৃতি ছুবহ ব্রচ, আমরা ইশ্বরের দাক্ষাতে ব্রাক্ষধর্মের দক্ষে দক্ষে দেই ব্রত গ্রহণ করিয়াছি, তাঁ-হাকেই দাক্ষী করিয়া মৃত্যু পর্যান্ত দেই ব্রত পালন করিব। প্রাণ সত্তে তাহার ক্রাটি করিব না। বারম্বার বিকল যত্ন ও হত-চেন্ট হইলেও প্রাথনা করিতে বিমুপ হইব না; একবার নাপারি শতবার, শতবার না পারি দহস্রবার তাঁহার প্রদাদ ভিক্ষা করিব, করেণ আমরা বিশ্বাদ করি যে তিনি দাধু ইচ্ছার দিন্ধি বিধান করিবেনই করিবেন। তাকিকদিগের কুমন্ত্রণায়, নাস্তিকদিগের প্রলোভনে আমরা ভূলিবার নাহ, করিণ তাহা হইলে আমাদিগের আল্লাহত্যার

থতএব হে নির্মাল চিত্ত সাপু বাজি:

গদি ভোনার এই সংসার-মোহ-কোলাহলে
নির্মার পাইবার অভিনাধ থাকে তবে অদাধ্রা
বাধ ঈশ্বরকে প্রার্থনা করিছে আবস্ত কর;

সংলারের অনিতা বস্তু হুইতে সময়ে নায়ে
বিরত হুইয়া আমানুসকান কর। আমা দোষ
ক্ষনা কাত্র হুইয়া শীর্ণ হৃদয়ে ভিক্তুকের
ন্যায় প্রতি দিন তাঁহার দ্বারে উপনীত হও,
এবং সকল আমোদ সকল সম্পদে জলাপ্রালি
দিয়া কেবল সংকর্ম সাধনেই যান্ন কর,
তোমার আ্যা পূর্ণ হুইবে।

কলিকাতা-ব্রাহ্মসমাজের বক্ত্তা।

ठेटाविन ३१४८ मेक ।

माजतः भिष्ठब्रदेशय नांकां १ क्षेत्रकटम्यजार । मचा ध्रो निरंदरयक गता नुसंद्र्यमञ्जूषः ॥

গৃহী বাজি পিতা মাতাকে সাক্ষাৎ প্র-তাক্ষ দেবতা সরূপ জানিয়া সর্বা-প্রয়ত্ত্র সর্বাদা তাঁহারদের সেবা করিবেন।

शत्रदमकदत्रवरे भन्ने तस्ताव, जिन देशव

शत्रम भित्रा। डीहांत्र मर्खानन्तर नरभा किनि এক এক পরিবারে এক এক পিভাকে আ-পনার প্রতিনিধি-রপে নিযুক্ত করিয়া স্থান-भूव श्रवांनी शामन कतिरनमः अवः निरकत মঙ্গল-ভাবের প্রতিরূপ যে স্নেহ্ মমতঃ তাহা জনক-জননীর বিকশিত ক্রম্যে অর্পণ कतित्वन! धरे कत्थ जिनि था शिवादित আপন প্রতিনিধির প্রতিষ্ঠা করিয়া ভাঁহার এই বিশাল বিশ্ব-সংসার পালন করিতেছেন। যেমন নভেমেওলে এক এক স্থ্যাকে অব-লগ্ন করিয়া এছ উপএছ-দকল প্রজ্ঞলিত तिक्शंद्रक, मिरे बल अहे मन्मात-क्काद्र এক এক পিতার অধীনে থাকিয়া পুত্র কন্যার। জীবন ও সম্পাদ্ লাভ করিতেছে। সকলা গুরুর মধ্যে মতি পরম গুরু, মাত্রে সেই ও চুন্ধে প্রথমেই বালক পরিপোষিত হয়। ইশ্বরেই মঞ্ল-ভাব মৃত্রি জ্ললে সেক্-কপে, স্থনে জ্ঞাৰণে পরিণত হ্ইয়াছে। मकदनत बननी मकदनत धातिकी त्य अहे शु-चिनी, मांकः अहे शृचिनी अदलका । जानी-য়দী; আবার পিত। তাঁহা হইতেও গুরুতর। অভ্ৰুব গৃহী ৰাজি পিতানাতাকে সাক্ষাৎ দেবতা-স্বৰূপ কানিয়া, ঈশ্বরের একিনিধি-স্থাৰপ জানিয়া, মল্প প্ৰমন্ত্ৰে উন্মোরদেব সেব। করিবেক। কুস-পারন মৎপুত জীছারদি-থের গাভি মত্র বাকা ক্রিকেক, ভীষ্রদের শিষ কার্যা করিবেক ও মারণে আডাবিছ थाकिटवक । महमदिवस स्मर्क सिम्प्यं भी । (अङ्-खाक्राटक रक्षण मक्राच मन्राप्ते करार । ভক্তি কিন্তু দেব-ভাব, তাহা নি া । । । । । । । । । পশুর মধ্যে দেখা স্থেন্ত্রতি কেলন প্রকা, শাবক্ষিগ্ৰে ভাষ্টা কেন্দ্ৰ স্বেহে কেন্দ্ৰ যত্নে পালন করে, কিন্তু পিতা মাতার প্রতি নেই পশু শাবকদিলের জ্বা ভাজি কোবায় ১ ভাক্তর ভার কেবল মনুষো। ভক্তির ভাব পশুতে নাই , ইহা অভি উৎকৃষ্ট ভাৰ স্থ-

ভরাং অভি বির্লা । পিতামাতা সহতেই পুত্রবিগকে ত্রেহ করেন; কিন্তু যাহার৷ সৎ-পুল-কুলপাবন সৎপুত্র, তাহারাই কেবল ।পভামাতাকে কর্মনানুষায়ী ভক্তি হরে। ঘে পরিসাণে ক্ষেহ, দে পরিষাণে এখানে **जिक्ति मोरे। धक्कि या मिड्टूड जात,** দেই নিউরের ভারটি ভতি ভারতে উত্তে-জিত করে, মেই জনঃ বালংকর বত দিন পিতার উপরে নিংগ্র থাকে, ৩৩ দিন তার गद्भ भद्भ एडिंड श्रका किन विचार तक युवा इंडी, क्याक्रम ७ खाधीन रहेगा, খালার বৃদ্ধ পিছামাখাকে ভাক মংগারে (मन्या कदतः (मन् ७)व निक्रीम खिल्ला है छ- भा भूतदिएख अवत दर्खभाग मापुनिर्धतः कीवन-प्रतिराज अथन राफ नास मुग्नी साथक মে পিতার জন্ম মুমান্য অল্পা কর্মীকার। क्वियार्ग, विकात । क्याने कार्यान्त महस्त चा (अमिक्। कार्य प्रांचयतम सेमाद अवधि স্থান বিভারত খাছে। ব্যন পিতা নটি-(कङ्क श्रीष्ठ अनुक्र श्रेश विश्वतान द्य ''তেমানে যমেরে দেলাম ভখন অন্ধাবিকী ৰ্চিকেতা চিন্তা করিতে লাগিলেন যে পিতা यमि जकीकात करिशां अवश्रुद्धांद्य चा-बारक धमख्दरन शार्शकें हा न। तन्न, खत्व ভাঁহার কথা দিখ্যা চইয়া উঠির সাংঘাতিক জনিট হট্রেক: অতএব তাঁহাকে তিনি क्षे (वर-वाता भावन कांत्रवा निटलन। "भ-भुशका म्य. शृह्यं श्राह्म श्राह्म एका **भहता** শ্বন্মির মন্ত্রঃ প্রত্তে শ্বাদিরাজায়তে भुनः। " "भूतं भूकं भुक्तस्वतासांश कविशा বিধ্যাহেন, তাহা অনুসাবন করিয়া দেখা; ৩০৪ এখনকার সাধু **ৰজ্জনেরা বে প্রাকার** অভিৰণ কৰিত হতেল, হাহাও দেখা। শাসোর नः व मन् वा कीवं करेश भारत, **व्यक्ति कामात** साग नुस्यात जग हाद्व करहा। अभन अ-निटा समादि भिष्या कहितात धालाकन

কি? অতএব হৈ পিডঃ। তুমি আপনার
প্রভিক্ষা পালন কর, আমালে বম-সদনে
প্রেরণ কর।" দেখা তার কেমন পিতৃ-ভক্তি।
আপনাকে যমেরে দিয়াও পিতার ইন্ট-সাধনে তিনি তৎপর হইয়াছিলেন। আবার
যম যখন ভাঁহার প্রতি সন্তুন্ট হইয়া তাঁহাকে
বর দিতে অভিলাঘ করিলেন, তথন সর্বর
প্রথমেই তিনি বর চাহিলেন যে "শাস্তসংকংশঃ প্রমনা যথা সাহি " "আমাকে
তোমার নিফটে পাঠাইয়া পিতা অতিশয়
শোকার্ম হর্মাছেন; অভএব মাহাতে
হিনি শাস্ত-চিল্ল প্রমনা হন, তাহাই বিধান
কর।" কঠেলান্দলের আখ্যায়িকাতে সৎপুলা ল'চকেলার পিতার প্রতি মনের ভিলিভাব কেমন প্রকাণ পাইতেছে।

ত্ৰেফ লেও তাৰু গ্ৰাণণ **হইর। ঈশ্ব**রের অভিনিদ্ধান্ত পিতাসাখাকে ভক্তি করাই खंकाधरपान अथम छेलटम्स । जासाभिरशत ৰল-বীঘা যাহা কিছু সকলি পিতাহাত। ३-ইতে পাইয়াছি, পিডা মাতারই প্রতি ভক্তি इंखि मर्के अवटम छेथिन रूडेक। कून-পार्य দংপুত্র মর্ক-প্রথতে যেন পিতা মাতাকে সেবা করেন, সর্বন্ধ ভাঁছারদের জ্বির কার্যা করেন अ आक्राविस् शांदिकन । अचित्रदर्भ मीशांदिकत প্রান্ধা নাই, যাঁহার। ত্রান্ধর্মের শাসন ও উপদেশ অবহেলা করেন, তাঁহার। হয়তো বিলার গৌরবে পিতা মাতাকে লঘু জ্ঞান करतन, व्यथन। धन मरम मख क्रेज़ा कैंकात-দিগকে অবহেল। করেন। হে প্রিয় ত্রান্ধ-সকল। ভোমরা কদাপি এমন গহিত কর্ম করিও না—তোমরা বিদ্যা-মদে বা ধন-মদে উমত্ত হইয়া পিতৃ-**হেলন করিও না। ভো**ন মরা পিভামাভার আত্মরে থাকিয়াই বল বীর্যা, বিদ্যা বুলি, উপাক্তন করিরাছ এবং ভাঁহারপের প্রমাদেই ধন মান প্রতিপত্তি যাহা কিছু লাভ করিয়াছ; অতএব ভাঁহার: দিগকে অবহেলা বা পরিতাগি করিও না।
তোমরা রুদ্ধ পিতামাতার যতি-অবপ হইরা
আমৃত্যু তাঁহারদিগকে রক্ষা করিবে: এই
সনাতন রাক্ষার্শের আদেশ। যদিও তোমাবদের প্রতি তাঁহারা বিরক্ত হন, ও তাঁহাদের সেহ অপপ হয়, তথাপি ভোমরা তাঁহার
প্রিণ আচরণ করিবে, তাঁহাকে সম্বিক্
ভবিদ করিবে। 'খং মাতাপিতরো ক্লেশং
দহেতে সন্তবে নৃণাং। ন তদ্য নিস্কৃতিঃ
বিকাশ করিব। গ্রংশং
দহেতে সন্তবে নৃণাং। ন তদ্য নিস্কৃতিঃ
বিকাশ করিবে। করিবে করিবে, শতান হইলো
প্রত্মাতা দে ক্লেশ সহ্য করেন, শত বংসা
ব্যেথ ভাচার পরিবেশ্বি করিতে কেই শতে

খল হইতে পরিত্রপর বিষয় আর কি াণ্ডে ে ছ:শীল ও স্থার্থসর পিতার দোষে भागिक भूच मार्थण करेट अछ क्षेत्राहरू, এবং ভাঁহার দামনে ও দুট্টান্তে ভাঁহার৷ वर्षात्मञ्ज । शश्चिकम कतित्व योवित हरे-খ্যুত । ক্রিব প্র খনি ভাগা জামে সর্ল ्हेल, गणावांनी उन्ताबतान् अ अवाधवांत्रः। ব্ৰাফা হুইল, ভবে ভাঁহার গুলের ও কো-নের আর পরিংশ্য পাতে না। ভিনি সেই অসংখ্য নিরুপায় ্বলিককে দেব-মেবা ধর্ম-পথ ২ইতে অক্সতম কুটিশ্বতম পথে আনি-ধার জন্য তাঁগার প্রতি নিরবধি নির্যাভন कतिएक किष्टुमाल क्रिकेटलन न।। পিতা কণাপি পিতাই নহেন, তিনি মঙ্গল-নিকেতন ঈশ্বরের প্রতিনিধি-পদ ধারণ ক-রিবার উপর্ক্ত নহেন। যে পিত। সংমারে প্রতিপত্তি ছানের ভয়ে তাঁহার পুত্রের ধর্ম-পথে কণ্টক আরোপ করেন ও অধর্মা-চরণ করিতে শিক্ষা দেন, ভিনি তাহার ভক্তি-ट्यांच्रक अरक वादत गम्राल खुक करतन। পরক্রব্যাপহারী, নাস্তিক, শঠ, মিথাচারী, প্রবঞ্চক,বিশ্বাদ-ঘাতক, রুভদ্ন পুত্রের নিকট रहेटच निर्ण कि कर्नानि शर्थशैन व्यक्ष

ভক্তি অত্যাশা করিতে পারেন? সে যদি কামোপভোগে মত্ত হইয়া তাঁহায় শিরণ্ডে-मन मा कटत. उटत डिनि कीवन श्राहेश व्याख्यारम मृद्या कक्षम । मृद्या मृद्या कि এমন প্রবাদ ক্রান্ত হর মা যে কোন পুলি মল্য পানে উন্মন্ত হইয়া ভাহার পিতাকে গর্জা जित ममत्य वाणि इंड्रेट वश्क्रिक कतिशाहिः কোন পুত্র বা ধন-গোলে ভয়কর পিতৃ-হত্যা-পালে নিপতিত হ্ইয়া সকাচোভাবে বিন্ট इन्सरिक । भूल वर्गशैन इन्टेन लिनात वृक्त त्रारात विकृत। इतेवा माक्रवे रहा। आ-ভেত্র পিতা যদি ভোৱ আভিষ্য কর্ন उत्त वर्ष-मावरम्य धनि भ विद्वाप करे-रवम भा, चेति कर्नरवाद खाँछ । खत-कृषि हाथितः छेलदन्य ६ मुख्यान् धारा मख-ध-গতের ভাষাকে জ্ঞান ধন্মের শিক্ষা বিবেন এবং ভাষার সন্ধান-মকল উক্সাপন করিবেন। छलारे भिष्ठति भुरसा अधि कर्रता कथा सम्भाग कः। इर्हेश, ७७९ श्वास्त आग भटमा স্পিকিত ক্ট্যা, ভীলার এতি মহজেই মধ্যেচিত ভব্তি ও অমুরণে প্রকাশ ক্রিন।

क्ष्रिका श्रम् । कृष्णि शिष्टा-शुर्त्व । प्र क्षर्णात भ्रम्य शिवक कृष्यः (भ्रम्यः) कृष्यः, छ ना छिछत्रहे त्यम ग्रम्यात हहेश प्रकार कृष्यः कृष्यः कृष्यहे त्यम ग्रम्यात ह्यामात् । त्यमात् व्यक्ति कृष्यः कृष्यः त्यम व्यक्षात् कृष्यः भ्रम्यः भृष्यः व्यक्षः विविध त्यम व्यक्षात् कृष्यः भ्रम्यः कृष्यः व्यक्षः त्रम्यात भ्रम्यः श्वित्रात्व शिष्टा-शृर्यः व्यक्षः त्रम्यात भ्रम्यः श्वित्रात्व शिक्षान्त्रः व्यक्षः भ्रम्यात्व कृष्यं विवस्त विवस्त । त्यात्व व्यक्षिः भ्रम्यः विवस्त व्यक्षात्व विवस्त । व्यक्षः व्यक्षिः व्यक्षः व्यक्षः विवस्त । व्यक्षिः व्यक्षः विवस्त । व्यक्षिः व्यक्षः विवस्त । व्यक्षिः व्यक्षः विवस्त । व्यक्षः विवस्त । व्यक्षः विवस्त । विवस्त

ও একদেবা দিতীয়ং

-== BQ(C=-

মনে। বিজ্ঞান।

মনের অন্তর্ফেশে প্রাংশন করিল আলি-জ্ঞান সহকারে অনুসন্ধান করিলে তিন विकास जाव असुभूक इस, क्लाबरका क, হর্ষকোভবোধক এবং স্বেছ। ব্রেড। भरमन यह अकात अवदा मध्यक्ति इत्रा प्राटक उरुमधुन्। ११ के अउचार्या रकान मार्कान ८ अनीत अक्लंड अवेर्वरे अवेर्व । ক্ষান, ভাহপারে ক্যান্দেশ্যন, চরিন্দোর্য স্থেক্স। कि अकार जाकर्या दक्तीनल मध्यादा िण चित्रकः। मन्दरनव अञ्चित्रसमद्राम मण्डाहेन क বিল্লাডের ভাষে মালবের প্রেফ সমাক্রাপে 'समुधावन कविछ छैठ। छः माधा । (साजू न क्षेत्रक्षकांत्र भट्टा, (क्ष्णोटम चार्ड्ड ०ट्ट ্ভিন্ন এব কাটার ৮৮ থানেশ ক্রিজে পাচর मा, त्यहे भूपेन स्थान हिन करानी अनुसाहिक मदी और्केंब-पूर्व (१९ शुभू टा.क अश्विकाच वितिः েন ভাষাকে আলোচনা কাৰ্য্য উঠিতে শাবে। সেন অনু বছর পালান্তা মান্তীয (क) स- क्ष्यु के होता के कि कि का का का कि देनोंने ্রকে আরুছ করিবার জন্ট নিজ্ভাগত নিলায় জগনাং বিষয় কাৰ্যনোলা দংভাগন নবিয়ালে নানাবং পরার সংক্ষার বৃদ্ধির আন-জে এল, নি ১২ চনর রচনা কৌশল এক কালে त्रभाकः कार् (अहारल'त्र)। वीक स्टेर्ड एमन ৯ বল ডাম্পুল হর, ভুলার **হইতে যেমন ব**ারি উৎপন্ন হয়,ফাচন পূর্ণ শরীর দেইবাপে উৎ-পন হইয়াছে, এবং রুফাদি ভাৰিতা প-দাথের মত এক দিন ভূমিসাথ হইবে। কিন্তু জ্ঞান প্ৰীতি পৰি দলা, হৰ্ম ক্ষোভ স্বাদীনতা, চদত্ত্রত মহান্ অবিনশ্ব জীবাতা, এবং ভাষার ভেজ্ঞপুঞ্চ চমানর নিয়মাদি কি প্র-কণ্ডৰ কাছার ছার' কোনু সময়ে সংরচিত হুট্ড । বলাপি ঈশ্ব দেবাপ ক্ষাতা দিতেন ভবে সদাঃ প্রস্তু শিশুর অন্তরে প্রবেশ ক-

রত বিজ্ঞানবিৎ মহান্যারা মনের রচনা প্রণালীকে হালাত করিয়া জগতের জ্ঞানকে উজ্জ্বল করিতেন। কিন্তু ভাঁহার ইচ্ছা অন্য প্রকার ভিনিয়ার ছিলিও-হাণয়ে অলক্ষ্য ভাবে পর্মাণিতা স্থীর প্রতিকৃতি মুদ্রিত করিয়া চলিয়া যান,উণ্যুক্ত সময়ে তাহা জ্ঞান প্রীতি ইচ্ছা দশের জীবাস্থা রূপে প্রকাশিত হয়, এবং মাদর্শাক্ষত স্থানান কীর্তি বংস্থাপন পুর্বকে মানের জন্মের গোরব প্রহার করে।

আমাদিলের বিজ্ঞান ঈদুশ মান্দিক প্রিপ্রকারতা ভিন্ন আরে কিছুই গ্রাহণ ক েতে পারে না। এবং কদনুষায়িকই আমর। বিচার করি ধ্য মধ্যবের মন সহস্রীয় দকল ভার ই জ্ঞান, अञ्चलकोल এবং পেক্ষা, এই लिलिबबादय विच्छा देश विद्यब माधा % नहें भवं। ध्वंन, ख्यात्व इस-, का छ, ब्रवः প্রিশেষে থেক্।। যে কোন বিষয় সমকে क्षेत्रक , का 😘 यः व्याक्ताम गहेताः। भूतस्य ८म हे निवस एकु प्रदेश वर बन घास । ज्यान-दर्भागत करा আন্ত্র , এবং ভাছা থেছণ বা পরিচ্যাগ ক্রিবার ইচ্ছা হই শার পুরেষ ভদ্দর্শনে ধর্ম ব কোভ বত্তা অনুশাক: মনে কৰ আনি একটা অভি স্থানর পাণার্থ ধারকোকন করে লাম, দেপিবাঁড ভাহা আমার জ্ঞান-গোচ্ছ হট্ল, এবং ভারে-গোচর হট্রা**মাত্র ভারার** গৌন্দ্য জনিত আশার মনে হর্ষের উত্তেক ছাংলি, এবং অভঃপর মুদ্রা **ছারা ক্রার বা অপর** কোন উপায়ে তাহা এহ**ণ করিতে ইচ্ছা হইল।** পদ্ধর বস্তু মঙ্গলো যে ৰূপ কুংসিত প্রদার্থ तप्रदक्ष व सूर्विक (महेब्रामा वाह **बर क्यांन**-বিষয়ক ভাৰতয় মন্ত্ৰোল আলাতে প্ৰথমে जग अर्थ करत, छात्नत अक्रिक वसुराहिक হধবা মেন্ডের ভাগ অভংপর তাহার

দরণ করে, এবং পরিশেষে মনের স্থান্থর বা জংখের অবস্থানুযায়িক মনে ভ্রিষ্টিত ইচ্ছা জন্মে। অভ্যান্থানিস্থান পালোচনায় প্র- র্ত্ত হইয়া প্রথমতঃ আমাদিগকে জ্ঞান সম্ব প্রীয় ভাবৎভাব ও প্রবৃত্তি নিরূপণ করিতে হইবে। এক আত্মটিতনা এবং আত্মজ্ঞানই আমাদিগের অবসম্বন, দেই কঠিন এবং তুর্না-বহার্যা অস্ত্র ধারণ করিয়া আমবা অতি সাব-দানে বিজ্ঞান-ক্ষেত্রে উপনীত হইতেছি, ভ্রম-ক্ষণ অসথ কল লাভ না করিয়া যাহাতে প্র বিশ্রম থারা সত্তার অমৃত ফল লাভ করিতে প্রার্থিকাই আমাদিগের উদ্দেশ্য।

রাজতরঙ্গিনী।

我也分升,则许则随西门东省人 侧端槽 对京日

ল ক্লেণ্ডের রাজর স্বল্পকাল স্বাধী ভিল, উচোল সহায় উজ্জিনীল অধিপতি লম্ব্রাফ্র লো চ্যুরিড হুইলেই প্রজাসকল ক্টাঙাৰ হুছি অমাস্থাৰ প্ৰকাশ কৰিছে আ রায় করিল। এবং ভাহারা মুক্ত ভূপতির व्यक्तक इंडराचिक्ति अवन्त्रमण्डक याः न्त्रांन कतिल। धारहरान रेमना मांग्छ मः-গ্রহপুর্বাক কাশ্মীরাভিয়বে গমন করিলেন। মাৰ্ভিক্ত ক্ষায় রাজ্য রক্ষার্গ কোন উদ্যোগর कर्दन नोर्ग, अहे काडू धारततम्ब कामाशास्म ও বিনাধুকে রাজাধিকার করিলেন। ম[া]-कुछल मिल्हामन्। इहेन। दानानगी, श-মন করিলেন এবং ভগায় ধর্মা,চরণ ও ইন্ট-সাধ্যনই কালাভিপাত করিতে তাগিলেন। তিনি প্রায় পাঁচ বৎসর রাজত্ব করিয়াভিলেন। প্রবরদেন অতিশয় প্রজারঞ্জক ও বিক্রম-শালী নৱপতি হইৱাছিলেন, তিনি উজায়িনী নগর আক্রমণ করেন, এবং তথাকার গাগ-পতি বিজ্ঞাদিতাভনয় শীলাদিভাকে যুক্ত প্রালয় করিয়াছিলেন। এই সময়ে তিনি উজ্জারনীর বিখ্যাত ছাত্রিংশৎ পুত্তিকাল-क्ञ भिश्शमन श्रीय ताक्षधानीटण वहेता शि য়াছিলেন। ভিনি শ্রীনগরকে নানা প্রকার

মুন্দর ও প্রতন অন্তিনিকা হার। সংশোভত করিয়াছিলেন। প্রবর্গেন ৬৩ ব্রুমার বার্গিয়া রাজন্ত করেন। জীলাব পর তানাব্রে তরপুত্র ও পেনিজ সুধান্তির প্রন্ধেত করিয়াছিলেন। নাবরে তরপুত্র ও পেনিজ সুধান্তির প্রন্ধেত করিয়াছিলেন। নাবের তরপুত্র ও পেনিজ সুধান্তির ক্রাভা রাখানিজা বিজ্ঞানিকার পর জীলাবার ক্রাভা রাখানিজা নিংহাবনস্থ হয়েন। ইতিহাস লেপক গ্রীধার রাজন্ত করান জিনালি নাব্রি বিজ্ঞান করিয়াছিলেন ক্রাভাবিত নহে। বোপ হয় এই পিনিজাল মানিস্বাধান ক্রাভাবিত নহে। বোপ হয় এই পিনিজাল মানিস্বাধান ক্রাভাবিত নহে। বোপ হয় করিয়াছিলেন ক্রাভাবিত মান্ত্রিকার করান মহান্নিল, ব্রুমার হার ব্রুমার হার ব্রুমার বিল্লান স্থান্ন স্থান করিয়াছেল বিল্লান স্থান করিয়াছেল ব্রুমার বর্মার ব্রুমার ব্রুমার ব্রুমার ব্রুমার বর্মার ব্রুমার ব্রুমার ব্রুমার ব্রুমার ব্রুমার বর্মার বর্মার ব্রুমার বর্মার বর্ম

द्राव किया प्रतिस्तृति । व्यापन करा लीशर वेजिशाम वास्त्र वाला एक भी विष्ट भित्रपूर्व, विष्क स्टाइन व प्रत्य प्रत्या কৰা আংবেশ্যক। রানালিকোর প্র কি-অম্পাদিতা দে ব্যাদিতা কাম কর্চ ৮০ लोफिटा महाउत्तर देशित्रोत्। ६ भूक महत्र र्रावयः विश्वारिक (हरदान, रिकास संभी व देशेरक रेमकः ग्रीमकः ग्रामक्रियान्य अस्ति। সমুদ্র দিয়ে তামণ্ড প্রক্রেকির ভারতে সালে করিয়া ভ্রায় হাও ক্রিনে চিব স্বরুত জন্তত্ত্ব স্থাপের সংখ্যা হয়ের । বাংগ্র দিক্তেট্ন প্ৰথম ক্ৰেন্ত প্ৰথম কৰিছে কৰিছে **अपासक स्थापक एक पुर्वाल पूछ ल**े । रेमनका ५ । इस्ताहारियम् वर्ष १५८० है। শ্বে এগল লয়ে, বলিয়াছিল, সে উট্টো পার ভত্তমানর । ছারে (ভার বংশার) ১১০ का भौतिक विश्वभाषा अधिक रहात्क। क्षांका क्षत्रे छितिमाद व्यक्तिसम वार्थ करिव्यंत निमिक्त भीत क्रमाहक आतिम्हित दर्धाः भागा किछ रिम्ब्शियक्षर फूल छ्वक्षित म-মক এক জন ভূপতির প্রিয় সভাসদ ভূপ-वालाइ माजिम्स को डि- जॉक्स महेरा जिल्ला,

এবং গোপনে তাঁহার পাণিএহণ করিয়া-ছিলেন। স্থতরাং রাজার মৃত্যু হইলে পর অধান কর্মচারিগণের সহায়তায় ভিনিই রাজ্যাভিষিক্ত হইলেন।

छूर्ल छ-वर्षान कटकी ने नोटशत वर्टणास्वव ছিলেন। তিনি স্বরং ধর্মপ্রায়ণ ছিলেন এবং প্রজাদিগের ধর্মোলতির প্রভি বিশেষ মনোবোগ করিছেন। তিনি ৩৬ বৎসর রাজন্ব করিয়াছিলেন। ভাঁষার পর তৎপুজ প্রতাপাদিতা রাজা হন। ইনি স্বীয় নামে এক নগর স্থাপন করিয়াছিলেন এই নগর अन्य काल गढना अञ्चन ममृक्तिनानी रहें-शুছিল। এই নগর মধ্যে নোনা নামক এক জন মহাধনাত। বণিশ্ বাদ করিত। এই ব্যক্তির মহিত রাজার প্রম বস্তুত্ব হই-ছাছিল। এক দিব্দ বাণক নরপতিকে নিমন্ত্ৰণ ছাৱা খীয় গৃতে আহ্বান করিয়া রাজি কালে দীপালোক পরিবর্তে রাশীরত হীরক হারা গৃহকে আলোকিত করিয়াছিল। ताकः हेश (नरिशा वाक्यशा ७ इतर्य भून-কিত হইয়াছিলেন, ইতাবসরে বণিকের এ-কটি প্রম ধ্বপ্রতী ভোগ্যা নারী অকস্মাৎ রাজার দুটি প্রেণ পতিত হইবা মাত্র রাজা াল্য ক্ল লাবণ্যে একে বাবে বিমোহিত-छिख क्षेटलन। কিন্তু লড্জা ও কলঙ্ক ভয়ে স্বীয় মনের ভাব ন্যক্ত করিতে অসক্ত হুইয়া উপস্থিত মনে।বিকারকে দমন করি-পরস্তু ভাহাতে তদন্ধি তিনি বিষম রোগে আক্রান্ত হইয়া শ্যাগত হইয়া প-ড়িলেন, এবং ভীহার প্রাণ পর্যান্ত সংশয়া-প্র হইয়া উঠিল। ইহাতে বলিক রাজাত মনোবিকারের ও পীড়ার কারণ অবগত **অবিলয়ে । সেই যু**বভীকে *ন্*-হ্ইব্যাত প্রদানে প্রেরণ করিলেন। কিন্তু মুপতি ধর্মভীত ছিলেন তিনি পর স্ত্রীকে এহণ করিতে অস্বীকার করিলেন। शदत वंशिक ভূপতির সহিত্ত অনেক তর্ক বিভরের দারা णांशांक त्याहिता शत, जिनि त्यहे नाहीत्क धार्व कतिरवाम, अवदः छाहात नाम मदत्ता-প্রভা রাখিলেন। এই জ্রীর গর্ভে রাজার সাতটি সন্তান ভ্ইয়াছিল। ইহাদের মধ্যে চন্দ্রাপীড় তারাপীড় এবং ললিভাদিত্য নামক তিন পুতা রাজার মৃত্যু হইলে পর এক। দিক্রমে রাজ্যাভিষিক্ত হইয়াছিলেন। ললিতাদিতা অভিশয় বিখাতি ও বিক্রম-শালী নরপতি ছিলেন। তিনি স্বীয় বিজয়ী টেদনা সমভিব্যাহারে লইয়া প্রায় সমস্ত ভারতবর্ষ মধ্যে একাথিপত্য স্থাপন করি-রাছিলেন। প্রথমে তিনি অন্তর্কেদী নামক দেশ জয় করেন, তৎপরে যশোবর্ণ নামক কানকুজ নগরাধিপতির প্রতিকৃলে গমন করিখা তাঁহাকে যুক্তে পরাক্তও রাজ্যচুতে করিয়াছিলেন। মনোবশ্ম এক জন বি-लाएमाठी जूपि हिला । है। होत কবিবর ভবভূতি কবিবাসম্পত্তি এবং র্ জন্ম বাস করিছেন। ললিতাদিত্য ভদনভুর গোড় ও কলিঙ্গ দেশাভিমুগে যাতা করি-লেন এবং তথায় স্বীয় জয়পতাকা উড্জীয়-मान कतिया जिक्टल कर्ना छ प्रदास श्राम क्रितिन, ७९१ इंट्र शाक्ति मगुस्हीत-বত্তী হইরা দারকায় উপস্থিত হইলেন। ছারকা হইতে নির্গত হ**ই**রা বি**জা**গিরি ল-ख्यन क्रिया यन्त्रीनगद्ध **श्राट्य क्रिट**लनः এবং এই নলে সমুদায় ভারতবর্ষ মাদক্ষিণ করিয়া ও বছ্ছর রাজগণকে পদানত করিয়া শ্বরালে। প্রত্যাগ্রন ক্রিলেন। কাশ্মীরে আগমনামন্তর স্থীয় সেমাপতি ও व्यभान व्यभान कथानाती मिश्रदक भूतकात य-রূপ অধিকৃত ভিন্ন ভিন্ন প্রেচেশের শাসন-কার্য্যের ভারাপন করিলেন। কিছু ভিনি অধিক কাল ছিব থাকিতে পারেন নাই," अत्र नार्ट्य कुकात्र दिएक कि कहेंग नुन-

রার হিমালমের উত্তর উত্তর কুন্দ নামক श्रुतान विमिन्न देणगाञ्चिम्दर्श याजा कतिरलन । এই স্থান কুবেরাস্থ্রর রক্ষণিগের বাদভান विद्या थाणि, हेरा मसूरयात व्यामा । किछ লালভাদিতা স্বীয় পৌরুষ বর্জনার্থ এই স্থানের অন্থেষণে হিমালয়ের অভ্যন্তরে প্রবেশ করিকেন। কিয়ন্দুর গমনান্তর তিনি মহাক্রেশে পতিত ইইলেন, পথ অভিশয় कुर्भम इरेश छेठिन, এবং পর্বভ-বাদী বন্য জাতিরা নানা দিক হইতে তাঁহার দেনা গণকে নিহত করিতে লাগিল। এই প্রকার প্রমাদ দেখিয়া নুপতি পত্র দ্বারা স্থীয় ম-ন্ত্রীকে জ্ঞাপন করিলেন যে তাঁহার প্রতি-গমনের আশা নাই, তুরাকাজ্মাই তাঁহার মৃত্যুর কারণ হইন, স্কুতরাং যুবরাজ রাজ-সিংখাদনে অধিরোহণ করুন। রাজার আর কোন সংবাদ প্রাপ্ত হওয়া গেল না। ললিভাদিতোর জ্যেষ্ঠ পুত্র কুব-লয়াপীড় রাজা হইয়া, পাছে ভাঁহার ক-নিষ্ঠ জাতঃ রাজত্ব পাইবার জন্য বিদোহ উপন্থিত করে, এই আশ্সায় তাহাকে ব্দথ্যে কার্ড়িদ্ধ করিলেন। পরে কিয়ৎ কাল রাজকার্য। নির্বাহ করিয়া তিনি উ-দাস্চিত্ত হইলেন, এবং পুনরার স্বীয় ভ্রাতা বজাদিতাকে কারাযুক্ত করণান্তর তাহাকে রাজপদে স্থাপন করিয়া যোগ সাধনার্থ শ্ল্যাব্দাআন অবলয়ন করিলেন,এবং এই ৰূপে দূক-পথ নামক পর্বতের এক গুলাতে বাস করিয়া জীবন অভিবাহিত করিতে লাগি-লেন। বজুপিতা অতি নিষ্ঠুর ও ইন্দিয়-পরায়ণ হইয়া উঠিলেন। তিনি কেবল স্বীর ভোগ্যা রমণীদিগের বেশ ভুষাতেই यमांशीत श्रमा कतिशाहिटलम, এवर जारर्थत विभिन्न याना मकलरक रम्हिनिद्धात निक्ष विक्य कतिर्देश। छात्राकत्म वह र्शिक तामक बन्भ कावमाज हिन । रज्।-

দিহোর তিন পুত্র ক্রেম রাজন্ত করিয়াছি-লেন, তন্মধ্যে ক্নিষ্ঠ জয়াপীড় যিনি শেষে সিংহাসনত হইয়াছিলেন তিনি **অনে**ক গুণালস্ত এব° সুঞ্ভি**তিত হ**ইয়াছি**লেন।** তিনিও অপরাপর বীর্যাবন্ত নরণতির ন্যায় অনেক দেশে সীয় জয়প তাকাল ইয়া গিয়া-ছিলেন। অপর ভিনি স্বদেশে সংক্ত শাজের চালনার প্রতি বিশেষ মনোযোগী হইয়াছিলেন। তিনি আখ্যাবর্তের প্রায় সমুদায় অধান ও নিখাত পণ্ডিতগণকে श्रोध म बार व्यानशन कतिया वाशियां हिरनन। এই সকল পণ্ডিতের মধ্যে সহব প্রধান वाकिभिरवत नाम ७३ ७ मरिमन्द्रिश्व <u> अन्</u>र क्विशर्पत मर्पा मरम्बिप, मस्र, চাতক मञ्जीमान, এবং বামন,এই কএই ব্যক্তির নাম প্রাপ্ত হওয়া যায়ে। এই প্র-কারে কিছু কাল রাজ্যের কুশল বর্দ্ধন করিয়। জয়াপীড়নেপাল রাজ্য আক্রমণ করিতে शिटलन। किन्नु এই मिटल व्यदिश कित-বার পতাদি তিনি জানিতেন না, স্বতরাং কিয়দূর গমন করিয়া এক নদী পার হই বার সময়ে হঠাৎ নদীর জগ ও জ্রোত রিনি হওয়াতে ভাঁছার সমুদায় দৈনা ভালিয়া ব জলময় হইয়া গেল। রাজারও এই কাপে প্রাণ্ডাণ্ড হইত কিন্তু বিপক্ষ দৈন্যর: ত্রীলাকে ভাগিতে দেখিয়া জল হইতে উন্ধার করিয়াছিল। এবং নেপালরাল ভাঁহাকে লইয়া গণ্ডশীনদী তীরস্থ এক চুর্ণ মধ্যে রান্ধ করিয়া রাখিলেন। কাশ্মীরে এই ভূঘ টনার কথা শুনিবামাত প্রজাগণ মহাব্যাকুল হইল। প্রধান মন্ত্রী অপরাপর রাজকশ্বচারিদিগের মহিত পরামর্শ করিয়া আপনি কিছু দৈনা লইয়া নেপালে গমন করিলেন. তথাকার ভূপতির সহিত দক্ষি স্থাপনের কথা ধাৰ্য্য করিয়া একবার ছুৰ্গ ৰুদ্ধ কাশ্মীর রাম্বের সুহিত সাক্ষাৎ করিতে চাহিলেন।

তাহাতে নেপাল নরপতি সহজেই সমাত হ-ইলেম। পরে মন্ত্রিবর জয়াপীড়ের দহিত শাক্ষাৎ হইলে পর ভাঁহাকে পলায়নের পরামর্শ দিলেন। বিস্তু রাজা কিনপে একাকী গণ্ডকী পার হইবেন তাহা কিছুই হির করিতে না পারিয়া প্রভুভক্ত মন্ত্রী কহিলেন যে মহারাজ আমি আপনার নিমিত্ত প্রাণত্যার করিছেছি, প্রাপনি স্থামার মৃ-তদেহ নদীতে ভাগাইয়া তদবলয়নে পার हरेट अधितत्वः। এই वित्रा मन्ती पूर्ण-আচীর হইতে আপনি পতিত হইয়া প্রাণ-ত্যাগ করিলেন ৷ এবং রাজা তাহার দেহা-বলম্বনে নদী পার হইয়া ছঅবেশে কাশ্মীরে অত্যাগমন করিলেন তাহার কিছুকাল পরেই लाहात मृजूा कहेल।

অমুঠানের আবশ্যকত।।

-৫০ সংগকে পত্রিকার ৭৮ প্রার গরে। (অপাপ্ত)

প্রাক্ষানিখার সন্মুখান কি কি এবং সেই সকল অনু-স্থান কন্তদুর কার্ত্য ভাহা কপঞ্চিৎ আলোচিত ইইল, একংশ সেত্ত সেই বিষয়ে ধে সকল আপান্তি উঠি-মানে তাল পোশিক্তি খণ্ডন করিভেছি।

কেট আপতি এই যে ব্রাক্ষদিগের অনুষ্ঠান-সক 🗀 🕾 পৌরুনিক্দিগের অনুষ্ঠানের ন্যায় ব্রু-সংসার 🎾 জনীয়া সাইবে। ইহার অর্থ আমি প্র-কুড়ক্রপে বু, 🤝 পারিডেছি না। তবে ব্রাক্ষেরা কি শাসার আঠান কালে পৌতলকদিলের মত १२४ मितीह शका कतिराम ! **आवाद कि धमन** - 🔧 ভইতে ধগন শিলা এক্তরের পূজা না করিলে ্ৰামে নিলেন অনুষ্ঠান মকল সম্পন্ন হইবে না ? ইহা লালে বিকাস দ্বিৰ ও ঘদি এক **ঈশ্বর সকলেরই** ৮০ বিশ্বাস থাকে ধরি সকলের**ই এ জ্ঞান থাকে** . जन दमनी मिला।, कंटर कि क्शकादत . शूनकांद्र दशी-'হ'লকভাৰ সংগণন **হইবে.?** (शोखनिक मिन्न গোকতিত বিদায়ে এবল **ধায়**িবি**নায়ে জাজানতা,** মত্র' জালাদিলের কিয়াতে কুসংক্ষার সকলারি-াল বৰে: ভাষারা বিশ্বাস করে প্রিওদান ক-িনে পিনি পৰি ইইনত ভোজৰ ক্ষিয়া পৰিভূপ্ত খন টালরে) লাভালার সহিত প্রিত্দা**ন**্**করে**; प्टाराजी विश्वाम करत शक्षात जटन ममूरमात करि परमाज शन्ति इरेटलई म उना मान, काराता

गरुवादक भेगांत नर्स्ड रोहन कत्रिरंड मा भावित्य महा क्रिके ଓ कुन्न हर, काश्रीता दमत दमतीत थू-कारक शहर मनन कान करत, युख्तार अनुष्ठीन-কালে ভাহাদিগকে পূজা না করিয়া সুন্তির হইডে शादि ना। किन्हं वर्षने जोकपिरशत मन्त्र, विशन রীত বিশাস, ধবন ভাঁছারা গজাকে দেখী জ্ঞান করেন না, ঈশ্বর ভিন্ন জার কাহাকেও শ্রন্তা করেন না, পিতা স্বৰ্ণ হইছে পিও ভোজন করেন যথন তাঁহার। ইহা অম বলিয়া জানেন, তথন তাঁহালের লিয়াতে কিরুপে পৌতানিক কুসংস্কার দুট হইবে। তবে হয়ত এমন জাতি থাকিতে পারে যাহাদের ভিভরে ভেমন বিদারে চালনা নাই, যাহাদের প্রাকৃতিক ঘটনাও অন্যান্য বিষয়ে অনেক কু-সংকার রহিয়াছে, অপচ ব্রাহ্মধর্মকে গ্রহণক-রিয়া ভদনুষ্ঠানে প্রবৃত্ত হটয়াছে। এরপ জাতির ক্রিয়াতে কুশংস্কার দৃষ্ট হইবার নিজান্ত অসম্ভা-বলা নাই। কিন্তু ব্ৰাহ্মপৰ্ম গিয়া যে ভাহাদি গকে কুসংস্কারে জড়ীভুত করিয়াছে ভাহা নহে, 🔀 হাদের আহা কুদংস্কার জালে জড়িত পাকাতেট ব্ৰাহ্মধৰ্ম কথায় উজ্জ্লকতে প্ৰকাশ পাইতেচেন নাই। ফল্ডঃ যে জাতি আপনার আবিকে যত উন্নত ক্রিবে, ভাহার মধ্যে ব্রাক্ষধর্ম ডস্ই সমুজ্জুন বেশে প্রকাশিত হউরে, এবং বে জাতির আঝা যত হীন অবস্থায় থাকিবে, ব্ৰাহ্মধৰ্ম্ম ফেথানে ভতই মলিন রূপে আবিভূতি থাকিবে। অপিচ ইহা যেন कामारभव कावन भीतक स्वस्थ स्मरण कामूक्रीन काक्र रमञ्डलिट मोडिस कुमरकां स्थाप अग्ध अमर नाडा कुमर-স্কারের অর্থ--- জন্তানত।। অস্তানতা এক দিক मिशार्रिश मा शिश अमा मिक मिना न हित इहै दिन है इहेरत। यूमलयात्मदा ७० जेश्रेयरक विश्वास क्यि-য়াও অন্তানতা দশভভোগ্ডিত অনুষ্ঠান সকলে প্রায়ন্ত নাহইয়া থাকিলে পারে নাই। কুদংস্কার সকল দুর করিব না, ্রথচ ব্রাহ্মথরে মুন্দর রূপ অনুষ্ঠান করিন ইহা মনে করা রূপা। একণে হয়ত কেছ কেছ বলিবেন ভবে ব্রাহ্মরা ভাগে দেশের কুসংস্কার সকল দূর করিয়া পরে কেন অনুষ্ঠান সকল প্রবৃতিভ না করান ? এ প্রেল্লের উর্ত্তর এই (ध, ব্রালোরা कि এই দেশকে জीনালোকে উজ্জুল ক্ষতে প্ৰস্ত হন নাই ? তাঁহায়া কেনই বালক-मिटशत यानिकार्य विमेशानस सानिक केसिसारिकेन, কেনই বা তাঁহারা অন্তঃপুরে স্ত্রীশিকার নিয়ম क्षविश्व कतिराज्ञाञ्चन । दक्ष विवादनम् हेराहि कि मानार्या हरेल, द्वारमात्रा नेपूना मानाना नादगाह कि गहरे पाकित्यन ? मा ब्राह्मिया देश कारमन य डीहात। डीहाएम्ब हेक्समुक सक्त कार्या समाधा कतिएक कामाणि शावन हरेक्स नाई। जाराजा अज्ञता प्रश्नित जाहरूत । जानिक जिल्लाक यनि ভেমন সঙ্গতি থাকিত, জ্ঞানালোক প্রদান করিতে যাহা বাহা প্রয়োজন তাহা যদি ভাঁহারা বিশেষ রূপে সংগ্রন্থ করিতে নমর্থ ইইতেন, তবে ওঁছোরা এ দেশকে মতাও জ্ঞান রত্থে বিজ্যিত করিতেন সন্দেহ নাই। যাঁহারা এ দেশকে বিদ্যাধনে সন্দান করিতে, জ্ঞাজনামী হয়েন, তাঁহারা প্রাক্ষাদিণ্ডক সাহায্য করিয়া দেখুন, দেখিতে পাইবেন এ বাক্য কন্ত দূর যথার্থ। ঈশ্বর করন যেন প্রাক্ষেরা এ দেশকৈ দিন দিন জ্ঞানালোকে আলোকিত ক্রিতে পারেন।

অনুষ্ঠানের বিপক্ষে দ্বিতীয় আপত্তি এই যে ত-लाहा (करन व्यर्थ-बाग्र रग्न। इप। वाग्र कारायक वटन विता मिटल इहेरन। अर्थ कि निभिष्ठ ? आमोरमत গুয়োজন সাধনের নিমিক্তই কি মুদার প্রচলন न १ अनुष्ठीन मकल य आमादमत कीवदनत महर उपकारी भूत्वहे छार। मिस्रांख इहेग्राए, ञ्च डतार जानुष्ठीन भकत कि आभारमंत्र व्यवसाजनीय বিষয়ের মধ্যে পরিগণিত হইবে ন। ? ভাহা যদি আবশ্যম হইল ভবে ভাহাতে অৰ্থ লাগে দিভেই হইবে। একথ: উপস্থিত হইতে পারে যে বিদ্যা মত দুর আবিশাক অনুষ্ঠান তত দুর আ**বিশাক** भट्ट। द्वाटकात्र विमहाटक अमामत नौकलन, কিন্তুইহা কি সভা নহে কিন্যা অপেকা ধর্মেতে खां प्रकल्त खारा, कन ? । व कथा खानिया (कड़ কেল অবাক্লটনেও পারেন, কিন্তু ইছা অমূলা সভা। ভবে লোকে বর্মের জনা অর্থ প্রয়োগ করিছে কেন্ট কাতর হইবেন ? যদি বলা ধায় আধামিক অনুষ্ঠান করিলেই ধর্মা হইতে পারে, यारिक अबूछोन ना कतिवाम ? किन्न आमि जिन গ্রামা করি অনুষ্ঠানের প্রকৃত ফল আছে কি না ? अरमदक राजन ममाएक मा बाहित कि धर्मा हम मा। ইশ্ব ননুযোর প্রকৃতি এনন ক্রিয়া নিয়াছেন বটে व विश्वादन उक्तिमां क नाहे, विश्वादन अनुक्रीन मकल आठलिख नाहे, स्थारन मनुसात उसन সামাজিক চেন্টা নাই সেথান কার লেকেও ধ-র্ম্মের উচ্ছেল মুখ দর্শন করে। কিন্ত লে গত্য ঈ-चत्त्रत अन्छ महिमाहै श्रकांग करत, अनुष्ठीदनत अ-নাবশ্যকত। সপ্রমাণ করে না। বেথানকার লোকে আগার উন্নতি সাধনাথে সমবেত হইয়া চেটা দা করে, দেখানকার ধর্মোন্নতি কখনই তত শীস্ত্র সম্পাদিত হয় না। আনি অনেক সময় দেখিয়াছি य "ममादक ना बाहरल कि अर्थ हम ना" अहे कूहक বাক্য খারা সরল যুবাদিগোর মন যুগ্ধ হইয়া সমাজ एटेटल बृद्द कान वार्शन कहाएल करम काराहा अम अ অধর্ম পকে নিম্প ছইয়াগিয়াছে। সেই রূপ বে नकन जाक अनुश्रीत अत श्रुष श्रेशाइन, डैशि-রাও কনে পৌত্রিকতার দাস হইয়া পড়িয়াছেন। যাহা হউক অমুষ্ঠানচয় বখন মনুবোর স্বাভাবিক
কিয়া এবং নহস্ত্ব সাধন কারী বলিয়। ছিরীকৃত
হইয়াচে, তথন বাহার। অর্থ-বায়ভয়ে ভংপালনে বিরভ লন উচালা। নিভান্ত জনসকল মুক্তির
অনুসরণ করেন। আর একণে ইহাও লিজাসা
করা বাইতে পারে, ব্রাক্ষদিগের অনুষ্ঠানে অধিক
অর্থ বায় হইবে ইহারই বা সম্ভাবনা কি! পৌতলিকদিপের অনুষ্ঠানে দে অধিক অর্থ-বায় হয় ভাহার প্রভুত কারণ আছে। ভাহাদের মন প্রায়
ধর্মের দিকে বড় দৃষ্টি করে না, ভাহার। অনুঠান কালে প্রায়াই যশঃ নান আনোদ প্রান্দান জালান ছার। উত্তেজিত হইয়। থাকে।
ক্রমশঃ প্রকাশা।

নুতন পুস্ত আস্তি।

"কেচিল দৃত্ত কাসাং"। এই চাবা খানি কাঁজপয়আদিরদ সংঘটিত, ভাগার্থ সম্বলিত সংস্কৃত কবিতার সমন্টি। কবিতাগুলি স্থানে স্থান্ধ-পিশত ও সুন্দর, কিন্তু অপিকাংশই শকুন্তলা পদাক্ষদৃত প্রভৃতি সংস্কৃত কাব্যচয়ের অনুকরণ নাজ। ধাহা হউক সংস্কৃত রচনার চেন্টাই মহং। লেখক মহাশয় ধে যত্ন ও ব্যয় সহকারে সংস্কৃত ভাষায় নিজ বিদ্যার এবং দেশীয় প্রাচীন ভাষার উৎকর্য সাধন চেন্টা করিয়াছেন স্থানর। ভজনা ভাঁহাকে সাধুবাদ দিতেছি।

''চিন্তানালা''। এই ক্ষুদ্ৰ পুস্তক থানি বিধিধ বিনয়ক কতকগুলি চিন্তা দ্বারা প্রিপূর্ণ। শক্ষের ঘণ্পতা নিবন্ধন সর্বজই গ্রন্থকার মহাশয়ের চিন্তার্থ সংগ্রহ সাধা নহে, কিন্তু স্থানে স্থানে গ্রন্থ-ধানিতে উৎকৃষ্ট উৎকৃষ্ট সত্য উল্লিখিত হুই-য়াছে, যথা মানব জীবন সম্বন্ধে এক স্থলে কথিত ইইয়াছে,—

'মানবের ভাগ্য সর্জাই চঞ্চল, কিন্তু চঞ্চল-ভাবই মানবের ভীবনী শক্তি।'' প্রায়শ্চিত সম্বন্ধে;—

'প্র্যার নরক, আনন্দ আর বক্ত্রণা ভোগের ছইটা বিশেষ অবস্থা মাত। কন্দানার বসন হইতে সেই ছই অবস্থাকে শ্না কর, আপন অন্তরেই ভাহরে আভাস পাইনে।'' পুনর্কার এক ভানে কণিত আছে;—

'সতা, দয়া, কনা প্রভৃতি গুণ সমূহ পৃথক পৃথক নহে। সে সকল সেই নিরাকার জ্ঞানেরই গুণ দার, এবং সে জ্ঞানের ভাব অনস্ত এবং অ-থণ্ড। স্কুড্রাই ভাচুশ জ্ঞানই প্রম জ্ঞান ''

"লোকে যদি পৃথক পৃথক রূপে সভা, জ্ঞান, দ্যা, ক্ষাাং, উপাসক হইল; যদি আলোচনা ক-রিয়া ভাহার একটীকেও শেষ করিভে না পারিল, এবং যদি ভাষার মধ্যে একটীকেও ছাড়িয়। না লিভে পারিল, তদে ভাবিয়া দেখা দেখি ধ্যাকে একরণে অনস্ত, অথগু,নির্ময়র, সভ্যক্ষপ মঙ্কল-মূলপ পরম জানের উপাসক হয় কি. না ?"

'থাহার হ্বংগ বভ অপূর্ন, সে নেই পার্মজানকে ভভ বিভাগ করিয়া ও অপূর্ণ ভাবিয়া উপাসনা করে। কিন্তু গাঁহার আতা যত পূর্ণ, ভিনি ভাঁ-হাকে ভভ পূর্ণ ও অথও ভাবিয়া পূজা করিয়া খাকেন।'

পুল হাৰ জ্বপত্ৰ এক স্বাহন--

'প্রাক্তিমানী ব্যক্তিয় ধর্মকোর্থায় ? ইনি প্রাভিনানী ও বিদ্যাভিষানী অপেকাণ্ড ঘৃণিত। ইহা বুনিয়া সাধ্রজ বাতিদিগকে সাবধান হওয়া কর্তিনা।''

''শ্রুতি বাদ থে নিষ্ঠুর সেও সময়ে সময়ে ধর্ম্যের অভিমান করে। ওবিনান বিশ্বাসের হস্তকারক।'' ঐক্যাসমধ্যে কথিত হইগাছে।

"ঐকাই সংসারের জীবন, এবং ধর্মা সেই ঐকোর বন্ধন । ধর্মাকে গরিভাগি লয়, ঐকা শিথিল হইবে। ঐকা শিথিল ইইলে সংসার জী-ধন-চীল হইনে।''

আলরা অবগাও হইলাগ বর্দ্ধান ব্রাহ্মসমাজের কোন ক্যাচারী থাবা এই গ্রন্থানি প্রকাশিত হইগাছে, নাহা এটক সময়ে সময়ে ঈদৃশ এও প্রকাশিত শিত এইলে সেশের অনেক মন্তারে সন্তারনা।

প্রক্রাদেশ জনতে।" প্রভা দেশ, আগুরাকা (Revelution) বিধয়ের প্রকৃত-নর্যা ও উদ্দেশ্য বি-যারের প্রন্য এই পুত্তকথানি একটি কুত্রিদা ব্রাক্ষ দ্বারা বির্চিত হইয়াছে। ইংব্র বিষয়ে মতানত ভ্রিকতে প্রকাশ করা যাইবেক।

"কোকতরজ' নামা তকথানি ক্ষুত্র গুত্তক আমরা প্রাপ্ত এই এছি। ইয়ার বিষয়ে কোন মতা-মন্ত প্রকাশ করা আবশাক বোধ হইতেছে না।

বিজ্ঞাপন

বিবিধ উপালে ব্রাক্ষার্যের প্রতার ও ভারভবর্ষস্থ সমুদার ব্রাক্ষার্যার্যের মধ্যে ঐকা
মাস্কাপন উল্লেখি আগামী ৯৫ কার্তিক রবিবার সন্ত্যা বাদ্ধ অধিকার সমস্ক্রাক্ষার্যার
ব্রাক্ষায়ার দিতী রঙল ব্রুক্ত ব্রাক্ষার্যার
ক্রেটা প্রতিনিধি সভাগ প্রতিতিও ইইবে।
প্রতি শাখা ব্রোক্ষার্যারের স্ক্রাক্ষ্যার

প্রতিনিবেদন মে, তাঁহার। স্মাজ সংক্রান্ত বাসীদিনের স্মতিনভানুসারে কলিকাত।-প্র-বাসী (অথবা নিনালী) কোন ব্রান্তক প্রতিনিধি নিযুক্ত করিয়া সেই সেই প্রতিনিধির নাম নিম স্থাক্ষর কারির নিকট পাঠা-ইয়া দেন, এবং ঐ দিবসে উক্ত সভায় উপ-স্থিত থাকিতে তাঁহাদিগকে উপদেশ প্রদান করেন।

> শ্রী কেশবচন্দ্র সেন। কলিকাতা ব্রাহ্মনমাজের সম্পাদক।

१८३ पाणिन २२४७ नक ।

বিজ্ঞাপন!

আগামী ২৩ সে আখিন শনিবার সন্ধান বাত ঘণীর সমরে ঘোড়ার্মাকেই এতি -হিক ব্রাহ্মসমাজের চতুর্থ সাম্প্রমাক্তি সভা হইবেক।

त्रज्ञ मत्रकारतत्र शार्र्धः व कोकि, ६२ मश्माकः खन्न ।

> ^{ক্র} শ্রন্থাপ্রচাদ **চন্দ্র** ! উপাচার্যা ।

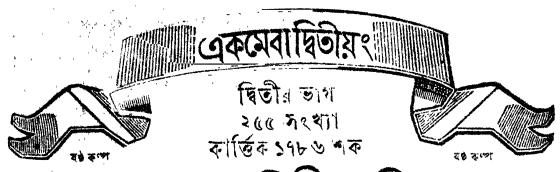
Recently Published.

"THE RELIGIOUS PROSPECTS OF INDIA."
To be lead at the
CALCU TA BRAHMO SOMAJ.

PIPE & ANNAS. BY POST 5 ANNAS.

নিঘ তি পত।

e e e e e e e e e e e e e e e e e e e	পুঠা
विशन्ताल उन्न ल्डाक	د بل 🚛
উপাণনা	્
কনিকাতা ব্রাক্সিমাজের বস্তৃতা 🛴	. F4
দলেশ্বিশ্বনি তেওঁ তেওঁ স্থাপুৰ	. . .
র কভর্ষিনী 🔆 🛶 🔆	W 1885
অনুষ্ঠানের আবেশ্যক্ষা ্ল 👵 🧍 🐍	4, 5, 5, 5, 8
হুতৰ পুস্তৰ প্ৰাপ্তি 🖟 🖟 👵	ac.



তত্রোধিনীপ্রতিকা

ব্রক্ষাএকমিদমগুলাসীয়ান্য কিঞ্নাসীতিদিদং সকান্দ্র তিদেও নিত্য জান্মনতং শিবং ত্তক্ষির্ব্যব্যাক-নেং বিভীয়ং সর্কারাপি সর্কান্যত্ত সর্কালয়সর্কাবিৎসার্কশিক্তিমন্ত্র কম্পূর্বমগুডিমমিতি। এক সংভবিশবেশিপা দন্যা পার ক্রিকটমতিকক শুভয়বভি। ভশ্মিন প্রীতিশ্বস্য প্রিয়ন্ত্রিশাধনক ওচুপান্নমেত।

কলিকাতা-ব্রাক্ষসমাজের বক্তৃতা।

>のではす >96つ ずま!

পাপঞ্চিন্তমতে তৈব এনীতি চ করোতি চ। তদাবির্মো প্রবিষ্টমা গুণানশ্যন্তি দাধবঃ।

যে ব্যক্তি পাপ-চিন্তা করে, পাপানাপ করে, পাপানুষ্ঠান করে, ভাহার সাধু গুণ-मकत नके इश्र। यमन जन्त्र हिप्त भीहें तन ब्देश स्तोका**७ कटन मध इयु; मिन्टे अ**कांत्र यनि গুণ-সন্ধিপাতে একটা দোষকেও পোষণ করা বায়, তবে তাহা মনুবেরর সমুদায় ভাবকেই কলক্ষিত করে। "ইক্রিয়াণাম্ভ সর্বেষাং ক্ষরতীন্ত্রিয়ং। তেনাস্থ্য ক্ষরতি अला पुरकः भावामिरवानकः।" যেমন বালু-কণা পড়িলে তাহা তথন আর উত্তম-ৰূপে দেখিতে পায় না, সেই প্ৰকার অন্তরে পাপ-রেণু প্রবিষ্ট হইলে তাহার জ্ঞান-চক্ষুত্ৰ আৰু পূৰ্ববৰ সম্ভাবকে সন্ধান कडिएक नाद्र मा-छारात (र गकन गापू थन, डांश कट्ड कटड रिनान शाहा थउ-वर वेश्वा कान्याद्वित्तर्म पूना-क्याविटड क्यांकियान वर्गाचरक शहरन , कें। हात्र) त्यन

षानाश कतियात ममरत भाभानाश नः करतन, चतुष्ठीतमद ममत्य भाभाभूष्ठीन ना करतम । এই रहेन निरम्य वाका, आंद्र विधि कि, অনুজ্ঞা কি, না, ইহার যাহা বিপরীত, তাহাই কলাখ-চিত্তা করি-আচরণ করিবেক। বেক, কল্যাণ কথা কৃছিবেক, কল্যাণ-অন্ত-ष्ठांन कतिदवक। यिनि अहे क्रकांत छेलएन-শারুষায়ী কর্ম করেন, তাঁহার সাধু গুণ নিয়তই উদ্দীপ্ত থাকে। পাপ তো এই ভিন প্রকার, পাপ্রচিন্তা, পাপালাপ, পাপানুষ্ঠান। কিন্তু এই ত্রিবিধ পাপের মূল কোপা ু মূল (দই মনেতে—প্রথমে পাপ-চিন্তা উপস্থিত হয়, পরে জিহবা তাংগ ব্যক্ত করে, পরে আচরণে ভাষা প্রকাশ পার যে বাক্তি একাকী নির্জ্জনে মনে মনে পাপ চিন্তা করে, দে একত হইয়াও পাপালাপ পাপামুষ্ঠান করিতে চাহে; অতএব পাপকে মনেতে কদাপি চিন্তা করিবেক না। যেমন भाभ माना जन तिष्ठ स्टेर्स, जमनि छा-হাকে মন হইতে উৎপাটন করিয়া তাহার भूटनोटक्षम कतिरवक। य वाख्यि किवन लाक-उद्य शांभावांश भागावृष्ठीन ना करतः; दम कथन माथू नम् जानादक विश्वाम मारे।

बिड्ड न स्रोत शाहरताहे उरक्रशार म गुए পাপে প্রবৃত্ত হইবে, দে কখনই পাপের খলোভন অভিক্রম করিছে পারিবেন।। পাপের হস্ত চইচে প্রযুক্ত হইতে হইলে অত্যে পাপ-চিন্তাকে বিদূরিত করিতে হয়, মনকে পৰিত্র করিতে হয়। যেমন কোন পুরাতন অট্রালিকাকে অশ্বথ-মূল আবেইন করিলে কেবল তাহার উপরের শাখা পল্লব কর্ত্তন দারা সে গৃহের রক্ষা হয় না ; কিন্তু যে তাহার মূলকে বিনাশ করে, সেই তা-হাকে রক্ষা করে - ভজাপ পাপের মূলকে र्य नके करत, रय गरनत गर्भा शांशरक आ-मिटल ना (मज़, (महे तका शांता यनि কাহারো অন্তরে গাপ-মূল বন্ধ গাকে; আর गणि तम পोश कथा नाउ करह, वांहाक शा-পানুষ্ঠান নাও করে; তথাপি জানা যায় যে মে কেবল কপট বানন্থার করিতেন্ডে, তা-থার রোজের কারণ মন্পূর্ণ রহিয়াছে – যদিও শ্বর এখানো তালার শ্রীরে প্রকাশ পায় गारे, (म जन्जं (त मक्ष इहेटल्ट्स-स পাপ কেবল লোকের ভয়ে তাহার মনের ছুর্বের নধ্যে প্রাথিট চইয়া আছে; যথন टम मिश्रिय एवं जीवात नाहित्तत महोत जल्ल, অমনি দে নিউয়ে ভাছার সকল শরীরকে আক্রমণ করিবে, পাপ-বাাধি ভাছার সকল অপেতে কুটিল উঠিবে। কিন্তু পাপ থা-ংতে এপ্রকার বল প্রকা**ণ করিতে না পারে,** মে জামো কয়াণামণ প্রমেশ্বর **দেখ কত** প্রকার কৌশল নিশাণ করিয়াছের। প্র-थरम (मर्थ भारभत मरक मरक ८कमन এ-কটি ঘূণা, একটি গ্লামি, আদিয়া উপস্থিত হয়। সেই যেএক পাপের প্রতি বুণা, তাহা আমার্রদিগকে কেমন রক্ষা করে। যেমন পাপের ভাব মনে উদয় হয়, আমনি দুগা ও আঅ-প্লানি আলিয়া তা্হাকে দ্বানীকরিয়া करन। य भागा श्रक्तिक शासक, तम

আত্মাতে কি পাপ ক্ষণ কালের জন্যও ডি-ষ্ঠিতে পারে; পাপ উদয় হইবা মাত্র স্থা ও আক্ম প্লানি আসিয়া ভাষাকে দূর করিয়া দের। ধথন মনের ভাব আর কে**হই জা**-নিতেছে না, কেবল এক ঈশ্বরই জানিতে-ছেন ; সেই সময়ে যাদ ঘৃণা ও আত্ম-শ্লানি আদিয়া পাপকে পরাস্ত করিতে গারে; তবে আমারদের পরম সৌভাগ্য। কিন্ত যদি দেই মৃণা-দেতুকে পাপ-প্লাবন আ-দিয়া প্রবল বেলে অতিক্রম করে, ভবে তাল ভালকে লজ্মন না করিতে করিতেই আর এক সেভু আদিয়া তাহাকে রোধ করে নেই সেতুটি লজ্জা-সেতু। যথন ৄগার উ-পরে আর নির্ভর না রহিল, প্রথম দেভু য-খন ভগ্ হইয়া গেল, তখন শেই দিভীয় দেতু লজ্জা আদিয়া উপস্থিত হয়—তথন নে আত্মীয় পরিবার গুরু-জনের লজ্জাতে প্রকাশ্যরূপে আর পাণ্টরণ করিছে পারে না। দেখ ঘূণা অভিক্রেম করিয়াও দে ল জ্ঞার শাদনে পাপ হইতে নিবারিত এইল। কিন্তু পাপের উচ্ছাদ যদি এত অধিক হয় त्य तम এ ছ दशत चात कि छू रे मातन नी, तम উদ্ধান্ত ভাবে হৃদয়ের কবাট ভেদ করিয়া। শরীরময় ব্যাপ্ত হয়, ও মনের **আর আ**র দকল র্ভিকে বৃশীভূত **করি**য়া কেলে; ড-খন সে পাপাক্রান্ত মনুব্য উন্মাদগ্রন্ত হয়। ষখন পাপত্রোত উচ্চ্বৃসিত হইয়া ঘূণা লক্ষা উভয় সেতুকেই ভয় করিল, তথন অবশিষ্ট কি রহিল, না ভয়সেতু। পাছে গুরু লোকেরা প্রহার করে, বিষয় হইতে ব্ঞিত করে; পাছে শান্তি-রক্তকরা দও प्तत्र, कार्त्रागादत वक्त तार्थ- अहे **ध्वका**त চিন্তা আসিয়া সেই পাপাত্মার পাপ গতিকে वाधा मिनात छेशात (मटब) । हेशांदक बी-थन तम व्यक्तिक कटत, उध्य तम त्रीन-পুরুষদিমের হত্তে পতিত হয়, উপাবৃক্ত

দভোপভোগ করে। সে লোকের ছার। পরিতাক্ত হয়, গুরু জন কর্তৃক অবমানিত হয়। স্ণালজ্জা ভয় এই তিবিধ লৌহ দেতুই যথন ভগ্ন হইয়া গেল, তথন কি সেই ঘোর পাপীর পরিতাণের জন্য আর किছूरे छेशांत तरिन ना ? यथन मकन লোকৈর ঘূণা-দৃষ্টি তাহার উপর পড়ে, যথন পরিবারেরা ভাষাকে গৃহ হইতে দূর করিয়া দেয়, যখন রাজ পুরুষেরা তাহাকে দও বিধান করে; তথন ঈশ্বরও কি ভাগেকে পরিভাগি করেন ? তথন ভাহার কি কেইই পরিতাতা থাকে না? যথন সকল সেতুই পাপের নিকট পরাস্ত হইল, তথন দেই পাপীর পরিত্রাণের নিমিত্ত স্বরং ঈশ্বর গিয়া উপস্থিত হন। যথন আর আর সকলেই তাহাকে হেয়ৰূপে পরিত্যাগ করে, যথন ভার নাম মাত্র জ্রুত হুইলেও মনেতে ঘুণার फेमस इस; उथन এकमाज ঈश्वत्रे ठाहात সহায় পাকেন। যথন আর আর সকর মেতুই ভয় হইয়া গেল, তথন তিনি নিজে প্রম দেতু ৰূপে সেই ঘোর পাপার নিকটে অবতীর্ণ হন। পাপের কি কখন এ প্রকার প্রবল উচ্চুান হইতে পারে যে দেই পরম সেতুকেও উল্লন্সন করে? এ প্রকার কথ-**নই হইতে পারে ন। ''সদেতু**র্বিধৃতিরেষাং লোকনামসন্তেদায় "। তিনি লোক-ভঙ্গ নিবারণার্থে সেতু-স্বরূপ হইয়া এই সমুদয় ধারণ করিতেছেন। তিনি তাঁংধার রুক্ত মূর্তি অকাশ করেন, ভয় দেখান এবং সাস্ত্রা করেন। এই থকারে কত কত ঘোর পাপীরাও পাপ হইতে পরিতাণ পাইয়া শননের উপর জয় লাভ করিয়াছে, ঈশ্ব-रतत स्नीवन जानिकन आख क्रेसार्छ, মু**জির গৃহে প্রবেশ** করিয়াছে। কিন্ত খা-मोबद्देश यान अक वात्र डाहात रूप मूर्जि मिथिटक मा इस्ता महम क्रिया दक कात्र

পিতার নিকট হইতে তিরস্কার থাইতে অতিলান করে। অতএব আমরা যেন কথনই ভাঁহার আজ্ঞা অবহেলা না করি, আমরা
যেন পাপ চিস্তাকে মনে কথনই আদিতে
না দিই; কিয়া যথনি তাহা মনে উদয় হয়,
তৎক্ষণাৎ তাহাকে উৎপাটন করিয়া কেলি।
আমারদের পাপের জনা ফুণা যেন নিয়তই
থাকে, লক্ষা দেন নিয়তই থাকে, ভয় বেন
নিয়তই থাকে এবং সকল হইতে পরম সেতু
যে তিনি, তাহাব পাবত্র দৃষ্টি দেখিয়া যেন
পাপ হইতে সক্ষদাই বিরত থাকি।

হে পরমান্মন্! আনি ব্যন্ভোমার মঞ্জ-মূর্তি প্রত্যক্ষ করি, তগন শ্রীর মনউত্ত खिठ इय, वाका-मकल आफ्र हहेश भट्छ। যগন এখানে উপবেশন করিয়া পরলোকের বিষয় ব্যক্ত করিতাম, তথনো তাহার মধ্যে তোমার করুণাই দেখিতাম। আবার এখন যথন তোমার নিয়মিত ধর্ম-দাধন বিষয়েরও আলোচনা করিতেচি, তথনো ভোমারই করুণা প্রত্যক্ষ করিতেছি। তোমার সন্মুথে যা কিছু আলোচনা করি, ভাহাতে ভোমা-রই করুণ। দেখি। বলিতে যাই অমুঠান, মনে হর তোমার করুণা। গগন পাপী-দিনের উপর তোমার ধর্ম-দডের কথা ক-হিতে যাই, নে সময়েও ভোমার করুণার ভাব থকাশ পায়। হে পরমাত্মন্। তুমি আমার্দিগকে পাপ হইতে নিজ্তি দাও; আমারদের রক্ষার নিমিত্ত তুমি যে সকল দেতু নির্মাণ করিয়াছ, তাহা যেন আমরা কদাচ উল্লঙ্গন না করি। আমরা যেন পাপ-চিম্তা না করি, পাপ-কথা না কহি, পাপান্ত-ন না করি--পাপের সহিত সংস্পর্ম যেন সম্পর্ণ রূপে পরিত্যাগ করি,নিম্পাপ নির্মাল-চিত্ত ও তোমার সভাতে নিঃসংশয় হইয়া বেন ভোমার উপাদনাতেই নিযুক্ত থাকি।

ওঁ একমেবা বিভীয়ং

নিবাধই চতুর্দ্দশ সাম্বৎসরিক ব্রাহ্মসমাজের বক্তৃতা।

२৮ आधिम ১१৮७ भक।

যাঁছাকে লাইরা আমাদিগের অদ্যকার এই মহোৎসব, আজি কি আমরা উহোর অপার প্রেম্যাগরে নিম্ম হইবা সমুদ্র ক্ৰ্দয় মন শীতল করেব না ? অসীম আক্রাশ ষাঁছাকে অবলয়ন করিয়া আছে, অনন্ত কাল মাহার জোড়ে জীড়া করিতেছে, তিনি আমাদিগের ক্ষুদ্র আক্ষাত্তেও পূর্ণকণে বি-রাজ করিতেছেন ; আমরং কে তাঁচার শুরু-ভাব অনুভব কারত না ? আজি উছেকে হৃদর্শারা স্পর্শ করব, ভাঁলার অনৃত গানন্দ-तम पाकटाथीरत शाम कहित এह अनाहे তিনি আমাদিশকে সমিলিত করেরছেন। ডিনি আমাদের খন্তরে কুধার মঞার করি-তেছেন, আমরা বহু চাহিতেছি, তিনি নুজ-श्रास के के हैं के होता अप अवाहित क्रिक्ट-্ছন। আসাদের জীবন কি প্রিক্ত স্থ্রাময় হইতেছে। দেই পূর্ণ পরিভাক মহান্পু-রুষকে প্রত্যক্ষ করিয়া আজি হৃদয়ের দাঃ সকল কেমন উন্মৃত্ত ছইতেছে—শ্ৰদ্ধা, ভক্তি, প্রীতি, ক্রতজ্ঞতা আপনা হইতে তাঁহাকে हरेट्ट ह **ভালিকন ক**রিতে উচ্চ্ দিত थना अभिने भा ধনা তোমার মহিমা ! ধন্য তোমার করুণা। তুমি ধৃলিধ্ধরিত মলিন কীটদিগকে এৰপ বিমলানদে ক্লডাৰ্থ ক-রিতেছ।

আহা। এই পবিত্র ব্রন্ধানন্দের আশ্বাদ প্রিবীর আর কোন জীবই পায় না—মন্ত্র-নাই ইহার অধিকারী। কিন্তু কি আশ্বর্যা। আমরা কত সময় ইতর ইন্দ্রিয় স্থবে প্রশ্নুষ্

শইয়া পশুদিশের পশ্চাদ্বর্তী হইতেছি।
নামৰ জন্ম বিকল করিডেছি। সংনারের অনিত্য স্থানকা কি আশ্বাকেতৃত্ত করিছে পারে? তাহাতে পশু প্রকৃতি চরিতার হর,
কিন্তু আত্মার গাড়ীর কুমার শান্তি হর না।
এই জন্মই পূর্বে কালের কুক্মদর্শী ধৃত্ত্রত
খ্যিগণ বিরল অরণ্যে গিরা জীবন পাত করিতেন। তাহারা সেখানে আত্মার তৃথিকর দেই সতাং জ্যানমনন্তং ব্রক্ষকে লাভ
করিয়া নিতাানন্দে মহা থাকিতেন, আর
কিছুরই প্রার্থনা করিতেন না।

যিনি একমাত্র দকল স্থাংথর নিকেতন এবং বাঁহার সহিত আমাদিলের চিরসম্বন, তীকা হইতে যাত দিন আনিরা কিছিল থাকি ভত দিনই আমাদিগের মৃত্যু-তিহিকৈ পা-हेटल हे अगृह इ का छ रहा। द्वाचानम् व्यापा-मिश्रातक এই मामाद्र शाकिश्रारे सिन्हे सिन्हा সম্পদ্ লাভের পথ প্রদর্শন করিয়াছেন। मनुद्यात ऋष्टश त्य अत्यात वीका निकित्र ছিল, ভাষা এত দিন স্কারা ৰূপে বার্ষিত হইয়া অমৃতায়মান ফল-নকল প্রদান করিতে পারে নাই। মানব জাতির উন্নতির সংখ্ मत्य राष्ट्रे रीम चन्नुतिष्ठ स्हेशा विविध শাথা প্রণাথা বিনির্গত করিয়াছে, কিন্তু তাল কুত্রিন পাত্রে স্থাপিত এবং কম্পিত আবরণে নিরুদ্ধ হইয়া আপনার প্রভাব প্রকাশ করিভে পারে নাই। ব্রাহ্মধর্ম্ম সে সকল বাগা কপ্পনা দুরীভূত করিয়া স্থ-শন্ত মানগদেত ইহার ভিত্তিভূমি এবং অবারিত অনমূ আকাশ ইহার উন্নতির আর-তন করিয়াছেন। এখন ধর্ম **আর স্থান**-বিশেষ, কলেবিশেষ, ব্যক্তিবিশেষ, ক্ৰাভি-वित्मव ना भूजकवित्मदय यस नारे। त्मरे मका सुन्तर भक्त चन्त्र श्रदमाहार विक মাত্র আদর্শ করিয়া আত্ম উহিরি পথে ক্ৰেমণ অগ্ৰসর হইয়া মুক্তি ও শবিত অনিক্ लां क विदय । जाबारमत विवकीयन क्ये Cबात शरब अक्**कार्टन व्यक्तिक एडेर**ना सा वात स्थापन स्थापन क्या मार्थ म

স্থানন হইয়া পালে পড়িব; কিন্তু নেই প্রিত্তপারনকৈ আত্রয় করিলে তিনি আবার আমাদিগকে উদ্ধার করিয়া তাঁহার পথে চলিতে বলীয়ান করিবেন। তাঁহাকে প্রতিকরিয়া এবং তাঁহার প্রির কার্য্য সাধন করিয়া যত চলিতে পারিব, ততই আমাদিশের চিরক্র্যাণ লাভ হইবে।

ব্রাহ্মধর্মা স্বর্গের জ্যোতি মর্ত্তা লোকে আনয়ন করিয়াছেন—দেবভোগ্য অমূতে मसूरमात्र आंद्रांटक जिंह छे अविष्ठं करि-टिट्ट्स । आमता এই গঢ় मश्मात शक्-কারের মধ্যে যে এ ৰূপ ধর্মজ্যোতি লাভ করিয়াছি ইছা আমাদিগের সামান্য সৌ-ভাগোর বিষয় নয়। কিন্তু এই জ্যোতিতে কি আমাদিলের সমুদার জীবন জ্যোতি-श्रांत इहेटवक नः ? यथन (मडे खण व्यागी-দিবের একমাত্র লক্ষা, তাহাতেই আমা-দিগের নিভোৎসব,তথন আমরা কি সমুপায় জীবন তাঁহার দেবায় অপণ করিব নাঁ? আমরা শরীর মন, পন জান সকলই যেনন তাঁহার নিকট হইতে পাইলাছি—সকলই অদক্ষ্টিত্টিতে তাঁহাকে প্রতার্পণ করিব ইহাতে আর আপতি কি? তাঁহার থ-দত্ত শক্তিতে তাঁহার কার্যা করিব ইগতে আর বাধা কি? কিন্ত কেমন দারুণ আ-মানিগের মোহ! আমরা আপনানিগকে चन्नुख, এই कीवनक निठा এवर मार्गाविक धन मान सूथ मन्भिक्टिक मर्दाय मदन करिं। किन्ठ এक मृत्रा यागिया व्यागीनरगत लास्डि कि गर्रामः। व्यातनं कतारेशः। मिट उटह ना ? ষ্মানাদিলের নাার কত লোক এই মর্ত্তা **नारक नीमा क**िशां ছिन, करु धन अश्वर्यात ষ্পীষর ছিল। কিন্তু কোধার তাহারা, णांत रकानात्र जास्तिन्दगत এই পार्थिन भविकात-मुक्रम । जामानिरशत विवसामा ७ विषयभक्त मिश्रिया मुन्ना वितरण क्षिय कति-

তেছে। বস্তু : যাহা আন্থার সহগামী ছইবে না, ভাহাকে আপনার সর্বস্থ ননে করা কি উপহাসজনক নয় ?

বিষয়ে আত্মার লাভ নাই কিন্তু বিল-ফণ ফতি! একত ত(ছাতে জীবন এবং সমুদায় শাঁক িরর্থক নউ হইতেছে;-আবার তাহার উপর পাপ সঞ্জন। স্বার্থ-পরতায়ত প্রবল হইতেছে, তত্ই হৃদ্য় কুটিল হইতেতে, আবার কভ কটেট তা-ছাকে সরল করিতে হইবে। পশুপ্রবৃত্তি-সকল যতই চরিতার্থ কইতেছে, আয়ো ড-তই মলিন হইতেছে— গাবার তাল সমূহ यद्व धकांत्रन कवित्व इवेत्तः, विषय-धः লোভনে গভাই মনকে আকৃষ্ট করিছেছে ভত্ত সামার স্বাধীনতা বিন্ট হটতেছে, ভাহা উদ্ধার কর। সামান্য সংগ্রামের কার্য্য নয়। এই মকনত আন্তরিক অপাকার: এতদ্ভিন্ন বাহ্যিক অনিউ রাশি রাশি আছে। যাহাকে সুথ বলিয়া গ্রহণ করিতে যাই, তাহাই হয়ত তুঃখৰূপে পরিণ্ড হয়, নে খানে পুরস্কারের আশা করি, দেইখানেই হয়ত ভিরস্কার লাভ হয়। এই ৰূপ একে আন্তরে অবিমানিৰূপ ছঃসহ নরক ভোগ, তাহার উপর চারি দিকে বিমান ও নিরাশা: मःगांदी लांदक এই बदल পार्ट जारन শোকে মোহে জর্জরত হইয়া অবশেষে व्यक्तिय यञ्जनाय पक्ष इय ।

যাঁহারা সাংশারিক জীবনকে বলিদান
দিয়া ধর্মজীবন লাভ করিয়াছেন, ভাঁহারা
সংসারের সমুদার ভয়, তাপ, ও নোহ শোক
হইতে মুক্ত হইয়াছেন। তাঁহাদের নেত্রে
সংসার এক অভিনব মধুর বেশ ধারণ করে।
তাঁহারা সম্বত্রই সেই পরম পিভার ক্রোড়
প্রসারিত দেখেন, সকল জগৎ তাঁহার প্রেমে
অনুর্গ্রিত দেখেন, এবং সকল ঘটনার তাঁহার মঙ্গলস্ক্র সঞ্চারিত দেখিতে পান। তাঁ-

হারা অনুতর্ম পান করিতেছেন, 'বিপদ রাশি ছুংথ দারিছে" কিছুই করিতে পারে मा २ इहाई छ। हा फिटलंब तल, छ। की किएलंब আশা ও উৎসাহ, এবং চির কালের উপ-कीवा। भरकान, देवर्या, ভিভিক্ষা छ। थे-भित्तित व्यक्तिय मध्यी रहा। এই मकत्त ४-র্মান্ত্রের সংসারের মহিত—পাপের সহিত चात्रज्त मः भाग करत्न; व्यक्तिके रूपत्र मकन ठाएमा राजना गरा करतमः, मृङ्गारक ७ আনন্দের সহিত আলিঙ্গন করেন, তথাপি লশ্বরে মহিমাকে মগীয়ান করিতে—ভাঁ-হার জয়পভাকাকে উড্ডীয়ম ন করিতে নি-एखक इर्ह्सन ना। "मिलारमन क्रयरण ना-নৃতং ' 'আনন্ধ ব্ৰহ্মণা বিদ্যান নবিভেতি कुड " । (स्वाहर नाभूडा गाए किमहर ভেন কুর্যাংং" এই সকল মহাব্যকা ভাঁছা-कित्यंत्र क्रिक्टिक भनीताई बिब्धक इस्। भ्याम चारम ठीत कारक मिनाइब (य थान, ছাড়ি যাব অনায়ানে তাঁতো করিব দান' कहें हैं। ५८अव व्यांट छ्या । ''६न मान हाहि না তোমা হতে, দেও এই আবিকার, নিয়ত নিয়ত যেন সত্তর আনুচর থাকি তেমি।রে এই डीइएफिरशत अधिना। योशता क्य নংলারের দাস, তাঁহারাই ধর্মা রক্ষা অসাধ্য মনে করেন, কিন্তু এরূপ ব্যক্তিরা তাহা অ-माश्राममाना (पश्चिट्ड शान) এই मार्यू-ब्रोके प्रवासा हेर्स हारहे एक **कीवटनरे मू**-ক্তির দোপানে আরোগণ করিয়াছেন—অ-ब इ लाटक है। इंपिएवर कमा ' योगामम, अप्रानम ७ जकानतम्त्र देश्य छेश्यातिष् র হলতে ।

হে সংসারপাশবন্ধ নত্বাগণ তোমরা হস্তকাটের নাার আর কর কাল আপেনাদের কণ্পনা-স্তার আপনার। জড়িত থাকিবে? অনও আকাশে থাগীন রপে বিহার করিন্ বার জনা যে স্বর্মীর পক্ষে ভূমিত হ্ইয়াই; ভাহা কি এক বারও সঞ্চালন করিবে না? এই মৃত্যুর পাশে বত দিন আবন্ধ থাকিবে. তত দিন হাজার বিষয় বিভব, মান ঐশ্বয়া गःश्वरं कर गक्तरं शख्यम- गक्तरं व नवियाप्तत्र कावन क्रेंदा। किन्छ अक बांत्र এ বন্ধন কাটিতে পারিলে আনন্দমর লোকে বিচরণ করিবে, প্রভেক্ত নিঃশ্বালে অস্তর हरेट मभूमात मृधिक ভाব বিদূরিত करें दे, अदः क्षत्र निमन हिल्लाटन भूने हहेटन, छ-খন সমূদায় আত্মা আনন্দক্তোতে ভাসমান হইতে থাকিবে. ড্ঞান উজ্জুল হইয়া সেই মতা স্বৰূপকে ধারণ করিবেক, প্রীতি প্রশস্ত হইয়া ভাঁহার মঙ্গল ভাবের অমুকরণ করি-टिक, এবং ইচ্ছা পবিত্র ও সবল হইয়। মৃ-ক্তভাবে তাঁহারই মঙ্গণ ইচ্ছা সম্পন্ন করিছে थांक्रित्वक;— তथन डाङोत महिल ममुनीय বিমল কামনা উপভোগ করিতে পারিবে; সংসার পবিত্র ধর্মক্ষেত্র এবং আননদ্ধাম হইবেক।

मिहे जगदिशिकांत व्यमारिम कहे चाछा। নান্ধ পাণ-প্রপীড়িত বন্ধ দেশে পবিত্র আক্ষধর্মের প্রভা দিন দিন বিকীণ হই-তেছে। যেখানে ইহার আনিভাব হই-তেছে, मिरे अभिविज जीवमकन ম্বতে মুক্ত হইয়া পবিত্র মঙ্গলে ভাবে পূর্ব হইতেছে। গৌভাগাক্রমে চতুর্দ্দশ বর্ষ প-র্যান্ত এই নিবাধই আমে যে ইহাঁর শীভল ছায়া প্রাপ্ত হ্ইয়াছেন, ভজনা সকলে সেই क्कनामग्रदक धनावाम माछ । हेर्हाहरू व নাদে মপ্তাহে সপ্তাহে যে কতিপার আত্মা কিয়ৎ কালের জন্যও সংসারশাশ হইতে মৃক্ত হইয়া ঈশ্বরের আনন্দর্য পান করি-বার জনা এখানে একতিত হন, ইহাও স্থাপ পরিতোবের বিষয় নয় কিন্ত তালাংগের বেৰপ অভাব ভাহাতে এত ব্যাপক কালে कि हेरा मदनका मधिक कर्त नारका क

ভাগা করা যায় না ? এখানে প্রাক্ষ নিবের কেন এত অভাব দেখা যায় ? ধর্ম কি কে-বল বাক্যেতে বন্ধ থাকিবেক, না ক্ষণকা-লের চিন্তাতেই পর্যাবগিত হইবেক ? ই-হাতে কি আমাদিপের হৃদয় অগ্নিয়য়, আত্মা উত্তেজিত এবং সমুদায় অল প্রতাল প্র-সারিত হইবেক না ? ইচাতে কি দেশের সর্ব্ব প্রকার অকল্যাণ বিশ্বংস এবং মঙ্গল উংপায় ক্রিবেক না ? আমরা যদি সেই সংসাবেরই উপাসক রহিলাম, যদি প্রতি নিমিষে প্রতি মুহুর্তে প্রতি কার্যো ঈশ্বরের মহিমা অধিকতর ব্রপে প্রতার ক্রিতে না

অবলয়ন করিবার গৌরব কি?।

 পরমালন্। তোমার অনুথ্রে অদা त्य व्यामती अहे भटकः (समनदक्करक व्यामिशा আগার অপার আনন্দ লাভ করিলান, ত-ব্দুন্য তোমাতে একান্ত হৃদয়ে বার বার থা-ণিপাত করি। তুমিত দকলই দেখিতেছ, সকলেরই প্রতি তোমার থেমদৃটি বিস্তা-রিত রাখিয়াছ, আমাদিগকে তোমার প্রতি আকর্ষণ কর। তোমার এই ছুর্বল সন্তা-নলণকে তোমার বল প্রদান কর, আমরা সম্পূর্ণ রূপে তোমার আশ্রয় গ্রহণ করি। এ কাল পর্যান্ত তোমার কার্য্যে আমাদিলের যে অসংখ্য ভ্রম প্রমাদ ও অপরাধ হইয়াছে ভালা মার্জন। কর; যেন পর বৎনর অধি-কতর উৎসাহ ও আনন্দের সহিত তোমার মহদ্যশ গাম করিতে পারি। এই এামের আবাল রুদ্ধ বনিতা সকলেরই হৃদরে ভৌ-মার সভা আবিষ্ট ছউক, ইহার পরিবার স-কল ভোমার প্রিয় পরিবার হটক এবং এ-বানকার জাতা ভগিনীগণ, শুসকল বাজান-खनीत गरिक अक्षित रहेता कामात मनन ভবি প্রচার। क्यून। नोथ। व्यम्।कात्र य-व्याप्त विक अमारे भाग ना रह, किन्छ व

অমৃতভোজে আমরা বলিষ্ঠ হইলাম. তাহাতে মামাদিগের প্রভোকের জীবন যেন
তোমার সহিত দৃঢ় সহস্ধ নিবন্ধ করিতে সমর্থ হয়। তাহা হইলে প্রতিদেন আমাদিগের মহোসবের দিন হইবে এবং নিতা
কাল আনন্দন্য হইবে।

ওঁ শাখিঃ শাবিঃ শাকিঃ হরিঃ ওঁ।

রাজ-তরঞ্জিনী।

২৫৪ সংখ্যা পত্রিকার ৯৪ পৃঠাব পর।

জ্যাপীছের পুত্র ললিতাপীড় রাদ্যাভি-विक इडेशा (कवल नीं) ए धगर मश्मर्श এবং অতি কুখানিত আনোদে প্রাকৃত্ত চইয়া কালাভিপাত করিতে লাগিলেন। ভাঁছার পিতার সঞ্চিত রাজভাগুরেস্থ ধনরাশি তিনি স্বীয় পারিষদ ও ভোগা। রমণীগণের মধ্যে মুক্ত হল্তে বিভরণ করিতে লাগিলেন, প্রাচীন রাজকর্মচারিগণ তাঁহার কুচরিত দেখিয়া ক্রমে ভাঁহাকে পরিভাগি করিয়া যাইতে লাগিল, কিন্তু এই চুরাচারী নরপতির রাজত্ব অধিক কাল স্থায়ী হয় নাই; তিনি দ্বাদশ বৎসর রাজ্য ভোগ করিয়াই লোকান্ডরিত হইলেন। তাহার পাঃ তাঁহার ভাতা সংগ্রামাপীড় রাজ: হইয়াছিলেন, ইাহার রাজত্ব সাত বৎদর ছিল.পরে চিপাতজয় নামক ললিভাপীড়ের এক জারজ পুত্র রাজ্যাভিষিক্ত হইলেন। এই নরপতি স্বত্পবয়ক ছিলেন, এই নিমিত্ত তাঁখার পাঁচ মাতুল মিলিত চইয়া রাজকার্যোর ভার গ্রহণ করিল। বাস্ত্রিক তাহারাই আপনাদিবের নধ্যে সনুদায় রাজা বিভাগ করিয়া লইয়া সম্পূর্ণ র**পে আধি**-পত্য করিতে লাগিল। পরে চিপা**তজয়** বয়ংপ্রাপ্ত হইয়া সীয় হত্তে রাজ্য ভার লই-বার মান্য প্রকাশ করিলে, তাঁহার মাতুলগণ পরামর্শ করিয়া গোপনে ভাঁছার আণ বধ করিল, এবং তৎপরিবর্ত্তে ত্রিভুবনাপীড় না

মক ললিভাপীড়ের একটি পৌত্রকে সিংহা-मत्त आपन कतिल, ७ भूसीवर ममछ ताल-কার্যা আপনারাই নির্বাহ করিতে লাগিল। এই প্রকারে তাহারা নির্বিবাদে ও অভিশয় পর্বক্রমের সাহত ৩৬ বৎদর ব্যাপিয়া ত্রিভু-বনাপীড়ের নামে রাজা করিয়াছিল। ভাষা**দের প্রস্পারের ম**ংখ্য **ই ঈর্ষা ও দ্বেদভা**ব উৎপন্ন হইয়া উঠিল, এবং পরস্পরে যুদ্ধ ্থারস্ত করিল,তাহাতে এক জন নিহত হই লে অপর চারি ভাত। পুনরায় শিলত হুইয়া ত্রিভুবনাপীড়কে রাজ্যচাত করিয়া ইচ্ছামত রাজবংশীয় অপর এক ব্যক্তিকে সিংহাস-নাভিষিক্ত করিল। এবং তদবধি ভাহারা অনেক কাল পর্যান্ত এক একটি কার্ছের পুত্তলিকা স্বৰূপ নাম মাত্ৰ বাজাকে সিংহা-সনে বসাইয়া নিবিবেরাধে রাজত্ব করিয়াছিল। এই চারি ভাঙার মৃত্যু হইলে পর,ভাগদের रासूहत्रान এकव रहेश। र्हारान्त्र मरना छेर-পল নামক এক ভ্রাভার পৌত্র অবস্থিবর্মাকে ब्राब्दनम व्यनांच क्रिनः अहे बार्टन करकीं बस्भ तांका हा छ इहेल।

অবন্ধিনর্দানি হোসনত্ত হইলে অনেকেই
শক্র হইয়া তাঁহার প্রতিকূলে অন্ত ধারণ
করিল, তাঁহার আপন আত্গণও ঈর্যাপরবশ হইয়া তাঁহাকে রাজাচাত করিবার চেন্টা
হ রিচে লাগিল। কিন্তু ভিনি স্বয়ং বিক্রমশালী ও অভিশয় বৃদ্ধিমান ছিলেন, এবং
তাঁহার মর নামক অভি বিচক্ষণ মন্ত্রীও
তাঁহার মহায়তা করিয়া উভয়ে বলে ও কৌশলে অপ্পকাল মধ্যে শক্রা দমন করিলেন।
শরে রাজা স্তর্বর্দা নামক এক আতাকে
যুবরাজ করিয়া তুই জনে মিলিত হইয়া কুশলে রাজ্য শাসন করিছে লাগিলেন। মৃপ্রি ও যুবরাজ উভরেই আপনাদিলের
উদার ভাব ও বদান্তাগুণে অঞ্চাগণের অভিশার প্রাতিভাজন হইয়াছিলেন। ভাঁহারণ

वाकाणिशस्य अपूर्व वार्थ मान कहिरकम अवश স্থানে স্থানে দেবমন্দির অস্তুত করিয়াছি-लात। जाशत, जूशकित छेरद्वक मृक्कोरखत অনুগামী হইয়া রাজ্যন্ত্রীও বছৰির সভার খারা বিখাতি হইয়াছিলেদ,ভিনি শ্বয়ং শ্বর-পুর নামক এক নগর স্থাপন করিয়াছিকোন, এবং স্থারেশ্বরীক্ষেত্রে এক শিবমন্দির ও অতিথিশালা নিশ্মাণ করিয়া দিয়া ছিলেন। অপর,তিনি পণ্ডিত ও অধ্যাপকগণের শ্রতি-পাগন, ও শাস্ত্রালোচনার প্রতি বিশেষ উৎ-সাহ প্রদান করিতেন। এই সমরে যে স-কল পণ্ডিত কাশ্মীরে ছিলেন তাঁহাদের मद्दा मूक्क काल, भिवश्वामी, श्लानन्दर्श्वन, त-ত্নাকর এবং রামজ এই কয়েক ব্যক্তির নাম ইচিহাদে খ্যাত আছে। অবজিবর্মার শাসনাখীন প্রকাগণ কুশলে ও স্বচ্ছাচিত্তে বাস করিতেছিল, কিন্তু তুর্ভাগ্যক্রমে কোন নৈসর্গিক কারণ বশত বিভক্তা নদী উদ্বে-इडेश काशीरत कनभावन इहेन, भगा (कञ्च मकल नक्षे इहेशा (भन এবং छो-হাতে ভয়ানক তুর্ভিক্ষ উপস্থিত হইল। এই ৰূপে বারয়ার জলপ্লাবন দারা কিছু কাল শলোগৎপাদন একে বাব্লে নিবারিত হইল। প্রজা সকল অন্নভোবে প্রাণ্ড্যাগ করিছে লাগিল এবং গোধুনাদি শ্লোর এইকার ছ-র্মাল্য হইয়া ছিল যে এক আড়ক পরিমিত मगा गरुख भौनाह(>) काता की उ स्रेटिक ना-গিল। ভূপতি এই বিপদ্ হইতে উজাতরস্থ কোন উপায় চিন্তা করিতে না পারিয়া হড়া-শ্বাস হইয়াছিলেন। পরে **স্ক্রা নামক এক** জন দামান্য বাক্তি ভাঁহার সমিধানে আ-দিরা কহিল যে মহারাজ, অনুমতি হুইতে यामि এই प्रक्रिक, छन्नमारमंत्र छन्। इति করিতে পারি। রাজা ভাষার **কথা**ছ নি-

⁽⁾⁾ शेनात ।—नुर्व बात्तत क्षत्रतिक सूत्रो, व बात द्वीप स्थ रेश कांत्र सूत्री रहेंदरक।

শ্বাস করিয়া ভাষার অভি এই ছবহ কার্যোর ভারার্পণ ইরিলেন। সুজ্ঞারাজ ভাণ্ডার হইতে অচুৱাৰ লইয়া এক নৌকা করিয়া চলিলেন এবং জলপ্লাবন হেতু গে যে স্থানে গভীর জল জমিয়াছিল তথার তিনি এক এক মুদ্রা পরিপূর্ণ কুয় নিকেপ করিছে লাগিলেন, ভাহাতে লোক সকল সেই মূত্রা পাইবার জনা বাঙ इड्या ननीत मिटक প্রস্তরের ছারা বাঁধ প্রস্তুত করিয়া জল নি-প্রন করিতে লাগিল, তাহতে ক্রমে ক্রমে ক্লিপ্লাবিত ভূমিও কেত্ৰ সকল জল প্ৰাও শুক্ত হইরা আদিল। পরে পুনরায় নদী উচ্ছু-দিত হুইয়া জলগাবন না হুইতে পারে তা-ात क्रमा मिट्रे सूरकोशनकाती वर्गाङ काण्योत मध्य तृहर बृहर श्रील काणिया पि-লেন এবং বিভস্তার ভীরে উচ্চ নাঁপ নির্মাণ এই गकल डेशारा ক বিলেন। পূর্বাদেশক। অধিকতর উবরো হইরা প্রচুর শ্স্য উৎপাদন করিতে লাগিল। রাজা গ্রহজার প্রতি পরম সম্বন্ধী স্ট্রা ভাষ্ট্রে বছবিধ পুৰস্কার অদান করিলেন এবং ড:-হার কীর্ত্তি স্মরণার্থ বিহস্তার তীরবর্তি স্বজ্ঞা-পুর নামক এক নগর স্থাপিত করিলেন। এই ঘটনার কিছু কাল পরে রাজার মৃত্যু হইল, ও তাঁহার পুত্র শঙ্করবর্মা সিংফাদনস্থ হইলেন। ইহাতে অসম্ভব্ত হইয়া কতিপয় অধান কর্মচারী রাজবংশীর অপর এক वाक्तिदक तोषां कतिन, अवर मकतवर्मादक পদচ্যত করিবার নিমিম্ব অস্ত্রধারণ করিল। কিন্তু পরিশেকে ভাহার৷ পরাঞ্চিত হইরা প্রায়ন করিতে বাধ্য হইয়াছিল। শক্ষরশ্রী আপন রাজ্যে শান্তি সংস্থাপন केतिया पिथिकतः कित्रिष्ठ अर्थ हरेटनम । ভাষাতে অপর স্তই তিন রাজাও ভাষার সহিত নাৰ্দ্দিলত হইলেন এবং তিনি চারি नक अगोजिक वक नक अगोद्याकी

ও ভিন শত হস্তী সমভিব্যাহারে লইয়। কা-শ্বীর হইতে বহিগমন করিলেন ৷

जुशकि अथरम रेज्यार्डताम शृथिवीवस-কে(२) পরাভূত করিলেন। পরে গুজ্জরাবিপ-ভিররাজো অবেশ করিয়া যুদ্ধে তাঁহার সমস্ত সৈন। নিহ্ত করিলেন, এবং ভাষাকে একটি ক্ষুদ্র দেশ প্রদান করিব। তার্ছার মুখন্ত ব্যক্ত। । अ इक्ष्म छ। अप्रकात कि इस् न है र सम । পরে শঙ্রবর্ম। ভারত-বিখ্যাত মহাধ্রত।-পশালী ভোজনাজের দর্প চুব করিয়া প-**শিচমে গমন করিলেন। তথার বলদন্ত দর**ং ও তুরক্ষরাজ্য গণের (২, নিক্ট কর গ্রন্থ कतियां श्राटका क्षडांग्रंघ व्हेटलगा 🕒 🤡 -পরে স্থনামে এক নগ্য স্থাপন করিলেন। শক্রবর্মা অভিশয় ধনলো হা ছিলেন, এবং वक्रविध উপায়ে প্রজাগণকে निष्णीएन क-রিয়া ভাহাদিগের অর্থ শোষণ করিচেল। তিনি প্রচলিত রাজস্ব ও শুল্ক গুরুতর মা-ত্রায় গ্রহণ করিতে আরম্ভ করিলেন, এবং ভূমির উৎপন্নের যে নিক্রপিত অংশ রাজার প্রাপা, ভাষার অধিক লইতে লাগিলেন। অপর তিনি দেব সেবার্থে প্রদন্ত ভূমি দকল বদ-পূর্বক স্বরং অধিকার করিরা ভোগ ক রিতেন; এবং চন্দ্র কাষ্ঠ, স্থা দ্ধা দ্রবা, তৈল ও অপরাপর বাণিজ্য ক্রবং বিক্রন্ন করিবার দাধারণের অধিকার রহিত করিয়া, কেবল বিশেষ বিশেষ ব্যক্তিকে ভাঙা প্রদান ক-রিতে লাগিলেন। রাজা এই দকল নিঠুর নিয়ম ও গুরুতর কর স্থাপন বিষয়ে কভিপর কায়স্থ কর্মাচারীর প্রামর্শ গ্রহণ ওলিতেন। এবং তাহাদের ভারাই সমস্ত কার্যা নিকাছ করিভেন। এই শকল কর্মচারীর মধ্যে লবত নামক ব্যক্তিই সর্বপ্রধান ছিল; রাঞ্চা ভাহাকে ৩০০০ দীনার বেতন দিতেন। আ-

⁽१) टेंड्रगर्ड नर्डमान लाट्डात । (१) टाप्पीटवृद चेंड्रपु लान्डटम काम्याणि कर्म न्यूमक कांचि जारह।

পর রাজনভান্ত পণ্ডিভ, অধ্যাপক ও কবি-গণরাত্ত অভাবে অভাত্ত ক্লেশে পতিত কইয়াছিলেন। শকরবর্ণার এইবাপ নিষ্ঠুর শাসনে ও অনগার বাবহারে প্রভাগণ অ-তিশয় সুংখাপর ও কতির হওয়াছে, রাজ-মন্ত্রী ও রাজপুত্র ভূপতিকে তাহা জ্ঞাপন করিলেন। কিন্তু ভূপতি পুত্রকে এই মাত্র উত্তর দিলেন, যত কাল তুমি না হয় রাজা ছও ২৬ দিন অপেক্ষা কর,তাহার পার তো-মার ইচ্ছা হয় প্রকাগণের জুংখমোচন ক-রিও। শঙ্করবর্মা। কিছু কলে অর্থ সঞ্চয় ক-तिया भूनतोष रेमनः अरेशा উछता जिन्न तथ अभन कहित्वन, मिक्नुनिभी होइवर्छी एम्स म-্ষল জয় করিয়া উরস দেশে (৪) গ্রবেশ कतिर्लग: किन्नु अष्टे इत्ल পर्वर । स বক্ষরের বংগে বিদ্ধান্তীয়া ভিনি আপিলাগি ফ রলেন : উণ্ণার মেন•িবিশ উদ্ধার মৃত্যু मध्याम (प्राथन क्रिया मञ्जाद देगना वाहेसा স্তুদেশে প্রভ্যাগমন করিল, এবং কাশ্মারের নিকটবভী হইয়া রাজার মৃত দেহ এক অভি উচ দেভিং প্ৰস্তুত কৰিয়া দাই কৰিলি ; তাহার সহিত রাজার তিন রাণী ওজার সিংহ লামক একজন পণ্ডিত সহমূত হইলেন!

শক্ষর শ্বার পর তৎপুত্র গোপালবর্মা রাজ হুইলেন। গোপালবর্মা নিতান্ত শিশু ছিলেন, এই হেতু তাঁহার মাতা রাণী দুগলা রাজ প্রতি নাধ হুইয়া মনস্ত রাজ কার্নিরে ভার গ্রহণ কবিলেন। কিন্তু রাণী নিশিব্যক্তি ছিলেন, এবং প্রভাকর দেব না-নক মন্ত্রী হালার প্রিয় পাত্র হুইয়া সকল বিখা শুহু করিতে লাগিল। গোপা-না দুহু করিতে লাগিল। কথিত আত্ত থে বাভাবর মন্ত্রী হিল। কথিত হার প্রাণ নাশ করিয়াছিল। তৎপরে গোপালবর্মার এক ভ্রাতা রাজা হন, ইনিও কিছু
দিন পরে অকালে মৃত্যুহন্তে পতিত হওয়াতে রাণী স্থান্ধা সিংহাসনতা হইলেন।
কিন্তু ছুই বৎসর রাজত্ব করিয়া রাণী রাজ্ঞপদ পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হইয়াছিলেন
এবং তৎপরিবর্ত্তে সুরবর্মার পৌত্র নির্জিতবর্মা ভূপতি-পদে অভিবিক্ত হইলেন।

ইয়া উঠিয়াছিল। তত্তি ও একাঙ্ক নামক छুই एल जाकरमना महाप्रकान हरेगा साधीन-जाव ধারণ করিয়া আপন্যদের স্বেক্ষামত ব্যক্তিকে রাজপদে স্থাপন করিয়া দেশ লুগুন ও প্র-জাদিগের নান। গুকারে প্রীড়ন করিতে আ इंड क्रांडल। अहे छुई रेमना निकां श्रीय कि না ভাহার কোন উল্লেখ নাই: বোধ হয় ভাহারা তাহার ও আফ্রান জাতীয় হইবেক, কারণ ইফারাই মচরাচর বেত্রভোগী কইয়া বিদে-শীয় রাজাদিলের দেনা হুইয়া থাকে। যাহা ল্ডক অনেক দিন প্রাপ্ত ইহারা**ই অভাস্ত** পরাক্রান্ত ও স্বেভাচারী হইয়া কাশ্মীরে আধিপত্য করিয়াছিল, এবং এক ভূপতির পর অপর ভুপতিকে আপনাদিগের স্থবিধা ও স্বেচ্ছামত সিংহাসনত্ত অথবং সিংহাসন-চ্যুত করিয়াছিল। এই **প্রকারে নির্জিত**-বর্মার পর তৎপুত্র পার্গ, ত**ৎপরে পুনরায়** রাণী স্থাকা, পরে চক্রবর্মা, ভদনতর স্থা-বর্মা ও শঙ্করবর্দ্ধন, ইহারা অপ্প কাল মধ্যে একাদিক্রমে মিংহাসনে উপিত ও তথা ट्डेररु भूनण मृतौक्र ट्ट्रेश**हिरलन। हेड**ी-দিগের মধ্যে চক্রবর্মা রাজচ্যুত হইলে পর প্রাণ ভয়ে পলায়ন করিয়া ডামর নামক পর্ব্যতনাদী এক বর্ব্বর জাতীয় রাজার আ-প্রায় লইরাছিলেন; এবং ডামর রাজ তাঁহাকে পুনরার সিংহাসনে ভাপনার্থ বছসংখ্যক প্রতীয় লোক একত করিয়া ভাষাদের

ত্রক দেক তের না বের ভারে নির্থ করা সভ্জ ১৯ ১ নির পারি চক্ষণ, হারে গায়ত কিন্দু ভারারা ভারত বার্মির নির্ভানি এনে বের্জানের । বেশি হয় উন্ন নাম্ক কালি এবে, বিজ্ঞানিক।

সহিত কাশ্মীরে গমন করিয়া অপ্রতিহত ভাবে এনগর পর্যান প্রবেশ করিল। ত্রা-হাতে শঙ্কাবৰ্দ্ধন বিক্ৰান্ত তত্তি সেনাগণকে লইয়া আক্রমণকারী ভামর দৈন্যকে পদ্ম-भूत निकटि युक्त ध्वनान कतिर्वन। এই যুদ্ধে তত্তি দেনাগণ সম্পূৰ্ণৰূপে প**াজি**ত ও ছিল্ল ভিন্ন গ্রহণ এবং তালাদের অবি-काश्म हे निरुष्ठ रुरेल। भक्तत्वर्क्षन् अमतः ক্ষেত্রে প্রাণভ্যাগ করিয়াছিলেন। চক্রবর্মা चीत्र विक्रही जांबत रेमना लहेता जी मना-त्तां भूर्यक तांक्यांनी मत्या व्यत्न कतिश निकितादण ताणच शक्त कतिदलन। किन्छ জিল স্বীয় নীচ প্রবৃত্তি হেতু শীঘ্রই প্রজা-দিগের অঞ্প্রিয় হট্যাছিলেন। একদা তিনি ছুইটি ছোন্ত । ভোম) জাতীয় স্থাদরী ন-র্ত্তকীকে দেখিয়। ভাহাদিগকে আপনার भूतजो कदिरासनः, अतः अन्यम ভाष्टारमत अ প্রকার বশীভূত হইয়াছিলেন যে সমস্ত কার্যাই ভাহাদের অনুমতি ক্রমে করিছেন! অপর তিনি আপনার মাল্যাকরো ডামর দেনাগণকেও সম্পূৰ্ণ ৰূপে বিশ্বত হইয়া গিয়াছিলেন; ভাহাতে কতিপয় ডামব একত্র ইইয়া রাজি কালে তাঁহার শয়নাগারে প্র-বেশ করত তাঁহার শাণ বধ করিল। তদন-ন্তর উন্মন্তিবর্ত্তি নামক পার্থের এক পুত্র রাজ্যাভিষিক্ত হইলেন। এই রাজার চরিত্র অতিশয় ঘৃণাজনক ওনিঠ্র ছিল। ইনি নৃতা গীত ও স্ত্রীদংদর্গেই সমস্ত সময় অভিবা-হিত করিতেন, পক্ষিযুদ্ধ ও বন্য জন্তুদিগের যুক দেখিতে তাঁহার বিশেষ আমোদ ছিল। অপর পাছে পরে কোন বিদ্রোহ উপস্থিত হয়, এই আশিক্ষায় যে যে ব্যক্তির প্রতি ঠাঁ-হার বিপক্ষ বলিয়া সম্পেহ ছিল তাহাদি-গকে নিহত করিতে আজা দিলেন; তিনি षापन ভाতादक এक सक्तकातानादत सम করিয়া নিরাহাত্রে বধ করিলেন; এবং তাঁহার পিতা পার্থকেও কতিপয় অস্ত্রধারী দারা নিহত করিয়াছিলেন। কিন্তু এই শো-ণিতপিপাত্ম নরপতি ইহাতেও দস্তুট হন নাই, তিনি ক্রীড়ার্থে এবং অন্ত শিক্ষার্থে স্বয়ং অদি ধারণ করিয়া আপন অন্তচরগনের मञ्जरक्षम्। এবং নার্বাগণের স্বনচ্ছদন করিতেন। অপর রক্ষদ নামক ভামর দেনা-পতি তাঁহার মন্ত্রী হইয়। প্রজাদিলের সর্বস্থ वल भूरतक अभवत्व कित्व लागिन। এই ৰাপ নিঠার শাসন তুই বং দর মাত্র ছিল, ভাগর গবেই এই জুরাচার রাজার মৃত্যু হইল এবং ভাধার পুত্র স্থ্রবর্ম। ও নিংহা-सङ् रहेता ज्ञान काल मरता रलाकाग्रह खांख इहेल। इहाटज ताक्षकपानाती अभिक्षिण्य একত্র হইয়া বশক্ষরদেব নামক এক জন দামান্য ব্যক্তিকে বাজপদে স্থাপন করিল। यमकत পिশावभूत वांनी कामतनव नामक এক ব্যক্তির পুত্র ছিলেন। তিনি বাল্য কা-লাবধি অসামানা বুদ্ধি শক্তির পরিচয় দিয়াছিলেন এবং ভাহাতে যেরুবর্দান নামক এক রাজমন্ত্রীর বিশেষ অনুগ্রহস্তান হই-য়াছিলেন ও তৎকর্তৃক শঙ্করবন্মার রাজ্য कांद्र अञ्चाधिकांचा (१) भए आश्र इड्यां ছিলেন। যশকর স্বভাবত যেমন বৃদ্ধিমান ছিলেন, দেই ৰূপ তিনি বাজকাৰ্য্যেও বি-শেষ দক্ষত। প্রকাশ করিয়াছিলেন। ভিনি রাজা নগো প্রথমে স্থানিয়ম ও শাস্তি স্থাপন করিয়া চৌহা।ও দস্মারুত্তি নিবারণ করিলেন। ওঁছোর সময়ে রাজপথ দকল ভয়শূনা ৯-ইয়াছিল এবং বিনা প্রহরী সমস্ত রাতি দো-কান দকল মুক্ত-দার পাকিস; এক জাতি অপর জাতির বাবসায় গ্রহণ করিছে পা-রিতনা এবং প্রজা সকলে রান্ধার ন্যায়-গুণ ও স্থানিচারে পরম সম্ভূফী হইয়াছিল। কিন্তু একটি ছুৰ্ টনা উপস্থিত হুইয়া যুশক্ষ-

⁽a) दैमना मः क्रांख भन ।

(त्रत ममक कीवमरे फ्रांचावर ७ ताक्षदात्रत প্রতি ব্যাঘাত চইয়াছিল। ভাঁচার এক ত্রী চুল্চরিত্রা হট্যা বাজবাটীর এক নীচ জাতীয় ভূতোর প্রতি আসক্ত হইয়াছিল; এই বিষয় তিনি জাত হইয়া দুঃখ ও লক্জায় অভিনত হইলেন; এবং এই কলস্ক অপ্ নয়নার্থ প্রায় ভিডে করিয়া রাক্ষণ পণ্ডিত-গণকে বিক্র অর্থ দান করিলেন, 'আর এ-কটি মঠ স্থাপন করিলেন। কিন্দু তাঁহার मन इहेटा वहें कलक मुत्रीक्छ बहेन ना। ভিনি ভদ্বিষয়ের চিভার নিরভর বিমাশ-ভাবে থাকিতেন:এবং পরিশেষে গাঙ্গ্য ভাগ করিরা আপনার প্রভিষ্টিত সঠে প্রবেশ করিয়া গোপনে জীবনের অক্ষাই ভাগ অভিবাহিত করিলেন। তিনি ।-খন রাজপদ প্রিত্যাগ করিয়া ব্ন ত-খন তাঁছাৰ এক পুতা ছিল, কিন্তু এই পুতের জ্যোর গতি উহোর সন্দেহ তিল, এই ছেতু মলিবর্গকে আহ্বান করিয়া তা-হ্রে এক জ্ঞাতি বর্ণাট নামক ব্যক্তিকে শিং-क्षानन अनाम कविटल करियाकिटनन। किन्न মশক্ষরের পূত্র সংগ্রামদেব নিভান্ত শিক্ ছিল এই কেছু মল্লিগ্ৰ ভাঁহার রাজত্ব হইলে মস্পূর্ণ আধিপতা করিতে পারিবেক এই আশায় সংগ্রামদেবকেই রাজা করিল। अहे कटल व्यवास कमांगातिश्व मयन्त्र कमरो অাপ্ত হইয়া কিছু কাল সধ্যেই পরস্পার विवाम जावु कहिन, अवः डाशरणद गरना পার্বপ্রথমক মন্ত্রী কতিপয় লোক সং-এছ করিয়া এক বিদ্রোষ্ উপস্থিত করিল, এবং দেই গোলবোগে রাজাকে ও তাঁহার মপ্রক বাজিদিগকে নি**হত করিয়া আপ**নি নাহ্ন পূৰ্ব্যক নিজোধিত ভর<mark>বান্ধি ধারণ</mark> ক-রিয়া সিংহাদনে আরোহণ করিল, আর তা-ভার অনুচরগণ ও ভরযুক্ত অঞ্চারণ জাহাকে त्राका महाधरन व्यनाम कतिल। किछ भा-

किंग्रेट अंश कामजा व्यक्ति निम हिल मा, छ। हात्र প্রতিপক্ষেরা পুনরায় প্রবল হইয়া ভাষাকে পদচাত ও নিহত করিল, ভাহাতে তৎপুত্র ক্ষেমগুপ্ত বাজা হইবেন। ক্ষেমগুপ্ত অতিশয় ইন্দিয়পরায়ণ ও ভোগস্থাসক্ত ছিলেন স্থভরাং তিনি রাজকার্য্যের আভি किছু মাজই মনোষোগ করিতেন না, ইহাতে (मगबर्धा बोक्नामन निकास गिथिल इहे-য়াছিল, এনং প্রভবাদী বর্বরগণ **আদি**য়া नशत्रामि लुर्छन उ वोक्रमिरशत সক্ষুদ্ধ করিয়া দিতে লাগিল। वाक। कारमांवाविश्वि मिश्म्तांरकत मिफा নামী কন্যাকে বিবাহ করিয়া আপনার চরিত্র কি: প্রুৎ সংশোধন করিতে পারিমাছিলেন, এবং ভদবধি অপর সকল ব্যসন পরিতাপি করিয়া মুগ্যাতে প্রকৃত্ত হইলেন কিন্তু ইছ'-তেই ভাঁছার অকাল মৃত্যু হইল। তদনন্তর ठाँगात भूल चिम्ना ताकां इरेटनम् किन् <u> फिला तोनी समय ताक कार्य। खतः निकार</u> করিতেন এবং প্রায় সকলকেই আপনার ক্ষমতাপীন করিয়াছিলেন। ইছাতে হা-ন্তুন নামক প্রধান মন্ত্রী নিতান্ত অসম্ভূষ্ট হইয়া এক বিদ্রোহ উপস্থিত করিল; কিন্তু নরবাহন নামক রাণীর এক বিশ্বাসী অস্তুতর দৈন্য সংগ্রহ করিয়া উক্ত নন্ত্রীকে পরাজয় क्रिल। এই क्रिल नवर्वाह्म व्याविध এक्री বিদ্রোহদমন করিয়াছিল। অভঃপর অ-जिमना ताका लाका हति वह रहेतन, धदः ভদবধি দিন্দা রাণী এক একটা শিশুকে রাজ সিংহাসনে স্থাপন করিয়া আপনিই রাজত্ব করিতে লাগিলেন।

আনাদিগের ইতিবৃত্ত লেখক কছান পা-ডিত এই পর্যান্ত লিখিয়া দীয় এন্ড দমাপ্ত করিয়াছেন স্কুতরাং তাঁহার ইতিহাস ১৪৯ শকান্দা (ইং১০২৭) পর্যান্ত আনীত হই-য়াছে। তাঁহার পর অপ্রাপ্ত ব্যাক্ষণা তৎপরবর্ত্তা সময়ের ইতির্ভ প্রকৃতি করিরাছেন: কিন্তু ভাষার অনুধাবন করিবার
আর প্রয়োজন নাই, কারণ এই সময়েব
কিছু কাল পরেই কাশ্মীর মুসলমানদিগের
অধিকারভুক্ত ছইরাছিল। স্বতরাং হিন্দু
রাজত্ব কালীন কাশ্মারের ইতিহাস ও অব
ভার সংক্ষেপ বিবরণ উল্লেখ করাই আমাদিগের যে উদ্দেশ্য ভাষা এক প্রকার সংসাধিত হইল।

উদ্ধৃত।

ভবানীপুব जन्म-বিদ্যালয়।

প্রধান আচান্যের উপদেশ। প্রথম সংখ্যা। ৮ টের ১৭৮৫ শক।

ইহা অভান্ত আহলাদের বিষয় যে ভিন বংসয় পারে পুনর্বার এই ভ্রানীপুরের ব্রহ্ম-বিদ্যালয়ে জামরা শুক শিধ্যে, পিডা 'পুরে, সন্মিলিড হই-ক্লাছি। ইহার মধ্যে পরিচিত অসল মুখ অসলো-कन कतिया आभात क्षण यानटम डेस्यन हरे-ভেচে, আবার মূভন উৎসাহ-পূর্ণ ব্রহ্ম জিজামুকে উপস্থিত দেখিয়া আশার অভীত ফললাভ করি-তেছি। এ ভিন্বৎশরের নগে। কত প্রকার পরি-বৰ্ত্তন হইয়া গিয়াছে, কিন্তু ব্ৰহ্মাগ্লি ভেমনি জাজ্ব-লামান বহিষাছে। বাহাতে ভোমারদের হাদ্যে পৰিত্র ঈশরকে ধারণ করিতে পার, বাহাতে জানের উন্তি-সহকারে প্রীতির উন্তি হয়, যাহাতে পশ্ম-वरम रकामहा वनीमान २७--शाधीन इदेश विनगी হও, এই আমার লক্ষ্য। এথানে মাসের মগ্যে क्वल छूडे घती काल उभटमथ अनिवात जना উপদেশ নয়। বাহাতে তোমরা শাস্ত দান্ত উপ-রত ডিভিফু সমাহিত হইয়া ব্রহ্মধামে উপনীত হইতে পার, এই আমার লক্ষ্য। ভোমর। চির জীবন ধর্মের উন্নক্ত পথে ঈশ্বরের সহচর অনুচর হইয়া থাকিবে, এই শুরুতর অভিপ্রায় সিদ্ধ করি-बात निविष जिन बदमत शदत ज्यामात्रदणत अशादन निमानसः आसमा मदन विमान क्षारत यक हेकू नाथा नार्थाया क्रिटिंग क्राप्ति । द्यामात्रदमत ज के-कान नारकत निमित्छ व अकात बच्च, का शह क करणाय । कार्य का क विकाहि । किन पर नत

A Company of the Comp

श्रुटक य मकन उभरमण निया हिनाम, ए। हा कि हू है বার্থ হয় নাই। ভোম'রদের অনেকের ছ্দমে ব্রাহ্মপর্টের মধ্রতা প্রবেশ করিবাছে এবং ব্রহ্মকে আহে। বিশেষ কুলে জানিবার নিমিত্ত জোমার-भित्र छ। भेन । छ ग्रिया। ८६ । जेश्व (कि.स. दिश्व स्मिहे প্রোথন। সিদ্ধ ককন্। সেই নিভা অমুদ্র অভর कृष्टेच अवन अन्य भारतमञ्जलत कार्यी कहेगा है अधारम ভেগ্রা সমাগত হটড়াচ, ইহানে ব্রাক্ষণশের प्रिश्राम्भ बक्ता कविया छ--- भ छिन्न का गरिश म शक्राम-্যাথনা বাতীত শুক राजिभाषः । মঙ্গল পুরুদের অমৃত্তন্য ভারে প্রকাশ পায় না। ভাঁহ'তেও জানিবাৰ যাঁচ র ইক্ষা হইলাছে, ভিনিই অভাব ধর্ণাধা ব্রহ্ম জান লাভ কবিজে পারেন। ব্ৰদ্যকানেৰ ভাৰণ লোপান প্ৰাথনা : বিভীয় ষোপান যমুও চেটা। তোলবা গাঁ, সুভকারী इहेटल ५ क. क. व केप्टरबंद न गांचीया लग्ना जाममा मना इहेगा यक अन्यक अन्यति केश्रेटमदर्भत सर्था मकल (श्राणिम् हत्। ज्यान-श्राम्धान्य) निविद्य ভোষারদের নিজের অনুকার ওমছের উপর্যত নির্ভর করে, আমার উপরেশের উপর ভঙ নহে। ভে'মবা বিদ্যালয়ে যে ভারে বিদ্যা শি-शिष्ठ याङ, य जात बक् का स्थापित याङ. নেই ভাবে কি এখানে আসিয়াছ ? সেই ভাবে र्यान व्यानिष्ठा शाक, खर्द खाला फेंडे हर श्र नारे। এখানে প্রিছ ভাবে আংশিতে হইবে। যে ঈশা বের জন্য কড় লেকে অর্ণো অর্ণো ভন্গ করি য়াছে, অণচ উহিচে পায় নটি ; কছ কন্ত দার্শনিকেরা জর্ফ-জাল বিস্তার করিয়া ঘাচাকে জানিতে বিয়া অবস্থ হইয়া ফির্ণ আট্নয়ত্ত ্ कैं।इ। वि निष्ठां व हेवाव स्वया अवादन कारिया छ । প্রমেশ্রের নিকটে ঘাইতে সহলে প্রিত্র হার্থে स्वक ऋभरप्र या है एक करेरत । यमञ्जूषान्य द्वान छ ह भगादभ पारेटक दुर्फिल इन्नेटल इस, दश्यम সাধু-মমাতজ অবিনয়-সভাবে বর্করের নাম্ম উপতে শন করা যায় না : তেমনি পরিত্র-পরপের সলি ধানে অপ্ৰিত্ৰ ইইয়া যাওয়া যায় না। কেমন করিয়। অপবিত্র চক্ষু ভাঁহার চক্ষুর প্রতি অর্পন করিবে ? পাপে রছ থাকিয়। কি প্রকারে সেই পর্মেশরের পবিত মুথ দর্শন করিবে? বিশুদ্ধ-ভাবে শ্রদ্ধা-ভাবে সেই প্রম পিভার নিকটে উ-পদ্বিভ হইভে হইবে। তিনি আমারদের প্রম পিডা, আমরা দকলেই ভাঁহার সম্ভান : ডিনি व्यामावरमत अञ्च, व्यामहा नकदल है जाहात क्रका : তিনি আমারদের রাজাধিরাজ, আমরা সকলেই ওঁহোর প্রজা, ভিনি ''একোবশী,'' আমরা সকলেই ভাঁহার বশে রহিয়াছি। আইস আম্রা হত্তে ছন্ত ধারণ করিয়া, ক্ষমে ক্ষেক্তে মিলিজ হইয়া, সেই

श्रेषात्वव माध्यादम ज़िश्मीक रहे-- भाषात्मत् পার সোপানে আরেছেও করিয়া উদ্ধুরে সেই দের-দেবের নিংহাসনেও নিকটবর[†] গই। জা-मरक फेंब रु कविश्व। गर्फारक व्याप्त न विश्व है की করু, আ এক সহকারে সভোর অনুষ্ঠান ভারা হৃদ-গতে প্রিক্ত করে, ভাষ্টে পাসত্র স্কুপ এখনট আংলি। क्ष के हेटबस । श्रीम अपने करहे । इस् নেখের আবিবলে ভাষা মলিন ভ্যা তবে সেই পৰিত স্বপ্ৰকাশ স্থানৰ কিব্ৰাকে নেয়ে। নথা নিয়া कि खकाइब महान कविद्व र असम शास्त्र के सिरा-भरयस्य धचुचीतः इट्यम, अधन हुमालहोता हुन-পালনে তৎপর পালেন: সেই প্রান্ত কোমারদের ্ড্র-সহকারে ত্রাক্ষা-ধর্মা ব্রন্ত প্রধান করিলে চইবে। এথনি কি ভোগারদের গালত ১ইলে ইছে৷ ১ই- ছে না? কেৰে প্ৰবিদি ভিক্রি সংঘ্যাকরিয়া ानिक कडेश। कथारम लाभिशा हडेरट, जिएल श्र-ोनल श्रीकटच सञ्च कहिरत। अति श्रामिता इकेटत १ ্দিৰ নায় ইন্দ্ৰিয় সংখ্য করা তাৰে প্ৰিণ হইবে। ों। तथ-मा भग कि १ न, ए ४,- प्रेशनपुर बालन है स्तिष्ठ-দিপত্তে সম্মাসতে বিজ্ঞাত করা ৷ যেন্ন অস্থাক্সচ अमारक मिराइ। इ करने १ राज्यां भी स्वरामियोदक निवसम र्रोजन्ता । अभिप्रक ० का । इ गुगक्त कया गर् কড় শাক্তা দ্বার, সভাল ভিনেত ভাইটে অপ্রি-्कः । (१६५) । हैं सिश्रां विश्वतात खेल्यकार्य अध्यय ক'র'র ন্রাক্ত রক্তান্ত প্রক্রিক হয়, আগ্রা প্ৰতিষ্ঠ ও প্ৰসন্ধ হয়। হান্দিগ্ৰিগ্ৰ পৰ্য্য-প্ৰথ ক্রেয়াল করার ই শ্রেষ সংগ্র করা ৷ মৃত্তিক नाबीत भूक १४. यस दिक्तिन'- ५ए, प्याधा अञ्च ६ ্ৰেষ্ট কট্টা লক্ষ্যের পিল অ্রাস্কার লয়, সেই च्यक 'रत् हैं' क्या मियरक नगत की बहुत । व्यथम शहा-करा अव्यास का निर्देश के देश करने से आधार) है, श्रद्ध दर्शने श्रादाना, शिक्कद्व मिलाए गापु छोड़े। গ্ৰহ্ম ১৯ বেশিলায় নিয়েপ্তি কহিন্দ্ৰ ১ - আগ্ৰানাকে ্রিষ করিব ও নিমিত্ত। কি প্রকারে আপেনাকে तर कर्वित्व १ चिक्किश्व भ भग द्वांता कि धकादय প্ৰায় মাংখ্য কৰিছে । প্ৰায় শুইতে প্ৰেটি নিম্বৰ্তি र्दिश शरमीत अरण है कियुविशतक विद्योग कतिशा। া, ভইংলা সহজে সেঘ শুনা আকাশো যেমন ७३ ७क.च लाहा, त्यर कुल जिल्लाल यस्त्रीम् ি দৰেৰ আন্মিৰত ইঞ্জন তোকাল পা**ইবেন। ভাঁ**-े ५ ४०७ ६ - । य-५० इहेटल प्रकाशित विकासिक লিংবাত ব্টারে, নিত্রপি স্থিয়ের রুপন্য ক্টানে মধ্যম मना मकर किया जिल्ला कराइन । एक्सिककेदल ऋथि-पण प्राच विकेश र मिलाल अप, ८७ व्यक्तिक सम पालित्रेटन पार्वकारक प्रमाय । ठ केंग्मा **पश्चिम क्रिया है**। प्यास्त्रा । इत्रामा अन्तर कराम जाशामिक कालिकम िन अध्यात मिलाइक संधानात्य निवास ने स्था **सहस**ि

या है देव मा। अक कार्क सम्मन काश्चि अव एवादश काएता महन-वाश्र हर, इड महिमत श्रवित खादा। श्रवित-স্ত্রপের সংযোগে সেইরূপ আরো প্রিত্র-স্ক্রপের আবাদের যোগ্য হইবে ৷ ত্রান্ধ হইয়া যদি বি-শেষ-कर्ल खन्नारक सामिएक देखा कर : खरव छ-थान कह, जाश्रद रह, छेदक्के आहार्दात महि-পানে গমন কর। ঈশরের সিংহাসন অসীম আ-কাশে প্রতিষ্ঠিত রহিয়াডে, বাহা বিষয়ে সর্বাত্র ভিনি দীপ্তি পাইতেছেন, ভিনি সকল ঘটনাকে যথাযোগ্য-রূপে চির কাল নিয়মিত করিতেছেন, हेर्। (क न। कारन १ किन्नु ज्ञानार्या वरतन "७-দিলি ভাগর' উহোকে বিশেষ-কপে জানিতে ইচ্ছা কর। তাঁহাকে উপরে উপরে জানিলে হইবে ন। : ব্রামাধর্মের আত্রা লইয়াছ, অভএর সকলের অ-ন্তবে প্রবেশ করিয়। তাঁহাকে বিশেষ রূপে জানিছে। ইচ্ছাকর। কি সভা জাতি, কি বনা জাতি, भक (लंद हे मध्य भिक्ते भक्त ता भी भक्त का भक्त भक्ति-মানের সভাতে বিশাস আছে: কিন্তু তোমায়-দিগকে সকলের মধ্যে প্রবেশ করিয়া, সকলেভে নিমন্ন হইয়া, বিশেষকপে উহিতেক কানিতে হইবে। উশ্বেৰ মহিনা বাহা বিষয়ে যে প্ৰকার প্ৰকাশিক হাহিয়াছে, ভবানীপুরের এই বিদ্যালয়ে ভিন বং-সর প্রক্ষে ভাষা বলা ভইয়াছে; এ কলে সন্ধ্রের নিগুড় ভব্নেকল জোমর। অনন্যমন। ভইয়া জীয় অন্তঃর সীয় আমেতে অনুসন্ধান কর, ভবে বি নোৰ কপে জীহাকে জানিছে পারিবে। প্ররে বলা হট্যাভে যে জগতে যাগ্ৰিছু আছি, যাহা কিছ কইতেছে : মেট প্রাণ-মন্ত্রের অপিপ্রান্ত ভিনি ও কার-প্রাতপাদা, তিনি সৃষ্টি-বিভাত প-लय-कार्नु। जिन नव्यद शुर्द्ध क मकल दिश्राप्तम् হট্যা গিয়াছে: এখন ফাচা ধলিব, ভাহা সীয় काकातक निमध करेगा मेहक जान याता. सुना-জি ত বৃদ্ধি দ্বাবা, পবিত্র হাদ্যা দ্বারা জানিতে कर्रान-शकः ও ভব্তি मक्कार्य छ।निष्ठ इहेर्ट। यथम ताकि कारल सक्तक मस्त जिम्ह रूग, यथम সুধাকর মুধা-জাল আস্তৌর্ণ করেন ; তথন দেই শোকার মধো শুক্তিত হইয়া ঈশবৈর আবিঠাব मिथिएक पाकि। यथन छेवा काटन स्था छेमग्र হয় ভাগন স্থুদায় আকাশে উচ্চারি মহিমা ভাষ-लायन कर्ता अर्थक भिष्ठा, निष्ठाता, भेगा-रकार इ. ८४३ अथ! ८क हे महम क्या । स्मरण **विद्वा**रक ব্যালয় নিজে উন্তারি **শস্কি প্রকাশ পায়। বিশ্ব** अदल काहि काहि को हे। वृज्ञ अञ्चलको भने व्यवस्थिया র্চনা-কর্তার বিচিত্র শক্তি অনুভয় করি, আবার क्षीरभावे नार्षः धानस्य जिम् संवेदनातं मूल्येन गर्धानः डाराज कामात्माक अमानिक पानि । सर्वन आफ्न-भार्त अंदर्श कविशाहिः व्यक्तश्री व्यक्ति । निर्मान

वाली नर्वनिष्ठका नर्वमक्तिमान् भून भुक्रवद দত্তাকে বিশ্বাস করিয়াছি। এথন হস্ত ধারণ ক-বিয়া ভোমারদিগকে থীয় দীয় আত্মার অভাস্তরে, ঈশবের অন্তঃপুরে, দহরে ব্রহ্মপুরে, লইয়া যাইব। বেখানে এখন অক্সকার দেখিতেছ, দেখানে পরে ज्यादकाक दम्बिट्व।' ज्यालमात मतीत दम्बिटक5, ইহাও অন্ধনার। আতার আবাদ-তান এই দেন-नैक्षत्र जममात्रक । त्रद्भव छातः वा क्षण, मंतीरवत् 'अंतिष्ठ त्मेष्टे कल । अहे महीरत्त्व ज्यखरत निमग्न হইয়া সীয় আত্মাকে নেখ। আত্মার কিরণে সু-র্নার আলোক প্রকাশ পাইতেছে। যদি আত্মা नः भारक, फारन एक रमधिराक शांख ! संबीरवृत महशा আ্যার প্রভাব দেখ, তাহার অন্তর্জন প্রদেশে शत्रमाधारक रंगियरङ शाहरुवा रम अवका रित पत्रका अक समग्र बंदीत शक्तिक कहेरन, उधन শ্রুর এইডে আলা অবসুত হুইলা লোচান্তরে প্ৰন ক্রিবে। কেন এট চক্ষু গেল, ত্থন স্ত্রা কেথায় 🖯 অস্তরাত্তাকে স্থ্যাবে অস্কার ज्यम कि अक'रत क' मन । यथम गर्मेतन क्लान করিকে না পারিলাম, নে সমীরণের মধ্যে ঠা-হাকে ক প্রেকারে জন্ত ক্রিকাপ যথন প্রাণ-শাক্তি भाकिरतक ना, कथन व्यक्तिक रलव पुरण्योमगटनव मुश्रास्त्र हैं।शास्त्र कि ध्यकारत छेशलांका कतिव ? धमिल रुपा थाकिरत, सम्बंद्ध अनाहिल इनेरन, প্রক্রোদান নিয়ত গল্প দান করিবে: কিন্তু মৃত म्हित मध्यक्त छेठात किछूठे भोकित्वक ना। खब्दन। তো আলা নিকাণ চটকেত না। আলার অভা-खद्ध 'ऋख्यां जादक दम्बिट'ड हे शाहित। नाहित्तुत् अध्य मितीरत्व भाषपञ्चा, कि'०। वर्डमारम आर्ट्स. াক্স ভবিষাতে পাকিবেক না, ইছা সকলেই জা নেন : কিন্দু আত্মার সঙ্গে পর্যাত্মার যে চিরু স-দক্ষ, ভাষা ভোমার্রিপকে বিশেষ করিয়। জানিতে इहेटव । भथम अभूमास वाका विषय मिस्कीत है ক্রিয় হইতে ভিরোহিত হইবে, তথনো আহার अञास्तरत अमूनसाम करितल श्रमाञ्चाटक मिथ তেই পাইর। এই প্রকার প্রদাবার সঙ্গে অ'-মারদের আঁথার চির কালের সমন্ত্রী ভূলা চ-ल्फात मटल व्यामास्टामस विरक्षम इनेटन, किस भ वर्गाबाहर महिन्त कमालि विटब्हम इंटेटवरू ना । यथन में हिर्देश माचा काचारक प्रांचि, उचन मंदीहरक कार्तात आवाम-छोन त्वाभ इतः । यंथन त्वहे आ धारिक आरोत शहरा छ। दक दमिय, उथन 'धरे म-तीत शनिक रमय-मॉक्स्त्र इय । मन्नीत-मन्त्रित वाजा-वान्त्व ठीकाटक वानीन दल्लाको, उत्हादक जानात व्यान-करन आधार केटन जारित है। 丁克岛 金黄山

गरिएका ध व्यक्ति होना बरक किन्छ अंतरव

সারের পরিক শভাজে পূর্ণ রহিয়াডে। এই সম্ माग्न क्रमार (महे श्रेष्ठम महत्र्यद्व आवाम-स्रोम : এই निश्व-मस्मित्र मिहे (मन-(मदन्दे) निश्चन्त मस्मित्र। यकि कामाता छने मन्तिरवह वावित शाकिया पुत হইদে তাঁহাকে প্রণাম করিতে চাও, ভবে ভোমা-রদের উন্নত ব্রাহ্মপর্যাতে আনুগ্রায় করিবার সকল ফল প্রিবেন।। পদি ভোষর। ইচ্ছা কর, জবে ব্রাহ্মধর্মার ভাষারদের এট মন্দিরের অন্তঃপুরে হস্ত পার্ন করিদা লউয়া যাউবেন, দেখানে ভাহার আবিটাত্রী দেবতার সাক্ষাৎ পরিচয় প্রাপ্ত হটয়া ভোমরাকুভার্হটরে। এই বিশ্ব-মন্দিরের অ-क्षात्र्व सव-नातीय आधा , परे आशाहि क्रेश्रद्वत छै-क्किन असेन राजान, बड़े आहेत एकडे अड़े एका छूर कि त्मरेक्षात्रः । तत्र दम्तात्राहरू देशविष्टे । मानगा मर-সার-পাত্র রম্ম কর্ম কামের নেতুল ল'ল করিব। सिदीक्षण करिया (तथा, भागीक्षय समस्य भक्त हाथ, আবাল্লার জেমনি জিনটি দুর নেধিকে প্রেটের মেই ভিন দার দিয়া ঈশরের জ্যোতি অস্তবে *আ*-বিক্ট হইকেছে। ত্রকটি স্বার আন্মার জ্বান, একটি দার সাগার প্রতিত আর একটি দার আহার গর্ম। জান দারা ভূত কাল-সিদ্ধ স্কা স্কপ্তে मर्गम कति, वर्ज्यादम औरिं छ।त. छैदि मकक-य-রূপের অন্তর্না করি, ভাষী কালে কর্ত্তরা পর্ণোব অনুষ্ঠান দ্বি। শুদ্ধ অপাথানিদ্ধ পারিক স্বকাপের मित्रकर्म अञ्चय कवि । याहाः मार्ट्यः सम्बे भिन्न রস্ক্র- সভ্যারস্করেক, ভানা স্থারা জ্ঞানিকে পারি। ভাঁহাকে বর্তমান জানিয়। গ্রামি দার ভাঁহার অ-স্ত্রা করি। ভখন খানজ আমারদের প্রস্প হয় এবং পর্নিত্ত,ন ভাষারেদের জাবন কাল **अर्धा त्थी। कत महश्चा धनि त्यक्तित्व का छान व्या कहन** ভাষার। উপরের পাংগা ও রসর ত্রতিত পালা নাল 畅销 蜀剑 听说 计区域制 测知之间 网络。 写话 কাহার প্রেমি ভাজি আকাপ কবিব হৈছি প্রেমি ন ভিক্তি দ্বালা উপাসনা না করি, ভবে ঈশরণে কর-खन-मान्छ आभनकतः छानिया**डे** त् कि ठीस्त १ याम जीकादत क्षीडि जीक कांत्रा छ। है। धार या:-(मण लाजन ना कति, खात केंग्रच लाज जीविक পালিবে'লে কেনে জনে নিৰ্দ্ধণ চট্টা ধার। সকল गमधने केंद्रिक लक्त वर्षिटम । हेद्र । कि छेला-नस्ति नगम, कि मार्भात् क कार्यन मगग्र। व्यथ-র্মাচরণ করিবার ভো ক্যাই ।টে । যাহা কিছু लर्फा-कामा कदिएया आहां अने बेशायस महस्य प्राप्त हो। थिया कवित्र इष्टेश्व। योग अध्यक्त मा अध्या করিয়া কার্গা করি, ভবে আপনার কার্যা চটল ; र्याप अच्चेद्रक नका कविया कार्या कति, उत्वर्षे क्रे-শরের প্রিয় কার্যা হইল। ব্রাহ্মপর্মের উপদেশ এই ; বিশুদ্ধ জ্ঞান ছারা তাঁহাকে দর্শন করিবে,

মিশাল প্রাতি ছারা ভাঁচার পূজা করিবে, পর্মানু-है। स बाता लोहांत कारमण शालन करित्व। त-भाम कार्त बना याहेरक बाद्द, काम-व्योकि-अबू-क्षेत्र-खांव मिया शवयाचारक व्याशमात व्यवस्त (प-चित्रा है। हात्र श्रुका काहरून करिता । यह जाक भएग्री कार्यात्र विषय काम ४- यक्तभा औ कित विषय मञ्ज अकुभ, कार्या मायदम्ब सका भविता, तेन भर्मावर भारतम्बद्धाः अमन् करे द्वाराभमा नतन পর্ম্ম ছইলে উংক্রট : জেমান জোমার্মিগকে সকল धर्मावनश्री। परनद्र गरभा अञ्चल इङ्केटल इङ्केटर । यथम ভোননা এই সন্ধাৰয়ৰ সম্পান ব্ৰাহ্মপৰ্মা গ্ৰহণ করি-রাছ : ভথন ভোনার্দিগকে সমুদ্ধি তাঞ্চে সম্পন্ন হইতে চইবে--শ্রীর্মন আলা তিনেরি উছতি সাধন কবিতে হইবে. কণাতে কালেতে ভাবেতে नर्स खकादहरे धक इस्टब्स करेटन, रक्तामान्द्रमद की-বনে এই ব্রাহ্মগর্মের মাহার। প্রকাশী করিছে হ ইবে। আমার এই হস্তান্থিত প্রবিদ্ধ ব্রাহ্মপর্য্য গ্রান্থ ব্ৰহ্মবিদ্যাৰ জ্বোজি-রূপ অনুন্য মুক্রা-মণি-সকল ইভন্তভঃ রাশীক্ত বিশিষ্প হটয়া বহিরাছে: তেই ম্য়া ইহা হইতে এক একটি মুক্তা বাছিয়া লইয়া আ-পানার মানাজপ ভুত ছাতা ভালার মাল। গ্রিয়া विष्युत शक्ति में में में करता खर्मी है उरका व उद्गाप ज-र्भाक्ष ।

বিজ্ঞাপন

ভাল্যমাজ-গৃহ সংস্কারের প্রয়োজন ক্ইরাছে: যে অবধি ইহার সংস্কার সম্পন্ন না হয়, সেই অবধি এখানে ত্রস্কোপাসনা স্থাত থাবিবেক। অত এব সাধারণ সজ্জ-নকে অবগত করা ঘাইতেছে, প্রীযুক্ত দেবে-জনাথ ঠাকুর মহাশয়ের ভবনে প্রতি বুধ-থারে সায়ং কালে ত্রস্কোপাসনা হইবেক। ঘাঁহারা মানস করেন, তথায় ঘাইয়া উপাসনা ক্রিবেন।

वी जानमहस्र (वमाखवातीम।

বিজ্ঞাপন।

আগানী ৩০ কার্জিক সোম বার সন্ধান ৭০০ ঘন্টার সময়ে বেহালা গ্রামের একাদশ সায়ৎদরিক ব্রাহ্মসনাজ হইবেক, ব্রাহ্ম মহা-শয়ের। ভৎকালে তথাকার ব্রাহ্মসমাজে উপস্থিত হইয়া ব্রহ্মোপাসনা করিবেন।

> শ্ৰী জগচ্চক্ৰ চট্টোপাধায়। সম্পাদক।

Recently Published.

"THE RELIGIOUS PROSPECTS OF INDIA '
To be 'd at the
CALCUTTA B HMO SOMAL.

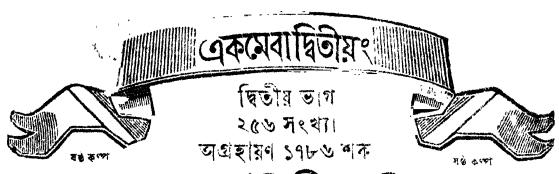
#2" PRICE 4 3NN 22. By POST 5 ANNAS.

নিঘ ণ্ট পত।

পৃষ্ঠ।

নিবাগই চতুদিশ সাধ্যমিক ব্রাহ্মসমাজের বজ্তা	कनिकाला जामारामारमा ४००, छ।	P G
রাজভরজনী ১০০ ভবানী পুর ব্রন্ধবিদান্ত্রের উপদেশ ১০৯ ভব্ববোধিনী পুত্রিকার মূল্য নিরপণ। ভাগ্রিম মূল্য (কলিকাভার জন্য) ৩/ শে (মফংখনের জন্য) ৬/০ মাসিক মূল্য ।/•	নিবাপই চতুর্দশ সাধংসরিক ব্রাহ্মসমতে	র
ভবানী পুর ব্রন্ধবিদানায়ের উপদেশ ১০৯ তত্ত্বাধিনী পত্তিকার মূল্য নিরপণ। ভাগ্রিম মূল্য (কলিকাভার জন্য) ৩/ ' (মফঃখলের জন্য) ৬/০ মালিক মূল্য	বন্ধৃতা	5**
তত্ত্বোধিনী পত্তিকার মূলা নিৰপণ। ভাগ্রিম মূলা (কলিকাভার জন্য) ৩/ ' (মফঃখলের জন্য) ৬/০ মালিক মূলা ।	রাজভরঙ্গিনী ,	५० ०
জাগ্রিম মূল্য (কলিকাভার জন্য) ৩/ ' (মফঃখলের জন্য) ৩/ মালিক মূল্য	खवांनी श्रुत्र जन्मविष्यांनास्त्रत्र উপদেশ	د ° د

ন্ত্ৰী এই তত্ত্বোৰিনী পত্ৰিকা কলিকাতা সগৱে ঘোণা-সাঁকোছিত ব্ৰাজসমাজের টুজীবিগের অনুসভ্যনুষারে অভি মাসে প্রকাশিত হয়। ১৩ই কার্তিক ব্যক্ষবার কর্মৎ ১৯২১ ক্ষিপতাকা ৫৯৬৫।



তভারোধিনীপ্রতিকা

ঈশরের সহিত জগতের সম্বন্ধ।

এই জগৎ পু: ব্য কিছুই ছিল না। ঈশ্বর ইহাকে উৎপন্ন করিয়াছেন, এক্ষরেও তিনি জগৎ হইতে বিজিল চইয়া অবাস্থতি क्तिट्डट्ड्न मा, लिख् श्रद्ध भरेश। रेगाक ধারণ করিলা আছেন। যেমন জীবারা महीरतत अन्वत्रम करेश आर्छ ; स्मरे **क**र्श তিনি সমুগায় জগভের আল্লো ইইরা সমুগা য়কে অবলয়ন করিয়া রা গৈয়াছেন। যেমন की<mark>वाञ्चात कडादव भतीत निष्णक्त</mark> इस, स्मर् ৰূপ প্রমায়ার সহিত বিচ্ছিন্ন হইলে জগৎ উৎসন্ন इहेता यात्र। यमन जीवाजात हेन्छ। ক্রমে এই শরীর পরিচালিত হইতেছে, নেই ৰূপ প্রমান্থার ইচ্ছামুদারেই ভূষ্য উরাপ দিতেছে,অগ্নি প্রজ্ঞালত হইতেছে, মেঘ বারি বর্ষণ করিতেছে, সমুদায় জগৎ স্থ কর্মে নিরন্তর নিযুক্ত রহিয়াছে।

আমরা কাহারও জীবাত্মাকে দেখিতে পাই না, কিন্তু মনুষোর শরীর দেখিয়া জী-বাত্মাকে উপদ্বি করি। যখন মনুযা দেখিতেতে, শুনিতেতে, কথা কহিতেতে,

গমন করিতেছে, তথন কেহ তাই'কে আজন इहेट विक्रिय विविधा विश्वाम करत मे। নেই ৰূপ দ্দিও প্রমান্ধা মকন ইপ্রিয়ের অগোচর, কিন্তু জ্ঞানের অগোচন নালো: महीद्वत भद्धा छीताञ्चात माधि अधदात আত্মা জ্ঞান গোটর পরমেশ্রকে সার্বজই প্রতীতি কর। যায়। প্রতিনিনিট ধীরের। স্থানকিরণে ভাষারি জ্যোতি দর্শন করেন: भून हत्स छै। इन्ति काँच छे भनाँ व करतन. जनमञ्ज्ञा उँवाति वाष्ट्र विवास भागा, নিজু-মালনে ভামারি গাছানা এতীভি ক द्वन, विदिन्भियद्व हैं।इदि स्वीन्धा शह করেন: পিতামাভার স্নেহে ভাঁচারি করুণা অনুভৰ করেন: পতিব্রভার খেমে উল্লেখি র্থাত আস্বাদন করেন। ভাঁহার। সম্ভায় লগতে তাঁহাকেই ওহপ্ৰোত ভাবে ব্যাপ্ত (परश्न।

আগনাদের আত্মতি মনে করিয়া দেখা।
বদিও আছা ক্ষ, ভুনাল, ও আর এক
সর্কাশক্তি প্রবের ইচ্ছার পরতন্ত্র; ভথাপি
ইছার শরীরে ইছার শাহি কছ দূর প্রচাহিত
ছইতেছে। আত্মাশরীর ও তে যদিও দংপুর্ব
বিভিন্ন, তথাপি আত্মানখন যে প্রবার ইচ্ছা

করিছেছে, অবংধ-সকল স্তুচ তুর ভূতোর নামি লেন বুদ্ধি পূর্বেক সেই ইচ্ছা সম্পন্ন করি-ছেছে। ভাজা যথন দেখিতে ইচ্ছা করে, চম্মু তথনই উন্থালিত হয়; আজা যথন চলিতে ইচ্ছা করে, পদ তথনই জাঁহার আভিন্তে ইচ্ছা করে, পদ তথনই জাঁহার আভিন্তে ইচ্ছা করে, পদ তথনই জাঁহার আভিন্তে ইচ্ছা করে, হস্ত তথনি প্রামারিত হয়। আমালের ক্তু আজার যতচুকু শক্তি, গেনেই পরেল দেশরীরকে পরিচালিত করি-ভেছে। এই চুন্টাস্ত দেখিয়া জগতের সহিত তাহার মন্ত্রি আমালি করে; এই অনীম আকাশের দহিত সমুদায় ব্রহ্মাণ্ড ভাহার দ্বীর, ভিনি ইহার আজা। তিনি বে প্রকার ইচ্ছা করিভেছেন, ইহা তথ্যাণ্ড ভাহার সম্পন্ন করিছেছে।

কিন্তু আমানের আয়া যেমন কুজ,
তিনিসেরপ ক্ল নানে তিনি মহান্ আয়া
তিনি প্রকা, তিনি নিরাতশয় মহান্। আমাদের আলা যেমন শরীরের সহিত এরপ
ধর্মা যে, শরীরের স্পত্তরে সে স্থবছুথী হয়; তাঁহার স্থরপ দেরপ নহে;
তিনি নির্লিপ্ত, তিনি অনক, তিনি অপরিবর্জনীয় আনন্দ স্থরপ। আমাদের আয়া
ঘেমন তাঁহার ইছার পরতান্ত, তিনি দেরপ
কাহারও পরতার নহেন; তিনি স্বত্তর,
তিনি সার্যাজিমান, "ন তত্ত্ব কাচ্চজ্জনিতা ন চাধিপঃ" আমাদের আত্মা যেমন
এক সময়ে ছিল না, তাঁহারি ইছাতে
উৎপন্ন হইয়াছে, তিনি সেরপ নহেন।
অজ্যোনিতাঃ শাখতোয়ং পুরাণঃ।"

অনেকে মনে করিয়া থাকেন, "গৃহ
নিশ্মাণের সময়েই নির্মাতার সহিত গৃহের
যোগ থাকে, নির্মাণ কার্য্য সম্পান হইকে
আর ভাগর সহিত যোগ থাকিবার আকি
শাকতা নাই। মেই কপ কৃতির সময়েই
প্রতীর সহিত ইহার বোগ ছিল, এ ক্রেন

আর যোগ নাই, যোগ থাকিবার আবেশ্য-কতাও নাই; সেই স্বশক্তিমান্ পুরুষ যা-হাকে যে প্রকার স্বভাব-বিশিষ্ট করিয়া স্থ করিরাছেন, সে সেই স্বভাব অফুমারেই স্বস্থ নিয়মিত কার্য্য সম্পন্ন করিতেছে।" ঘাঁহারা এৰূপ বলেন, হুটি ও নিৰ্দ্ধাণ এই উভয়গতু रेनलकना उँशिएमत ऋषग्रमम स्त्र नाहे: উভয় ক্রিয়াকেই ভাঁহার৷ একবিধ করিয়া ভাবেন। সনুদায় উপকরণ বিদ্যমান **আছে**, কেবল সংযোগ বিভাগ প্রভৃতি প্রক্রিয়া দারা তাহার অবস্থান্তর প্রতিপাদন করাই নির্মাণ; স্কৃতরাং নির্মাণ ক্রিয়া সম্পন্ন ছইরা গেলে নির্মাতার নহিত যোগ থাকিবার আবশ্যকত। নাই। কিন্তু স্থলী ক্ৰিয়া মে ৰূপ নতে। একেবারে অভাবের অ্বস্থা হইতে বস্তকে উদ্ভাবন করার নাম স্থাট—ত্রেটার ইচ্ছা মুর্তিমতী হওয়ার নামই স্থাটি —ফ্রন্টার শ্জিবাজ হওয়ার নামট ফ্টি; স্থতরাং মেই ইচ্ছা বা শক্তির অসম্ভাব হওরাও যাহা. স্থির অসদ্ভাব হওয়াও তাই। অত-এব স্ফি ইইডে ঈশ্বকে পৃথক্করা আর ঈশ্বরের ইচ্ছা বা শক্তি হইতে ঈশ্বরকে পুথক্ করা, উভয়ই সমান। কিন্তু ইহা কাহার বিশ্বাস যোগ্য হইতে পারে 🤉 অভ-এব আত্মা হুইতে পৃথক্ হুইলে শরীর যে ৰূপ বিনক্ট হয়, দেই ৰূপ প্রমান্তা ছইতে পৃথক্ रुरेटल समूनांग्र स्टिकिं विलीन रुरेग्रा शाहा।

আমাদের আত্মা জগতেরই এক অংশ, সূত্রাং অন্যান্য জগতের ন্যায় আত্মাও ভাঁহার স্থত ও আত্মিত; কিন্তু অন্যান্য জগত বেমন বস্ত্র-ত্মকপ, আত্মা সেকপ নতে। আত্মার সহিত ভাঁহার সহস্ক জন্মাবিধ। , মেঘ, বায়ু প্রভৃতি কড় জগতকে

, মেঘ, বায়ু অভাত জড় জগৎকে তিনি পৃথক জান দেন নাই, আপ্ৰায়ই পূৰ্ণ জানে ভাহাদিগকে চালাইভেছেন; এই জন্য ভাহারা চিত্র কাল অঞাত-কপে কার্যা করিয়া আসিতেতছে। আত্মাকে তিনি পুথক্ জ্ঞান দিয়াছেন। তড় জগৎকে তিনি পৃথক্ ইচ্ছা প্রদান করেন নাই, ভাঁছার অ-পরিবর্তনীয় ইচ্ছা উহারদিগকে কার্যা করা-हेट उटह ; अहे अना छेश तरणत कार्या कथन অবসম হয় না। কিন্তু আত্মাকে তিনি পৃথক ইচ্ছা প্রদান করিয়াছেন। এই যে পৃথক্জান ও পৃথক্ইজা; ইছা প্রতি আত্মাই প্রতীতি করিতেছে, সন্দেহ নাই। এই পৃথক্ জান ও পৃথক্ ইচ্ছা প্ৰাপ্ত হইয়াছি বলিয়াই আমরা আত্মা শব্দে. शुक्रव **मर्क উ**क्ত इहेश्राष्ट्रि—**शाधीन इ**हे-থা ছ ---ধর্মের অধিকারী কইয়াছি এবং দণ্ড পুরস্কার লাভ করিতেছি। **স্ত্**রাং **অ**-ন্যান্য জগতের ন্যায় আত্মা তাঁহার যন্ত্র নয়। ত্রকীর মহিত কৃষ্টির যে নম্বন্ধ এবং আত্রের সহিত আত্রৈতের যে সহকা, তাহ। চেতনা-চেত্র সকল জগতের সঙ্গে সমার থাকিয়াও আছা ও পরমাত্রা উভয়ের মধ্যে আরু এক ধর্ম সম্বন্ধ দীপামান রহিয়াছে। তেমন আর একটিও সম্বন্ধ দেখিতে পাওরা যায় ना, याहात महत्र ८म हे मद्दर्शत जूनना ह-ইতে পারে। সংক্ষেপে বলিতে হইলে আ-নরা আত্মা, ডিনি পরমাত্মা; কিছু স্পাইট করিয়া বলিতে গেলে এই মাত্র বলা যায় যে তিনি সামাদের পিডা মাতা মথা স্ক্রাজা প্র ভূ, আমরা ভাঁহার পুত্র ও পদানত বকু এবং প্ৰকা ও ভূতা।

পিরোভোর পার কররের পত্ত।

বিষ্ণোডোর পার কর বেকিনের ক প্রিগেসনাল নাক্ষ সভাতে ৰে পার বেখেন আমরা ভাষা স-কলন করিয়া আকাশ করিছেছি।

व्यक्ति वर्धन व्यक्तित्व कालक हिलाग, रमहे व्यवस्थि वर्षाबाबदकत भग व्यवसम করিতে আমার অন্ত করণে একান্ত যত্ন ও উৎসাহ সঞার হইয়াছিল। এ কার্য্য অন্তি-শার প্রশান্ত ও বিস্তীর্ণ। এ কণে আমার বোধ হুইতেছে আমার প্রকৃতিই বল-পূর্বাক আ-মাকে ঐ বিষয়ে প্রবর্তিত করে।

অনা লোকে প্রচুর অর্থ বায় করিয়া বি-দ্যাভ্যাস করিয়া থাকে, কিন্তু সৌভ্রিক্রেক্রে শৈশবাবস্থায় আমাকে মেরপ করিতে হয় নাই। আমি পিতা মাতা ভাতা ভগী-গণের আদেশ ও উপদেশানুসারে শিকা-প্রণালী সুস্পাই অবগত হইড়াছিলাম। আদিনিরবচ্ছিল স্থিরভাবে কোন ২স্তর ८कवल प्यक्रमोन्म्या निर्वोक्षणं न। कहिला ভাহার প্রকৃতি পর্যাবেলাচনা করিতাম। যে-মন মাধ্যাকর্ষণ শক্তি সকল বস্তু অস্থালি-বিত ভাবে ধারণ করিতেছে, আমার স্মরণ শক্তিও ভদ্ৰুপ ছিল। আমি যাহা বাহ শুনিতাম তৎসমুদায় অবিকৃত ভাবে সার্ণ করিয়া রাখিতাম এবং সেচ্ছাক্রমে সম্পূর্ণ-करण लारकत निकंगे वाक कतिएक भाति-ভাম। বিচারশক্তি ও কম্পনাশক্তি উন্নত করিতেও আমার গাঢ়তর অধ্যবসায় ছিল। এই সুমন্ত ব্যতিরেকে আমি নীতি ওব-র্মান্ত্রশীলনে অতিশন যত্ন করিতাম। শৈ-শ্বাবস্থাতেই আখ্রার স্বাভাবিক সংস্কারকে के चटहर आफ्रिक विवश मगानत ও मनान করিতাম। অকপটে সভা বাবহার, নারি-পরতায় প্রতি, গদমর্যাদা এবং সম্ভমের প্রতি দৃষ্টিপাত না করিয়া গুণারুমারে সক লের সমাদর করিভাম। প্রম শ্রন্ধাস্পদ ঈশবে বিশাস ও ভাঁধার প্রতি প্রীতি স্থা-পন করাই দর্কাপেক্ষা আমার মুখা উ-দেশ্য ছিল। আমি সক্ষথোন মহার।-জের নার ভাঁহার আবির্ভাব লক্ষ্য করিতাম না; প্রত্যুত্ত ডিনি সম্পূর্ণ নাগরপর ও পরিপূর্ণ প্রীতির অকের প্রম পুজা পিডার নার

সাধারণের অতি তুলা দৃষ্টি বিতরণ করিছেছেন বলিয়া বাধ করিতাম। সকল বিষয়ে
আপনার প্রতি নিভর করিয়া নীতি ও বুক্রিকুত্তি অনুসারে কার্যানুষ্ঠান ও স্বচকে
সমস্ত বস্তু অনুসন্ধান করিতাম। ধর্ম অন্
মার বিশ্বাস ও মত ন্যায়ানুসত বলিয়া বোধ
হুইত, তাহ্রেরক্ষা বিধানার্থ দৃত্তা অভ্যাস
করিতাম। এই রূপে আমার অনুসন্ধান
সকল বিষয়েই উত্তেজিত হুইতে লাগিল।

प्य¦म (भन्ने ममरशत व्यव्यक्त वित्रका ७ অনক গ্ৰন্মত গ্ৰহণ করিয়াছিলাম ; কিন্তু বেধে করি আমিদের দেশের তথমকার ধা र्षिककृतममुद्रशत व्यन्त लाहकहे सब्ध অপে কুনংকার শিকা করিয়াছিল। নীতি ও ধর্মাঞ্চর্জ্ত যে একেছিমূলক, ভ্রিষ্ট্র বিশ্বাদ সাপনের নিমিত্ত কেল্ট যত্রশীল ছি-লেন না। আমার পিত নাতা লোকের ধর্ম-প্রবৃত্তি স্বভাগদিক বালিয়া প্রতিপাদন ক-র্মিতেম, স্কুত্রাং তীহাদিলেরই সন্তান ব্লিয়া আমারও ঐ নিশ্বান অনায়ানে উৎপন্ন হটটা ছিল। किय उँ शांपरशहरे ध्ययद्भ आमात ने विश्वाम इटेशां हिल विलिया आर्थि के विषय কিছুই আপনার গুণগর্বা করিতে পারি না। আমি শুনিরাছি, তীহার। মনুষোর চরিত্র ও বিশ্বাদের সবিশেষ পরীক্ষা করিতেন; কিন্তু কাল্যর তারিজ বিশানের অনুরূপ না হইলে উ.২াজা ঐৰপ লোকের প্রতি কদাচ অনমা-শের বাক। প্ররোগ করিতে**ন না।**

আনার আগ্রীয় স্বজন ও প্রতিবেশিগণ

নকলেই শুক্তর শারীরিক পরিপ্রাম আয়ন্ত

কার্যাজিলেন। ঐরপ মহবাসে কাল যাপ্রন করিয়া আমিও দৈহিক শ্রম ও কার্যানুষ্ঠানে পটুলা অজ্ঞাস করিয়াছিলাম।

শ্রাপ্রের কার্যালয় এবং প্রাল ও অটস

শর্মাহকারে উহার স্থায়িত্ব সম্পাদন করা

আমার ভাতরে স্বর্গিকরে অভিত ছিল।

আমি শারীরিক পরিশ্রনের ন্যায় মান্সিক পরিশ্রন সহজে আয়ন্ত করিয়া লইলান এবং যথন গাঢ়তর অভিনিবেশ সহকারে কোন বিষয় পর্যাংলোচনা করিভাম, বাহ্য পদার্থ কিছুতেই আমার প্রতিবন্ধকভাচরণ করিছে সমর্থ হইত না। অধিক কি, যথন স্বহস্কে কার্যা সাধনে প্রস্তুত্ত হুতাম,তথনও স্বেজ্ঞানতে অন্য বিষয় চিন্তা করিছে পারিভাম।

আমি বাল্যকালেই উপযুক্ত শিক্ষকের
নালায়ে উৎরুই পুস্তক সকল অধারন করিরাছিলাম। ইংলগুরি পণ্ডিচদিরের গদ্য ও
পদ্যে প্রণীত স্থলনিত গ্রন্থ, বাইবল এবং
প্রীক ও রোমকাদধের সর্কোৎকুই স্থরস
পুস্তক নকল অনুশীলন করিতাম। কিন্তু
আমি সর্কাগ্রে ঐ সমস্ত পুস্তকের অনুধাদ
মাত্র পাঠ করি: পরে অন্তিকাল মধ্যে মূল
গ্রন্থে বিল্লে আন্তিকাল মধ্যে মূল
গ্রন্থের সন্তিও সম্পূর্ণ পরিচিত হইয়াছিলাম। এক বার ঘাহা পাঠ করিতাম, তালা
মাত্র আয়ত্ত প্রদর্জন না করিয়া ক্ষান্ত
হইতাম না। যদিচ বালাবিস্থার যে সমস্ত
পুস্তক অবারন করিয়াছিলাম, তাহার সংখ্যা
অতি অম্পা; তথাপি তৎ সমুদার মারবং
ও ফলোপধারক ছিল তাহার সন্দেহ নাই।

পদার্থ বিদ্যা ও মনো-বিজ্ঞান অমুশীলন করিবার নিমিত্ত আনার অসাধারণ যত্ন ও অনুরাগ ছিল; উহা শৈশবাস্থাতেই আমার অন্তরে প্রীতিকর উহনাহ সঞ্চার করিয়াছিল এবং আমার পিতার স্থান্ত ও বিচারপটু ও স্থান্তর মনো ভির গতি ঐ বিষয়ে থাকাতে আমি তাঁহা হইতেও যথেন্ট সাহাষ্য লাভ করিয়াছিলান। প্রকৃতির রাজ্য আমার চতুলিকেই বিস্তীর্ণ রহিয়াছিল, আমি স্বিশ্বেষ অভিনিবেশ সহকারে উহার সৌন্দর্যা সন্দর্শন ও উপযোগিতা অমুধানন করিটাম এবং বালাকালেই স্বদেশের কীট পাত্রস্থারীস্থপ ও মহন্য প্রভৃতি স্থলতর ও জলচর

জীব কর সকল এবং পুশা কল অভৃতি উদ্ভিদ্ধ পদার্থের সবিলেশ পরিচয় পাল করিয়াছি-লাম। আফুডিক ইতিহ্বজের কয়েক খানি উৎকৃতি পুস্তুক এই বিষয়ে আগাকে যথেত সাহায়া প্রদান করিয়াছিল।

अहे बद्ध चारान विमायूभीवन क्रमन **উद्यक**्ष **स्ट्रेटक**् वृत्वमाश-विद्यम । व्यवस्था করিবার প্রকৃত সময় উপস্থিত হইল। তথন আমি ধ্রমধাজকদিগের বিষয় বিশেষ অমু-ज्ञान कडिया (मधिलांग, छीहाর। मकटलई আয় বিষান বৃদ্ধিমান ধার্মিক ও স্থীল এবং ভাঁচাদিলের চরিত্রও অকলক্ষিত। কিন্তু ষ্টাখাদিগের ব্যবসায় কিছতেই আমার চিত্ত थाकर्षं कतिएउ ममर्थ इहेन ना। নার আড়য়র, উপদেশের দরিক্রতা ও নির-র্থকতা, ঐশিক অভ্রান্ত প্রত্যাদেশ বিষয়ক° মতের অনৈদর্গিকতা ও অভিরতা, দামাজিক প্রার্থনার নির্জাবত। এবং উপাদক্দিগের অ-मत्नार्थां शंडी मर्मन क्रिट्ल धर्म्याक्रत्कत পদ অবলম্বন করিতে বিচক্ষণ বাজি স্বভা-বতই পরাজা্থ হইয়া থাকেন। এতদ্ভিন্ন षारमतिकात वर्मधाष्ट्रकता त्यारकत्र मौकि, বৃদ্ধিত্বতি ও ধর্মপ্রবৃত্তির উন্নতি সাধন ক-রিকে তাদুশ যত্নবান নহেন। যদিও তাঁহারা তবিবয়ে সচেষ্টিত হন, তাহা কেবল বাহ্যিক माज। जामि यथन जन्भवत्रक हिनाम, তংকালে এক ব্যক্তি আমাকে কিজাদা করিয়াছিল : ধর্মধান্তকুরা কি জ্বোত্গণের প্রকৃত দোবের কথা উল্লেখ করিছে পারেন? "यामि कहिलाम" यामि त्याञ्वदश्च त्वाक মুক্তকটে উল্লেখ করিতে পারি"। মহাত্রা रेगार्गन् त्याञ्जात्वत त्याच मर्भन कविता केष्ट्राम्बरभूत निक्षे भवमत व्यादन कृतिया-बिद्रमन्। , जाङाब है।। निः , ज्यादम्बिकात भर्मगोसकिष्टिशव मद्या व्यवान हिटलन कर् णायांत सदय दिनिये ग्रासीदशक्य सरव हा व

করিরাছেন। আমার বন্ধু বান্ধবের। ধর্মধান্ধকতা অতি সামানা কার্যা এবং উহাতে
স্মধিক উপকার সাধনের সন্তাবনা নাই
এই বলিয়া ভাতরয়ে আমাকে বারংবার
করিতাম উহাই অতি বিস্তার্থ কার্যানেক এবং লোক সকলকে সংপ্রে আন্যান কবিবার অ্বিতীয় অবলয়ন।

রাজনীতি সংক্রান্ত কার্যো নানাঞ্চকার व्यत्नां क्र व्याद्धः अहे वायमात्री त्नारकत मर्ता व्यत्वद् उक-भन्छ ७ ताक्रमीविष्ठ বলিয়া সাধারণের সন্মান-ভাক্তন হইর৷ ধা-কেন এবং ধর্ণাযাজক দিগের অপেকা উহঁ। দের সমধিক স্বাধানতাও দৃটিলোচর হইয়া थांदक। এই ममस পर्यादनावना कृतिश আমি রাজনীতি সংক্রান্ত কার্যা অবলয়নে এकाम व्यक्तिभी करेश डेशह व्यक्तीलन क्रिटिंग नोशिनामः; किन्छ প्रतिरूपाय थे वा-ব্যাব্যের দোষ অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হইয়া ष्मिश्चनाम, वावकातांकी वीमित्यत भन्मश्रद्धां इ নিভাস্ত অকিঞ্ছিৎকর। তদ্দর্শনে আমি ঐ-ৰূপ প্ৰলোভনে আকৃষ্ট না হইবার নিমিত্ত मेश्रदात माहाया श्रार्थना कतिलाम । य वि-ষয়টি স্পষ্ট মিখ্যা বলিয়া প্রতিপন্ন হইতেছে. তাহা কিৰূপে সমৰ্থন করিব এবং কিৰ্বলেই ৰা আভিবাকদিগকে ভাষেধ্যে অন্থুমোদন ক্রাইতে সাধ্যানুসারে চেকা ক্রিব! এ-कमा এक वाक्ति नुष् बाह्यहायत वाका छेक् छ ক্রিয়া কহিয়া ছিলেন ''নিখ্যাকে সভ্যৰূপে व्यक्तिभागन कतिएउँ ना शांतिएन (कर वाव-হারাজীবী বলিয়া পরিগণিত হইতে পারেন না"। আমি দেখিলান অনেক ুদ্ধিনান লোক এই ব্যবসারে প্রস্তুত হইয়া যাহা সফলতা বলিয়া অনুমান করেন, আমার বিবেচনায় তাহাই বিশাশ। নির্দোষ লোকের ধনস-ম্পান্ত, খানীনুতা, ও জীবন বিন্ট করা অ

भिक्ता निरूके कार्या चांत्र कि इ*रेटड शाहता*य **এই ममक अर्थ।हनाठनाः कतिहाः व्यक्ति वे** वावमाञ्च अर्मनद्दनः मन्त्रृतं भवाबा्धः व्ह-लाम ७वः स्क्रीयाक्टकक्र कार्या निर्द्धाय वि-বেচনা করিয়া ভাহাতেই জীবন অভিবাহিত করিতে মনোনীত করিলাম। তথন আন-मात्र मरमामरधा এই ভিনটি অগ্ন উপস্থিত। रुहेल। आणि कि क्लांग मध्यमात्रविष्ण-বের শিক্ষান্ত বাক্যে অভিভূত না হইয়া প্র-ক্ষুত পতা অনুসন্ধান করি:ত পারি এবং উহা সাধারণের অনাদৃত ও অপরিগৃহীত হইলেও कन-मगरक मुङक्टर्थ चौकात कतिरु मनर्थ रहे ? जामि कहिलाम हैं। हेरा जानात म-ল্পূণ স্থ্যায়ত। আমি কি স্থাজের বিরুদ্ধ, রাক্ষনিয়দের বিরুদ্ধ ও খ্রীটীর ধর্মের বি-মুক্ত অধিকার অনুসন্ধান পুর্বাক ত-দিষয়ে সাধারণকে প্রবর্ত্তিত করিতে পারি ? आभि कड़िलाम हैं। ऐका आमात मन्भूनी সাধায়ত। আমি কি প্রত্তসতা ও প্রকৃত व्यक्षिकात खार व्यवसम्बद्ध क्रिक ममर्थ हरे এবং ষাহা অনাকে উপদেশ দিয়া থাকি ভাষা কি স্থাং কার্যো পরিণত করিতে পারি ? ভখন আমি এই বিষয়ের প্রত্যুক্তর श्रांदन मन्त्रिक इट्लाम। छेश्रास्मासूक्र वावश्तं कता वड़ महत्र वाशितं नटह। কিন্তু আমি কহিলাম আমি ভবিষয়ে যত্ন ও অধ্যবসায় এদর্শন করিতে পারি।

এই তিনটি প্রশ্নে ধ্রুপ ছ্রবগাই ও গভীর ভাব অভিব্যক্ত ইইভেছে,আমি তথ-কালে উহা অভি অপ্পই বুরিয়াছিলাম; িন্দু একানে অপেকাক্ত সমধিক হার্মক্রম করিয়াছি।

এই সমস্ত পর্যালোচনা করিয়া আদি ধর্মধালক পদে প্রতিষ্ঠিত হইকে অগ্নাবসা-াক্ত হইলাম। মনুবাদিসকে স্থীবিকের গুধান উদ্দেশ্য ধর্মোপার্কনে সংখ্যায় স্থাপন

अविश्व जान रमय है स्टेटक आश्वित कर्मन जानि एव विकास्त्रकारन वर्षानिका क्**रेट्ड** नाटक, जाइडक क्रिक् कर्याच्या आहित मस्तीनस्य धर्व क्षेत्रका । यावव ही-क्षित धटकात मन्त्र चासून्।वस कतिया कि चिलाम, তাহাতে আমার বিশ্বস্থ সংশয়শউপস্থিত रहेन। **उचारा कडकछन्दि अक कार्टन**हें क বীকার করিলাম এবং কডকগুলি বখাছধ-ধিং সিদ্ধান্ত করিয়া লইলাম। আমি বৈশ শবাবছাতেই শান্ত-শ্বপ ঈশ্বরে ক্রোধ-প্রবৃত্তির আরোপ এবং অনস্ত কাল ভয়কর নরক-বস্ত্রণা ভোগ বিষয়ে সম্পূর্ণ অবজ্ঞাও অশ্রদ্ধা প্রদর্শন করিতাম। বধন আমার বয়ঃ ক্রম দাভ বৎদর, তথনও ঈশার ভায়ের কারণ বলিয়া আমার বিশ্বাস ছিল না স্কুডরাং তাঁহা হইতে আমার অন্তঃকরণে কলাচ কিছু-মাত্র ভয় সঞ্চর হইতনা। শ্রভুতি তিনি চির বিশ্বাস ও স্থির আঁতির আধার বলিয়া ' অবগত হইয়াছিলাম।

দেবত্রয়বাদী প্রি**ডী**য়।নদিলের মত নিতান্ত অমূলক,উহা কিছুতেই যুক্তি ও বিচার দিছ विनयां श्राष्ट्रभाषन करा बाहरण शादा ना। यमि अपामि अव-मेश्वत्यांनी मेजिति दिशान् বি্দীরান সম্প্রদায়ের মধ্যে কম্প্রেছণ করিয়া-ছিলাম,ভথাচ এক বংসর কাল আমেরিকার অটেস্টান্ট ধর্মাজক ডাক্তর লিমান ৰীচারের উপদেশ ভাবণ করি। তিনি 🖛 ৰলম্বিত ধর্মের মত অন্সান্ত বলিয়া ভাষাতেই निकास वृक्ति कतियाष्ट्रियम। ये महाजा ইউনিটেরিয়ান, ইউনিবার্দ্রিকি, পোল-মতালয়ী ও নান্তিকদিনের নহিত ধর্ম কং ক্রান্ত মততেদ নিবকাৰ ছোৱাছর: বিভিঞ্ করিতেন। আমি উহৌর সংস্থাপিত স-कार भवन श्रुक्त डिस्तार मन्त्रम बार्कि मिटगत्र व्यक्षिये मटख्या योको व्यक्ति गरमन, नकीक ও बार्चना अवन कहिलान।

আনি ভাষার বৃদ্ধি, বৃদ্ধ ও অধ্যমনতির

কবিশেন আনংলা করি। তিনি আয়ান ও

পরিত্রন জীকার পূর্বক আনাকে ধর্মণাতের

শিকাশ অনার করিয়া ছিলেন কিন্তু কোন

করিতে নমর্ব হন নাই। আমি ভাষার

একলিভি মুক্ত হত প্রগাঢ় অভিনিবেশ

সহসারে অনুধাবন করিভাম, তভই উহা

অনুসত, ভূনিত ও অস্বাভাবিক বলিয়া প্রভিপান হইত।

বিশুপুরেটর অনৈসর্গিক জন্ম-বিষয়ে বিশাস বজমূল করিবার নিমিত আনি কোন বিশেষ শ্রমান প্রাপ্ত হই নাই। বাইবলে যে ৰূপ শ্রমান প্রাপ্ত হওরা যায়, তাহা নি-ভাত অসকত ও অমূলক। তাঁহার জননী মেরি এবং তিনি স্বয়ংও এই বিষয়ে কিছুই শ্রহাশ করেন নাই।

মূতন ও প্রাচীন বাইবলে নানা প্রকার
অলৌকিক ক্রিয়া কীর্ত্তিত আছে; কিন্তু তৎসমুদার নিভান্ত অবিশ্বাস্য ও অপ্রেজের।
ঐ সমস্ত অলৌকিক কার্যোর মধ্যে কতকশুলি সম্পূর্ণ অসম্ভব, কতকশুলি একান্ত
উপহাসাম্পদ এবং কএকটি নিভান্ত ক্রের।
এই সমস্ত কারণে আমি অধিকাংশ এককালে অবিশ্বাস করিলাম এবং অবলিফী
সামান্য-কণ সিন্ধান্তের উপর নির্ভর করিয়া
অনুমোদন করিলাম। ক্র্মনীশ্রর যে প্রাকৃতিক নিয়ন অতিক্রম করিবেন, ইছা কবনই যুক্তি ও অনুভব সিদ্ধা হইতে পারে
না। স্তরাং বাইবল-প্রনীত ঐ সমস্ত অলৌকিক কার্যা স্বর্ণ-নির্দ্ধিত প্রস্তর পারের
নায় নিতান্ত অসকত সন্দেহ কাই।

বাইবল সম্পূর্ণ অত্যান্ত ও ক্রম্বরের গাঁকার অত্যাদেশ বলিরা কোন ক্রমেই বীকার করিতে পারিনা এবং উহার অলো-ক্রিকারিকাটিনের বিবদেশ বিদ্যালয় সংস্কৃত भारतंत्र माहिन्छात वर्तिक आस्म का विश्वत्र में स्वाहित्य महिन्द्र महिन्द्र

ডুইড মত।

ইউরোপের অন্তপাতী গাল, কর্ণনি ও বিটেন বীপে খ্রীফ ধর্ম প্রচারের পুর্বে যে প্রকার ধর্ম প্রচলিত ছিল তাহাই ডুইড্ মত বলিয়া পরিগৃহীত হইভেছে। এই ধর্ম সংক্রান্ত যাবতীয় কাষা ডুইড্দিগেরই হস্তায়ত্ত ছিল এই নিমিত্তই ইহা ডুইড্মত বলিয়া প্রসিদ্ধ হইয়া আছে।

पुरेष नांदम कर्की खंडल कांकि कांन कांटलरे विमामन हिल ना । क (मट्म एयमन खंडी हार्या विलया कांन कांकि नारे, माल विद्याल कांकिया विलया कांकि नारे, माल विद्याल कांकिया विलया कांकिया कां

केक नगरत चात्रकदर्य जान्यत्नत्ति

मद्भानकी हिल्लन: अगापि काशत हाला বর্তমান আছে। ক্ষত্রিয়ের। রাজা ছিল বটে। किस बाब्यत्वहारे वावचा ध्ववहन कतिएकी, বিচার করিজেন, 'পৌরোহিড্যা করিজেন, व्यवः व्यक्ति इहेटचन। त्क्वन युष्कटक्करज রাজাদিগ**কে রাজা** বলিয়া বোধ **হইত।** ডুই-ুড়দিগের অধিকারও সেট রূপ ছিল।ুএক এক রাজ্যে এক এক জন অধিপতি ছিল, ভাহারা কেবল যুদ্ধ-ক্ষেত্রে দৈনাগণের অধ্য-ক্ষতা করিত, অন্যান্য যাবভীয় ক্ষমতা ড ইডগণের হস্তগত ছিল। তাঁহারা বাবস্থা অব্যান করিছেন, ধ্যবস্থা এচার করিছেন, मकल विनत्य माथि अन्। व विषयि कविष्डम, मखोक्टक मध्य भिटक्री। এएमरमा खोक्तन-দিগের মভানুদারে না চলিলে বেমন সমা-জ-চ্যুত কইতে হয়,দেই ৰূপ খাহারা ডুইড দিলের দণ্ড বিধান অমান্য করিত, জুইডেবুরা ভাষাদ্যিকে যজ্জ কাৰ্যো আসিতে দিতেন सा. काशह व्यक्तियांत व्यक्षाश स्टेट; धवः লে'কে তাহাদিগকে ছাভিশপ্ত ও অপবিত্র বোধ কার্য়া ভাছার ্নুং দর্গ পরিস্কাাগ **事 (5)**

ভূইভেরা লয়মান শাশ্বন ও মন্তবে অ
বীঘ কেশ ধারণ করিতেন, সচরাচর প্রশস্ত পরিচ্ছদ ও ধর্মকর্মের সময়ে শুল্র পরিচ্ছদ পরিচ্ছদ ও ধর্মকর্মের সময়ে শুল্র পরিচ্ছদ পরিচ্ছদ ও ধর্মকর্মের মায়াদও নামে একটা দও ধারণ করিতেন। তাঁহারদের গলে একটা করিয়া প্রশমর মায়লী থাকিছ; তাঁ-হারা তাহা প্রশাহ্রাদিত সর্প-ডিম্ব বুলিরা লোকদিগকে সুঝাইগা দিতেন এবং এই কপা প্রচার করিয়াছিলেন যে, অনেক সর্প এ-কত্র হইয়া ডিম্ব উৎপল করে, অনন্তর উহা সর্পগণের নিশ্বাসে আকাশে উপিত হয়। ডিয়াথী ব্যক্তি ক্রত্রামী অন্যে আর্মেইণ্ড প্রক্র এ ডিম্ব পুনরার ভূতকে না প্রিক্তি

ভাষাতে সর্পাণও কুল হইয়া তাঁহার পাশাবিদ ধাবনান হইছ; বত কণ কলা বো কোন বোক না পড়িব, ফছ কণ সংগ্রিয়া কাল হইছ না। প্রকৃত ডিছ স্বৰ্গাল্টানিক ক্রারিয়া কালে কি ক্ষেপ করিলে আনিছে লালিছে জ্যোভের বিপরীতে গমন করে। উহার বিশেষ এব এই যে, উহা স্থানিতিত করিয়া ধারণ করিলে কেহ বিচারে পরাস্ত করিয়া ধারণ করিলে ধনশালী পরাকাল লোকের ক্ষীতি-ভালন হওয়া যায়।

জুই জেরা তিন শ্রেণীতে, বিভক্ত ছিলেন। এক শ্রেণী এদেশের বন্দীদিবের
ন্যার লোকের বংশোপাধান ও ব্যারগণের
বীর-কার্যা বর্ণনা করিতেন, আর এক শ্রেণী
ভবিষাৎ গণনা কান্য রচনা এবং ধর্ম কার্যার সময়ে গান ও বাদ্য করিতেন। তৃতীয়
শ্রেণীর ভুইডেরাই ধর্ম সংক্রান্ত কর্ম সকল
অনুষ্ঠীন করিছেল। ভুইজিদিবের মধ্যে
এক জন ভুইড শ্রেণান থাকিছেল। ভুইডেরা আপ্রনিদের মধ্য হইতে কোন সম্ভাক্ত
ব্যাক্তিকে প্রধান পদে প্রতিক্তিত করিয়া তাঁহার অধীন হইয়া চলিতেন।

ভূইভেরা একেশ্বরণী ছিলেন এবং ওক বৃক্ষকে তাঁহার প্রিয় আবাস মনে করিয়া ওক বৃক্ষকের স্বিশেষ সন্মান করিভেন; এমন কি, ওক বৃক্ষ কণে কথারের পূজা করাই জাঁহা-দের প্রধান উপাসনা ছিল। এ ছেলের বিল্পতা ও তুলসী পজের নাার, এক বৃদ্ধ বাজ্বেকে তাঁহাদের কোন পূজা ও ক্ষোন ধ-মানুষ্ঠান সম্পন্ন হইত না। তাঁহারা ওক বৃদ্ধ বাহা কিছু উৎপন্ন হয়, ভাষা কথার ক্ষান্ত করিয়া মিলিল্টো নামক পর্বাহা এক বৃদ্ধে উৎপন্ন হইলে ক্ষান্ত স্থাক ক্ষান্ত ভূইভেরা স্থাকেছি পূর্বক ওক বৃদ্ধের কি ভূইভেরা স্থাকেছি পূর্বক ওক বৃদ্ধের কি তুই শৃলে ওক রুক্ষে বন্ধন করিতেন। তৎপরে শ্রধান ডুইড শ্বেড বন্ধ পরিধান করিয়া
থা ছুরিকা হতে সইয়া রক্ষারোহণ পূর্যাক
মিনিল্টো ছেন্ন করিডেন; আর এক জন
ডুইড রক্ষতলে শুক্র বন্ধ্র পাতিয়া রাখিতেন,
এবং ছেনিত মিনিল্টো ভালার উপর পতিত
হইলে কুড়াইয়া স্থবর্ণ পাতে সংস্থাপন করিতেন। তৎপরে নানাবিধ বলিদান করিয়া উৎসব করিডেন। এক সময়ে পার্সা
নেশেও মিনিল্টো পরগাছার অভান্থ সমানর ছিল।

कु हेट छड़ी । এटक श्रव वाणी हिटलन वट छै, किस कानकरम छल स्र्या नकव गर्भ প্রভৃতি স্থী বস্তু এবং মনঃ কম্পিত নানা रनव रमवौतः । जेशामना कतिराज्य । चाजीकः দেবভার উদ্দেশে অগ্নিতে আছ্তি দান এবং পশু ও মনুষাকে বলিদান তাঁহাদের উ-পাসনার প্রধান অঞ্ছিল। ভাঁচারা এই দকল ধর্মা-জিয়া দম্পাদন করিবার নিনিস্ভ ঘনের মধ্যে কতক ভূমি পরিস্কৃত করিয়া বৃহৎ বৃহৎ ধান্তর ঘারা ভাহার চতুর্কিক বেউন করিতেন; ভাহার মধ্যে প্রথমে তুথানি শস্তর দিয়া বেনী করিছেন। **এ**ই বেদীসে ভাঁহাদের ছোম ও বলিদান ক্রিয়া সম্পল হইড; যে সে ব্যক্তি তাহার মধ্যে প্রবেশ করিছে পারিত না। যাহার। ভুইডদিগের উপর সম্পূর্ণ নির্ভরের চিহ্ন স্বরূপ এক প্র-কার শৃষ্ণল ধারণ করিয়া আসিত, ডুইডেরা (करन क्रांतिभटकरे व्यटनम क्रिट्ड मि-(फन। भुइछिन्दिशंत वार्धिक मटहादमवानिष् এই একার ছানে অ্রুটিত ছইড। ডুইড গণ-**८क्द्रा भ्रमामित विमान ममटत डाइरात अ**ख गक्त मर्भव कतिहा छविदार क्रान्य कर्मन क्तिएकत। बहु बलिइ समस्य बलि प्रकृप मधु-যোর ৰক্ষঃস্থলে থড়্গাঘাত করিয়া দেই रव्याता कि धरादि कृष्टम शक्षि रह,

কোন্দিকে ভাহার রক্তপারা নিঃস্ত হয় এবং कि बार्प रम खक्र विस्कर्भ करत छ-ব্দুটে ভাবী শুভাশুভের অবধারণ করিত। **क्वल निर्मातिङ मनराष्ट्रेश विमान इरेड,** ভাহ: নছে। কেছ নুদ্ধকৈতে অভাস্থ বিপাদে পণ্ডিত অথবা ঘোরতর রোগে আ क्लाच कवेटल, এटकड श्रीत्रदार्ड छश्रदात व्यान मांन ना कातरल (नवशन धमझ इहेरवन না, এই ভাবিয়া নর বলি দিত অথবা তৎ-कार्गाएक नत् र्वात ना मिय्रो । प्रत्यादनंत निकारी নর বলি দিনার অঞ্চীকার করিত: ভিন্ন আর এক প্রকরে ভয়ক্তর নরবলির প্রথাও প্রচলিভ ছিল। সময় বিশেষে ও ঘটনা বিশেষে লভা নিৰ্দ্যিক মনুষ্টাকগ্ৰ এক পিঞ্চ প্রস্তুত করিত এবং রাজ বিচারে যে সকল বাক্তি পোষী বলিয়া স্থির হইত, তাহাদিগকে ওদ্মধ্যে প্রবিষ্ট ক রিয়া দিত ; ভাহার মধ্যে নানা বিধ গশুও থা,কত। যদি অপরাধিগণে নেই পিঞ্জুর পরি-পূৰ্ণ ৰা হটত, ভালা হইলো নিভান্ত নিৰ্দোদী वाक्तिरक७ मिडे यश्राधीमित्रत सकी क हैटह इहेह। अहे अकारत मिहे शिक्षत পরিপূর্ণ ছইলে ভস্মদাৎ করা ছইছে।

ভুইডনিগের চারিটি মাহাৎসব ছিল।
মার্চ্চ মাদের প্রথম ভাগে (১০ই অথবা
তাগার চুই এক দিন অগ্র পশ্চাৎ.) যে দিনে
মতী তিথি শড়িক, সেই দিন নব বর্ষ নিবন্ধন
মহোৎসব হইত। দ্বিতীয় মহোৎসব সে
মাদের প্রথম দিবসে হইত। এই উৎসবের
পূর্বে মন্ত্রায় মকলের গৃহে ধাবতীয় আয়ি
নিব্বাণ করা যাইত এবং পর দিন দেবমন্দিরের চির-প্রজ্জানিত অয়ি গ্রহণ করিয়া
নিক্ষ নিজ গৃহে লইয়া যাইতে হইত। জুন
মাসের একবিঃশ্রুদিবসের পুর্বাহেল ভাঁছাদের
ভূতীয় মহোৎসব ও অক্টোবর মাসের
শেষ দিনে চতুর্য মহোৎসব হইত

কালের করাল হত্তে সংসারের সমুদায়ই পরিবর্তিত হইতেছে, কিন্তু আআর সাভাবিক বিশ্বাসের উপর ভাহার কিছু
মাত্র অধিকার নাই। ডুইডেরা প্রায় সকল
বিষয়েই ভ্রমান্ত্র হইয়াও আত্মার অমর্থ
বিষয়ে দৃঢ় বিশ্বাস করিতেন এবং হিন্দুদিগের ন্যায় আত্মার জন্মান্তর অঞ্চীকার করিতেন। ইহা দারা একটি বিলক্ষণ উপকার
ইয়া ছিল। যোদ্ধারা এই জন্মান্তরবিষয়ক
উপদেশে মুহাকে তুচ্চ জ্ঞান করিছা যুদ্ধক্ষত্রে অসাধ্রেণ সংহস প্রকাশ করিত।

ভুইডেরা মৃত বাজির সমাবি প্রদান ক-রিত এবং পর-জন্মে উপকারী হইবে বলিয়া বছু মূলা অলঙ্কার, বিবিধ অস্ত্র শস্ত্র, ধুনচী, পান-পাত্র ও কখন কখন কুকুর প্রভৃতি জন্ত-দিগকেও শবের স্ভিত একত করিয়া মৃ'ন্ত-কার সধ্যে প্রোধিত করিত।

জ্ইড়াদ্বের ধর্ম-শাস্ত্র কেবল পরমার্থ বিষয়ক ছিল না; মীতি স্তি,কাবা জ্যোতিদ ও আয়ুর্বেদও ধর্ম শাস্ত্রের অন্তর্গত ছিল ! ভীছার জোতির্বিশার কোন কোন অংশ ও চাক্রনাম গণনা করিবার রীতি অবগত ছিলেন; কেন না চাক্র দিন অমুসারে তাঁহা-(मत उँ भन मकल अनुष्ठिंड इंड्रेंड, येथी তিথি আরম্ভ করিয়া মাস ও বৎসর গণনা **১ই**ত এবং এই অমুদারে তিশ বৎদর অন্তর ভাগদের এক এক জ্যোতিষিক মহা-एक मन्त्रवाहरू । एकार्जिनिया पृष्टिना थाकित्व अक्षेत्र क्रेवांत महावना नाहै। এ-ভদ্তির আনত প্রমাণ আছে। আয়লতেও রঙ্গু ভাষ্ নিজ্ঞিত একটি চক্র পাওয়া গি-য়াডে। ভাহার নেমিভাগে চন্দ্রের কক্ষ নি-র্দ্দিউ আছে ও চলুকলার হাস বৃদ্ধি প্রাদ-র্শনের নিমিত্ত ভাহাতে আটটি অঞ্বীরক সংযুক্ত আছে এবং তাহার আভান্তর ভাগে পৃথিবীর কক্ষ অদর্শনের নিমিত্ত আয় এ-

কটি কুদ্র চক্র অবস্থিত আছে। বোধ হয় ইহা ডুইড জ্যোতির্বেজাদিগেরই ব্যবহার্যা ছিল, আয়ল তেও ও ওয়েল স দেশে কতক গুলি চক্রাকার বৃহৎ বৃহৎ প্রস্তর, অদ্যাপি ভূমিতে প্রোধিত আছে, বছকাল অবধি উহা জ্যোতির্বিদ্দিগের চক্র বলিয়া কিংব দন্তী আছে।

शृत्क छेक श्रेताह य, हिनिस्मा শাস্ত্রও ভূইডদিগের ধর্মশাস্ত্রের অন্তর্গত কিন্ত চিকিৎসা বিদ্যাতে ভাঁহাদের কি ৰূপ অভিজ্ঞা ছিল, ভাহা নিশ্চয় বলা যায় না, ভিষেত্র মামানা সামানা ঔষধ প্রস্তুত করিতে পারিতেন ভাষার দলেক নাই। ভাষার: खेयव रगवन कारण नानांविव अगना छाउः ভাবী শুভাশুভ নিরারণ করিতেন এবং রোগোপশমের নিনিক্ত হিল্ফুদিরের ন্যায় বিবিধ দৈব ক্রিয়ার অন্তর্থান করিতেন। তাঁহার উষধের নিমিত্ত যে সকল উদ্ভিক্ত ব্যবহার করিতেন তাহা সংগ্রহ করিবার বিশেষ বিশেষ নিয়ম ছিল। তদকুসারে रि मक्न मध्यम् ना क्रिट्न (केवन सास्)-বিক গুণে আরোগাকর হইবে বলিয়া তাঁ-হাদের বোধ ছিল না।

শিক্ষা কার্য্যের ভার ডুইডদিনের হস্তেই
সমর্পিত ছিল। যাহারা উত্তর কালে ডুইড হইবে, ভাহারা কেবল ভাহাদিগকেই
শিক্ষা দান করিতেন। শিক্ষা দিবার নিমিজ নিবিড় অরণ্য মধ্যে তাঁহাদিগের চতুল্পাসী ছিল, তথায় ছাত্রেরা কথন কথন
বিংশতি বংশর পর্যান্ত শিক্ষা গ্রহণ করিত। তাঁহারা বিষয় কর্মের সময়ে পত্র
লিখিনে পঠন ব্যবহার ছিল না । ছাত্রা
দিপতে কতকতালি লোক মুক্তে মুবে আর্থি

none could invert the outline portrait of Jesus, no difficulty appears in the way of a theory, that the moral sentiment of the church has cast a soft balo over a observer perhaps rather stern and ambitious, than discriminating, wise, or tender.

We cannot recover tost history. Into the narratives and discourses of Jesus so much of legendary error has crept that we may write or wrangle shout him for ever: Paul is a palpable and positive certainty. In what single moral or religious quality Jesus was superior to Paul, I find myself unable to say. Is it really a duty incumbent on each of us to decide such questions? Why must the task of awarding the palm of spiritual greatness among men be forsted into

religion!

It is a fact on the surface of history, that Paul, more than any one else, overthrew ceremonialism. Hereby he founded a religion more expansive than that of Isaiah, and, in his fund belief, expansive as the human race, as the children of God. He was not the first Jew to propound the nullity of corrections. If time allowed, that topic might a into instructive amphibiation. The controversy orgainst ceremonies was inevitable, and, with or without him, must have been fought out. What he effected, let us thankfully record; but God does not allow us to owe our souls to any one mun, as though he were a fountain of life. It is an evil thing to call ourselves a man's followers, to express devotion to him, and blazon forth his name. Every teacher is largely the product of his age; whatever light and truth he imparts, the glory of it is due to the Father of Light alone, from whom cometh down every good and perfect gift. Any glory for it would be inexpressibly painful to a true-hearted prophet; I mean, for instance, to and true hearted as Paul. He had no wish to be alled Master, Master. He could not bear to show yo have believed?" What! when a man behaves himself to be the channel Ly which at has pleasad the Unseen Lord to pour out some postion of hidden truth for the feedings of huntry souls, can such a one hear to be praised and thanked for his ministrations ? Nay, in proportion as he knows himself to speak God's truth In the impulse of God's spirit, in the same properson he feels his own personality to be annihilaind, and he broathes out an intense desire that God in him may be glorified, but the man be forgotten. Fray then; fet not us thwart and countowart such gearnings of the simple-hearted intotructor. Hear Paul himself further on this matter. "Let no man glory in men; for all things are yours; whather Paul and Apollos or Gephan, or the world or life or death, or things present or things to come all two pours. Homesas that the collective children of God are the end for whom God has provided teachers as took and instruments. But this is not all. Is proportion as the teachers are elevated, the taught become unable to judge of their relative rank in honour. Paul therefore for bad the attempt, and deprecated praise. "With me," he continues "to is a very small, thing that I submiddingly and you or of man's judgment you. I judge my connect labels he shad parents was the front. Therefore judge nothing before the time, walk the Land come; who detheats the fact will be a land on the content of the first to light the hidden faings of declarate and what a manifest the connects of beauty with the had every What else did he mean to say but: Think not to distribute awards among those to whom you look up. To graduate the claims of equals and inferiors is generally more than a sufficient task. Leave God to pass his awards on those who are spiritually above you; who possibly, like Paul, may rereive your praise as poinful, and to wholly unconcerned at your blame. The glorifying of religious teachers has hitherto never borne any fruit but canonizations and defications, "voluntary humility and worshipping of messengers," vain competitions and rival sects; stagmation in the letter, quenching of the Spirit.

By Francis W. Newman.

কলিকাতা ব্রাহ্মদমাজের ১৭৮**৬ শকের ভাজ,** ক্ষান্মিন, কার্ত্তিক ও অগ্রহায়ণ মা**ংসর** আয় ব্যয় বিষয়া।

	1161 176		., ,		
আয়			•	200	!
र्श्वका	র স্থিত	•	1	•	95
					2/0
ৰ্যয়			• •		340/30
मण्योक	क्तं इट्ख	•••		4	21970
		if the state of			₩.
	वगटक	* * ·	•	' e"	
কোং ব		• •		_	anger (
	দিগের প্রতিজ্ঞ		इंद न		
	त्रमगीरमाहन कोष्	त्री	• •	,	₹ €
44	चिवष्ठऋ पन्व	• •	• •		>2
£:	कालिकामान मख	• •		• •	ť
"	त्शाविक्र छा भेड	• •	• •	• •	¢.
44	द्रामकानाडे त्मन		• •	• •	8
*6	वाकनांत्रभन मान				•
44	त्रामहस्य भाग			• •	ર
. 64	नीनगाधव मिक		4. "		ર
a	ক্রনাপ দাস			• •	ર
6;	প্রসার কর্মার দক্ত	• •		***	₹'
76	मनिज्ञाल मलिक			• •	2
"	बमस्कृषात मन्ड	• •	• * •		২
"	প্রজাপচন্দ্র থোক		v •	• •	5
4 18	मदरसमान मिक		***		5
## S	विशानिक्स महि	₮			>'
. et	खात्रकगाच मंड		• •		\$
· 60	मध्यम चाउँ।		••		\$
હે	इतिरक्षाद्यः व्यक्त				\$
6,0	टकाउटमास्ट िबंद				5
. 66.,	कामधनाथ गारा				45
	可管别·安		••		5
40	श्वामकूमात्र विश्व	ল	ۍ - • دست	,	3
	कार्डिकावन गरि				. 11 •
4	the facility of the section is	अग्रा	* / Y .		, Marc
	A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH	क्र सराज	e ne je	• .	- Barrel

	মাসিক দা	म <u>।</u>	
314	त्राका मधानंत्रण त्यांचा	剂	q
£4	कि, धन, शक्नेशिका	9	88
64	গোপীদোহন খোষ		२०
16	त्रमाध्यमान स्रोधः		==
**	इमनीस्माहन कोधूरी		58
64	western es		٠.
* <	नेश्रवहता (वक्रामागड		b
۲.	क्रांका आमनगातायम क्र	ty .	:2
u	रेवकुर्छनाथ रमन		৬
1.0	উপেख माइन ठेर्कुड		<u>ب</u>
46	भारतत्वामाथ राकुः		3
"	क्षप्रशाभाग (मन		G.
fi	মদনমোহন সেন	• 4 • •	ં છ
4.0	द्रापाठल ध्यायांन		٤ ,
(\$	मा भवनात मञ्		٤
6 4	नीनकमन बल्हाभाष	ाष	_ `
	,		३ %२
	শুভকর্মের	मान ।	1
जी गुख	म्दिसमाध ठाकुत	••	C m
16	শ্ৰীরাম পালিত	••	9
16	इस्पन्न मास्त	•••	30
4.5	इर्गाठ्यं वहाउ	•••	\$ i
16	कालीनाथ भड	••	
			691/3
	এককালীন	मान्।	
खीर्ड			{
"	कि, भार, यि		,
4.4	জিংল'চন ব য		5
"	वस्यीकास अगे हाशा		10
			910
भागाध	दिव मान थ्याः	4 +	3h/30

বিজ্ঞাপন।

কলিকাতা ব্রাক্ষণমাজের কার্য্যের ভার ভাহার টুকী প্রীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর মহা-শর স্বয়ং গ্রহণ করাতে তৎসংক্রান্ত সম্পত্তির সহিত আমারদের সম্বন্ধ অদ্যাব্যি শেষ হইব।

্ৰী তারকনাথ দত।

এ উমানাধ গুৱ।

व्यथाक।

🗐 (कर्षं बहस्र (गर्म ।

APPITE

> পৌষ >৭৮**৬ শক**। वि क्षणां भारतीय । सन्देशीय प्रस्तावक कतिकांका बाक्यबाटका वृक्कि कर्-याती क्यांगना कार्या मेल्लाबटना कटना क्रियुक्त विद्यासनाय बाक्यदिक कार्या सन्त्रा-मकीय कार्ट्या नियुक्त क्रिया श्रीत स्थान स्वित्रीय विक-गण्यांक कार्या कर्या क्रियांका स्थान

কলিকাতা ব্রাক্ষণমাজের ^{গ্}র্ণস্থিতিকর
নহায়তার নিমিত্ত শ্রীযুক্ত, অবেশিয়ানার
পাকড়ালী মহাশয়কে সহকারী সন্পাদকের
পাদে নিযুক্ত করিলাম।

कि तमटचल्यानाथ ठाकुत । कतिकाण डाक्षमगात्मत है के।

ব্রাক্ষধর্ম প্রচার উদ্দেশে কলিকাতা ব্রাক্ষদমাজের দান সংগ্রাহের জার জীযুক্ত প্রভাপচন্দ্র মজুমদার মহাশয়ের থাতে অর্পিত হইল। তিনি দাতাদিগের অভিমান দার্থা ব্রাক্ষধর্মের প্রচার কার্যো ভাচা বায় করি-বেন। ঘাঁহারা ব্রাক্ষদমাজে উপাদনা কং-ঘাঁব বায় নিকাহ দিনিত দান করিতে ইচ্ছা করেন, সেই দান তাঁচারা জীযুক্ত ছিছে দানাথ ঠাকুরের নিকটে প্রেরণ করিবেন।

> জী দেবেলনাথ ঠাকুব। কলিকাডা রাজসমাজের টুক্স।

আগামী >> মাঘ সোম বার অপরাহ্ন ৭ ঘটকার সময়ে কলিক,তা পঞ্জিংশ সাম্বদারিক ব্রাহ্মসমাজ হইবেক। ব্রাহ্মগণ এখান আচার্যা শ্রীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ সাকুর মাহাশরের ভবনে আগমন করিয়া ব্রহ্মোপা-সনা করিবেন।

> জী विष्काञ्चनांथ ठाक्त। সম্পাদক।

ধাঁহারা প্রাক্ষণ মাজের পুস্তকালতে বিজয়ার্থ পুশুক রাখিয়াছেন, উাহাদিশকে বিজ্ঞাপন দেওরা
বাইতেছে বে, আখামী ১লা নাম অবধি দেই সকল
পুস্ক বিক্রের মূল্য হইতে চতুর্বাংশ কমিসানু লভয়া বাইবে। বাঁহারা অমুবিধা বোধ করেন, বর্জমান পৌৰ ঘালের মধ্যে মুখ পুজক লইয়া বাইবেন।
বিজ্ঞানী আবৈধিগানাক শোক্তামী।

गरकाष्ट्री मन्त्रापक ।

আগাণী ১৯ পৌৰ ব্ৰিকার ব্যৱস্থা আৰু স্বাক্তের সায় ব্যৱস্থা ক্ষা ক্ষান্ত ব্যৱস্থার ব্যৱস্থা ক্ষান্ত ক্ষান্ত ব্যৱস্থা ক্যান্ত ব্যৱস্থা ক্ষান্ত ব

উ**ছ্ত।** ভবানীপুর ব্রহ্মবিশালয়। ————

्थाधान चाहार्यात डेशरमम्। विजीस मध्या।

1 30 देवलांचे 316 व लका

जाना धरमीत अथम वारकात ভारशर्रार करे वरे আছে বে সকলের আত্মাতেই ব্রন্দের অনম্ভ-মঙ্গল-ভাব স্ববিন্ধর অক্ষরে বিথিত আছে। ভোমরা चीय चीय आजारक अनुमक्तान कतिरलहे अनस-পর্মপ মঞ্চল-মর্কপা ঈশ্বরের পরিচয় প্রাপ্ত হটবে। মাজএৰ অন্তদু ডি স্বারা দীয় আহাতে ক্রণ্ডে দেখা সাধারণ মনুষা জাভির মধ্যেই আন্মাজান আছে। আমি যে আছি, এ জান মনুষ্য মাতেরই আছে। আত্ম-ভ্ৰাম থাকাতেই আল্লার অন্তিত্ব বুকিতে পারিভেছি। আমি কিছুই ন'হ, এই বাফ বিষয়-मकबारे जावर, जत्य रेश्विमिश्वक प्रिचित्क क ? ध दम्बिटकट्ड, ७ वाङ्ट्य दम्बिट्डिंड, डेराता পরস্পর অভান্ত ভিন্ন। ধে দেখিতেছে, সে আমি ; আর ধাহাকে দেখিতেছি, সে এই প্রাচীর। ধে আপদানে না জানে, যে পরকে কি' প্রকারে জা-निर्देश शहरक जानियांह्र महस्र महस्र आश्रेनारक জানা যায়। আহার সহক্ষে এই শরীরও পর। আত্মা যথন এই শরীর হইজে উৎক্রমণ করে, ভখন এই শরীরেভে আর এই প্রাচীরেভে বিশেষ কি গাকে ও ভখন এই শরীরও আচীরের নাায় নি-खक रुरेश वासा मंद्रीरत निमग्न इरेस। ध्यापरम খীয় আত্মাতে দেখ, সকল সভোর মূল পদ্ভন্দে থিতে পাইবে; ভাহাতে প্রনামার উজ্গ-নঙ্গল-দ্বি দেখিতে পাইবে। বক্ষ-জ্ঞান-রূপ যে স্থগীয় অগ্নি দকলের জ্নয়ে নিহিত আছে, দেই অগ্নিই আত্মার ক্যোতি। সেই আত্মার ক্যোতিতে অন্ত-র্ঘটি বারা বীয় স্পাত্মাকে দেখিলে ভাহাতে পর-माञ्चात अमस-मनन-छात त्विर्ड शाहरत। त्रह जनस-मझलान्दे अविन्यत जन्दा मन्दलत छ। ^{আতেই} ব্রক্ষের অন্ত-মঙ্গল-ভাব অবিনশ্বর অকরে निथित आहरू, मक्टनबर्टे क्नटब जन्म-जान-क्रथ वर्गीत जीत जास्त्र छाटा निश्वि जारे ; जार-र्वाट्य विकासम् कार्यास्य कार्याच्या वाता स्वार जागरक अक्तिक कहिरकहे जाचारक शहराजात चविनचत्र-महन-मुर्खिः । छामात्रस्य स्थान-स्तरवात व्यक्तक रहेरव। त्र जानवात्र जात्राट्ड नहेबाजात शिविष्य ना शास्त्र अभावता क्षार कि उक्तिरव । व्यक्ति अद्भाव आमानाव आश्रमनवत्र

আত্মাতে প্রমাত্মার অনম্ভ ভান পাঠ করিতে আদি ভোমারদের নিকটে আত্মার আ-প্রার পর্যাত্মার পরিচয় করিয়া দিভে চেন্টা করি-তেছি: তোদরা নিজে নিজে দীয় আত্মাতে তা-খার পারিচয় না লইয়া কেবল আমার কথার উপরে নিষ্ঠর করিবে না: বখন নিবিট্ট ইইয়া আআ দ্বারা আত্মাতে দেখি, তথন দেখি, লেসে পরিমিত আহাা, সে অপর এক অনির্ফোশ্য পুরুষের নিয়মের পরভন্ত হট্য়া কর্মা করিভেছে। কোন আয়া কিছু আপনি সংকন্প করিয়া এ পুণিবীতে আইসে नार्रे, भ हिन काल अथारन थाकिनात हैका कवि-লেও শভ সৎসরের অধিক পাকিতে পায় মা। বিনি আযোরদিগকে ফুখা তৃষ্ণা দিবার পুর্বো অগ পালের বিধান কবিয়াছেন, যিনি চকু দিবার প্রবর্ত মুর্যা চলেকে অফোরাতের প্রদীপ করিয়াকেন, ভিনি জন্ম বিহীন মহানুজারে।। সেই অন্ত পূর্পু ক্ষের কৃপাতে আমরা জীবন পাইয়া ভাঁহারই আপ্রামে নিয়ত বাস করিভেছি। ভাঁহরেই শা-সনে আমরা পুণা পাপের বধা উপযুক্ত দণ্ড পুর-কার লাভ করিয়া দিন দিন সমুলভ হইভেছি। থিনি জানেতে পরিপূর্ণ, ভিনিই আমারদের পরিমিত আয়াতে জান প্রেরণ করিতেছেন; यिनि भूर्व सक्रव-यक्तश, जिनिष्टे आधात्रदम्ब आ-আতে ধর্ম-ভাব, পুণা ভাব, দাধু-ভাব, প্রেরণ করিজেছেন। সর্কশক্তিমান পুরুষই আমারদের আয়াতে এথানকার কর্মোপধোগী শক্তি সংযুক্ত করিয়াছেন। এই প্রকারে আমরা আপনার আ আতে পরিমিত জ্ঞান, পরিমিত শক্তি, পরিমিত সাধু ভাৰ দেখিয়া সেই অপরিমিত মঞ্জন্ম পূর্ পুরুষকে উপলব্ধি করি। এই পরিমিত জাতাা এক সময়ে ছিল না; কিন্তু জন্ম-বিহীন প্রমায়। সকল সময়েই আছেন। যিনি এই আজাকে প্রভাশ করিয়াছেন, ডিনি নিজে পপ্রকাশ। যিনি আ चारक এই সংসার ধর্মে নিয়োগ করিয়াছেন, তিনি আগনি কাহারো কর্ত্তক নিয়োজিও হন্ ' নচাসা কশ্চিজনিত। ন চাগিপঃ।" ' ইহাঁর কেই জনকও নাই এবং অধিপতিও नाहे।" यिनि आञात सकै।, लाजा, नियसा, ভিনি পরমাত্মা। বেশন কুদ্ররাজ্যেশরের সহস্কে প্রমেশ্বর, বেমন ঐহিক পিডার সম্প্রেম পিডা, ভেষনি আত্মার সহজ্যে পরনাত্ম। আত্মা জ্ঞানেতে পরিমিভ, পর্যায়া জানেতে অনস্ত; আত্মা শক্তিতে পরিমিত, পর্যাত্মা শক্তিতে পূর্ণ; আত্মা সাধু ভাবে পরিমিভ, পরমাত্মা ধর্মাহছ এই প্রকারে পরিমিত আঝা মজল-সরপ। **হইতে অপরিমিত আত্মার পরিচয় প্রাপ্ত হই।** रचनहै मिथिनाम व जाया जाजिङ ଓ পরিমিত,

ত্বনই আহার কাহতে জনত ক্রেল ক্রান-বর্জণ আশ্রের-কালার সংখ্যাল কেবিলান। আশ্রেরক করি করিয়া আশ্রিত কর্মনো বাকিতে পারে নর, জ্বাতিতের কহিছ আশ্রেরক চিরা সমস্ক রহিল্যাইছে। একন শ্রেরণ করিয়ের, ইহার পর নিক্ষানে আনেচনা করিয়া ছেখিতে বে এই পরিমিত আন্যায় অন্তর্থানী অনন্ত বর্জণ পর্মায়া কিনা।

্"ভিনি আপমার বিশুদ্ধ বল্লব-স্কল্প এই कार्यं एकोलिक श्रामार्थ जवर मनुरवात भागम-शर्ष মুক্তিত করিয়া রাখিয়াছেন^{্ত} কিন্তু **ভাহা দে**-বিজে পায় কে ? ভাহার পায়ক ও জপ্যেতা কে रहेट७ निद्धि ? मा मह-मातीत आह्वा 🗠 🗪 दे মঙ্গল-পর্যাপকে আত্মা কাহার জ্যোভিতত দেখিলে পায় ? ভাহার আপনার জ্যোভিছেই, আত্ম জৌ-ভিডেই দেখিতে পার। সেই আত্ম-জ্যোতি সে কোথা হইতে পাইল গু এক ঈশর-প্রসাদাৎ ; ঈ-শ্বর জনবাকে জ্ঞান-জ্যোতি দিয়া পৃথিৱীয় ভাবৎ और स्ट्रेंटल डेगड कदिशादकम । 'एमटे केशत-अक्षेप्रक काम-स्कार्गाक निकास करा किएम ? भाभा-চরণ ছারা, অসম্ভাব ভারা, কুতর্ক ভাষা ৷ দেই नंगीप के ति-रक्षांकि श्रकानं रथ किरत देवितिरक, **छ**ंबटक, ठाँबबटक ८४ है का'त्मत स्मञ्जू हत केतिस्ता। ধলি বুদ্ধি, ভাৰ, ও চৰিজ সেই সহজ ক্ষানকে পোণ-বণ করে, তবে পেই শতক জ্ঞান আবার দিন দিন 🕏 জ্ঞাও সভেজ হইপা, ৰুদ্ধিশ ভাৰ ও চরিত্রকে माजिल क स्व में १ माजिल कात्र । शतकारहरू मा-शास्या मिन मिन छान, वुक्ति; कुन्नी, कार्या; भा-महींगा जीव शाहर करहा, এतर इर्मण मन महीहे अभोख-काटन नगरवर्क इड्सं आधारिक श्वेम ज्ञाना স্থানে উল্লেড করিভে থাকে। প্রম ভা*ষা*বাদ্ সম্ভিন্নপার নিজ্পাপ বড়ুশীল নহারারা অনস্ত-चक्न राज्यक अक्रम श्रद्धारम्बद्धाः क्षेत्र क्षम् सम আত্মাতের সাক্ষাৎ প্রভিত্তি করিয়া এবং সক্লেব भव्या जैरहात जिलारमान अमान केनिया जनानी रूत । ''अमाबिर ७ अकारांगी इनेशा करना अभे-যিলের কি কাল বিশেষ কি জাজি-বিশে**যে**র 🐝 शिका भटि। अकल एक्षीय अञ्चलको प्रिमार्ट अ খা-বিষয়ে উপদেশ দিবার অধিকার আছে।" ভা-রভবর্ধের পুরুতন প্রকার দীবিবের জান-রত্বে আন-নরেদের**ুজু**লিকার ; জানরা **ধর্ম-নিম্ন**র **ইপান্তুক** भाग प्रभी । सह पन जामाब्रह्मक भन्नेत्र अन सक्त. ভাষা আনৱা আনারদের গিড়েশুক্র হুইছে অং-প্ৰয়াপ্ত কান্ত কৰিয়াছি: ভাষা অন্ত বৰুলি, জা-নিয়ে দিকট হুইতে তিকা ক্ষিতে প্ৰাৰ্থ পা। এই 'अविकास करकात आहिमा कार्म कि **देवलिक अस्तिक** নাৰ ক্লৈতন ধৰ্ম আৰু কোন ছেলে স্বা मालिटक नारे। श्रुविशेष्ट असम विकास

त्संत्रहे काविकाव । असिहिद्धं महस्त्रीम् समग्र व्हेट्ड व व्यक्तिमा <u>युवी स्नारमः व्यक्त-व्य</u>क्त-त्व्य विनिर्गे इर्डेग्राहिन; त्म कार्य कार्य क्रम्म रम्ब चर्कान-वर्षकारत बाइक किन । हटमत ब्रह्मा अ-थर्म धरे जातजनविष्ट हम, धन् अंबरमरे तिह পথিত রচনা ধর্মা-ফল-দান্তা ঈশ্বরের চরণেই জ-र्शिं रहा। ने बत जाइक्र कृतिहरू धटमीत जाकत्र-খান করিয়াছেন, ভাহার অগণা রসু রাজি এখনো निः व्यथिष्ट इत्र मार्डे। व्यथम छेख्त विमानस छी-রত ভূমির, বেশুন দক্ষিণ লাগর ভারত-ভূমির, নে मन शका नभी जातक कृमितः । कमाम राम किन-নিষদও ভারত ভূমির, তেমনি পুরাণ উপাপুরালন নারত ভূমির। ধর্ম বাইয়া ভারতবর্ষে বক্ত আ-ন্দোলন হইরা সিয়াচে, এক আর কোপাও হয় নাই। ভারতবাদীদিগের ধর্মা-বিবদ্ধে খাভাবিক অনুরাগ। এখানকার সকলে ধর্মকে ধেমন পরিরা^জ ভাবে দেখিকে পায়, দে পরিমাণে আর কোন (मरचंत्र व्यादक्षेत्र भाषा मा—पर्व्याटक अवन आह्ना, ঈশ্বরেতে এমন নির্ভর, আরু কোথাও নাই। তা रात्रा भ्रहे आ खिश्री करूक, रक्षाहे नम्रन क्यूक, কোন স্থানেই বা গমন কঞ্ক, সিক্ষি-দাতা, কি-ধাতা পুরুষকে অত্যে স্মরণ করিয়া সকল কর্ম আ वेड करत । छोरांत्र। मामाना भव विधिनात्र भूरक श्रेषत्रदक विष्म ७ इय ना ; क्रेश्नद्वत नाम निभिन्ना পরে পত্র বিথিতে আরম্ভ করে। যে দেলে ধ-र्गात कृत कांचक लाहे, खाकांच्रा हैशत वर्गा कि-छूटे युक्तिटल भोदब नाम् दरपंत आधिक अवस् ষ্ঠতে এই অকার ধর্মের ভাব চলিয়া জাসিভেছে। এক এক বিষয়ে এক এক জাড়ি গণ্ছয়;কেছু যুজে, কেহ বাণিজ্যে, কেহ শিত্যান্দারে, কেহ বা থর্ম-ভারে। ভারতবর্ষের বদি আর কিছুই দা থাকে, তথাপি এ দর্ম ভাবে সকলের প্রেষ্ঠ হই-पादह। काम्रजनर्वनामिनी क्वीमिटमर्व मर्का ७ मन তীত্র ইহার অধিকতর প্রমাণ দিছেছে। অনা জাতির বিকট সইতে রাজনার্গের, নিপে-नगरअव, वानिकावावनारवह, नाक्रीबनाक छेटक्रफ लिका नाज कतिएक शांति, किन्दु वर्कानिकारम् जि-कांत्र निविद्य कांत्रिक कांत्रिक कांत्री है कांक जनारामी कविद्वा जना विवदः हव नकव बन्नार्कः स्व स जाया-बाकाय निक महाबाद के सहका किन् शंद्रिम, छाराचे भामका वर्षे असिता महिन आहे: जारावे व्यक्तामार्थात क्रमा व्यक्त व्यक्तिक र-THICK I THE ENGINE MEANING MENTS TIS PERSONAL BRIDGIST TOTOL PERIOD OF LIBERT OF MANAGEMENT AND TICS MICEN WHITE WAS THE WORLD TO A MICH.

शृक्ष त्माणा त्मिश्रा भागतम छेरकृत रहेत्व अर्थः नेवदप्रत भागत कृता भागतम कर्त्रित पानित्व।

THE VOICE OF GOD IN THE SOUL OF MAN.

There is something sublime in that trusting faith which reaches us through all ages and from all nations, asserting God's positive presence and controlling power. "The ford spake unto me." "The Lord commanded me," sence of God has spring from no external faith, but from an interior recognition of a power within the soul, that was superior to all external commands. It was the sign of the divine life expressing the divine presence.

Philosophy and reason have both come and questioned this faith. What! is God the Infinite speaking to man the finite? Is there any possibility that the life of worlds and universes of worlds individualizes itself, and interferes with the trivial affairs of so iusignificant an atom as a man, and with his relations to his fellow man? But philosophy an I reason in agestioning as do not entirely silence the interior sense of a life, a presence, a power a oneness in and of what is termed that. Sometimes the spirit in its moments of exultation recognizes its part and presence within the infinite, and thus knows itself closer to God than to any individual spirit in the unverse; but these moments do not satisfy the heart, which calls upon reason and upon philosophy to bring the positive presence of God before the spirit, either as a life or an interior power, or an outward agent individual and supreme.

There is within man a sarse, if we may so term it, or a spiritual consciousness, of the divine. It is sometimes scarcely active, but it is always existent. It is a feeling through the myriad channels of life, a bond, a union, a reception of that universal life and that infinite presence which it terms God.

From the highest to the lowest, in living threads of light the presence extends, and man speaks within himself to God, and yet that inward voice reaches through all space and time; for it is life within well to life without that impels the thought, and that thought vibrates as it goes out, and is an actual power in the universe.

Then prayer to God is an aspiration, an inward sense of an appeared destiny. It is the heart's testimony of immortality of an undying life and an eternal progress. But prayer for special good must have finite means of answer, and thus every aspiration teaches some spirit that with loving thought endeavors to respond, and to post back not only an answer of life, but so to change its minimum of man to man that the good sought shell be gained.

This answer comes as an evidence of infinite love and so the heart says, "God hears me," "I know that I have a Father who is close by my side." It is this inward recognition of spiritual aid that has given to the world such proofs of an actual God-that the idea often becomes individualized and limited. The religious world places Christ between the Infinite and the tinite, and he becomes an ever-prsent individual, so that God is only a name but not a necessity. The irreligious world puts the interior self-head as the only power of existence and Gold is not much cared for. The Spiriunalist places the spirit-world as the setive agency of life and makes God as an incomprehensible infinity, that need not be sought and cannot be recognized. The mediation or coming between the highest and lowest of some positive presence has been made necessary because of the intellectual conception of God as raunitely high, infinitely pure and holy, and thus impproachable. But the wisest of intelfigences can never fully satisfy the spiritual life within man. It knows itself like every other soul except in degree, and it turns from highest Christ and from most exalted angel to that which Christ and angel also turn unto. It is then positively affirmed by the aspiration of the spirit itself that it individually holds its close bond to God, and receives in its inner life testumony of him, even as do the higher intelligences of heaven.

We must then seek God in our own souls, because it is within ourselves that we find the termination, in our individual consciousness, of those threads of divine life that reach our and bind us to the infinite universe and to the infinite God.

Theodore Parker says of himself, "When a little boy in petticoate in my fourth year, one fine day in spring my father ted me by the hand to a distant part of the farm, but, area sent me home alone. On the way I had to pass a little pond-hole, then spreadour it: waters wide; the lara in full becom--a rare flower in my neighborhood, and which grew only in that locality-attracted my attention and drew me to the spot. I saw a little spotted tortoise maning himself in the shallow water at the root of the flaming shrub. I lifted the stack I had in my hand to strike the barmless reptile; for though I had never killed may organize, yet I had seen other boys out of sport destroy birds, squirrels, and the like, and I felt a disposition to follow their wicked example. But all at once something checked my little arm, and a votee within me said clear and loud, 'It is wrong', I held my uplifted stick in wonder at the new emotion—the consciousness of an involuntary but inward check upon my actions--until the tortoise and the rhodora both vanished from my sight. I hastened home and told my mother, and asked what was it that told me it was wrong? Sho wiped a tear from her eye with her aprob; and taking me in her arms, said: Some mon wall it conscience, but I prefer to call it the woice

of God in the soul of man. If you listen and obey it, then it will speak clearer, and clearer, and always guide you right; but if you turn a deaf car or disobey then it will fade out little hy little, and leave you all in the dark and without a guide. Your life depends on heeding this little voice. She went her way, careful and troubled about many things, but doubtless pondered them in her motherly heart; while I went off to wonder and think it over in my poor childish way. But I am sure no event in my life has made so deep and lasting an impression on me."

The "voice of field in the soul of men" is proof of the divine life that awaits every spirit. It is the recognition of a destiny that can never be achieved antil purity, and right; and holmess shall prevail.—From the Herald of Progress.

বিজ্ঞাপন।

পর্যান্তন্ত্র-নারী মাসিক পাত্রিকার প্রথম সংখ্যা প্রচারিত হইন্নাই। গার্ননীতি; ধর্মাতত্ত্ব; সানাজিক উনতি । বাজিগর্ভ আখ্যারিকা; সাধুদিকার জীবন; বেদ পুরাণ বাইবল কোরাল প্রকৃতি দক্ষা পুরুক হইছে সভ্যা প্রাক্তি পাদক লোক; এই সমুদান এ পাত্রিকার লেখ্য বিষয়। উছার অগ্রিম মূল্য বার্মিক হাতে টাকা এবং যামাসিক হাত এক টাকা চারি আনা নির্দ্ধানিক ইয়াছে। প্রতি সংখ্যার মূল্য তি আনা। মিকানরিত হইয়াছে। প্রতি সংখ্যার মূল্য তি আনা। মিকানরিত হইয়াছে। প্রতি সংখ্যার মূল্য তি আনা। মিকানরিত হইবে। গ্রহণেক্ষ মহাশ্যের। কলিকাজা ব্যক্তিক অনুসন্ধান করিলে অথবা নিয়া-লিখিত শিন্রোনাম দিয়া প্র লিখিলে প্রাপ্ত হইবেন।

ধর্মাতত্ত্ব সম্পাদক। *
কলিকাত। ব্রাক্ষসমাজ।

প্রকার।

নিয় লিখিত প্রবন্ধ রচনার জন্য, রোহিল গণ্ডের অন্তর্গত বেরিলীর মিউনিসিপাল কমিটি ভিন শত টাকা পুরস্কাব দিবেন এই প্রবন্ধ ইং-বাকী অথবা কোন ভারতবর্য প্রচলিত ভাষায় বিশিত ইইবেক।

. die 5

তার করনীয় বানিকাগণের বিদ্যাশিক্ষা এবং ভাছার সমুদ্রতি ও প্রোৎসাহের উৎকৃত উপার। ?' পারস্ক প্রকাশি নিক্ষা নাম বাক্ষর না করিছা বনাশ চিক্ষমার্ক লিখিতে হইবেক। এবং প্রেম্প ক্ষর্ম উক্ত চিক্ষ সম্বলিভ এক স্মান্তি আবর্গে রচনিক্ষর अवक गर्कण आशासी 3 हा मार्क जातित्वत शृत्त्वं, जात्कर मास्यक्षित्रा, त्वासित संदेश प्रवर्क त्वकि लीत निकेश्विनिनान स्वितित त्वत्वक्रीत निकेश श्रीकृष्टिक क्षेत्रं

(च दिनी

७० ज जानके । ३५७८ सः

प्रामिष्ठे, तम वण्डशाय न स्त्रमद्वासमञ्जू साहितक्यः।

আগাদ্ধী ১৩ ই অগ্রহায়ণ রবিরার অপরক্ষ ৪ খাটি-কার সময় কলিকভা ব্রাক্ষাসমালের বিভীয় ভল গুলে স্থারণ প্রভিনিধি স্ভার বিভীয় অধিবেশন হইবেক। প্রভিনিধি ম্লাশ্যেরা ভৎকালে সভায় উপ্রিভ হইয়া কার্যা সম্পন্ন করিবেন।

কলিকাজ: ৪ অগ্ৰহায়ণু ১৭৮৬ গ্রী কেশবচন্দ্র সেন্ প্রতিমিধি সভার

जन्म किस्

~}∙⊗•#•

সাধারণ প্রতিনিধি সভার জন্য করিকাতা ব্রাহ্মান্তর প্রতিনিধি নিযুক্ত করণেদেশে আগামী ১৩ ই অগ্রহায়ণ রবিবার অপরাক্ষ ও ঘটিকার সময় কলিকাতা ব্রাহ্মমহাশয়েরা ডৎ কালে বিশেষ সভা হইবে। ব্রাহ্মমহাশয়েরা ডৎ কালে সভায় উপস্থিত থাকিয়। উক্ত কার্য্য সম্পন্ন করিবেন। কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজ ক্রিকেনাকর স্ব

मण्मित्र ।

, .	>20
* •	352
	520
• •	5
डेशटनम	> २ @
• •	389
	डे श्ट मण [े]

এক খণ্ড

এই তন্তবাধিনী পত্ৰিতা নদিকাতা লগতে যোগাদ্বাকোত্বিত বাক্ষমান্ত্ৰেল উন্নিদিনের অনুসভাস্থাতি প্রাতি
নামে থাকালিত হয় ৷ ১ই অঞ্চারন স্থ্যার স্থ্য

(गयः इत्राह्म कना)

মাদিক মল্য



ব্ৰহ্মবাএকমিদমগ্ৰহ্মসীদ্বান্য কিফনাসীডদিদং সৰ্ব্যমূজৎ। ওদেব নিত্যং জ্ঞানমন্তং লিবং সভক্ষিরবয়বংমক মেবাৰিতীয়ং সর্ব্যাপি সর্বানিয়ন্ত্ সর্বালয়সর্ববিৎসর্বাজিমদ্ধ্রস্পূর্বমঞ্জিমদিত। একস্য তট্কসাবোপাসন্ত্রা পার ব্রিকনৈদিকক শুক্তব্যতি। তদ্মিন্ প্রীভিত্তস্য থিয়েকার্য্যাধনক ওদুপাসনমেব।

সাক্সন্ শত।

বল্টিক সাগর, উত্তর সাগর ও রাইন
নদীর তীরে জুটস্ প্রভৃতি কতকগুলি জাতি
বাস করিত: সাাক্সন জাতি তাহাদিগের
অন্যতম। ইহারা কালক্রমে ইংলপ্তেরও
অধিবাসী হইয়াছিল। এই স্যাক্সন জাতি ও
তৎকালের ইংলপ্তীয় জাতি মিপ্রিত হইয়া
বর্ত্তমান ইংরাজ জাতিকে উৎপন্ন করিয়াছে!

ইহাদিগের মতে এক অনাদি অনন্ত পরমেশার সকলে দেবতা সকল লোক বিন্তু হৈবে, তথানও তিনি বিদ্যান থাকিবেন। ইলা ভিন্ন ইহারো আপনাদের স্বভাবের অনুরূপ কতগুলি দেব দেকীর কম্পনা করিও। ইহাদের ক্ষেতারা পুরাভব রোমক ও একি-দিশের দেবতার আরু নিতান্ত কামুক ও ভ্রান্তা ছিলেন না বড়ে, কিন্তু সেই সকলে দেরভার সহিত সাক্ষিমনা করিও। ক্রান্তা ছিলেন না বড়ে, কিন্তু সেই সকলে দেরভার সহিত স্যাক্ষ্যন ক্ষেত্রার স্থান ক্ষান্ত্রার ক্ষিত্রার ক্ষান্ত্রার ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত্রার ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত্রার ক্ষান্ত্রার ক্ষান্ত্র ক্ষান্

ম্যাক্সনদিগের প্রধান দেবভার নাম ওডিন, ই হার আকার অতি প্রকাণ্ড; বাম हर्स्ट मञ्जी कुछ हत्क ও मिकन हर्स्ट अक निष्ठां व वक्ष वाकिछ। इनि ममुनाव দেবতার জনক বলিয়া কীর্ত্তি হইয়াছেন এবং নিভাস্ত ভীষণ, রক্তপাতঞ্জিয়, রণোৎ-সাহদাতা, জয় দাতা, যুদ্ধে মৃত ব্যক্তিদিগের নিয়ন্তা ও যুদ্ধের অধিষ্ঠাতা ছিলেন, সমর **সায়ী ব্যক্তিরা ইহঁরে স্থুখ্যয় ধাম প্রাপ্ত** হইত। ইহারই নামানুসারে সুগ বারের নাম ওডেনম্ডে বা ওয়েডনেমডে হই-ब्राष्ट्र। इंश्वा ध्र ध्रक्ति प्लटम देशाँ व नाटम অনেক স্থান ও প্রানিদ্ধ আছে। কুইগা ষা কেরানামে ইহার এক পত্নী ছিলেন। হিচ্ছুশান্তে কামদেবের পত্নী রভির যেৰূপ বৰ্ণনা আছে, ফুেয়াও আয় সেই ৰূপ हित्नन।

হিন্দুদিগের পবন দেবের ন্যার থর নামে

লগ্রক্সনদিগের এক দেবতা ছিলেন; ইনি
বাত্যা ও জলোজ্যুদের কর্তা। ইহঁরে মন্
ভাকে নক্ষত্র চক্র থাকিত, ইনি আনাদের

ক্রান্ধের নায় গদাধর ও ইন্দের নায় বক্সন্
ধরও ছিলেন। ইহার গদা এমন গুরুতর ও

বৃহৎ যে, দশ জনের ন্যুলে তাহা বহন করা माइंड ना। अई नना मना अञ्चलिङ अन-লের ন্যায় উত্তপ্ত থাকিত। একদা ধর দেব নিদায় অভিভূত হইয়া আছেন, এমন স-মটো অস্ত্রগণ সেই গদা অপহরণ পূর্ব্বক স্বদেশে লইয়া গিয়া মৃত্তিকার চারি ক্রোশ নিমে লুকাইয়া রাখিল। দেবগণ ভাষা জানিতে পারিয়া তাহার পুনঃথাপ্তি বিষয়ে "অননাগতি হইয়া ফেয়া দেবীর সহিত এ-ধান অস্করের বিবাহের প্রস্তাব করিয়াঁঅ-স্থ্রদিগকে কছিলেন, সেই অপস্ত গদা কন্যার পাণ স্বৰূপ-প্রদান করিতে হইবে। অস্থরের তাহাতে সম্মত হইল। যেমন অমৃত বিভাগের সময়ে বিষণু গোহিনীর বেশ ধারণ করিয়া অন্ত্রগণকে মোহিত করিয়াছিলেন, লেইকপ খর দেব ফ্রেয়া দে-বীর বেশ ধারণ করিয়া বিবাহ সভায় উপ-স্থিত হইলেন। অন্তর ভোজনের আরো-জন হইল। কপট ফে্য়া নেবী একটি র্যভ ७ व्याचिति वृहद बृहद २९मा व्यनासारम छन-**उपर्याम** ज्ञूहशन त्रमाथ कतित्वन। স।তিশয় চুমৎকৃত কইয়া উঠিল। অভপের অস্কুরপতি পাণিএহনের অভিলাবে বর নেশে কেয়। দেবীর সলিধানে উপস্থিত হই-লেন, কিন্তু কন্যার ভরক্ষর ঘূর্ণমাণ লোচন ছয় দেখিয়া ভয়ে পশ্চাৎ ভাগে **অপস্**ত অ্যনি খর দেব নিজ মুর্কি कर्राट्स 📗 ধারণ করিশা **গুদ**। লইয়া গম্ভার **স্বত্তে অস্ত্র**-গণকে আক্রমণ পূজাক সংখ্যার করিলেন 1 থর দেবের মদা পানের শক্তিও অতি নদ্ভত 👝 **অস্তর**গণের এক**টা অভি র্হৎ** ও অভি গভীর পান পালেছিল। একদা ভাষারা নেই পাত্র নটো পূর্ব করিয়া থর प्तवतक श्री शृक्वक शास कि विदेख कि हिन। পর দেব ভাষার কিঞ্জিলাত পান করিয়াই क्रांड हरेशा পिएटलन, मानीचुनीटन किंगा

করিয়াও সমুদার নিঃশেষ করিছে পারিলেন
না, তাহাতে তিনি অভিযাত্র অঅতিভ
ইইলেনী পরিশেষে অমাণিত ইইল যে
অম্পরেরা এ পান পারের নিম দেশে ছিল
করিয়া তাহার সহিত সমুদ্রের যোগ করিয়া
দিরাছিল। থর দেশ কেনলা যে এ পানে
পাত্রের সমুদার মদা নিঃশেষ করিয়াছিলেন
এমত নয়, সমুদ্রের লবণায়ুও কতিপার হস্ত
পর্যান্য পান করিয়াছিলেন। পূর্বের উলিথিত ইইয়াছে যে থরদের বল্ধরও ছিলেন।
এই নিমিত্ত তাহার নামানুসারেই বজ্পের
নাম থনর বা থণ্ডর বলিয়া শ্রান্তির সপ্তাম
দিরদের নাম থ্য তে ইইয়াছে।
তবং তাহার নামানুসারে সপ্তাহের পঞ্চম
দিরদের নাম থ্য তে ইইয়াছে।

ওডিন ও থর ভিন্ন আরও নয় জন দে-বতা ছিলেন। বাল্ডর আলোকের দেবতা, টীর বীরগণের দেবতা, ত্রাগ্কবি ও বাগী-দিগের দেবত। ও হেমডাল স্বর্গ ছারের ও ইন্দ্ৰনুর দেবতা ছিলেন। স্বাক্সনের। এই একাদশ দেব ও ইহাঁদের পাত্রী একাদশ দেবীর উপাসনা করিত। এতদ্ভিল অনেক উপদেবতাও ছিলেন। মমূষ্যের সৌভাগ্য. ছুর্ভাগ্য ও মৃত্যুকাল নির্বয়ের ভার ভিনটি উপদেবীর উপর সমর্পিত ছিল। বাল্কিরি নামে তিনটি উপদেবী স্বর্গের পরিচারিক। ছিলেন; ইহাঁরা ওডিন দেবের **আ**জ্ঞা-ক্রেম যুক্ষ-স্থলে যোক্ষাদিগের জয় পরাজয় দান ও প্রাণ রক্ষা বা প্রাণ হরণ করিতেন। পাপের অবিঠাতী দেবতা লক, তাঁহার সাভিশর নৌন্দর্যা ছিল কিন্তু অভিনয়পূর্ত্ত, হিংসাপ-রবশ দেব ও মানবগণের অভিকৃত্তারী ও নিতান্ত অবাধ্য বলিয়া ভাহাকে দেবগৰ এক शिति छ हात्र इस्क क्रिया इस्तिमा नत्रकद्र अधिष्ठाकी हीना देखी, देखमाह न নামৰ বৃক্, প্ৰহাও সৰ্পাও অক্সগণ্ড भाभभूममंपिरगर मध्या शरिशानिक किटलन ।

नेताक मनमिद्रश्रंत खटशे व मार्थ वोजहां । चुजावा युकालुकाती माक्मत्नता युक्रत्कर পরম স্থান বলিয়া জ্ঞান করিত ! স্থ-छताः छोहात्मत चर्ना तमहे ध्यकात स्ट्रियहे পরিপূর্ণ ছিল। ভাছার। মনে করিত, বাল-হালা-গত বীরগণ দিবা ভাবে ঘোরতর স্মুক করিরা পরস্পর আঘাতে পরস্পরকে ক্ষত दिक्क कटत, मिनावमाद्य महमा (महे मकल ক্ষত শুক্ষ হইয়া যায়। তৎপরে তাহারা ক্ষ্নর নামক অক্য ব্রাহ্মাংস ভোজন ও শত্রুগণের মন্তক্নির্মিত প্রস্পাত্তে মদ্য পাম করত প্রমানন্দ সম্ভোগ করিতে থাকে। স্যাক্সনদিকের নরকের নাম নিফ্লাইম; পাতালবাদিনী ছিলা দেবী তাহার অংশিষ্ঠাতী; ঠাহার আকার ও দৃষ্টিকেপ অভি ছংকর, छफर्मात्न मकरतद ऋ९कम्भ উপन्छि इस। জলপ্রপাত দারা দেই নরকে প্রবেশ করিতে হয়। তথাকার গৃহ-মকল পরিতাপনয়, বিপণি দকল চুটিক্ষময় এবং পরিচারকগণ নিভান্ত দাঘ সূতী ছিল।

এই স্বৰ্গ নরকের স্কুখ্য ফুট্রস্থায়ী অসংখ্য বৎদরের পুরে মহাপ্রলয় উপস্থিত 'হইবে; স্বর্গে ও পূঁৰিবীতে ভী-मन लकन-मकन मृक्षे ह्हेट अ∜किरव ; পাপায়ারা মুক্তি লাভ করিবে; তাহাদিগের षांजनात् किल्पा (नवल) विनुष्ठे इहेरवन, কতকগুলি দেবতা সরস্পার আহত হইয়া কালগ্রাসে প্রবেশ করিবেন; দেবগণের জনক ও অধিপতি ওডিন দেবও পঞ্জু পাইবেন। এक बाह ७ जनन विश्वनिष्ठ इहेशा- छेटिदा; ভদ্বোপালগলা, নিজ্লাইন প্রভৃতি সমু-माम् किन् क्यावित्यव इहेटव देवन ्रम्हे अनामि अन्छ श्रद्धमञ्जू वर्षमान ্রাকিবেন। অভ্পের বাল্লালা অপেকা महत्रक प्रकृष कर सूचन वर्ग क निक नाइम नद्रभका मध्यक्षन करियन नाम

ট্রাণ্ডি নামক এক ভূতন নরক স্থাই ইইবে। তথন মানব জাতি স্ব স্ব কর্মান্ত্রারে স্বর্ফো বা নরকে নিজিপ্ত ইইবে।

प्रतिकारिका छन-छव ७ कैशिमिटलब निकर्णे विनमान गाक्मन मिटमत छेलामना ছিল। উপাসকদিগের গাতে উৎস্ট ব-লিররক্ত প্রোক্ষণ করা হইত। সময় বিশেষে নর বলিদানের অথাও প্রবর্ত্তিত ছিল। সাধা-त्रांत खर्डारफर्य वस्त्रश्याक वन्ही ७ मीग-(क वांगमान कहा इटेंछ। तांकाता युटकत সময় জয় লাভ বারোগের সময় আরোগা লাভ করিবার নিমিত্ত নিজ্ঞ নিজ্ঞ সন্থানকে বলিদান করিছেন। স্যাক্সনদিগের এই প্রাকার গাঢ় সংকার ছিল যে, নরবলি প্রদান না ক-রিলে মৃত্যুর পর স্বর্গ-লাভের সম্ভাবনা ন:ই। এই নিমিত্ত তাহারা ছুর্ভাগ্য বন্দীকে বলি-দান দিয়া স্বর্গের দার উল্মাটিত রাখিত। আল্যা ও ভীরুতা স্যাক্ষন্দিগের একান্ত বিষিষ্ট ছিল; ঐ ছটীকে ভাহারা উৎকট পাপ বলিয়া গণনা করিত। তাহাদের বি-সামে ছিলি, কাপুরুষ ও অলম ন∺্তি কথ-নই স্বৰ্গ প্ৰাপ্ত হইৰে না, প্ৰত্যুত, নিৰুৱগামী হুইরা নির্ভিশয় যন্ত্রণা ভোগ করিবে।

অস্ত্যারণ ও অন্তানোহণ করিলে বিশুদ্ধতা বিনফ হলবে এই অভিপ্রারে স্যাক্যন যাজকাদনের উহা অত্যন্ত নিষিদ্ধ
ছিল। শ্রীলোকেরা দৈববানীপ্রকাশক বলিয়া স্যাক্দনের তাহাদের সবিশেষ সন্ধান
করিত। কখন কখন রাজকুলরীরা ধর্মধাজিকা হইতেন ও লোকদিগকে দৈববানী অবগত করিতেন। এদেশের অনেক লোকে বেমন সপ্রের মন্তে, ভূতের মন্ত্রেও তাকিনীর
মন্ত্রে অদাশি বিশ্বাস ক্ষিয়া থাকে, স্যাক্
সনেরা সেইকপ মন্তের প্রতি স্বিশেষ আছে।
প্রদর্শন করিত। ভাষারা বেশি ক্রিও, মন্ত্রবলে ইক্ষান্ত ভাষারা বেশি ক্রিও, মন্ত্র-

নাইকে পারে। কর্মকরের। ক্ষম বা বর্ম
নির্দাণ কালে বিশেব বিশেব বস্ত্র পাঠ কর্
রিলে নেই থাকের আঘাত ক্ষনিবার্যাও বেই
বর্ম নিতার অভেনা হয়। কোন মত্ত্রে বাতা।
ও ক্ষমেক্রাম শ্রবল ও কোন মত্ত্রে তাহা নিবারিত হয়, এই সংস্থার থাকাতে স্যান্ সমের।
খোরতর কটিকার সময়েও পোতারোহণ
পূর্মক দেশ লুগন প্রভৃতি দহার্ত্তি করিত।
ভাকিনী আছে বলিয়াও তাহাদের অভ্যন্ত
বিশ্বাস হিল। অদ্যাপি ইউরোপের হানে
হানে ভাকিনী বিশ্বাসের কথা গুনিতে

ম্যাক্দলেরা বায়ুর য়তি আকাশের রূপ,
পক্ষিগণের গমন ও শক্ষ এবং উৎস্কীবলির অন্ত দিরীক্ষণ বারা ভাবী শুভাশুভ
নির্ণয় করিত; সমাধি ক্ষেত্রে মৃত ব্যক্তিদিগকে স্থোধন করিয়া অভিল্যিত বিষয়
কিন্তাসা করিত এবং গুরুতর বিষয়ের ভাবী
কল জানিতে স্ইলে কোন হভভাগাকে
খুলামাত বা জলে নিক্ষেপ করিয়া, ঐ খুলাহত ব্যক্তির রক্তথারা কি রূপে নিঃস্তত
হয় অথবা ঐ জল-নিক্ষিপ্ত ব্যক্তি কিরপে
নিমন্ত হয়, ভাহা দেখিয়া ভাবী শুভাশুভ
অবধারণ করিত।

থিরোডোর পার্করের পত্ত।
২৫৬ সংখ্যক পত্রিকার ১১৯ পৃঠার পর।

জনন্তর আমি ধর্ম-বিজ্ঞান অনুশীলন করিবার নিমিত প্রকৃত সময়ে কেম্বিজের এক বিলালয়ে প্রবিষ্ট হইলাম। ছৎ-কালে উল্লালয় ইউনিটেরিয়ান্ সম্প্রালারই উলার ভত্ত্বাবধান করিতেন। আমি এ বিষয়া-লব্দে প্রবিষ্ট হইলা দেখিলাম, তথার ধর্ম-বিদ্যান অনুশীলন করিবার নিজ্ঞান করি

तांशाका स्वाविधारक काहरू वर्ष क र्गतरक सर्वक पारीनचा बाबाब बाबबा थाटकमः साममा प्रत्यत अवक्रमा बीकाव করিতে কাহাকেই পীত্রন করেন না। शता धर्म-विकारमत विषय दश करी कानिस्कर्म. শকপটে ভাষারই উপৰেশ প্রবান করি-ष्माभनामिश्रदक मद्भक्त कदश ष्मार्थ-নাদিগের মত অভান্ত বলিয়া কদাচ পদ্ধি-পাদন করিতেন না। তাঁহার সকলেই সংপথের নিয়ন্তা ছিলেন; অন্যান্য সম্প্র-দায় অপেক্ষা অধিকতর বিত্তাবাদ করি-তেন না। তাঁহারা ধর্ম-বিজ্ঞানে অক্সিজত। লাভ করিয়াছেন বলিয়া অনোর নিকট আ-চার্যাকতার ভান করিতে একান্ত পরাধ্যুধ ছিলেন। দেখিলাম ঐ বিদ্যালয়ে পুর্বাতন এত্তকার্নাদপের সঙ্গলিত ভুরি ভুরি এত্ত আছে. কিন্ত তুর্ভাগ্য-ক্রমে তথ্যধ্যে জর্মনির পণ্ডিত দিগের ভূতন একখানিও ধর্মবিজ্ঞান দৃষ্টি-গোচর হইল না। আমি ঐ বিদ্যালয়ে প্রবেশ করিয়া ধর্মান্তুসন্ধানের প্রচূব স্বাধী-নতা ও জাবকাশ প্রাপ্ত ছইলাম এবং অসা-ধারণ যত্ন ও পরিশ্রম সহকারে ধর্ম-বিজ্ঞান অমুশীনন করিতে লাগিলাম। সে মনুয়ে ধর্মোপদেশকের আদন গ্রহণ করা অভি সহজ ব্যাপার ছিল, কিন্তু দেখিলাম যে স-মস্ত লোক ধৰ্ম-যান্দকতা পূদে প্ৰতিষ্ঠিত ছিলেন, চ্যানিঙই ভাহারদের মকল অপ্রেক্ষা ममिक थाधाना लाख करबन ।

অনস্তর আমি ধর্ম বিষয়ক বিশৈষ মাভাব পরিপূর্ণ করিবার বিমিন্ত স্বতর বাপে
নানা প্রকার পুস্তক পাঠ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম। একানে আমি সহকেই বাক্ত করিতে
পারি যে ভংকালে উদ্দেশ্য না কানিয়া
কি প্রকার চেকা ক্রিয়াছিলাম এবং ধর্ম
যাজনের প্রত্যাহণ করিয়াছিলাম এবং ধর্ম
যাজনের প্রত্যাহণ করিয়াছিলাম এবং ধর্ম
যাজনের প্রত্যাহণ করিয়াছিলাম

লামি অখনত অভিনিবেশ পূৰ্বক বা-हेवन शांठ कविएक बहुख इहेनाम्-वाहेदन कि, जबर कोन् कोन् भूखक ও कोन् कान् खोषा लहेला छेरा नकलिंड हरेगाटह, वारेव-(नत उप्पनाहे वा कि बाग, এই ममस विवय পর্যালোচনা করিতে আরম্ভ করিলাম। এই कट्य र्थंन प्लाटचंद्र मविटमंच श्रदीका कतिया মূল ভাষার বাইবল অনুশীলন করিতে লাগি-লাম। উহার বিদেষ বিশেষ অংশের আদিম তন্ন তন্ন করিয়া পাঠ করি-রচন †গুলি ঐ সমস্ত আদিম 'রচনার মর্মা বোধ করিবার নিমিত্ত ইছদি ধর্ম-যাক্ষকদিগের প্র-**ণীত পুরাতন বাইবলের টীকা এবং খটিয়ান**্ আচার্ঘাদিগের প্রণীত পুরাতন ও মূতন বাই-বলের টাক। অনুশীলন করিতে লাগিলাম। এবং জন্মন্ গ্রন্তার দেগের রচিত বাইবলের গুণদোষ-বিচারক গ্রন্থ ও টীকাও পাঠ করি-এই সমস্ত প্র্যালোচনা করিয়া मिश्रामा, नाइवल विভिন्न व्यक्तंत्र अख् इ-हेट मक्कलिए इरेड़ोट्ड। धे ममस् अञ् य, कान ममरत कि करन कारा कर्ड़क थ-ণীত হয়, ভাছার কিছুই নির্দেশ নাই। যদিও কোন কোন এত্তে প্রণেভার নাম নিৰ্দিষ্ট দেখিতে পাওয়া যায়, তাহাও কোন ক্রমে বিশ্বাস-যোগ্য হইতে পারে না। याहाई इंडेक, थे ममल भूलक श्रन्थ-श्रव्यत চির-পরিচিত প্রণালী পরিত্যাগ পূর্বক व्यवाविष्ठ बद्ध व्यनीक इंडेश्रोटह । वंत मक्षत्रम काटल ये मकत श्राहीन छाटछ्त মধ্যে যে কি নিমিন্ত কোন খানি পরি-গৃহীত ও কোন থানি পরিতাক্ত হইল, তাহা নির্ণয় করা নিভান্ত হুরুঠিন। বাই-वटनत दकाम दकाम व्यरटम बटाइत जन्म म বিসয়াদিতা লক্ষিত হইয়া থাকে ৷ পুরাতন वारेयण त्य काम धर्क किटकाने कामिएकटक, गुरुव ता हेन्द्रण काशांत्र अकाख दिलतीक मुक्ति त्ता-

চর হয়। মূতন বাইবলে প্রণেতাদিগের কেবল রচনা-প্রণালী ও ভাবগত বৈশক্ষণা লক্ষিত হয় না কিন্তু ভাঁছাদিগের মত-বৈষম্য ও অভিপ্রায়-গত তারহম্যও দৃষ্ট হইয়া থাকে।

অনন্তর আমি বাইবলের প্রত্যাদেশ ও অলৌ किक कार्यात विषय अर्यारमाहमा করিতে লাগিলাম। দেখিলাম, কেবল इन्हिन । शृधिश्रामीन दशत मदबार माना थ-কার অলৌকিক কাগু ঘটিয়াছিল ৷ অনাানা সম্প্রদায় যে কি নিমিত্ত উহার ফল ভোগে বঞ্চিত রহিল, তদিবয়ে ঐতিহানিক বা অন্য কোন ৰূপ প্ৰমাণ প্ৰাপ্ত হওৱা যায় না। তথাচ এই প্রাক্তিক-নিয়ম-বিরোগী অলৌ কিক কার্যো সর্বাক্তিমান্ ঈশ্বরের সাক্ষাৎ इस्टक्र श विषद्य आधि अञ्चमन्न भटन विश्वाम করিলাম। আমি ভৎকালে ইতিহাদ-ঘটিত অমাণের অণালী আ্লোচনা করি নাই এবং माका विषदा किंबल असुमक्तांन क्रिटंड इत्र, তাহাও জানিতাম না, এই নিমিত্ত ঐ অলৌ-किक घरेना मकल आभारक निजास स-করিল। প্রত্যাদেশ-বিষয়ক মত **E 13** সিদ্ধান্ত করিয়া লইলাম--জড় কথ প্রিঃহ জগৎ ও মনুষ্য উভরেই ঈশ্বর আবির্ভ এই দ্বিধ পদাংথ তাঁ-ছইয়⁴ অ{ছেন। হারই কার্যা। তিনি এই জড় জগৎ ও মনুষাকে আপনার শক্তি দারা পরিচালিত করিতেছেন; স্থতরাং যাহার যেৰূপ ক্ষমতা এবং যে দেই ক্ষমতার দে প্রকার ব্যবহার করিতে সমর্থ হয়, তাহাকে তত দুর ধ্ব-ज्यामिक तला गारेटक शांदतः मजारे शुक्ति-वृक्ति এवः नामिष्टे नौजि-वृक्ति क्षकारिनम-विषयक विरम्य अमान एमा विष्ट्रेन छ छ-লিখিত-ৰূপ প্ৰতাদেশ বাতীত অন্য প্ৰকার रहेट आदत ना अबर डेरांट ए अविमादन गण्य गाम निवासिक चार्ट्स तारे गात মাণেই উহাকে প্রভাগিত বলিয়া স্থীকার করিতে পারি। এমন কি, উহার কোন স্থলই অন্ত্রিষ্ঠ ঐশিক বাক্য বলিয়া হৃদয়ক্রম হয় না; কেবল এই মাত্র বলিছে পারি ধে দকল দত্যই ঈশ্বরের বাক্য।

অনস্তর 'আমি ইছদি ও খৃতির ন্দি-নৌর ধর্মাও ধর্ম-বিজ্ঞানের যেরূপ উল্লিভ হইয়াছিল, ভাষারও ইতিহাস অনুশীলন করিলাম। দেখিলাম, যাহা এফাণে পৃথিবী-মবো অঞ্ভিহত শ্ৰহাৰে আবিপতা স্থাপন कतिबाद्ध, जे माख्यमात्रिक मटत्क कम्मन्हे মূতন মূতন প্রিকৃতি সহা করিতে হইয়াছিল। বাইবলকে যেমন মৃত্যুদ্য-ক্লত বলিয়া প্ৰতীতি कचित, इन देन के श्रुष्टियान निरंशत डेशांम-बात इमि वे दाज-ताका, अननार्जनिद्यत আপণ ও ক্রবকের শনা ক্রেক্তা অপেকা অ-ধিকভর পুণা স্থান বলিমুণ নির্দেশ করিতে ममर्थ इष्टेलाम मा। कत् च चारि वाहेवन उ ভদ্ধনালয়ের বিষয় গভাই অভিনিবেশ পূর্বক অফুসন্ধান করিতে লাগিলাম,ততই উহাদের অলৌকিকতা ও মন্ত্রান্ত আনার অন্তর ছইতে ভিবে হিছ কইতে লাগিল। আরও থ্টিয়ান্দিকের ধর্মবিজ্ঞানে যেৰাপ ধর্ম নিদেশ করিতে ছি, ইভিহাস ভাষার সমাক্ বিপরীত।

আনি কেবল যে ইছনি ও খুটিয়ান দিলের ধর্ম-বিজ্ঞান ও ধর্মের উল্লিচ-বিষয়ক ইভিছান আলোচনা করিরাছিলান এরপ নছে; হিন্দু, বৌদ্ধা মুসলনান, প্রীক ও রোমক প্রভৃতি ভানানা মন্তাপারের ধর্ম ও ধর্ম-বিজ্ঞানের যে কিনার উর্লিচ ইইমা-ছিল,ভালার অল্পকানি করিছে লাগিলান। আমি বিশ্বস্ত টিলাকার কিছে লাগিলান। ভঙ্কান ক্লাভ হলার ছাতির ধর্ম গ্রেম্ব্রাক্ত লাগিলার লিভে ভাতির ধর্ম গ্রেম্ব্রাক্ত লাগিলার লিভে ভাতির ধর্ম গ্রেম্ব্রাক্ত লাগিলার লিভে ভাতির ধর্ম গ্রেম্ব্রাক্ত হওয়া য়ায় না; কুজরাই জ্রাক্তি রাজকিবিরের কারা ও দর্শনি লাজ আলোচনা করিবা নেই আভাব পরিপূর্ণ করিলাম। আমি অসভ্য ও বর্ষর জাতিদিপেরও ধর্মের মর্মাববর্ষা করিছে লালিলাম এবং হন্দারা ছ্রাছ বিষয়ের দিদ্ধান্ত করিবার অনেক সাহাব্য প্রাপ্ত হইলাম। দেখিলাম, বাহাদিপের বাঝা-ক্ষুর্জি করিবার সামর্থ্য আছে, পৃথিবী মধ্যে এমন কোন সম্পূদায়ই ধর্মের শৃক্ষণ হইতে উন্মুক্ত নহে।

অনন্তর আমি বত্ন সহকারে মনোবিজ্ঞান ও আত্মতত্ত্ব আলোচনা করিতে লাগিলাম। দেখিলাম, ধর্মাজ্ঞান মনুষা জাভির সাধারণ ভাবেকার। সভাই কি ধর্মজ্ঞান মনুষোর স্বাভাবিক ? উহ। কি মনুবোর আত্মাতে অবিভিন্ন ৰূপে বিদ্যান বহিয়াছে? এবং মনুষোর উন্নতির সহিত কি উহার উন্নতি হর না? আমি অন্তদৃটি ভারা দেখিলাম ধর্মাজ্ঞান স্বতংগিদ্ধ ও ছ্রপনের। তবে আ-मात नात मकन मनुयार्शक व्यन्त्र विदार। ধর্মা-জ্যানকে শ্বতঃসিদ্ধ ও অপরিহার্য্য বলিয়। অঙ্গাকার করে? বাইবল ও খৃঞ্জান্ সমাজ क्रे अर्भुत उन्जत अनात्म क्राय सम्मर्थ। क्रे জন্য আমি মনুষোর স্বভাব স্থাম কমে পারী-काश अबुङ इट्लाम এवः त्य छेशानां म स्टेटङ আমার ও অন্যান্য মনুষ্টোর অস্করে ধর্মকান প্রাচ্ছুত হইলা থাকে, আত্মবিজ্ঞান বারা ভুকো উদ্ভাবন করিতে চোকিত কইলান—্য কারণ অবলয়ন করিয়া পরীকা ও অভিজ্ঞত। ঘণ্ডা কোন বিষয়াসিখাত করিতে হয়, সেই কারণ অবলয়ন করিয়া, ধর্মজ্ঞান কোন খান म्हेटङ উৎপद्य स्**हेट्डट्ड, कामातः पर्यु नवान** क उत्क ना जिल्लाम । जर्जन ना दिलक ना माना -मानाना शक्क भवादिनाइना कडिएन अ विवास निहर्ण द्वारा नात ना । जान क

हर्ग, राटकहि, स्थिर, श्रित धरः कडा-निग् कड़ वाहीता याराटक माना व्यक्तांत পরিপোষণ করিয়াছেন এবং রিড্ও ক্রীয়ার্ড যাহাকে বিস্তৃত করিয়া গিয়াছেন, ভাষা इहेट यदकिथिद माहाया शाख्र हहेलाम। এই বাহা দর্শন আমার ধর্ম-বিষয়ক সহজ **•জ্ঞান উৎপন্ন করিতে পারে নাই, অথবা** মানৰ জাতির অন্তঃকরণে কিৰপে ধর্মভাব প্রাতুর্ভ ভ হইল, ভাহারও কোন ইতিহাস প্রদর্শন করিতে সমর্থ হয় না। এমন কি, যাহারা সহজ্ঞ জ্ঞানকে ধর্মের পন্তন ভূমি विनया विश्वाम करत ना, अहे मछ महे जि-টিদ্জাতির উপরেও আধিপতা স্থাপন ক-রিতে পারে নাই। ক্লার্ক ও বট্লরের ন্যায় विष्कर्भ, कछ अर्थार्थ ७ गाँदतात नगात्र विषान ধর্মাণাস্ত-প্রণেতাগণও এই জটিল ভাবের मिक्कान्य कतिट्ड मगर्थ इन गाई। रगमन जु-গর্জ-নিহিত লৌহ চুয়কের নির্দ্ধুণ গতি প্রতিরোধ করে, দেই ৰূপ অপ্প বা অধিকই হউক নিগ্ঢ় শাস্ত্রের শাসন উহাঁ-দিপের বিচার-শাক্তির স্বাধীনত। অপহরণ করিয়া থাকে। ফরাদিস্দর্শনকার কু-জিন, যে উজ্জুল দর্শন শাস্ত্র প্রচার করিয়া-ংছন, তদ্মারা বিস্তর উপকার দর্শে. কিন্তু উহা তাদৃশ প্রীভিকর নহে। চিন্তা-শক্তিতে অদিতীয় ইমানুয়েল ক্যাণ্ট জর্মানির মধ্যেও নিতাত্ত নিকৃষ্ট লেখক ছিলেন; ভিনি যদিও এসন কোন বিক্ষান্ত করিছে পারেন নাই, বাহাতে আমার ভূঞ্জি হইতে পারে, ভথাচ আমাকে বিশুদ্ধ প্রধানী ও একুত भाष धार्मन कविद्याद्वन ।

स्माम मिश्रमाम मन्द्रसाद क्रक्रकेलि भाष्ट्रभाग साहि। ये ममस साम श्रात मग्रद्रमात सामादिक मश्कात इटेट मञ्चलका, स्वर् कित दिस्त्र। यह मञ्चलक मूर्जि ए स्वर् कित दिस्त्र। यह मञ्चलक मा একাণে ধর্ম সংক্রান্ত তিনটি আবশ্যক বিষয় উল্লেখ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম।

প্রথমত ঈশ্বর বিবয়ক সহজ জ্ঞান— ঈশ্বরের অন্তিত্ত্ব বিশ্বাস সহজ জ্ঞান প্রভা-বেই উৎপন্ন হয়।

দ্বিতীয়ত ন্যায় বিষয়ক সহজ জান— আমাদিনের ইচ্ছার একান্ত অনায়ত, অবশা-পালনীয় নীতির অন্তিত্তে বিশাস সহজ জান পভাবেই উৎপন্ন হয়।

তৃতীয়ত আত্ম-বিষয়ক সহজ জ্ঞান— স্বাহন্ত্র্য জ্ঞানের মূল কারণ মনুযোর আত্মা অবিনশ্বর ইছাও সহজ জ্ঞান প্রভাবেই উৎপন্ন হইয়া থাকে।

মানব প্রকৃতিতেই ধর্মের ভিত্তিমূল নিবন্ধ রহিয়াছে। নাস্তিক বা উগ্রন্থভাব গোঢ়ারা অস্বাকার বা স্বমত-সমর্থন করিবার নিমিত্ত যতই কেন বিতপ্ত। করুন না,কিছুতেই ইছা খণ্ডন করিতে পারিবেন না। আমি সফলভার আশা ও বিফলভার ভয়ের বিষয়ে বাক্যক্ষুর্তি না করিষা আধ্যাত্মিক পরীক্ষা कतित्व अतुष इहेनाम। आमि भोजातः ক্রনে ভিনটি সভঃ মনোবিজ্ঞান বলে সংস্থাপন পূৰ্বক অভিশয় সম্ভূফী চইলাম এবং এই ৰূপ একটি প্রণালী উদ্ভাবন করিলাম, যন্তারা স্থ-শিক্ষিত ব্যক্তি বৰ্গের মনে ঐ তিন্টি সভা হাদরক্ষম করিতে দমর্থ হউব ; কারণ মূলী-ভূত স্বাভাবিক সংস্কার-সকল আপনা **इहेट इहे माधातगढक के मडाछान अन्।** করিতেছে 🗆

অনন্তর আমি ঈশ্বর নীভি, ও আত্মার অবিনশ্বর বিষয়ক আত্মপ্রভায়কে উজ্জ্বল করিতে সভা দৃঢ়াভুত এবং ঈশ্বরের শ্বরূপ, নীতির শ্বরপ ও অনস্ত জীবনের গতি অমুস্ জান করিতে শ্বরত হইলাম। এই সমস্ত বিষয় দিল্লান্ত করিতে আ্লাকে ছুই প্রকার প্রধানী। শ্বলম্বন করিতে হুইবাছিল। প্রধান কারণ দারা কার্যা নিরূপণ, বিভীয় কার্যা বারা কারণ নিরূপণ।

প্রথমত আমি সভা অসভা, স্থানিকত অশিকিত, সকল প্রকার জাতির ইতির্ভ হইতে ঈশ্বর্ নীতি ও স্বর্গ নরকের বিষয়ে কি ৰূপ অভিপ্ৰায় ব্যক্ত হইয়াছে তাহা সং-গ্রহ করিলাম এবং যে প্রকার মত প্রাপ্ত হুইলাম, ভদনুসারেই দে সমুদায়কে একপ্র-কার শ্রেণীবদ্দ করিয়া লইলাম, কিন্তু উ-হাতে আমার তাদুশ প্রীতি জন্মিল না,কারণ ঈশ্বরের সরূপ, নীতির প্রকৃতি এবং অ-নম্ভীবনের গভি বিষয়ে সর্ববাদি-সম্মত कांन मंडा डेटा रहेट उ सेश्वक रहेव गी। কেবল কতক্ঞলি লোক এই সমস্ত বিষয় কিৰপ অনুভৰ কৰিমাছিল, ভাছাই এক প্রকার অবগত হই গান। তথাত ইহা দার। তংকালে আমার বিত্তর উপকার দশিয়া-ছিল, তালার আর জোন সংশয় নাই।

দিতীয়ত আমি আমু প্রতায়-সিদ্ধ অন্ত-দুটির মূল বিষয় হণতে ঈশ্বর, নীতি ও পর কাল বিষয়ক জ্ঞান সংগ্রাহ করিতে চেন্টা कत्रिनाम। এই काल एथन मनुद्यात थ-কুতি হইতে মতা সংগ্রহ করিতে প্ররুত্ত হইলাম, তথন আর মানব জাভির সংকীৰ্ণ ইতিহাস আমার প্রতিবন্ধকতাচরণ করিতে समर्थ क्हेल ना। किन्हु এই সমস্ত বিষয় যে কি পর্যান্ত কঠিন এবং তত্ত্বানুসন্ধায়ী মনুষ্য বিশ্বজনীন সভা অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হুইয়া যে কড দূর ভ্রমে নিপ্তিভ হন, তৎ-কালে আমি ভাষা বিশেষ অবগত হইতে পারি নাই কিন্তু এ ক্ষনে অপেকারত সমধিক হৃদয়ঙ্গম করিয়াছি। এক রেপু রাণুকায় আমার তারকা ভ্রম ইইয়াছে কি न। ভাষার পরীক। করা বিচক বারির मन्भू र्व जारुष्ठ मत्मर नाहे।

थामि करल किम किम काकित स्था

भाख, र्क गःकाब कांग्रे व क्षेत्र सारवा माराया व्यवस्था कविश याधाशिक देखि मकन भर्गा लाहमात्र अपूज हरे मारे, किछ याँहाता यक्ष-मध्यतन, यक्ष, अविकाशनी, ভবিষাৎ গণনা, देन्द्रवानी, जाकिनी, जूक ও ইন্দুজাল প্রভৃতি বিষয়ে হস্তক্ষেপ করি-রাছেন, আমাকে তাঁছাদিগের মকেলিভ গ্রন্থেরও আশ্রয় গ্রহণ করিতে হইরাছিল। ধর্মাবিজ্ঞানের প্রকৃত পদ্ধতি হইতে প্র-রিচ্যুত বিখাতি ইছদি ও খৃটিয়ানদিলের বলিয়া প্রথিত অথক্ত পুস্তক, পুরাতন বাইবলের অমূলক সন্দর্ভ ও মূতন বাইব-লের সন্দিগ্ধ মত এবং নিয়োপ্লেটেনিই ও নফিকন সম্প্রদায়ের অন্ত কম্পনা পাঠ कतिनाम। यनिष्ठ जनकारन छेदकुके धर्मा গ্রন্থ সমুদায়ই পর্যাবেলাচনা করিতে আরম্ভ করিয়াছিলাম, ভণাচ মিটিক সম্প্রদায়ের मक्ष्मिङ व्यवका जानूगीलन कतिरु खरुखः। वो अञ्चल। अमर्भन कति नारे।" सीराता ধর্ম-বিজ্ঞান সঙ্গত অনুষ্ঠান, জ্ঞান-শিক্ষা ও অন্যান্য নীতি প্ৰতিপালন না করিয়া কেবল পরোপকার দাধনে যত্নীল হইয়। থাকেন, আমি তাঁহাদিগের ও বিষয় সবিশেষ পর্য্যা-লোচন। করিতে লাগিলাম। আমি এই প্রণালী অবলম্বন করিয়া আ**ত্মার অপ্রকৃত** কাৰ্যা সকল শিক্ষা, যাহা সভা বলিয়া এচ্চ বিত হইয়াছে এই ৰূপ অমূলক ৰুপ্ৰাৰ বিষয় পরীক্ষা এবং যাহা অপ্রতিহন্ত বেগে:: সহস্র সহস্র বৎসর অভিক্রম করিয়াছে এইৰপ অলীক মনোরথের বিষয়ও আলো-চনা করিয়। সাধারণের অপরি**ভাত** সভা मकल मकलम कतिया लहेकीम।

উন্ধান্ত।

ভবানীপুর ক্রন্ধ-বিদ্যালয়

প্রধান আচার্ব্যের উপদেশ। ভূতীয় সংখ্যা। ৬ জ্যেষ্ঠ ১৭৮৬ শক।

खावर्क दरावद्व मुखक उनितरातद व्यवस्य चार्छ যে মহাশাল শৌনক অলিরাকে জিজ্ঞাসা করি-त्सन "कन्त्रित्र अभरतातिकाटल गर्विमन दि-জ্ঞাতং ভবতি " কাহাকে জানিলে হে তগবন্! সকল জানা যায় ? "ডেলৈম সহোবাচ" অজিরা ভাঁছাকে বলিলেম। ভূমি যে বিদ্যার প্রাক্ষ করি-(७६, त विमा कि ना "यम उनकत्मधिनमाएड" যালার ছারা সেই অক্ষয় পুরুষকে জানা যায় মেই ব্রহ্ম-জ্ঞানেতে সামান্য-রূপে আর সকল জানা যায়। সর্ব্ধ-শ্রেটা ও সর্বাশ্রয় পর্যেশরকে জানিলে যারভীয় সৃষ্ট ও আশ্রিভ বন্তুর সহিত ভাঁহার যে এক সামান। সম্বন্ধ, ভাহা অবপত হওয়া যায়। পরা বিদ্যা এই ব্রহ্ম-বিদ্যা; ওদ্ভিন ঋক্ যজ্ঃ नाम रवम, देदात्र। नकलि खट्यां विमा। शता विमा। गकन विमा । अक्ति । यमन नकरनत भून जक्क, त्क्यमि मकल विमाति मूलीकुछ जक्क विमा। বেমন ব্ৰহ্ম সকল বস্তুতে ওড়প্ৰেড হটয়া আছেন, ज्यान उक्त-विमा भक्त विमाए है मीखि शाह-ভেছে। যে কোন বিদ্যা হউক, ভাহার ছারা ত্র-क्त-विमा लाख कड़ा यात्र। कि बाहीब-विधान, कि फु-जब्द, कि मदना-विकान, कि क्यांजिसिमा, मकल विमारि छै। होत स्थान मेखि मझल-छाटवत निका (परा। उकारक लका हाथिया बाहा आहला-চনা করি, সকল হইভেই ভাঁহার উপদেশ পাই। व्यामत्। উপদেশের यোগা हहेला, नमी मागत, রক পান্ব, অচেডন নিস্তব্ধ বস্তু ইইভেও টোহার উপদেশ পাই। आमत्र देवद्व बंदना-निद्दम क-রিয়া জ্ঞান-গর্ক যে কোন পুস্তক পড়ি, ভাহা रहेटलहे जमा-विमा। माछ कति। मात्रीत-विधान পড়, দেহের অমূত কৌখলের মধ্যে দেই জান-बक्रशतक ध्येष्ठाक कतित्व । फू-छुब शार्थ कत्र, फू-गट्डित जारम्मामदम्त मट्डा डीहात महली चिल्त পরিচয় পাইবে । আত্ম-তত্ত্ব আলোচনা কর, তাহাতে তাঁহারি কর্মণার নিদর্শন পাইবে। ই-ভিহান পুরাত্তত অধানন কর, নেই নকল বিচিত্র विनात मत्या जीशांत महन-रख मिर्छ नारित । त्व वित्रा अधारम कत्र, व्याची स्ट्रेटन दस्स् वित्राह त्वांगारक जन्म काम विकास क्रिका वामानिका

ৰায়া আমরা এই মিকা পাইছেছি যে এক বান বভাকে আঞ্জন করিয়া নমুদার জগং রক্ষিত ছ-रेट्ड ; क्रेस्ट्ररे धक गांव मृत भड़ा, जांत मधूनस সভা তাঁহ। হইতে নিংস্ভ হট্যাভে। সেই মূল সভ্যকে জানিলে আরু সকল সভ্যের অর্থ বোধ रम, जारा ना कानिएक भारितन आमारमंत्र कार्यान ন-অন্ধার আর কিছুতেই বার দা। যানস্তরে বর্ত্তমানাবয়ৎ ধীরাঃ পণ্ডিউৎ মনামামার। मत्त्रमामानाः পরিपश्चि मृहाव्यक्तरेनव नीव्रमाना-यशास्त्राह। (क्टोशनियम्) याहाता अश्वद्रक ना জানিয়া অবিদ্যার মধ্যে বর্ত্তমান পাকিয়া আপ-নাকে ধীর ও পণ্ডিত বলিয়। মনে করে, . দেই মূড়েরা অহা কর্তি নীয়মান অহ্বের ন্যায় সঞ্জ-নামান হইয়া ইভস্তভঃ পরিভ্রমণ করে; জানের গমা স্থান দেখিতে পায় না। অভ এব সকল বি-माति व्यक्तिश्री, मकल विमाति मूल, द्वक्तविमाहि পরা বিদ্যা; "যয়া তদকর্যপিগ্নাতে" বাহার ছারা সেই অক্ষ পুরুষকে জান। যায়।

এ দেশের লোকের এই একটা সংস্কার আছে, বেন ভারত বর্বে কথনই মতের পরিবর্ত্তন হয় নাই ; কিন্তু ৰাম্নবিক এ সংস্কার অভীব অমূলক। 'ভিত্রাহপরাঝগ্রেদাযজুকোদঃ সাম্বেদোহথকবেদঃ र्मिका करण्या वर्गाकद्वपर निकल्ड ए छत्न। स्वैगालि-ষ্মিভি। অথ প্রাষ্য়াভদকর্ম্ধিগ্রাভে''। कर्णुम यक्त्र्रसम् माम द्वम अवसं द्वम भिका कन्न वाकित्र निकल इक का विषेत्र, व ममूम्य व्यास्त्री বিদ্যা ; ৰাহার ছারা অক্ষা পুরুষকে জান। ৰায়, ভाষাই শ্রেষ্ঠ বিদ্যা। পূর্বকার বৈদিক ভাবের যে কভ পরিবর্ত হইয়াচিল, ভাষা মুওক উপনি-যদের এই বাকোভেই জান। যাইভেছে। ঈশ্বরের उम्रजिमीम द्रांटका পরিবর্ত হইবেই হইবে। य সময়ে আত্ম-জ্ঞানের ও ব্রহ্ম-জ্ঞানের জিজ্ঞানা व्हेंग्राष्ट्रित, त्र ममत्त्र देवनिक कर्मा-काटखंद छेन्द অনেকেরই অশ্রজা হইয়াচিল; তথন আর ইক্স যিত বরণ প্রভৃতির উপাদনা দ্বারা তাঁহাদের **দ**-न्तर जुल्डि इरेज ना। धक मगरप्र दिनिक **मज**ा পরমোৎকৃষ্ট ও বেদোত যাগ যক্ত নিভাস্ত আ नूरकेश विवश नकरनंत्र तोध छिन, भरत उभिन-বদের সময়ে দেখিতে পাওয়া যায় যে তৎকালের জানবান্ পণ্ডিভের। বেদোক্ত কিয়া-কল্লাপে পু-র্বের ন্যায় প্রজাবান ছিলেন না। প্রত্যুক্ত জী-হারা কক্ষজুং দাম প্রকৃতি সমুদ্দ বেদকে নি-कृषे विमा, क्वत उत्तानिमगुटकरे शता विमर् विनिधा व्यक्तिभन कतिशा निधादक्षम् । स्वरमञ्ज मरबा সংহিতার পর ব্রাহ্মণ, ব্রাহ্মণের খোষ ভাগ উল-नियम (ध नमरम साविक् क रहेन, दम नममनाम পরিবর্তন জন্প পরিবর্তন নছে। উপনিবদেই

বৈদিক কর্মা-কাণ্ডের নিন্দা আছু আবছে। প্রিরা-হোডে অচুচাবজরণা অটাদনো জনবরং বেষু কর্মা এডকে রো বেগতিনন্দান্ত সূচাকরামূত্যন্তে পুন-রেবা পয়ন্তি'। এই বক্ষ-রূপ অঞ্চেষ্ঠ কর্মা-নকর অ-স্থায়ী ও অচুচ, যাহা অটাদশ ক্ষিক্ ছারা সম্পন্ন হয়; যে মূচেরা ইহাকে প্রেয় বলিয়া অভিনন্দন করে, ভাহার। পুনঃ পুনঃ জরামূত্যুকে প্রাপ্ত

বৈদিক সময়ের ঋৰিরা ঈশরকে কেবল বাহা বিষয়ে দেখিতেল, উপনিষদের সময়ে তাঁহারা তাঁথাকে আত্মাতে অনুসন্ধান করিতে শিকাক-রিয়াছিলেন। যত দিন প্রাস্ত ভীহারদের বা-হিরেভেই মনের অভিনিবেশ ছিল, ভভ দিন তাঁ-হারা ঈপরের দীপামান মঙ্গল ভাবকে থও-থও-কপে দেখিয়াই তৃপ্ত কইতেন। তাঁহার। নবীন নেত্রে অগ্নির আভা, ভূর্বোর প্রভা, উষার সৌ-ন্দর্যা, মেঘের কান্তি দেখিয়া হর্বে উংফ্রেও আ-म्हर्पा भिश्विष्ठ इहेर्जन এवः अन्धरतत स्मर्थे मकल अहरू कार्यात मर्गा नेश्वतक है अलाक क्रिएन। অনম্ভ ঈশ্বরটে পরিমিত ভাবে সকলেভেই দে-থিজেন। ভাঁহার। অগ্নির অধিদেবভাকে শ্বভন্ত দেখিলেন, বায়র অধিদেবতাকে সতন্ত্র দেখিতেন, নেংখন আপ্রেবভাকে স্বভন্ত দেখিভেন্। বেমন্ রাজপুরুষদিগের এক এক বিষয়ে অধিকার থাকে, তেমনি ভাঁহার৷ প্রভাক দেবভার এক এক বি-বয়ে অধিকার মনে করিতেন। যিনি ত্রিত ধ-রাকে জল সিঞ্চন স্বারা ভূপু করেন, ভাঁহার বায় সঞ্চালনের উপর কোন অপিকার নাই। যিনি সমীরণের মধ্যে থাকিয়া সমীরণকে প্রেরণ করেন, ভাঁছার সমুদ্রের উপর কোন কর্ত্ত নাই। যিনি শমুদ্রের ভরঙ্গ-কোলাহলে বিরাক্ত করেন, ভিনি নদীর লহরীতে ক্রীড়া করেন না। যিনি জ্লানের অধিষ্ঠাতী দেবভা, ভিনি ধন পানোর নহেন। এই প্রকারে পূর্ব্য কালে উভার। সেই এক ঈশরকে মানা ভাবে পূজা করিভেন। ভাঁহারা অথও সচ্চিদানন্দ পরব্রহ্মকে পুথক্ পুথক্ দেবতা-রূপে পরিমিত ভাবে ভার্চন। করিভেন। তাঁহার। ক-বিভর্গে রুষায়িত ক্দরে জগ্নি বার্ আদিতো ঈশবের জীবন্ত মঞ্জ-ভূর্তি আরোপ করিয়া স-দ্যবে গাখভাবে ভাঁছারদের প্রজা করিভেন। প্র-তের নিখিত্তে, পশুর নিখিত্তে শক্তদিপের, উপুরে अप लाट्डब निविद्य नियदित निकटि जीहांबदमद ত্রামা ভিল। সংসারের সত্তে সতে উভিরেলিনোর শ্রদা ভাজি প্রবাহিত হইড, সংসারের আছীত অমৃত পানে ভাঁহাদের আশা ভখনও উল্লেখ্য

व्यमन कारमण्ड नेपाइक गडा क्रम अवस्थ

नाम, रजमनि सन्त स्टेट्स के शिक्ष व्यानक स्थित हरा। लारमण्ड श्री किएक निकासिक प्रदेश कामा-त्ररमत निकटी मंडाएक उन्हान कतिया आकृति करते। कान के कांच श्रीकृष्णत श्रीकृष्णप्रदेक संस्थाना करते : জ্ঞান অধিক হইলে ভাবকে পরিভন্ন করে, জ্ঞান अधिक हरेला स्वानारक नगुस्त्र करहे। शृथिवीत कांनिम व्यवस्थात्र काटमत ठका व्यक्तिक स्थित मा, হাদয়ই বাহন্য কপে কাৰ্য্য করিত। ভারত বর্মের পূৰ্বতন কৰিয়া আতার প্ৰীক্তি-ছার দিয়াই ইশ্ব-রের মঙ্গলা ভাষা দেখিতেন 🖟 উভারদের দর্শ হৃদয়ে সকলি জীবন্ত ভাবে প্রকাশিক হৈছিল। আমরা বেমন সুর্যাকে অচেতন দেখি, ভাঁহারা **जाशांदक एम कदल पाचिर्डम ना।** -ऋर्या त्यम कीवछ शुक्रम, निनि शीम हैकाटण किन्न मानःक-রিয়া জগতের মঙ্গল সাধন করিতে**ত্নে ৷** ভাষরা বেমন মেঘকে বাস্প্রাশি বলিয়া ভাহাতে ঈশ্বরের কৌশল উপল্লি করি, তাঁহারা মেঘকে সে প্রকারে দেখিতেন ন।; তাঁগারা গন্ধীর বজ বিহাতের মধ্যে **खिक्त भरेगा वाशू-চाणिल म्याद कीवन फ्राह्माश** कतिराजन, भाष (यम कानिया अनिया अन्त वर्षाः । व्यक्तिमोदक भीजन क्रिट्सट्छ। टेरिकिक अधिका ভত্ত-জ্ঞান অভাবে কেবল ছাদ্যের ভাবে এই এ-কারে কম্পিত দেবতার পূজা করিতেম। ভাঁহার। সেই সকল দেবভাদিগের ভৃত্তির জন্য ঋতগুদ হইডে স্তোত্র পাঠ যজ্পেদ প্রণীত যাগ যজের অনুষ্ঠান এবং গাম বেদের মঞ্জীত ছারা ভাঁছারদের পুজা করিভেন। পরে বধন তাঁহারা বাহিয়ের বিষয় হইতে ইপ্রিয়দিগকে ক্রিয়া শীয় আতাকে দেখিতে পাইলেন, তথন দেই আতার সঙ্গে পর্যাত্মার যোগ বুঝিতে পারিলেন—সেই अविभ विमास-विकारनद्र आत्वाहना आद्रेष्ठ हेरेल। বেদেতে আতা শব্দ বেমন বিরল, উপনিষদ তেমনি আধাাত্মিক বিদাতে পরিপূর্ণ। বাঞ্জের विषय विमन थेख थेख, अखदत्त कांचा व्यमनि अथा । वाहिरतत विषय देव मिरकत मन श्रेष्ठ मिन নিবিট ছিল, বড দিন ভাঁহারা আত্মাকে দেখিডে পান নাই; ভড় দিন সুৰ্য্য অগ্নি বায়ু আছুছি সূট বস্তুতে ইপরের মঙ্গল ভাবের অর্চনা করিছেন। যথন তাঁহারা আয়াকে অন্তদুষ্ঠি ছারা দেখিতে পাইলেন, তথন ডাহাকে একই দেখিলেন। তাঁ-হারা আমি বলিয়া যাছাকে জানিলেন, জাহা ক-थनरे हरे नक्ष्य जामि **अकरे। तरे जायात** अल्दा आवार गर्थन शहमायादक एवं विद्रामन, क्रमन मकरमञ्ज्ञ व्यवस्थानी नेपद्रक अकरे व्यक्तिक विविधा क्षानिरलन। छन्न क्षतिरिक्त अस्त व्हेर्ट **बर्ट महावाका जिल्लाहिक स्ट्रेंग**ा नवाहित्व शुक्राच वन्त्र जावाजित्हा म अवेद ! (देख विवेदित) -

लिहर) त्मरे और विनि शुक्रता, और देन से विनि जानिएका, किनि और । और श्राकात कारन दान स्टेस्ट विम स्टेस्ट अनिनियमंत्रा लितिय स्टेस्ट जनस शुक्रत्यत जाम और कात्रक वर्ष्य श्राहित्रक स्टेम।

্জভি পুরাকালে ভারত কর্মে বৈদিক ধর্মের আলোচনা আরম্ভ ইয়ানেট হাত্র ভইভে উপনি-यरपत्र मयदम् देशकि कत्र कतिग्राट्म, छारा এই बुदका बुक्षा बाहे छिएह। देनवन्हावः शुक्रस्य वन्हा- সাবাদিতে স একঃ । শালাক কেই এই যিনি পুরুষে এই সেই বিনি আদিতে ভৌনি এক ৷ বিনি আমার এই আত্মাতে আছেন, তিনি মেই সুর্যোতে আ-ছেন, ডিনি এক। সুর্যোর অধিদেবতা ভিন্ন আর আগ্রার স্বধিদেবতা ভিন্ন, এমত নহে; কিন্তু বিনি সেই ফুর্যোর অন্তর্যামী, ও ধিনি এই আতার অন্তর্গামী, তিনি একই। ''একো বশী সর্বা ভতা-ন্তরাত্মা'' ডিনি এক, সকলের বদী এবং সর্বা ভূতের অন্তরাত্ম।। ভারত ভূমির ধর্ম বীজ এই দেশের লোকের যত্ত্বই প্রক্ষ টিভ হইয়াছিল, অন্য प्राथित कल जिल्ला द्वारा दश नाई। जेशहरू श्रीय चाद्याटक प्रथ, हेश डिश्रामिटम्ब चाटम्स । "এক্ষেৰাত্বভীয়ং" উপনিষ্দেই প্ৰকাশিত হই-ग्राहिन: उत्कात य अमस मझन छात्र, स्न छेर्शान-ষদেরই তাব। ''সভাং জানমনশ্বং একা' धारे मंद्र मर्ख खान करें एक धारे कारण व्य महानाटम नकरणत कर्श अटनम कतिए उरहा, देशा खना रकाम ব্দাতির আগ্রায়ে উৎপর হয় নাই। যে গর্মোর ভাব ভারত ভ্নিতে নিহিত ছিল, তাহাই আলো-চনা ভার। প্রাক্টিভ হইয়াছে। যথন ঋষিরা व्यक्तिकाम रुदेश " अक्टमवाद्वीय: " अहे वाका উচ্চারণ করিলেন,তথন এই ভারত বর্ষের সৌভাগ্য ৰনিতে হইবে। ভাঁহারা পরব্রহ্মকে অখণ্ড-স-किमानण-क्रांश क्षांश क्षेत्रा कान-वृक्ष व्हेरनन। '' সং প্রাটপানম্বধোঞ্জানস্তাঃ কৃতাবানোবী-ভরাবাঃ প্রশাস্তাঃ।^{১১} কিন্তু তথনকার ভয়ক্কর অজ্ঞান-জনসার্ভ লোক-সমাজের অবস্থা দেখিয়া छै। होत्रा नाथातर्गेत मध्या रम छहान । श्राहात कति एक उरमही इरेटनन ना । ः डाहाता अहे मामझमा छा-প্ৰ করিলেন। যাহার। হহী থাকিবে ভাহার। বাগ যজ্ঞ ফিয়া-কলালে পরিনিক দেবভার উপাসনা षाह्या नगत्र बालन कहिरवक । अधि कुलरमध्यक् क-मानि किकीविटक्षक तमाहा अवर पनि माना-त्त्रदेशिक न कर्मा निलाहक नद्या। (बाक्रमदन्य-मर्गराजानमम्) हेर त्याच्य वात रसामि कर्य-तकत अपनेति करण अंग वस्तर जीवित शान्त्व देना महित्रम । व अनाह सम्बद्ध व पुरि COMICS STRICT WAS SEE FOR AL SEMEST

কার একারান্তর নাই। শাঁহারা ব্রহ্ম-জান লাভ ক্রিবেন, তাঁহারা সংসার পরিভাগে করিয়া অরণ্যে তৈ কাচর্যা অবলুমন পূর্বক তাঁহার উপা-সনাতে রভ থাকিবেন। '' তে হ স্ম পুর্তক্ষণায়াশ্চ বিভৈষণায়াল্চ লোকেদণায়াশ্চ ব্যুখায় ভিক্ষাচর্যাই চরজি,।'' (বহদারণাকোপনিষদ) যাঁহারা ব্রহ্মকে জানিয়াছেন, তাঁহারা পুত্ত-কামনা, বিভ্-কামনা ও লোক-কামনা হইতে নিব্নত হইয়া ভিক্ষাচর্যা অব-লয়ন করেন।

व्य काटन डेशनियदमंत्र तांका चात्रक हरेन, ঈশবের্জ্যান আবিষ্ঠ হইল, সে কালে অপ্প লোকেই ভাছা জানিবার উপযুক্ত ছিলেম। সাধা-त्रागत मापा र्म ज्हान ध्वातम कतिएक शादिन ना, কভিপয় উন্নত-ভাৰ-বিশিট লোকেই উপনিষদের বর্মা এহণ করিলেন। হাঁহার। সমুদায় সমাজের **एफा-यक्रण, छीरांबरमबरे मर्मा छार। नक् बरिल।** জন-সমাজের সেই নিবিড় অদ্ধকার ভেদ করিয়া জ্ঞান-স্থা প্রবেশ করিছে পারিল না। স্বর্ণান वाभी मधामाताह उपनियम्ब अधिकाती इंडे लगः। সাপারণের মধ্যে ধেমন যাগ যত প্রচলিত চিল, তাহাই धाकिन। সুভরাৎ উপনিষদের ছারা সাধারণের যে উপকার হওয়া, ভাঁহা হইল না। যাঁহারা উপনিষদের অধিকারী হইলেন, ভাঁহারা বরং বিবাদ ভঞ্জনের নিমিক সামপ্রস্য স্থাপান ক-রিলেন। ধাহার। একমেবাদিতীয়ং ব্রহ্মকে না জানিবে, তাহার। যাগ বজ করুক। হারা সভা জানিতেছে, ভাহারা যেমন ভাহা কি প্রকারে প্রচার করিবে, ভাবিয়া ভাকুল হয় ; 🕏।-হারদের সে উৎসাহ ছিল না। তাঁহারা সভা লাভ করিয়া আপনারাই তৃপ্ত হইছেন, আপনারাই ঈশবের গানি ধারণায় নিযুক্ত থাকিতেন। এই अना উপনিষদের নান আরেণাক। ইহা অরণোর ফল, গৃহী ব্যক্তির ইহাতে অধিকার নাই। আ-মরা যে সকল মতা দেখিয়া আশ্চর্যা হইভেছি, সেইটি উছোৱা অভি যত্নে দাধারণ লোকের নিকট ছইতে রক্ষা করিডেন। উপনিষদ্কেবল ভারণো ব্দিয়াই পড়িতে হট্বে, গৃহত্তের অরে ভাষা প-ড়িতে নাই। ''সরণো তদধীধীত'' (সামনাচার্যা ধৃত) অরণো ভাষা পড়িবেজ। জনশূনা হি-মালয়ের চ্ড়াভে রত্বরাজি নিহিত থাকিলে, যে क्रश इच, मनामीपिटणत इटल्ड जिल्लिस्ट्रपद दमके व्यकात कार किया। এक नमत्य अधिता बाह्य बिंब-য়ের শোভা সৌন্দর্যো অভিভূত ছিলেন, অগ্নি আদিতাকেই পূজা করিভেন, বাহ্যিক আড়ুত্র দার। ঈশবের প্রতি ভক্তি প্রকৃষ্ণ করিছেন। ক্ষমে ক্রমে তাঁহারা বাহ্য বিষয় হইতে প্রজিবিত্ত হইয়া সত্তত্তি ছারা শীয় লাড়াতে সভ্য-বহুণ পারনার্যাকে দেখিনের, কিন্তু বঁহারা নেই কভা জানিনেন, ভাচা তাঁচারদেরই মধ্যে আইন র-ফিল। আনরা এখন নেই ব্রেক্স জান ধারা সমু-দায় সংসারকে তেন করিয়া ব্রেক্সের পভাফা উ-ড্রীন করিভে চেটা করিভেছি।

मिरे आपिय कान सर्देश्व अ कान शर्यास दैव-पिक थर्पा करम **उन्न**ड दहेगा जाकार्यम करणे था-কাশিভ হইয়াছে। পূর্ব পুরুষদিগের অধিকারে व्यामहा व्यथिकाती, এই व्यामात्रस्त त्मोकांगा। ভারত কর্বে পর্নের কাঠা-ভাষ। এখানকার প্র-थम अह दरम ; काहा धटमांत कमा, क्रेश्चटतत कमा, অরুণ-কির্ণের ন্যায় উথিত হইয়াচিল: ভাহা হইতেই ক্রমে ক্রমে জ্ঞান রূপ সূর্ব্যের প্রভা আ-মারদের স্মাত্মান্তে প্রকাশিত ছইতেছে। সেই প্রবা কালের পূর্ব্ব পুরুষদিণের বেদের মধ্য হইতে যে সকল সভা পাইভেছি, ভাহা অতীব আদ্রণীয়। পূর্ব্ব পুরুবদিগের পরিশ্রেম আমরা বার্ব করিছে চাহি না ; উাহারদিগের পরিপ্রমের ফলের আ-মরা অধিকারী, তাহ। আমরা এহণ করিব। আ। মরা কিছু হাতন ধর্মা প্রচার করিতেছি না। চির কলি হইতে যে ধর্ম উলভ হইয়া চলিয়া আ সিতেডে, তাহাই ব্রাক্ষ ধর্ম। ক্ল্যোভিকিল্যা কি আজি প্রকাশিত হইল গুন্দ চিকিংসা-বিদ্যা आंक्षि रहिष्ठ इडेल ? हिंद कालडे या विभाग हिल्हा আসিভেছে, ভাহাই উন্নত ভাবে অদ্য দণ্ডায়্মান হইয়াছে। ভেমনি ভারত ভূমিতে যে ধর্মা চির শাল চলিয়া আদিতেচে, ভাহাই আজ উন্নত হইয়া ত্রাক্ষধর্ম নামে পরিণত হইয়াছে। আ-मत्रो कि शुर्धकात आंडागामिशक श्रीत्काश क-রিয়া আপনারদের জয় খোষণা করিতেচি ? আ-মরা আরো নত হইরা বলিতেছি যে বদি উপনি-यरमंत्र भटशा अमन अर्थीश महावाका मकल ना शा-ইতাম, তাহা হইলে ব্রাক্ষধন্মের এ প্রকার আ-পাণিক উন্নত ভাব হইতে পারিভনা। এফ नगरः जेसत् गङा ध्यकां कित्रारह्म, आत धक नगरप करवन नाहे, धमन ला नरह। धहे পুপিবীর অবস্থানুসারে ভিনি চির কাল সভা প্র-কাশ করিয়া আসিভেছেন। প্রথবীর উদ্ভিত্তর महामान भारतीय । अपनि इहेर्ड हा । दावन विष হইতে যে ব্রাহ্মধর্মের সাহার্য পাইভেছি, এমনো नटर . नक्न जान हरेट हे गोराया शाहेट हि। यक धर्मा कार्राह, गक्न धर्मा इंदेरक माहाया भाहिशा काशहरमत छेशदत जाक्रधर्म साशिक हहेसारह। বেদেতে পরিমিত দেবভার উপাসনা ছিল্ট উপা-नियम धकरमवाष्ट्रिशीयरमङ जिलानमा दिस्त य-तामा अतामा रहेक, वर्गन त्मेह क्रिमिना क्रियाबर व्यमारम् थाचि ग्राष्ट्र थाचितित कर्त इंट्रेटका

राहा प्राचित्र शृक्ष कार्यक स्वित्र ने स्वाधित्र की कि इत्याहित्यम, दनहें स्वकात स्वाधित्य कि विद्या के विद्या के स्वाधित के स्वाधि

रवगन यनि मध्या आधार हरेएड तुष्टक उपान করিতে হয়, ক্রমনি কেস কৈমান্ত মহাভারত সু-त्राग रहेटल त्रज्ञ वास्त्रिया महिरल हहेरन। सकता বে গ্রহণ করিকে হইবে ভাষাও নহে ; সকলি বে পরিভাগ করিতে হইবে, ভাষাও নছে। বেদ বেদান্ত মহাভারভাদি পূর্বভাদ শান্ত-নকল আলো-हमा क्रिटन मिथिए शहि, शाम्त्र मक्त क्यूडे ভাহাতে ইভস্তভঃ বিকিপ্ত হইয়া রাহ্যাছে। স্থা-বার যেমন ভারত ভ্নিতে সকল প্রকার পুস্তক অপেকা ধর্মোর পুক্তক জাবিক, ভেদনি প্রতি জনের ভাব আলোচন। করিয়া দেখিলে খর্ট্মের ভাব অধিক দেবিতে পাই। আমরা যদি দেশীয় ধর্মা ভাব রক্ষা করিয়া দেশের উন্নতি সাধন করি. जारा रहेतारे प्रत्नेत मकल रहेता: यपि प्रमा प्र-শের আসুরিক ভাব এ দেশে আরোপ করিতে ধাই, ভাহা হইলে দিন দিন আরে৷ ইচার অধোগভিট হইবে। ভদ্রতাবিনয় প্রীতি দয়া প্রভৃতি হৃদ-যের ভাব যত আমারদের মধ্যে নিহিত আছে, এমত আর কোন দেশেই নাই। আমারদের যে নকল সভ্যতার ভাব, পবিত্রতার ভাব, ভাহা রক্ষা করিয়া যদি আপনার্দিগকে উন্নত্ত করিবার অভি-লাব করি, ভাষা হইলেই আমরা ক্রভকার্যা হইব। जना त्मरणंत्र छात । स्मर्थ जार्माणणं ना कतिया অপনারদেরই হৃদ্যের সহজ ভাবে ইছাকে উ-মত কর, দর্ম প্রকারে দেখের মন্তল হউরে। প্র-থিবীর মধ্যা বল ভূমির প্রতি সকলেরই অনাদর, वैदारक रेकरहे आंवत करत मा। यमि मचा धरम् ইহাকে উমত করিতে পারি, যদি ঈশ্বর-প্রামানে ব্রাহ্মধর্মা এখানে সুপ্রভিত্তিভ হয়, ভবে এই বঙ্গ ভূমি আবার দকলেরই আদরণীয় হইবেটি আছ-क्र रह छड विश्वकन वनवागील। दङामना बह ব্রাকাণর্মতে অবহেল। করিও না, এই প্রিক্ত ব্রাকা ধর্মকে অবহেল। করিও না।

DISCOURSE

.. ier ... **AGAINST**

HERO-MAKING IN RELIGION.

For more than twenty years we have been made familiar with the phrase Hero-Worship. It has been applied not only in the regions of politics and literature, but in religion, as the phrase itself strictly claims. We have been told, from very opposite quarters that the excellence, as well as the characteristic, of the Christian religion turns on its venorating personal here in Jesus of Nazareth. Many who regard Jesus as a mere man, yet insist upon inscribing themselves his servants and followers, and on so wedding their honour for him with their adoration to God most high, as systematically to incorporate the two. Nay, some who utterly disown allegiance to Jesus-who think him to have taught many things erroneously, and to have had nothing supernatural in his character, in his powers, in his knowledge, in his virtue, in his birth, or in his com-rounications with God-still maintain that he is fitly called the Regenerator of mankind, and ought to receive-I know not what, acknowledgement-us our Saviour. It appears then not superfluous to hestow a little space on the treatment of this question.

I need hardly observe that personal qualities alone in no case constitute a hero. Action and success must be added; and action cannot succeed until the times are upe. No one knows this better than the True hero. True genius is modest in self-appreciation and is fully aware how many other men could have achieved the same results if the same vare conjuncture of circumstances had presented itself to them Men of genius are fewer than common men, but they are no accident. God has provided for their regular and continuous recurrence; their birth is ordinary and certain in every nation which is counted by millions. The same is true in every form of mental pre-eminence, whether capacity for leadership, or genius for science, or religious and moral susceptibility. Religion, separate from morals, is, of course, only fanaticism. We venerate ruligion only when built upon pure morals. Moral religion is notoriously a historic growth. and has depended on traditional culture at least as much as what is specially called science; and its progress is not more wayward and arbitrary than that of sciouce, if the whole of human history be surveyed. The present is ever growing out of the past, with a vigour and a certainty which never allow the fortunes of the race to be seriously dependent on any individual. Each of us is, morally as well as physically, a hirth out of antecedents. From childhood we are tutored in right and wrong, not only by professed teachers, but by all elder parsons who are around us. Improper deads or words of a child are reproved by a servant, or by an elder brother, or even by a stranger, as well as by a parent or a priest. We imbibe moral sentiment, as parent or a pricet. We impose moral sensument, as it were, at every pore of our moral nature; nor do we often know from whem we learned to abhor this course of conduct and to love that. Hence no wise man will stain originality for his moral judgments or religious sentiments. A foolish dogma, a fanciful tenet, may easily be original; but a pure sound truth is more likely to have been old. To prove its morally is moralible and certainly could not recomnovelty is impossible, and certainly could not recom-

mendity on the contrary, the older we can proce it to have been, the greater its estensible authority. For these reasons, in the theory of morals and religion, a claim of originality can seldom or never be sustained; in this whole field the question is less what a town has taught, than what he has persuaded others. Hundreds of us may have said, truly and wisely : "It is a great pity that Mahomedans, Jews, and Christians of every sect will not unlearn their dissensions, and Llend into one religious community. The sentiment must once have been even new; yet its atterance could never have earned praise and distinction. But if any one devoted his life to bring about such union, and succeeded in it, we should undoubtedly regard him as a moral hero; though (as just said) no one could succeed, until the fulness of time arrived and the crisis was seized judiciously.

Thus, in discussing the claims put forth for special and indeed exclusive honour to the name of Jesus we have to consider, not so much what he said, or is said to have said, as what he effected, what impression he actually produced by his life and teaching; what great, noble, abiding a sults his energies originated and bequeathed. The moment we ask, What are the facts? we seem to be plunged into waves of most uncertain controversy; info discussions of literature unsuitable for short oral treatment. Yet, before the present authence, I may with full propriety claim as admitted that which greatly clears our way I presume you to know familiarly, that the picture of Jesus in the fourth gospel is essentially irreconcilable with that in the three which precede, and is neither trustworthy nor credible. The three first gospels, taken by themselves, do present a character, a moral picture, sufficiently celf-consistent and in telligible to reason about. But our present question (allow me carefully to maist) is nor. Do we see in Josus a remarkable man, a gifted peasant, a dogmetist by whom we may profit, whose noble sentiments we may admire or appland? but rather, Do we find one who dwarfs all others before and after han? one to whose high superiority sages and prophets must bow; before whom it is rearoughle and healthful for those who have a hundredfold of his knowledge and breadth of thought to take the place of little children ? Or, at least, Mas. Europe and the world (as a fact) learned from him what it was not likely to learn without him? Is that THUE which is dianed into our ears, that Christendom has an bibed from him a pure spiritual, large-hearted, universal religion, adapted to man as muc, comotting mankind as a family and emobling the individual by a new and living Spirit, maknown to the philosophies, unknown to the priesthoods, untaught by the prophets, before him?

Even if we had no meight as to the comparative value of the several gispels, one broad certainty affords solid ground to plant the foot upon. The positive institutions and active spirit of the first Christann church are notorious and indubitable. tearning what the Apostles established in their Master's name within a few weeks of his death, we know with full curtainty what they had understood him to teach, what impression he actually produced, what was the real net result of his life and preaching and this, in fact, is our main question. Now. it is true beyond disputes-it is conceded by every sect of Christians—that in the first Christian church the Levitical ceremonies were maintained with zenlous rigour, and that its only visible religious peculiarity consisted in community of goods. candidate for baptism professed no other creed but

that Jesus was Messiah and the obscience of the disciple to the Master was practically manifested in the sudden renunciation of private property. This ordinance was not, in theory, computery; but, while the fervour of fath was nead it was enforced by the public opinion of the church so sharply, as to tempt the richer disciples to hypocrisy. The story of Ananias and Sapphira is full of instruction. They did not wish to aliquate all their course though they did not wish to alienate all their goods, though they were willing to be very liberal. In deference to the prevailing sentiment, they sold property and gave largely to the church; yet were guilty of keeping back a part for themselves secretly. For this fraud (according to the legend) they were both struck dead at the voice of Peter! Such a legend could not have arisen, except in a church which regarded absolute Communism as the characteristic Christian virtue. Higher proof is not needed that Jesus established this duty as the touchstone of discipleship; but, in but, the account in the three gospols tallies herewith perfectly. Jesus there mourns over a rich young man, as refusing the law of exn-FECTION because he hesitates to cell all his goods, give them to the poor, and become a mendicant friar. When his discless, commenting on the young man's failure to fulfil the test, say: "Lo! we have left all and followed thee what shall we have therefore?" dosus in reply promises, that, in reward for having sacrificed to him the gains of their industry and abandoning their relatives, they shall sit upon thrones, and judge the twelve tribes of Israel (In passing I remark, that the idea of such a reward for such a deed is shocking to a Paulin Christian)

The Jerusalem church was, alone of all churches, founded by the chosen representatives of Jesus on the doctrine of Jesus himself, while the respecial community, not unlike a 'religious order' of modern Europe; and could not be discriminated, by Jews any more than by Romans, from a Jewish sect. In the next century, those who seem to have been its direct successors were called Ebionite heretics by the Gentile Christians When Paul, who ostentatiously refused to learn anything from the actual heavers of Jesus, had put forth what he calls "his own" gospol namely, "the mystery that Gentiles were to be fellow-heirs" without Levitical purity - he brought on himself animosity and violent opposition from the Christians of ferusalem, who were the historical fruit of Jesus' own planting. When Paul was in Jerusalem, one of the leaders called his attention to the fact that while many thousands of Jews were believers, they were " all zealous of the law;" he therefore advised hum to pacify their misgivings and suspicions of him, by performing publicly certain Judaical ceremonies. Paul obeyed him: nevertheless, no such conformities could atone for his offence in teaching that Gentiles, white free from the law, were equal to the lows before God; and Paul to his last day experienced enmity from the zealous members of that church. His relations to the other Apostles we know by his ewn account to have been certainly cold: the serms to be personally pointed at in the Epistle of James, as " s vam man," who preaches faith without works; while he himself (as he tells us) publicly attacked Peter at Antioch as a dissembler and weak truckler to Jerusalem bigotry. When, from first to last, the doctrino of the church at Jorusalem was sternly Levitical, it is quite incredible that Jesus ever taught his disciples the religious mullity of Levitical ceremonies, and the equality of Goutiles with Jews before God, But

why need I array about this wore it a distinctive clear on the face of the narrative. In the book of Acts the idea that God is no respectant persons'—or of nations breaks upon the said of Peter as a new relation, and is said to never been imparted by a special vision. It is not pretented that Jesus had taught it; nor does Paul, in any of his controversies against Judaian, dare to appeal to the authority and doctrine of the earthly Jesus as on his side. In fact, in the Sermon on the Mount, as also in a passage of Luke (xvi. 17), Jesus and that "Rather shall heaven and earth has away, than shall one tittle of the law, fall." I am, of course, aware that Christian theologians would have us believe that Luke is here defective, and that the words in Matthew, "Until all be fulfilled," mesn "Until my death shall fulfil all the types." But this would make Jesus purposely to deceive his disciples by a riddle. This is indeed worse than trifling, and a gratuitous imputation on the teacher's truthfulness. He must have known how he was understood. They supposed him to mean that Levitism was eternal; and he did not correct the impression. It was then the very impression which he designed to make simply and truthfully; and the disciples, one and all, rightly understood hims and knew it well.

为了数据数据的人们是自己的。在自己的"大概的"。2000年,在1990年间,1990年,1990年,1990年,1990年,1990年,1990年,1990年,

The verse which follows in Matthew clenches the are uncent, although (I see I must in candour add) I do not believe that Jesus spoke it in maetly this form. Nevertheless, it emphatically shows how the writer interpreted the verse preceding has be makes Jesus to add. "Wherefore, who soever shall break one of those least commandments. and shall teach me so, he shall be called the least in the kingdom of heaven but whosoever shall do and teach them. the same shall be called great in the kingdom of heaven." I find myself unable to doubt that these words were written to mean : "Wherefore, one like Land, who breaks the Levitical ceremonies, and teaches the Gentiles to break them, is least in my kingdom; but James, and the Apostles in Jerusalem, who do and teach them, are great in my kingdom." The intensity of feeling on this subject was such, that the Jewish Christians easily believed Jesus to have prophetically warned them against Paul's error. Be this as it may, the formula, " break one of these least commandmenta, and teach men to break it." is in contrast 'to "fulfilling the law," and distinctly shows that " fulfilling the law" refers to doing and enforcing even the least commandments

The Jerusalem church was the product (and, as the as we know, the only direct product) of the teachings of Jesus. Of its sentiment we have an interesting exhibition in the epistle of James; in whom we see a high and severe moralist, pure and exacting, full of righteous indignation against the oppression of the poor by the rich, and against all haughtiness of wealth. He does not treat all private property as unchristian that only large property. Evidently no rich man epuld have seemed venerable to the chief saints in that Church. He assumes the goalt of all rich men, and announces missey about one on thom, as does Jesus in the parable of hazarus: nevertheless, in him all the harabest parts of Jesus' precepts have been softened by the trial of practical life. In fact, this epistle is much in the tone of the very noblest of the Hebrew prophets. As with them, so in him, the moral element is wholly predominant, and nothing core monial obtrades itself. New, what is really as

marketle, he calls his doctrine the perfect law of liberty;" so little did those exercionies oppress him to which from childhood he had been accustomed. Let due honour be given to this specimen of the first and only genuine Christianity; yet it is difficult to find anything that morally distinguishes it from the teachings of an Isaiah of a Joel. There is certainly a diversity for the political elements of thought have disappeared, which under the Hebrew monarchy were prominent. The great day of the Lord was no longer expected to glorify the royalty of Terusalem and its national laws; and in this diversity lay the germ of great changes.

It would be absurd to consure an epistle because it is not a ritual, or to demand in it the fervours of spirituality found in this or that psalm. Nevertheless, in the present connection, I must claim attention to the fact that neither the three Gospels nor the epistle of James have ever been in high favour with that Calvinistic or Augustinian school which most nearly represents Paul to the moderns. To oring out the argument in hand more clearly, allow me to make a short digression. Morality requires both action and sentiment. No reasonable teacher can undervalue either: yet some moral teachers ross more on action, and are said to preach duty and rock, and even make a duty of sentiment, laying fown as a command that we shall love God, love our reighbours, love not ease, love not self. Other eachers endeavour to execte, foster, and develop just entiment, and trust that it will generate just acion, possibly they even run into the error of shuning definite instruction as to what action is good. dirate and one-sided as we are, two schools naturally row up among teachers, who may be classed as the reachers of duty and the preachers of sentiment; nt perhaps, if the question be distinctly proposed o the ablest men of either school, " Do we learn ction from sentiment, or sentiment from action?" hey would alike reply (as in substance does Arisotle) that both processes necessarily co-exist. From all thood apward, right action promotes right feelig, and right feeling generates or heightens right tion. There is no real or just collision of the two hools. Nevertheless, as a fact of human history silv explained, the preaching of duty and of outard action gains everywhere an early and undue scendency, perhaps especially where morals and region are taught by law, which deals in command id threat. The rude man and the child are substed to rule more or less arbitrary; and it is only nen intellect rises in a nation or in an individual at the spiritual side of morals receives its propormate attention. In Greek history, we know the t in the philosophy of Socrates and Plato. nong the Hebrews, a secular increase of spiritual r in the highest teachers will probably be conted by critics of every school to have gone on in the time of the judge Samuel to the writer m whom came the last twenty-soven chapters of iah. The characteristic difference of the Greek I the Hebrew is this: that, however spiritual the eek morality might be, it seldom blended with igion; and (with exceptions perhaps only to be nd under Hebrew influences, as at Alexandria), moral affections found we place in religion at all, w it has been recently asserted by a Theist, that s to I neve that we owe that regeneration of relip which makes it begin and grow from within is not (it is said) a mane teacher of pure is ? but his work has been in the heart. He transformed the Law into the Gospel. He has nged the boudage of the alien for the liberty of

the sons of God. He has glorified virtue into holiness, religion into piety, and duty into love." Hence it is inforred that "his confing was to the life of humanity what regorieration is to the life of the individual."

Deep as is my sympathy with the writer from whom I quote, I am constrained to say that every part of the statement appears to me historically incorrect. It does, in the first place, violent in-justice to the Hebrews who preceded Jesus. Did he first & glorify virtue into holiness"? Nay, from the very beginning of Hebraism this was dong-at least as early as Sumuel. Did he tirst " planty rolls gion into piety"? Is there then no piety in the 42nd Psalm? in the 63rd? in the 27th? in the 23rd? Nay, I might ask; from what utterance of Jesus can piety be learned by the man who caused learn it from the Psahas? Holiness and piety appear to me to have been taught at the exemplified quite as effectively before Jesus as since. Surely in the rolegion of the psalmists riety dominated. much as in Fencion of in the poet Couper. But finally I have to ask, "Did Jesus glerify duty into love"? And, in order to reply I turn to the three gospels, as containing our best account of what he taught.

A phenomenon there very remarkable is the save. rity with which Jesus enforces as duty the most painful renunciations; and the contempt with which he rejects anything short of namediate obedience to his arbitrary domands. I know not whether the narrators have overcoloured him; but they give us, on the one side, examples of prompt obedience to the command, "Follow me." in t. in Andrew and Peter; next, in James and John; who cannediately left the ship and their father, and followed him This is afterwards praised as highly meritorious On the other side, when Jesus says to a man, "Follow me," and receives the reply, "Lord suffer me first to go and bury my father? I sus returts . "Let the dead bury their dead, but go them and preach the kingdom of find. Another also said, Lord. I will follow thee, but let me first go and but then furewell which are at home in my house. And Jesus said unto him, No man, having put his hand to the prough and looking lack, is fit for the kingdom of God " The peremptory command to abundon their parents, not bury a dead father and not even say a word of farewell to the living is perhaps a credulous exargeration of the writer; yet it is in close barmony with the whole account, and with the declaration, "He that hateth not his father and mother, and wife and children, cannot be my disciple:" for evidently the following of Jesus, as interpreted and enforced by himself, involved an aban-domient (perhaps to starvation) of these near relatives. It is not my purpose to dwell now on the right or wrong of such precepts but on the imperious tone in which they are unposed from mithout, not the slightest attempt being made to recommend them to the heart or understanding, Again, in perfect harmony with the same is the reply, already adduced, of Jesus to the rich young man, who comes to ask. "What shall I do that I may inherit eternal life?" The apportunity was excellent to set forth that no outward actions could

[•] I quote from the striking treatise of my friend Miss-Cobbe, called "Broken Lights." The whole protest against M. Roman, of which the words above are the summary, should be read to understand their relation. I am authorized to say that she has not even the remotest wish to make honour to Jesus part of religion:

She intended to write as a historian only.

bring eternal life, but that such life was an interior and divine state, to be sought by love and faithful-ness. Instead of spiritual instruction, Jesus gaves a crushing arbitrary command: If then wilt be perfect, go, sell that thou hast, and give to the poor. and thou shalt have treasure in heaven; and come and follow me." Does such a teacher build from within by implanting Love? Does he act upon tove at all, or rather on selfish ambition. It He deals in hard duty and fierce threat; commands too high, and motives too low; thoughts of reward; promises of power; salvation by work; investment of money for returns beyond the grave; prudential adoption of virtue, which may soften judgment, we promotion, deliver from prospective prison and hell fire topics which at best are elements of Law, as opposed to Gospel. In the opinion of an increasing fraction of the most enlightened Christians, the most noxious element in the popular creed is the internal Hell: stronghold of this doctrine is in the discourses of Jesus. But what of Faith? If Faith be a purely spiritual inovement, which cleaves to Goodness and Truth for its own sake, and without regard to sollish interest, it is hard to say in what part of the three gospels it is found. In the mind of Jesus all actions seem to stand in the closest relation to the thoughts of punishment or reward on a great future day. To lose one's soul means, to be sentenced when that day shall come, cutting off a sin means, escaping mutilated from a future bell. In a religion practically monided on these discourses, cale latten of what we shall hereafter get by present chedience inheres as a primary essence. The only faith which Jesus extols, is, faith to work incredes, and faith that he is Messiah and can work them. Inquiry is frowned down and sighed over as unbelief. Power to torgive rin is claimed by him; and, when this is reproved as impieus in a human teacher, the claim is marvellously justified by identifying forgiveness with oure of bodily disease. And to this the grant of initiaculous powers to the Seventy, and a deligation of power to lorgive is made out at which Protestants may well studder In another place (Luke vii 4,5) Jesus declares forgiveness of sm to be carned by personal affection to himself; but I am bound to add that, on special* grounds, I do not believe the account.

The narrative in Luke vii 37—50 seems to be an immunicate duplicate of that in Matt. xxvi, 6. Mark xiv. 3, John xii 3; which nearly agree as to time and place—viz., it was in Berhany, a little before the last Passover. Muithew and Mark say, it was in the house of Simon the leper: Luke says, of Simon the Pharisso. John calls the woman Mary of Bethany, sister of Lazarus and of Martha: Luke says, a woman netorious tor sin. I will here remark, that discussion on the behaviour of Jesus to woman of ill farm, which is called "deligne" beautiful," "characteristic," &c., uppears to me wholly without basis of fact. Those whe allow no bistorical character to the discourses in John will not quote John iv. 66—19, nor John viii. 1—11, against this remark: "and nothing remains but Luke vi. 37—50, the fair tame of Mary Magdidene has been characted the with the woman's says in Luke, and then therefore the remark woman's forget, will ald that many who must know seem to forget,

rwill aid that many who must know seem to forget, thet to Greek philosopher—meither an Anaxagores nor Zene, to say nothing of Socrates, Plato, Aristotle, Cioere, Speca-would ever have the whole or unjust meeting a woman's faults. If Ruglish sentiment continues appear barsh against woman who have made a trade of themselves, is it not because the which are mainful rothe sinter are more investers, and more contagons than sint which improvered him.

Lake has income parts added chafter conches to desire, and grower as two tire genetics which it is so many that are fitting many by even dake. I seek in vain for anything essentiated to implant a the heart a sense of freedom; to exist willing our vice; or to chemists spiritual desire; gratisular and tranquil love, careless of other revened think love. tranquil love, careless of other reward than love itself. In fact, Luke is sometimes hardler than Matthew. Thus, in vi. 26, "Blessed be a passe for yours is the kingdom of God. Blessed and he feat hunger now, for yo shall be filled. But wor unto you that are rich; for yo hope reserved your consolation. Woe unto you that are fully for yo shall hunger. Woe unto you that lough worse for you shall mourn and weep." Be indirecting that thoughthere and troughthere and troughthere are directors that each doubting marks thoughtless are divotees, that such doctring meets with the came theoretic glorification as the essentially different version of Matthew's "Bissand are the poor in spirit. Blessed are ye who hunger and thirt after rightcourses." If Matthew be correct and Luke wrong, Luke has foisted upon Jesus curses against rich and mirthful men in contrast to the blessings on poverty and weeping; but if the curses came from the lips of Jesus, Luke gives the opposite clauses justly; in which case Matthew has improved monkish into spiritual sentiment. It would be a hard task to prove lakes version out of harmony with the constant doctrines of Jesus. To borrow Calvinistic phrasedogy, and (if my memory serves me) the very words of a Pauline spiritualist." The three gospels may be read in the churches till doomsday, without converting a single soul." The spiritual side of Christianity, inherited from the Hebiew psalmists, not from desur was diffused beyond Judge first by the Jewish synagogues, next by the school of Paul to home the school of Jesus was in fixed opposition, preaching works and the law, while Paul preaches the Spirit and faith "Trough I give all my good to feed the poor,' says Peul, "and give my body to be burnt, and have not charity, I am nothing." How vast the contrast hear to the doctrine of Jesus. Every one that bath forsaken houses, or brethren, or sisters, or father, or mother, or wife, or children, or lands for my name's sake, shall receive a hundredfold, and shall inherit eternal tife" To make ascetie sacrifice for the honor of Jesus was indeed a surpassing merit in his eyes, unless the most important discourses, even in these three gospels extravagantly belie hun. I am unable to discover on what just ground the opinion stands that the character of Jesus is less harsh, and his procepts less sourly ansters than those of John the Baptist Little as we are told of the latter (all of which is honourable), the two must have had close similarities. Let it be remembered that Apollos is spoken of in the Acts of the Apostles as 'instructed in the way of the Land, and torvent in spirit, and teaching diligently the things of the Lord," while he "knew only the baptism of John." So also Paul falls in with "certain disciples ", at ? Ephesus, who pass as Christians, rethe presently discovers that they also know only John haption. It seems therefore evident, that the consequences had nothing essential to divide, the point with had nothing essential to divide theth and were intimately alike. When, on the other, hand, the sharp opposition of the Pauline dectrine to that of James and the church of Jesus as Jerusalem is duly estimated, some may think that certain world put into the month of John the Baltist, till become less untrue if changed as follows. I had a decrease baptize you with water that my the less that the pure ty, but Paulishall baptice you with the lines.

さい こはなったいないという はないない

Spirit and with fire." Be that as it may give as little weight as you please to Paul's strong points press as heavily as you will on his weak side, out of which came the worst part of Calvinism—the fact remains, that Jesus did not teach Christianity to the Gentiles, or declare them admissible to his church without observing Mosaism; and that to the Jews themselves he preached merely severe precepts, ethical or monkish, with a minimum of what can be called Gospel;—precepts, on which a religious order might be founded, but totally un-

suitable for a world-wide religion.

When people calmly tell me that Jesus first established the brotherhood of man, the equality of races, the nullity of ceremonies; that he overthrew the narrowness of Judaism; that he found a national, but left a universal religion; found a narrow-minded ceremonial, and originated a spiritual principle ;-I can do nothing but reply that every one of these statements is groundless and contrary to fact. What his disciples never understood him to teach, he certainly did not teach effectually. It is childish to reply that the fault lay in the stupidity of the twelve Apostles. What ! could not Jesus speak as plainly as Paul did? Surely, the more stupid the hearer, the more plainly the teacher is bound to speak. If Jesus had so spoken, never could want of spirituality in the hearer have made the words unintelligible. Did only the spiritual understand Paul when he pro-claimed the overthrow of ceremonies? Could the most stupid of mortals have failed to understand Jesus also, if he had avowed that the Levitical oridnances were a nullity and Gentiles the religious equals of Jews? I may seem to insult men's intellect by pressing these questions; but do not they rather insult our intellect? For they would have us believe Jesus to have originated doctrines which are the very opposite of all that his actual hearers and authorized expounders established as his, before there was time for his teaching to fade from their memory and to be modified by novelties supervening.

I have called the primitive church of Jerusalem the only direct product of Jesus. Do I deny that Jesus bore any part at all in setting up the creed known in Europe as Christianism? I wish I could wholly deny it. Gladly would I relieve his memory of all responsibility for dogmas, whence proceed far more darkness and weakness of mind, confusion. bitterness, and untractable enmities, than his moral teaching can ever dispel; dogmas which as effectually break up good men into hostile sects, with fixed walls of partition between them, as ever did the ceremonialism which he is falsely imagined to have destroyed. But, hard as it is to know how much of the gospels is historical, I suppose that no one for three centuries at least has doubted that Josus avowed himself to be MESSIAH, at first privately, at last estentatiously; and was put to death for the avowal. If so much be historical, we are on firm ground. There is then no room for transcendental philosophies and imaginative theories, as to what authority and honour Jesus was claim-The Jews of that day familiarly understood that Mesnah was to be a Prince from Heaven, who should rule and judge on earth. As to the great oddines of his character and power, manifestly true was no dispute. If the popular notions on this subject were wrong, the first business with best much have been to set them right. But he never discourses agained them, nor shows a last last he be thought to claim supernatural digwity sad logistrip: nor could his riding trium phantly

on the ass, amid shouts of " Hosanna to the Sonof David!" have been intended to discourage the belief that he was to exercise temporal as well as spiritual royalty. The learned and the vulgar were in full agreement that Messiah was to be a supreme Prince and Teacher to Israel, Judge and Lord of all nations: but the rulers regarded it asimpious, criminal, and treasonable to aspire to this dignity while unable to exhibit some mira-culous credentials. The fixed belief concerning Messiah was gathered, not only from our canonical prophets but also from the book called. "The Wisdom of Solomon" (which was in the Greek Bible of Paul and other Hollenist Jews), and still more vividly from the book of Enoch, which Jude and Peter quote reverentially, and Jude ascribes to the prophet Enoch, the seventh from Adam. With the discovery of that books early in this century a new era for the criticism of Christianity ought to have begun; for it is evidently the most direct fountain of the Messianic creed. The book of Mormon does not stand alone: as a manifest fiction which had power to generate a new religion the book of Enoch is a like marvellous exhibition of human credulity recent German critic has given the following summary of its principal contents:-"It not only comprizes the scattered allusions of the Old Testament in one grand picture of unspeakable bliss, unalloyed virtue, and unlimited knowledge: it represents the Messiah has both King and Judge of the world, who has the decision over everything on earth and in heaven. He is the Son of Man who possesses righteousness; since the God of all spirits has elected him and since he has conquered all by right eousness in eternity. He is also the Son of God, the Elected one, the Prince of Rightcousness. He is gifted with that wisdom which knows all secret things. The Spirit in all its tulness is poured out upon him. His glory lasts to all eternity. He shares the throne of God's majesty: kings and princes will worship him, and will invoke his mercy."* So much from the book of Enoch: which undoubtedly was widely believed among the contemporaries of Ac us. How much of the self-glorifying language put into the mouth of Josus was actually untered by him it is impossible to know. There is always room for the opinion that only later credulity ascribed this and that to him .- that (for instance) he did not really speak the parable about the sheep and goats, representing himself as the Supreme Judge who awards heaven or hell to every human soul. But it remains, that this parable distinctly shows the nature of the dignity which Josus was supposed to claim in calling himself Son of Man; and, even if we arbitrarily pare away from his dis-courses this and other details in deference to Unitarian surmise, we still cannot get rid of what pervades the whole narrative, rhat Jesus from the beginning adopted a tone of superhuman authority and obtrusion of his own personal greatness, with the title "Son of man," allusive both to Daniel and to the book of Enoch According to Daniel, one like unto a Son of Man will come in the clouds of heaven to receive eternal dominion over all nations. It is impossible to doubt, that, in. the mind of those to whom Jesus spoke, the character of Messiah implied an overshadowing supremacy, a high leadership over Israel, and hereby-

^{*} I quote from a summary of the book of Enoch by the German theologian Kalisch, given in Bishop Colenso's Appendix to his 4th volume on the Penta-

over the gentile, who were to come and at at Israel's feet: a religious and, as it word, princely pro eralneace, which only one mortal could receive who by it was raised isnineasurably above all others. If he did not intend to claim this, it was obviously his first duty to disclaim it, and to warm all against false. dangerous, or foolish conceptions of Messiah; to protest that Messiah was only a teacher, not a prince, not a divine lawgiver, not a supreme judge sitting on the thorne of God and dispusing of men's enternal destinies. Nay, why claim the title Messiah at all, if it could only suggest falsehood? Since he sedulously fostered the belief that he was Messiah, without attempting to define the term. or guide the public mind, he could only be understood, and must have wished to be understood, to present himself as Messiah in the popular, notorious squee. If he was really this, honour him as such. If his claim was delusive, he cannot be held guiltless

Every high post has its own besettings in, which soust be conquered by him who is to carn any admiration. A finance minister, who pilfers the treasury, can never be honoured as a hero, whatever the ments of his public measures. A statesman or prince, entrusted with the supreme executive power, rains his claims to veneration if he use that power violently to overthrow the laws. Such as is the crime of a statesman who usurps a despotism, such is the guilt of a religious teacher who usurps lordship over the taught and aggrandizes himself. It is a bottomless gulf of demerit, swallowing up all possible merit, and making silence concerning him our kindest course, if only his panegyrists allow us to be silent. A teacher who exalts himself into our Lord and Saviour and Judge, leaves to his liearers no reasonable choice between two extremes of conduct. Whose is not with him is against him. For we must either submit frankly to his claims, and acknowledge ourselves little children-abhor the idea of criticizing him or has precepts, and in short become morally annihilated in his presence -or, on the apposite, we cannot help seeing him to have fallen into something worse than ignominy.

I digress to remark, that a teacher supposed by

us to be the infallable arbiter of our eternity would, detain our minds for ever in a puerile state if he taught doginatically, not to say imperiously. he aimed to elicit our own powers of judgment, and not to crush us into submissive imbecility, the method which Socrates carried to an extreme appears alone suited to the object; namely, to refrain from expressing his own decisions, but lay before, the hearers the material of thought half-prepared and claim of them to ecohine it into some conclusion themselves. In fact, this is fundamentally the nero in which the Supremely Wise, who inhabits the minite world, trains our minds and souls. His greatures does not oppress our faculties, because it is ever silent from without. Displaying before us abundantly the materials of ju ignient; he blights our powers; never commanding us to become little children, but always inviting our minds to grow up into manhood. But, if there were who an opmaite side of teaching healthful to us off it were well to start from dogmes guaranteed to us from heaven, which it is implety to cause within the matter of first necessity would be that the uttored decrees to which we are to submit whellid be free from all onigma, all extravagance of bypenbule, all parable, dark allusion, and hard metaphor all apparent salf-contrariety; and, increasing that we should have no uncertainty what presents and inconsistent duplicates, but a reliable genuins

copy of every uther any specifies there is to be an orithing. To sum up the life tay. Nothing the less suited to minister the Specific and with the powers of the human coul, then to be subject to a superhuman dictation of truth, and nothing could be more unlike a divise for of the better than the incoherent, hyperbolic, enginetic, its consistent fragment of discourses given as us authoritatively as teachings of Jesus.

But I return to my mein subject. I have sho what conclusions seem inevitable, as soon as cease to believe that Justs is the colertial Prince Messiah of the book of Euoch, popularly expected in his day. To lay stress on his possession of this or that gentle and beautiful virtue is quite away. from the purpose. Let it be allowed that Luke has rightly added this and that soft touch to the pintupe in Matthew and Mark. Let it be granted that the nobler as well as the baser side of the Jerusalem. church came direct from Jesus himself. any of the actual virtues of European Christians hage, been kindled from tires which really burnt in Jesus. it appears to me impossible to know. The heart of Paul gushed with the tenderest and warmest love. and he believed Christ to be its source. But the Christ whom he loved to glorify was not the Christ of our books, which did not yet exist; nor a Christ reported to bim by the Apostles, to whom he studiously refused to listen; but the Christ whom he made out in the Messianio Psalms, in parts of Isaiah, in the apocryphal book called Wisdom, and perhaps also in the book of Enoch-With such sources of meditation and information. open, the personal and bodily existence of Jeans. was thought superfluous by a number of Christians considerable enough to carn denunciations in the opisties of John. A great and good man, Theodore Parker, tells me that it would take a Jesus to invent a Jesus 1 reply, that, though to invent a Jesus was undoubtedly difficult, to colour a Jesus was very easy. The colouring drawn from a suffering Messiah was superimposed on Jesus by the pespetual meditation of the churches, which, after he had disappeared, sought the Scriptures diligently, NOT to discover whether Jesus was Messiah, which was already an axiom, nur to discover what, and what sort of a person, Messiah was According an the inquirens studied more in one, or in another, books, the conception of Messiah came out different; and here we have an obvious explanation of the varieties of portrait in different gospels. The first disciplenwho thus by prophetical* studies supplemented the dry outlines which alone could be communicated be the actual hearers of Jesus, would naturally affine to him many traits not strictly human, nor laudicable except on the theory of his superburant character. Nevertheless, in a church exalted by moral enthusia-m and self-sacrified in which the highest spirits were truly devoted to practice holiness, it is to be expected that whatever in most beautiful and tender, pure and good, in the traits of character, which, in legislation, class were believed to belong to Messiah, would be eagerly appropriated to Jesus, as they exidently were by Paul. Some of these would be likely a tinge often-repeated narratives; no, that although

To my personal browledge, the in the comments resulting the Christop, in the present day. There explore leads in the Latin phete, in the types of Levillens in the course phete, in the Types of Levillens in the course phete, in the Types of Levillens in the course phete, in the Types of Levillens in the course pheter in the Types of Levillens in the course pheters.

রাজ-তরজিনী।

২০০ সংখ্যা পত্তিকার ১০৯ পৃষ্ঠার পর। এই প্রস্তাবের আরু রেডা ইকা উক্ত কই-য়াছে যে রাজতরজিনীর রুভান্ত সম্পূর্ণৰূপে থক্ত ও অকাম্পনিক, ভাহাতে কাম্মীরের প্রাচীন অবস্থা ৮ ইভির্ত্ত মণা বিহ্তি প্রক টিত হইয়াছে, সুত্রাং ভাষা জানিতে পা-রিলে ভারতবর্ষের অপরাপর প্রাদশেরও অবস্থার আভাস প্রাপ্ত হওয়া যহিতে পারে। কারণ যদিও কাশ্মীর দেশ ভারতবর্ষের এক কোণে অব্প স্থান ব্যাপিয়া আছে, তথাপি তাহার প্রচলিত আচার ব্যবহার ও ধর্মা হিন্দুধর্মানুষায়ী এবং তাহার রাজগণও হিন্তু ছিলেন, অতএব তাহার অবস্থা যে অপরাপর দেশের অবস্থা ইইতে ভিন্ন হই-বে এমত বোধ ময় না। এই হেতু ইতি-হামে কাশ্বীরের যে একার অবস্থা আমরা দেখিতে পাই তাল অনেকাংশে ভারতব্যীয় हिन्छु तास्र ६त जापर्भ अंबर्भ। এই सुध्यन्तितक स्नीय ट्रिव्य इट्ट विन्यू ताकच विषया आमता कि कि जेशरमन প্রাপ্ত হইতে পারি, তাহারই আলোচনা

শথনতঃ ইহা দৃষ্ট হইতেছে যে সমুদায় ভারতবর্ষ ক্ষুদ্র কুদ্র দেশে বিভক্ত
ছিল। এক এক দেশ এক এক নরপতির শাসনাধীন ছিল এবং এই সকল
নরপতি আপনাদের বল বিক্রম অনুসারে কথন স্বাধীন কথন বা অপর রাজার
অধীন হইয়া থাকিতেন, কিন্তু সকলেই
স্ব স্বাজা সধ্যে একাধিপতা করিতেন।
দিছিজয়ের ইছা ইহাঁদিগের মধ্যে অভান্ত
শ্রম ছিল; যাহাতে আপনার নাম ও কীর্ত্তি
ভারতবিখাত হয় এবং অপরাপর নরপতি
করপ্রদ হইয়া পদানত থাকে এইরপ আকাতকা তাঁহাদিগের মধ্যে অভিশ্নী প্রবল

করা যাইতেছে।

ছিল। কিন্তু বিজয়ী হইয়া অপর রাজার রাজত্ব অধিকার করিয়া লওয়ার এথা ছিল না, ভূপতিগণ প্রায় আপন আপন রাজ্যের দীমা বিস্তার করিতে ইচ্ছা করিতেন না। व्राका मत्या ममूनांत्र नित्रम ও বাবস্থা श्राहीन শাসে ও চির প্রচলিত প্রথারই অনুযায়ী ছিল; তাহার পরিবর্তন ছিল নাও তাহা নরপ্তিগণ নিভান্ত তুশ্চরিক্রনা হটলে প্রায় লঞ্জন করি-তেন না, কিন্তু ভাহা লজ্মন করিলে এজা-দিগের তল্পিবারণের কোন প্রতীকার ছিল নগর স্থাপন ও দেবমন্দির প্রতিষ্ঠা করা এবং ত্রাহ্মণদিগকে ভূমি দান করা এই দকল রাজাদিগের অতি পিয় কার্যা ছিল এবং শাস্ত্রজ্ঞ ও বছদদী প্রভিত্রগণতে প্রতি পালন করাও ভাঁহারা একটি কর্ত্তবা বলিয়া জানিতেন। কিন্তু রাজ্যের কোন মূতন ব্যবস্থা কর। অথবা ভাহার উন্নতির জন। কোন বিশেষ চিন্তা ও উপায় অবলয়ন কর! তদ্বিষয়ে হিন্তু নরপতিগণ বিশেষ নিপুণ ছিলেন না। अस्तिक है जिन्न स्वाप्त ছিলেন এবং সকলেই বছসংখ্যক পুরাঞ্চনা প্রজাগন নিভান্ত পীড়িত না রাখিতেন। হইলে প্রায় স্বাহ্ব স্থায় সম্বট্ন থাকিত. এবং রাজার নিষ্ঠুর ও গনাংহ শানন হেতু প্রজ্পার কর্ক। কান বিজ্ঞোহ বটনা হওয়। क्ति पृष्ठे हर्ह।

टेभगा ।

6

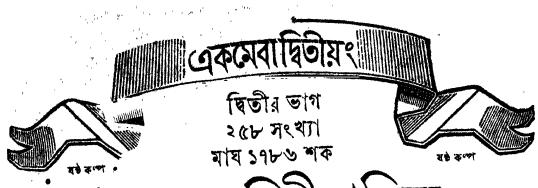
গৈনই হউক সধবা মনুষাকৃতই ইউক, বে সকল বিপ্ন প্রতিকার করিবার উপায় অথবা শক্তি নাই ভাষাতে অন্তির না হইয়া ভাষা ধারণ করিয়া পাকাই যপার্থ ধৈর্যা। পৃথিবীতে এমন একটী স্থানও নাই, যেথানে চিরন্ধীবন নির্দিণ্ণ ও নি-রাপদে অবস্থান করা বায়। ভূমি যভ সাবধান হও না কেন, কথন এমন মনে করিও না যে,

कान काटल कान विशेष शिष्टि इटेटर मा। দিখর ভোগাকে এমন শক্তি দিয়াছেন যে ভুমি (छचे) कतिरम प्रत्य विशेष अखिक्रम कतिरङ পার। কিন্তু এমন সকল ঘটনাও আছে, বে ভুমি সমুদায় শক্তি একত্র করিলেও ভাহারী প্রভিকার করিছে পারিবে না। পৃথিবীতে কড অসাদা রোগ, কভ নিদারণ শোক, কভ রাক্ষস ভুল্য মনুষ্য বাস করিভেচে; কথন ভেমিকে কাহার হস্তে পড়িতে হইবে, এখন ভুনি ভালার কিছুই জানি-८म्छ सां। अल्बार देशर्या-छन अस्तान कहिएक रचु-শীল হও,যদি কোন অপ্রিভিবিধেয় বিপদে পভিভ হও, গৈর্যাট ভোমার বর্মা-সর্কা হইয়া ভোমাকে भाष-हिल हा विद्या भक्त-युक्त भन्तमध्य अरे छुत-বগাহ মঙ্গল আভিআনে বেগা-পৌক-বিপাভি-দ-মাকীৰ প্ৰাপৰীকে আমার্দিগকে সংস্থাপন করি-মাছেন যে, আমহা ভাঁহার উপর নিভার ও বৈণা-তণ অভাাস করিয়া আত্মাকে অটল করিতে পা-রিব : আজা অটল লা হইলে অনস্থ উন্নজির পথে অন্যুদ্র হইটেছ পারিয়ে না। বাঁহারা দাঘ কাল পিড়া মাজা প্রভৃতি অন্যের উপর নিভর করিয়া নিশ্চিম্ভ ইইয়া লালিভ পালিভ ইইয়াছেন, ভাঁছাদিগের স্বাধীনভাব ও কর্মানকভা প্রায়ই शास्त्र ना ; खिंछ मामाना कार्मा-म॰कडे छिल-প্রিত ভইলেই জীহারা হত বৃদ্ধি, হতাশ ওনি-ভাস্ত বিষয় হইয়। উঠেন। আনে ভাদুশ বিপাদ উপস্থিত হইলে ফায়ে ও বিযাদে চির কালের জন্য অকর্মণা অপরা মৃত্যু-গ্রাদে পভিত হটয়া शाकमः। कल लाक अर्थ-त्यादक वा शुक्क मारक डिगाइ अरेश जिलादयन। किन्छ यौरादा जाण्य নয়স অধনি নালা অবস্থায় পভিত হইয়। শ্বুদ্ধি-প্রভাবে বিপদ হইতে উর্ভাব হইয়াছেন, অথবা টেখন্য পুর্বাক ভংসমুদায় মত্ত করিয়াছেন: ভাঁহারা यक्षीरशक्ता कार्याकम ७ ठकुत रहेग्रा क्रमाश्राटन मर्गात निकार अधानकीयन भावि काश कतिया-ছেন ' অনেক বিচক্ষণ পিতা মাতা সন্তামনিগকে সুচত্র, পাধীনরতি ও কার্যক্ষম করিবার নিমিত্ত सामानिध कावजाय मिएकश कहिया बादकम धवर আপনারা অলক্ষা-রূপে তাঁছাদের তদ্বারধান ক-त्वम । वथम क्यान धक्रखंद्र घरेना छशस्ति इह,

তখন ভাহারদিগকে উদ্ধার করিবার নিমিত আপ नाता जांशारमत अरकाती हन। धरे प्रकीख (म-থিয়া পর্ম-পিডা প্রমেশ্বরের মঙ্গল অভিপ্রায় অবধারণ কর। সেই পরম পিভা ভাঁহার প্রভােক স্থানকে অটল স্বাধীনভায় উৰ্থীপিত ও চির-भोखिएक निमग्न कंत्रियात निर्मिक नामा वर्षेन:-गः कुल এই श्रुभिवीटल मः हाश्रम कतिबाटहम अवर जनका-क्रम्भ डेज्वांबर्धान कतिएक्ट इन । जाँगता প্রতি-বিধেয়, অপ্রতি-বিধেয় ও অসহা এই ত্রিবিধ বিপাদে পরিব্রক ইইয়া আছি। কথন কোন বিপদের সহিত দাকাৎ করিতে হইবে, আমরা তা-कांत्र किछू है जानि ना। किन्नु श्राथम श्राकांत्र विश्रम উপত্ত হইলে আমাদিগকে বয়ং,ভাহার প্রতি-বিধান করিতে হইলে: শ্বিভীয় বিপদে ধৈর্বোর প্রয়োজন ; জভীয় বিপদ আমিলে ঈশ্বর স্বয়ং আ-মানের আছে।কে গ্রহণ করিয়া উদ্ধার করেন।

নিগ্যা-গুলে আমরা যে কেবল বিপদ্ সহ্ করিছে লাবি, এমন নুহে; তদ্যারা উপত্তিত বিপদ্ হইছে পরিরাণ পাইবার নিমিত্র ফুড্ন স্ত্রন উপায়ও উদ্যাবন করিছে সমর্থ হই। নিপদ্ পাড়িলে যদি আমরা এক নারে আমর্গা হই, তাহা হইলে বিপদ্ প্রতীকারের প্রকৃষ্ণ উপায় সঙ্গেও তাহা উদ্যাবন ও অবলদন করিছে আমারদের সাম্পা হয় না। যে সকল বিপদ্ বাস্তবিক প্রতি-বিপেয়, গৈগোর অভাবে ভাছাও অপ্রতি বিপেয় হইয়া উটে; ভগন অনুষ্ঠিত জ্ঞানত কেশ ভাগ করিছে হয়।

বিপানের অপ্রতিবিধেয়ত। ততই হ্রাস হইতে পাকে। ধে সকল কানা প্রেপানে দিতান্ত চুক্ষর বলিয়া বোপ হয়, ধীরতা সহকারে ভাষার অস্কুঠান করিতে করিতে ক্রমে ভাষাও সহকা ইইয়া
পাডে। এবং অধীর লোকের নিকট বৈ সকল
বিপান নিভান্ত অপ্রতিবিধেয় বলিয়া প্রতীতি
হয়, বৈনালালী পুরুষদিকের নিকটে ভাষার প্রশ্ ভীকার হয় ত অনায়াদ-লাখ্য হইয়া উঠে।
অভএব বাহাতে ধৈর্য-গুণ ক্রমে ক্রমে ব্রিড হয়
সেই রূপ অভ্যাস করা সকলের ট্লাকাক।



তত্ত্ববোধিনীপ্রতিকা

রশ্বরাএকমিদমপ্রশাসীয়ান্য কিঞ্চনাসীজনিদং সর্বামসূজৎ। তদেব নিত্যং জ্ঞানমনত্তং শিবং অতজ্ঞারুবয়বদেক মেণাদিতীয়ং সর্বালাস সর্বানিয়ন্ত্ সর্বাভায়সর্ববিৎসর্বাজনিক দুস্পর্বমপ্রতিমমিতি। একস্য উল্পেট্রাসাসনয়া পার্ তিকটমহিকক শুক্তরাতি। তামন্ প্রীতিকস্য প্রিয়কার্যাদানক তদুপাসনমেব।

বিজ্ঞাপন

কলিকাত। বাক্ষসমাজ।

আগানা ১১ নাঘ সোন বার সন্ধ্যা ৭ ঘণ্টার সনরে পঞ্চতিংশ সায়ৎসরিক ব্রাহ্মসনাজ হইবেক। ব্রাহ্মগণ প্রধান আচার্য্য শ্রীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর মহাশয়ের ভবনে আগমন করিয়া ব্রহ্মোপা-সনা করিবেন।

ৰী দিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর সম্পাদক।

কলিকাত। ব্ৰাহ্মসমাজ।
আচাৰ্য্যের উপদেশ।
৭ ফার্ডন ১৭৮৪ শক।
কুমবার।

ব্রাজ্বর্থা গ্রহণ করিবার সময় আমরা প্রতিজ্ঞা করিয়াছি বে, "রোগ বা বিপদ ভারা অক্ষম না হইলে শ্রুভি দিবস জন্ম ও

প্রতি পূর্বক পরব্রংক্ষ আত্মা সমাধান ক-রিব।'' প্রত্যহ নিজ্জলি ঈশ্বরের উপাদনা করা মনুষ্য মাত্রেরই কর্ত্রা। উপাদনাতেই आंगारनत मञ्जू, आंगारनत मनुवाद : रेश হইতেই আমাদের জ্ঞান, পবিত্রতা, বল ও উৎদাহ। ইহাই ধর্মের জীবন; আত্মাতে যাহা কিছু ধর্মের ভাব আছে, তাহা কেবল উপাদনাকে অবলম্ন করিয়া জীবিত থাকে। উপাদনা স্বর্গের দার-স্বরূপ ; ব্রহ্মকে লাভ করিবার, ব্রন্ধ-নিকেতনে প্রবেশ করিবার, এক মাত্র উপাধ। আমর চকু কণীনি ই-শ্রির ভারা যে কাপ বাফা বিষরের সহিত आमात्रदम्द मयम निवन्त कति, छेशामना खाता দেই ৰূপ অতীন্ত্ৰিয় মহান্পণাৰ্থের সহিত নিত্য কালের যোগ স্থাপন করি। উন্নতির প্রধান কারণ উপাসনা; ইহা হ-ইতে বঞ্চিত হটলে কোন প্রকারেই আমরা সংসারের পাপ-তাপ হইতে মৃক্ত হইয়া ঈশ্বরের পথে চলিতে পারি না। প্রতিদিন নির্মিত-কপে প্রব্রক্ষে আত্ম সমাধান করিয়া তাঁহার উপাসনা করা ক-র্ত্তবা। যদিও ইলা আমাদের প্রাত্যহিক कार्या, ज्यांत्रि देश कठिन वांत्रांत मत्नर

নাই। উপাসনার স্থান জিহ্বাতে নয়_{য়}চ-क्रु अय, इंश भारीतिक कार्या अन्ता। क्रवन কভকগুলি শব্দ উচ্চার্থ করিলে উপাসনা হয় না; সকলে মিলিত হইয়া সমস্বরে মধুর দামগানেও দামাজিক উপাদনা হয় ন। এ সকল অবলয়ন ইহার উপায় মাত্র। ध्यकु उपामना प्रशुद्ध, षाञ्चात महिल পরমান্বার দক্ষিলনের নাম উপাসনা। যে-थान्न मसुरवात हक्कु कर्न व्यदम कर्तरङ পাবে না, দেখানেই উপাদনা; ইহার ভাব মনুষ্য দেখিতে পার না, ইাহার স্তুতি প্রা-র্থনা মনুষ। শুনিতে পার না , কেবল সেই गर्कामाको मर्कान्डयांची शुक्रवरे रेहा ङानिटड পারেন, যিনি ইচার এক মাত্র ফল-দাভা, ষাঁহার চকুদ সর্বতে। অন্তর্ব হাহাতে আ मारमत উপাসনা মৌ थक ও विकल ना बहेश चार्यादक ও फन-मात्रक व्य. छ। हात्र अना চেফী কর' কর্তবা, নতুবা কেবল কভক-अलि निकिष्णे भंक उठावन कविता कन्छे ভাবে ঈশ্বরের পূজা কবা হয়। সাবধান। হে ব্রাহ্মগণ! যেন তোমাদের প্রাভাঙিক छेशांगना आंब-शना क्राय-शना काया हरेगां না পড়ে। বাইতে আত্মতে ঈশ্বরকে দেখিয়া হৃদয়ের সহিত ভাঁচার পূজা করিছে পার, তাহাই ভোমাদের নিত্য কর্ম। थः ক্লুত উপাদনা হইতেছে কি না, ফল স্বাৰা ভাষার পরিচয় পাওয়া যায়। প্রত্যন্ত নিয়-মিত ৰূপে ত্ৰেলোপাসনাতে নিযুক্ত হউ-তেছি, অথচ প.প হইতে নিষ্তি পাই-তেছি না, পুর্বের নায় রাশি রাশি পাপ অশ্বরে দঞ্চিত রহিয়াছে, আত্ম-প্রদাদ অনু-ভব করিতে পারিতেছি না, নিরুষ্ট প্রবৃত্তি সকল অপরাজিত বিক্রমে হৃদয়কে শাসন করিতেছে এবং সমুদায় **জীবনকে মোহ**-সৃষ্টের বন্ধ করিয়া রাখিয়াছে;, **ইহাকে** क्यंन अकृष्ठ छेशामना वना यात्र मा। एक

উপাসনাতে আত্মার উন্নতি হয় না, তাহা
প্রকৃত উপাসনা নয়। যে সাধু ঈশরের
যথার্থ উপাসক হন, তাঁহার অন্তরে বাহিরে,
তাঁহার সমুদায় জীবনে উন্নতি শুকাশ পাইবে। মঙ্গল-স্বরূপ পরমেশর আমানিগকে
তাঁহার উপাসক করিয়া পরম সৌভাগাবান
করিয়াছেন; সাবধান। যেনুকেই এই মইৎ
অধিকার লাভ করিয়া ইহাকে বিকৃত না
করেন। প্রভাহ নির্দিত্ব পদ্ধতি অনুসারে
উপাসনা করিলে ব্রাহ্মবর্গের প্রতিজ্ঞা পালন হয় না; প্রকৃত আশুরিক উপাসনাই
নিতায় আবশ্যক।

উপাসনা করিবার পূর্কো অননামনা इडेया महा-चुक्त श्रुत्मध्य काञ्चा ममाधान করিবেক। সংসারের পাপ ভাপ প্রশ্লাভন হইতে দূরে গিয়া পরিশুদ্ধ মহান প্রমেশ্ব-রের সলিধানে উপস্থিত হইযাছি, ইং৷ স্মরণ রাখিবে। ধেখানে বাহ্য আকর্ষণে মন আ-কৃষ্ট হয়, দেখানে অপবিত্র কামনা মনে উদয় হয়, দেখানে উপাদনা করা বিধেয় নর; যেহেতু বিক্ষিপ্ত চিত্ত হইলে ওঁহোর मर्भन পां ७३१ या स्वा। मर्क अथरम छीहात्क প্রত্যক্ষ দেখা যায় এ প্রকার চেটা করিবে, প্রীতি নয়নে তাঁহার প্রীতি ভাব দর্শন ক-রিবে, বিশুদ্ধ হৃদয়ে তাঁহার পবিত নিদ্ধলয় স্বৰূপের প্রতি নির্বাক্ষণ কারবে। ভাঁহাকে না দেখিলে তাঁহার পুজাতে প্রবৃত্ত হওয়া সম্ভাবিত নহে। কৃ**ডজ্ঞতা-উপহার কাহার** নিকটে অৰ্পন **করিবে? আত্মার সভাব** মে'চন করিবার জন্য কাহার নিকটে **প্রার্থনা** করিবে ? যাঁছার পুজা করিতে মানস ক-রিয়াছ, ভাঁহা**র দর্শন না পাইলে কেবল** শূন্য হৃদয় হইতে কভকগুলি বাক্য নি:হুত स्हेश आकारण विश्वीत रहेटवा व्याज्यात বক্ষোপাসনার পারতে ক্রমু বর্ণন আক **啊** 本 [

শান্ত সমাহিত ইইয়া একাঞ চিক্তে পর-ভ্ৰম্বের স্বৰূপ চিন্তা করিবৈক, যিনি গঁৰ্ম-वांशी नवीहवीनी, विनि " विश्वजन्म" যিনি থকাশবান, বিনি ভোতের ভোত, চকুর চকু, মনের মন, প্রাণের প্রাণ ইইরা আমাদের মধ্যে গুড়ুগোড় রহিয়াছেন, যিনি मक्ल मक्ति भूग मक्ति, याँशांक व्यवसम कतिशा आमता कीविङ तक्ति। हि, यिनि সুাধকের সলিধানে স্বয়ং উপস্থিত হইরা হৃদয়ের পূজা-উপহার গ্রহণ করেন; তিনি ष्यामीदमत मन्यू तथ, जिनि ष्यामादमत ष्यच्टत রিরাজ করিতেছেন। ত্রন্সনিষ্ঠ ইইয়া এই প্রকারে তাঁহার খ্যান করিতে করিতে ভাঁহার আবিৰ্ভাব হইল, হৃদয়াকাশে দেই সভ্য-मुर्यात উদয় इहेल, এবং বিমল বিশুদ্ধ জ্যোতিঃ বিকীর্ণ হইল। সংসারের অন্ধকার जित्ताहिक इहेन, अमाधु काममा, विषय यञ्जना, লোক ভয়, ছুৰ্বনভা, নিক্ষট ভাব-দকল অন্তরিত হইল; দেই নিস্কলক পবিত্র পুরু-বের দর্শন মাত্র শ্রন্ধা ও ভক্তি, জাহার মঙ্গল-মুর্ত্তি দেখিবা মাত্র প্রীতিও ক্লত-জ্ঞতা **আ**পনা হইতেই উচ্চৃদিত হ ইল; স্থাতি, ধন্যবাদ, প্রার্থনা, জ্রোতের ন্যায় অপ্ৰতিহত বেগে প্ৰবাহিত হইতে লাগিল, ঈশ্বরের মহিমা-সামে আত্মা পূর্ণ ইইল এবং भागतम्ब **उदम** छेरमातिङ इरेटक ला-गिन। यथन **এ**ই बटन जन छान, उना-थान, उक्क नर्गन नरुकारत उद्यक्तांभागना रुत्र, ডখনই আমরা এই পৃথিবীতে ৰাকিয়াও বর্গের পবিত্রতা ও আনন্দ অমুভব করি। ८४ जाकाण । ८७ वर्ग विश्व छेन्। नर्गर अवनयन क्य, अवगार रेश्व कन शक्तिम नाष्ठ कतिरव। विकिश-हिर्दे, भर्मविक मतम टाँशंत मजिशात छेननीय हरेखे ना ह क्रमानात्र क्षप्रकार्यप्रदेश चानीम स्मृतिहाः केंचित भूकाटक सहस्र स्टेरवा अहे सम्बद्धाः

ভাঁহার উপাসন। করিবে, এই ঐকারে তী। হার উপাসনা করিবে।

হে পরমান্তর ! আমরা ভোমারই উপা
সক, যাহাতে প্রতি দিবস নিজে নে প্রকার

সহিত ভোমার পূজা করিছে পারি, যাহাতে
ভোমার পবিত্র সহবাদে থাকিয়া দিন দিন

উম্নত হইতে পারি, এ প্রকার ক্রপা বিভর্গ

কর। সংগার কোলাইলে যেন ভোনাকে
বিশ্বত না হই; তোমার প্রসাদে প্রতি দিন

ভোমার উপান্ন। করিবার মহৎ অধিকার
প্রাপ্ত হইয়াছি, ইহাতে যেন আমরা কথন

অবহেলা না করি। পর্মেশ। কি প্রকারে
ভোমার উপাসনা করিব, তুমি ভাহা আমার

দিগকে শিক্ষা দেও; আমাদের হস্ত ধারণ
করিয়া ভোমার প্রতি আমারদিগকে উম্নত

কর।

ওঁ একমেবা দ্বিতীয়ং

জীবনের প্রকৃত ব্যবহার।

হে মানবগণ! বিনীত ভাবে দেই বিশ্ব-নিরস্তার পথসকল অনুসন্ধান কর, এবং কউস্টে খদি এক বার ভাঁখার নিদিট পথ অবেষণ করিষা প্রাপ্ত হও, তাহা হইলে আর সে পথের বাহিরে গমন করিও না। যখন ভোমরা এক বার তাঁহার পথ জানিলে, আণ পর্যান্ত পণ করিয়াও সেই পথের প-থিক ছইবে। পৃথিবীর প্রতে কে বস্তু তাঁ-হার জ্ঞান ও সহিমার পরিচয় দিভেছে এবং চতুর্দিকেই তাঁহার অভিপ্রেক কার্যা-मकन क्वानियात खेशीत तक्षियाटकः, टिकी क्त्र, कश्रे हे विकल इड्ट्रिमा। यिशास्त्र চন্দ্র স্বর্থা বায়ু প্রভৃতির গমনাগমন আছে ace यथात्म मर्कादग्रविभिक्ते तुक्ति भक्ति मन्नास कीव व्याष्ट, मिहे श्रीपन्हे हैं भ-রের আজা এবং নিয়ম জাত্মলারূপে ঞ্র-

কাশমান রাহ্য়াছে। তিনি শক্তিতে অ-নন্ত, জ্ঞানেতে অনন্ত:—তিনি অনন্ত শক্তি গ্রভাবে এই অনন্ত ব্রহ্মাণ্ড রচনা করিয়া পৃথিবীর সমস্ত বস্তুকে বথাছানে রক্ষা করি-তেছেন এবং অদীম আকাশ-দিংহাদন इरेटड अनम् छान अ जारव अन् ही की है। नुत মৃত্যু প্র্যান্ত ভাঁছার গোচরে বহিয়াছে। ছে মানবগণ! ভোমতা ই হারই রাজ্যে বাস ক্রিতেছ, ইঁহা কর্ত্তক স্থাট হইয়ছে; দাবধান যেন ভাঁহার আজ্ঞাধীন ভূতা হইয়া তাঁচারই আজ্ঞা লঞ্জন না করিতে হয়। তাঁহার বিশ্ব-নিঃস্ত গভীর নাদ ভাবণ कत, अवन करिया जनसुयागी कार्या कव, মঙ্গলই দেখিতে পাইবে। আন্ন: নূতন মূতন বেশ ধারণ করিবে; হে মানবগণ! বিবেচনা করিয়া দেখ ভোমার্নিগকে কি নিমিত্ত ঈশ্বর প্রেরণ করিয়াছেন। তোম'-ष्टिशत खंडात. संश्वान, **खेरफ्रमा, क्रमडा** ও অপরাপর সমন্ধ পর্যাবেশ্চনা করিয়া (मथ। এখনি জানিতে পারিবে ভোমাদি-। ণের কর্ত্তরা কি. এবং ইশাও জ্ঞানিতে পারিবে ভোমাদিগকে কোন পথ দিয়া য।ইতে হইবে।

যে প্রাপ্ত ভোনার ক্ষমতা, এবং যে কার্যা প্রবৃদ্ধ হইতে ঘাইতেছ ভাহাতে ভোনার কি ৰূপ অভিকৃতি, ইহা বিলক্ষণ নাপে প্রীক্ষা করিয়ানা দেপ, দে প্রাপ্ত সেই কায়ো হস্তক্ষেপ করিবে না; ভাহা হইলে ভোমার নিকট হ'তে লজ্জা, অপমান ও অনুহাপ দূরে অবস্থিতি করিবে। অবিবেচক বাজিরাই বার্থ বাক্য সকল উচ্চারণ দারা আপনাদিধের নিক্রোধতা প্রকাশ করে। যিনি ফল চিন্তা না করিয়া কোন কার্যা প্রত্ত হন, তিনি প্রাচীরের অপর পাশে কি আছে না দেখিয়াই উল্লেখন ক্রিতে গিয়া কুপে পতিত হন। অভএব বিবে-

চনাকে সর্বাদা অন্তরে জাগৰক রাখ, তিনি যাহা উপদেশ দেন তাহা করিতে সাধ্যামু-সারে চেন্টা কর, তাহা হইলে তিনি তো-মাদিগকে সভ্য এবং মুক্তির পথে লইয়া যাইবেন।

হে মরুষা! তুমি কে, যে আপনার ভ্রানের এবং বিদ্যা বুদ্ধির গর্বে করিতেছ ? যদি জ্ঞানী হইতে চাও; তাহা হইলে **এথনে** জান যে তুমি সম্পূর্ণ ৰূপে অজ্ঞ; আর যদিও ভোমাকে লোকে বাতুল বলিয়া না জানে ভাহা হইলে ভুমি আপনাকে জ্ঞানী জানিয়া জনসমাজে বাতুলতা প্রকাশ করিও নাঃ यमन अভाব-अन्तरतत मामाना প्रिष्ठ्य-ও শোভার কারণ হয়, তেমনি জ্ঞান নম্তা মহকারে বিশুণ শোভা পায় ৷ छानी वाङ्गित मूथ इरेट य मकल দতা নিংস্ত হয় ভাহার জ্যোতি অধিক উক্ষুল হংশা প্রকাশ পায়। আর যদিও তাঁ-হার নিকট কোন কোন সময়ে ভ্রম আসিয়া উপস্থিত হয়,তাহা হ্ইলে ওঁহোর নম্ প্রকৃতি তাঁহার ভ্রমকে আচ্ছাদন করিয়া কেলে। তিনি কখন আপনার বৃদ্ধিদে অভ্রান্ত ভা-বিলা কাৰ্য্য কৰেন ন।। যদিও কোন সময়ে এমত কোন বিষয় উপাস্থত হয়, যাহা তিনি বুঝিয়া উঠিতে পারেন না, তখন তিনি পাৰ্শস্থিত বন্ধুব সাংখ্যা প্ৰাৰ্থনায় কখনই লজ্জ। বোধ বরেন না, স্থতরাং ভিনি কোন काटनरे शक्तिजीनरभन्न नाम मुर्थका थ-কাশ করেন না। তিনি যদি শুনিতে পান যে তাঁহার কেহ প্রশংসা করিতেছে; তিনি সে দিকে কর্ণাতও করেন না; এবং যদিও তাঁহার কর্ণকুহরে বৈবাৎ ভাঁহার প্রশংসা অবিফ হয়, তিনি তাহা বিশ্বাস করেন না; বরং তিনি আপনার দোষনমূহের প্রতি যেমন অবশুঠন কলের नका दार्थन। **অধিক দৌল্ম্য্য সম্পাদন করে, देशेर ऋপ**

তীহার গুণসমূর্য নমুডা ৰূপ অবগুওনে আ-হ্বাদিত থাকাতে আরো শোভা পাইয়া থাকে। কিন্তু এক্ষণে এক বার গবিতের শ্রতি দৃটিপাত কর, যিনি স্থন্দর পরিচ্ছদ ধারণ করিয়া প্রকাশ্য পথে প্রমন করিতে-ह्न, এবং এই মানসে চতুর্দিকে দৃষ্টি নি-ক্ষেপ করিতেছেন, যে তাহাকে যেন সকলে দেখিতে পায়। তিনি মস্তক উন্নত করিয়া এৰপ ভাবে চলিতেচেন বোধ হয় যেন তিনি তাঁহার নিম্নপদ্বীয় লোকদিগকে প্রাহাই কবিতেছেন না; কিন্তু ভিনি যেমন ভাঁষাৰ নিম্পাদবীস্থ লোকদিনের প্রতি অবজ্ঞা প্রকাশ করেন, আবার তাঁহার উচ্চ পদত্ব লোকেরা তাঁহাকেও সেইৰূপ অবজ্ঞা করিতে পারেন তংকালে ইছা অমুধারন করা ভাঁচার কর্ত্তব্য। তিনি কাচারো বিচা-রকে বিচার জ্ঞান করেন না; আপনি যাহা সিদ্ধান্ত করেন ভাষাই অভান্ত, স্কুভরাং व्यवदर्गाटव डींश्रंत मकन कार्याहे विमुध्यन ছইয়া উঠে। তিনি আপনার মনোমধ্যে देश भर्दि कोड इहेट्ड शास्त्रम, এবং সর্বাদা আপনার বিষয় লহয়। আন্দোলন করিয়াই প্রীভি লাভ করেন। তিনি থেমন আপনাব প্রশংসা আপনি গ্রাস করিতে চান ভেমনি আবার চাটুকারেরা জাঁহাকে সম্পূর্ণ প্রাস করিয়া বদিয়া থাকে।

रेश म्लाग्डे क्यांण इरेट्या य कर वात नमत्र नण इरेटल जात क्यांनान इरेट्य मा, क्ष्यर या नम्लाग्ड णाशत क्ष्यत मम्लून क्टल मिर्कत क्या या-रेटण भारत मा, ''क्षारि जामाण क्लांगा मृज्ञीटला जियाणि। '' क्यांना नावधारत जिलाह काटलेड क्यां जाना ना नाविता क्रांगा मण्डेनेटला जियाणि। '' क्यांना नावधारत जिलाह काटलेड क्यां लाहिना ना नाविता क्रांगा मण्डेनेटलेड क्यां लाहिना ना नाविता क्रांगा मण्डेनेटलेड क्यां लाहिना ना नाविता क्रांगान मण्डेन क्यांना वावशास क्रिया क्रांगान मण्डेन क्यांना वावशास क्रांगा

ক্ষবিষাতের গর্ডে স্থিতি করিতেছে. কি আকৃতিতে তোমার সন্মুখে আসিয়া উপ-স্থিত হইবে, ভাগার ভুমি কিছুই স্থান না। যাছা কিছু করিবে বলিয়া তির করিয়া রাখি-য়াছ, শীঘ্র তাহা নিষ্পন্ন করিয়া কেল, যদি প্রাতঃকাল মধ্যে কার্য্য সমাধা করিতে পার তাহা হইলে আর সন্ধার প্রীক্ষা করিও আলস্য দরিদ্রতা ও ক্লেশের পিডা ত্বৰূপ; এবং পরিশ্রম সূথ সচ্চন্তা ও ধর্মের আকব ভূমি। পরিশ্রমীদিরের মি-কট হইতে অভার দরিদ্রতা দূরে পলায়ন কবিরাছে, এবং স্থা দৌভাগ্য ইহাদিগের সঙ্গের নক্ষী হইয়াছে। ঘিনি আল্সাকে ইহাকে শত্ৰ বলিয়া জানেন, তিনিই ধর্ম, ঐশ্বৰ্যা, বীৰ্ষা, মান, সন্তুম, ধন প্ৰকৃতি লাভ করেন। তাঁহাকেই বছজনাকীন রাজ-সভার মধ্যে দণ্ডায়মান হইতে দেখা যায়। তিনি যেমন প্রত্যুবে গাতোপান করেন, আবার ভেমনি বিলয়ে বিশ্রাম-শ্যায় গমন কবেন। তিনি নিয়মিত শবীর সঞ্চালন षाता त्यमम महौत्रदक मछ्डटमः त्रकः। करत्रम, তেমনি আবার নিয়মিত বাপে মনোর্ত্তি मभूमस ठालिमा प्रता मनदक सुद्ध दाद्यन। কিন্তু, আবার দেখ, ধাহারা অলম তাহা-দিগের জীবন কেবল ভার স্বৰূপ। ভাহার অতি মুহূর্ভ কেপণ যন্ত্রণ স্বরণ। তিনি কত প্রকার মনেতে উপস্থিত করেন, কিন্তু কোন বিষয়েই কুভকার্যা হইতে পারেন না। তাঁহার সমস্ত জীবন কেবল ছায়ার ন্যায় চলিয়া যায়: পৃথিবীতে এমন কিছুই রাখিয়া যান না,যাহা দ্বারা ভাঁচাকে মৃত্যুর পর স্মরণ করা ধাইতে পারে। তাঁহার শরীরের অঞ্ व्यठाक वर्षाविधि मक्शानम जासाद करू-পার হইয়া যায়। ভাহার কর্ম করিতে বিল-कर्ग देखा चारह, किन्ह नहीरदद जनामध्य

নিবজন তিনি অপারক। তাঁছার মন চির অক্ষকারে মথ আছে। তাঁহার চিস্তান্থান যথাক্তমে স্ফালিত না হওয়াতে এৰূপ এক প্রকার বিশৃত্বল হইন। রহিয়াছে, যে যদিও किनि क्षारनाशांक रन रेका करतन, किन्द भरनत देखर्या व्य जारव किछूरे करिया উঠিতে পারেন ন।। আলসা থেমন তাঁ-ছাকে সংসারের কার্যা হইতে বহিষ্তৃ. করিয়া দিয়াছে, ভেমনি আবার তাঁহার গৃহ হইতে শান্তিকেও বহিষ্ত করিয়াছে। তাঁহার ভূতাবর্গ তাঁহার বশে থাকেনা; ধাকিবেই বা কেন? ভাগদিগের প্রভু যথন আপনার কর্ত্ত করিতে পারিলেন না তথন অপরের উপর কর্ত্ত্ব করিতে পারি-(तन, कथनरे मच्च रुप्त नी। স্কুতরাং তাহারা অবাধ্যকা ও মমিতাচার ডাহাদি-পের প্রভুরই নিকট হইতে শিক্ষা পায। এ সমস্ত বিশৃত্বল, তিনি সকলি দেখিতে এবং শুনিতে পাইভেছেন, তিনি মনে মনে প্রতিজ্ঞা করেন এই বার সকলি করিব; किन्न कतिदवन कि, जानमा जामिश्र छाँश्रेटक একে বারে আদ করিয়া ফেলে। যে জী-ৰনে মসুষ্য যাহা আৰ্থনা করিবেন তাহাই क्षां इहेरवन, जिनि कहें करण रमहे मसूचा জীবনকে, ছুৰ্বহ ভার স্বৰূপ জ্ঞান করিয়া পরিশেযে শোকে মলিন, রোগে কাতর ও বিবাদে জজ্জ রীভূক হইরা কালের করান-বদনে লঘুতন পিঞাকারে প্রবিষ্ট হন।

> থিরোডোর পার্করের পত্র। ২০৭ নংখ্যক গত্রিকার ১৩১ গুঠার পর।

অনন্তর সাধারণকে যাহা উপদেশ প্রানা করিতে হইবে,তছিষয়ে অভি অপসাই শিক্ষা লাভ করিয়াছি এই বলিয়া এবং বছকার ধর্ম চিন্তা ও ধর্মানুসন্ধান করিছে স্থকা

रेशत निमिष्ठः अनिकाः श्रृंबीकः भन्न विकास লয় পরিতাপি করিলান। আমি নর্বা অধনে य नमन्त উপদেশ निशाहिकाम, जिल्लाह আমাকে অভ্যের সক্ষাপুর্ণ অনুকরণ করিতে হইয়াছিল। উপদেশ কালে যদিও মুভন নুতন ভাব সম্বলন করিয়া দিতাম কিন্ত পূর্বকেন আচার্যাদিগের চিরপরিচিত প্রণা-লীর হস্ত হইতে কিছুতেই পরিজ্ঞাণ প্রাপ্ত হইতে পারি নাই। আমি যখন ধর্মোপ-দেশ প্রদান করিডাম, তৎকালে অভিশয় ভীত ও কম্পিত হইতাম। আমি তরুণ-বয়ক্ষ যুৱা; যদিও বৰ্মাবিজ্ঞান অনুশীলন ও ধর্ম বিষয়ক বিস্তর চিন্তা করিয়া ছিলাম, তথাত বহু দিবস জনসমাজের সহিত সমাক সংস্রব রাখিয়া অভিজ্ঞতা লাভ করিতে পারি নাই; স্করাং বাঁহার৷ বয়দের আধিক্য নিবন্ধন বিজ্ঞ বলিয়া পরিগণিত হইয়াছেন. তাঁহারা আমার উপদেশ বাক্য ভাবণ করি-বেন এই জনা দাতিশয় বিস্মাপয় হইভাম। **छे शरमम कारल या बारा एक मात्र वाका** নিঃস্ত না হয়, আমি তদিবয়ে সতত সতৰ্ক থাকিতাম এবং ধর্মবিষয়ক যে সহজ জ্ঞান বিদ্যমান রহিয়াছে ভাহাতে সকলকে উদ্বো-ধিত করিবার নিমিত্ত সবিশেষ চেকী করি-जान, এবং मनुगा त्य পরিমাণে আকৃতিক नियुद्भत व्यक्ति, व्यक्ति मर्स्वाट्य मस्त ममदक ভাহাই অভিব্যক্ত করিতাম। এই ৰূপে करतक बांग व्यानकारमक श्रांटन बङ्ग्रा এবং মনুষোর अন্তদ্ভিতে প্রবিষ্ট ইইডে इट्टब **এই क्ल प्यवधांत्र कतिय**ियाहाटफ সমাক অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছি সেই ৰূপ धर्मात छेशीतमा धारात्म व्यक्षायमात्रां वह আমার যুক্তি-সঙ্গত ও ধর্মানুসক केशरमम माजीत भागरमत मृत्राम वर्षण छेत्र क रहेश निष्ठशासक नगरे चालिक व क्रिएक मानिका अस्ति।

পদেশক আমাকেউপদেশের সভাতা থাকিপালমার্থ দবিশেষ সক্তর্ক করিয়া দিয়াছিলেন,
এই নিনিম্ব আমি তাঁহার নিকট কুডজ্ঞতাপালে সংগত হইয়া আছি। এক্ষণে আমারও সম্পূর্ণ বিশাস হইতেছে বে আমিও
তাঁহার বাকা প্রতিপালনে পরাধা থ হই
নাই। আমি ইংল্ডীয় ভাষার ব্যবহারনির্ণয় এবং ভ্রিষয়ক স্থাীর্ঘ বক্তৃতার

কি তঠ বিতর্ক অনুশালন করিয়া বাক্য যোজনার পরিপাটী ও পদ হাব-হারের চাতুরী অভ্যাস করিয়া ছিলাম। গ্রীক ও লাটিন ভাষার বক্তৃতা পর্যালো-চনা করত বাক্যের অলকার সম্পাদনেও সমর্থ হইলাম।

অনম্ভর আমি ১৮৩৭ খৃদ্যাব্দে ইউ-निट्छेतियान मस्थ्रमार्यत এবং বোষ্টনের সলিহিত পশ্চিম রক্ষবরি নামক ক্ষুদ্র এক জনপদের কংগ্রিদেশন নামক এক দা-মান্য সভার ধর্মঘাজকত। পদে অভিষিক্ত रुश्ताम। তथाकात जी ७ शुक्रमित्नत নাহত আমার বিলক্ষণ সৌক্ষা ক্লিয়া-ছিল। তাঁহাদিনের মহিত দৌহদা আমার मन्त्र्रं वीकिसनक ७ कटनाश्रवासक रहेश উঠে। आमि यथन धर्म विषयक हिस्रो कहिन তাম, তপ্তমন বিজ্ঞান বিশেষ আমার স্বাধী-নতা পরিহার করিতে সমর্থ হইক লা এবং वारा गिकांक कतिकाम, काराहे आसीनकात करिक क्रेश्राम्य विकास। आसान क्रिकाटन **क्ट्रक्रांत का शृक्षि क्यां शृत करात साहै।** भन्त-तिवार्गनाद्वत स्थानादकको त्कदल स्क्र বিষয়ৰ শিক্ষা প্ৰমান কৰিছেল। জীৱানা ক ्राक निक्रम सावस्त्रपंत क्यांच्यात साह सन् १७ हरेता । केरिकिश्त स्था निर्मे क्र कविद्यान ना । अध्यक्त केरिका बाजस्कात धर्म प्रशासकात विवास अभितिकालिका क विकास TIPES AND ENERGY AND STREET

ज्ञेच्य । अवन् चित्र व्यविद्वार्थ भनामक छ স্বাধীন ভাব উন্নত করিছে क शिट्च । ইউনিটেরিরান খুটিয়ানের শান্ধার স্বাধীনতা, চিন্তার স্বাধীনতা ও व अपूर्णात श्राधीनकाटक स्म महिद्याच मार्गमञ्ज করিভেন এবং জাঁহাদিগকে যে পরীক্ষক ও পোপের পরতন্ত্রতার নিপীড়িত হইতে হইত ना, उৎकाटन इंहा थे कूज मण्युनाटसङ অত্প অফ্লাদের বিষয় নছে। ইউনিটেরিয়াম ধর্কোপাদেশক ও সভাদিগের মধ্যে বিস্তর मज-देवसमा लक्किल क्हेंड किंख धर्मा-विक्का-নের পরিবর্তে ধর্মের একতা সম্পাদনে गक दल तहे यञ्ज हिला। यथन (क्यान दा-ক্তিকে ধর্মোপদেশক পদে অভিষিক্ত কর: हरेक, विচারক मভা ভাঁছার ধর্ম-সংক্রান্ত বিশেষ অভিথায় কিছুমাত্র অমুসস্থান ক-রিত না; দাম্প্রদায়িক লোকেরাই ভাঁছার অভিশায় স্থাট অবগত হইয়া যদি তাঁহারে ধর্মোপদেশকের পদে শভিক্তিভ করা **সঙ্গত** বোধ করিত, বিচারক সভার গোচর করিতেল। জালাদিলের মধ্যে এ-रेक्श धर्गालीत्र गितिटम्य मनापत हिल। ইউনিটেরিয়ান সম্প্রদায় এক ঈশারের আ खिएक में नियान कहिया बाटकन তাঁহারা থৃফিয়ানদিগের জিনীতের **মতে** किছूटङरे अञ्चरमामन कटतम ना। शृष्टिशारनता কছেন,থৃষ্ট সংধারণের ঈশ্বর; কিন্তু ইউ-নিটেরিয়নেরা এই বাকোর প্রতিবাদ করিয়া আমি যথন ধ্ৰেগপদেশক প্ৰে অভিষক্ত হই,তৎকালে বিচারক সভা আ-মাকে আমার ধর্মবিষয়ক অভিঞায় কিছুমা**ত্র** जिल्लामा करतम बाहै। वागाह मक्रामिदशंत ग्रज-टेक्समा आहर कि मा এবং কোন্ धर्माविक्कांत[ः] चामात्रः चवन-विक व्यवस्तिक वाका व्यक्ति म के विका **द्यन्य सामक्ष नीजि के स्वर्ग शहातगढ़ाह**

বিষয় স্বিশেষ প্রীক্ষা করিয়াছিলেন।
আমার ধর্মোপদেশক পদে অভিবিক্ত
ইইবার কালে এক মহাত্মা আমার মন্তর্কে
ইস্ত প্রদান পূর্বেক প্রার্থনা করিলেন "কাবা
বা দর্শন শাস্ত্রে অমুরাগ এবং কোন প্রকার
প্রীতিকর বিষয়ের অমুশীলন এই তরুণ
বয়ক বাজিকে প্রকৃত ধর্মের শিক্ষা লাভ
ও মানব জাতির মুক্তি সম্পাদনার্থ ধর্মের
উপদেশ প্রদান ইইতে যেন কদাচ বিরত
না করে। আমিও তথান্ত বলিয়া অস্থরের
সহিত তাঁহার বাকে। অভিনন্দন করিলাম।

আমার ধর্মোপদেশকের পদ গ্রহণ ক-রিবার এক ব' চুই বৎসর পরে সভ্য সংখ্য আয় সত্তর জন হইয়াছিল। ক্একটি বা-লকও ইহার অন্তর্গতি ছিল। আমি অন-किकान मध्य मञ्चय कृष्ट कृष्ट मञ्जूषि । মহিতও ন'স্ণ রূপ পরিচিত হইলাম। তমবো দেখিলাম কৃতগুলি নিতান্ত আসভা এবং কভগুলি অভিশয় উদারস্ভাব ও যথার্থ ভার। আমি সাধারণের চরিত্র ও অক্তিরিক ভাব সমুদায় সমাক্ অবগত হই-शोहिलांम। मञ्जितिक स्य ममन्द्र উপদেশ व्यम्बि कतिए इहेरु, ७९मभूमां इतना कि বার নিমিত সমাধক যত্ন ও পরিতান স্বীকার कविदांस। ज्यमांति त्यहे मक्त छेन्द्रमा আমার চিত্ত ২ইতে তিরোহিত হয় নাই। উপদেশ রচনা ও উপদেশ প্রদানে জ্যামার সম্বিক উৎসাহ ও আমোদ হইত। আমি प्रशः निकः लाभ ७ अगारक छेपरमण প্রদান উভয় বিষয়েই **স্থপটু ছিলাম।** আপনার উন্নতি সাধন ও অনোর উন্নতি সম্পাদন করা আমার একমাত্র কার্য্য ছিল। কোন সম্প্রদায় বা ইভিহা**স বিশেচ্যর শাসন**্ **খারা এতিহত না হইয়া আকুভিক নিয়ন** गशुमारत्रत छेलरमन अमारन अबुख इंहेकांम। च मक नगर्यन ७ निवर्णन व्यवर्णन कवियात

मिमिखरे मध्यमात्रनिष्ठ अंक ७ सेखिसीटमत অ: প্রায় অবলয়ন করিতাম। ইভিছাস-ঘটিত বিষয়ের নিমিত্ত ঐতিহাসিক প্রশাণ উদ্বৃত করিতাম এবং ধর্মতত্ত্বের নিমি**ত্ত** <mark>আন্ধার</mark> ৷ সহজ জ্ঞান ও ধর্ম-পরায়ণ ব্যক্তিদিনোর দুঢ় বিশাদই অমাণ বলিয়া অঙ্গীকার করিতাম। রুষক**দিগের নিভক্ত পাঁত** অবস্থা স্কবি রচিত কাবোর নাায় সংভীয়-মান হইত এবং উপদেশ প্রদান করিবরি गमत गमांक श्रंहत मलिङ्क द्रक ममूह ধেমন গৰাক বিবর **ভারা লক্ষিত হয়** দেই ৰূপ উহা আমার অন্তরে স্থপ্ট আকিত হইত। সূচতুর মন্ত্রাদিলের সহিত সংস্রব রাখিয়া যালা পরিবন্ধিত হইয়াছে मिहे असर्भि धि जीति या विषयः असि-জ্ঞতা লাভ করিয়াছি আমি তাহারই উপ-দেশ প্রদান করিতাম এবং ষাহাতে সকলে সময়ের প্রকৃত ব্যবহার এবং নিনীত সভ্য সকল কার্য্যে পরিণত করে তদ্বিবয়েও যত্ন-বান ছিলাম।

অনন্তর আমি পদার্থ বিদ্যার আলোচনা এবং যাহাতে প্রকৃত জ্ঞানোপাজন হয় এই ৰূপ নান। প্ৰকার শান্ত স্বতন্ত্ৰ অনুশী-লন করিবার বিশুর অবকাশ প্রাপ্ত ফইলাম। একদা ধর্মাবিদ্যালয়ের এক অধ্যাপক আ-মাকে কহিলেন "তুমি একটি সামান্য সভার थटमाश्रीतमाक। अंबश महीर्ग स्राटन स्रवस्तान কর। তোমার কর্ত্তব্য **হইতেছে না। ভূমি** জাতি সাধারণ সকলকেই ধর্মোপদেশ অদান কর এবং বক্তৃতা দারা যে বিষয় সংসাধনে जनभर्ग इहेटव ब्रह्मा कविशा ७९ मण्यापटन যত্ৰবান হও।" আমি অবকাশ কলি কঠিন• পরিপ্রমের সহিত পুস্তক পাঠ করিয়া অভি-বাহিত করিতাম। স্পামি যে কেবল সভাসি वर्णकरे निवरंगत सर्वा ने में वि श्रिक्में घका भाजादशकता अतिकाम काही तटर ;

ঐ ৰূপ গাঢ়তর পরিশ্রম দার। প্রভুত সান-म् । अमू उद कहिजान । अम इद्र यामि धर्म-বিজ্ঞানের স্থকটিন বিষয় নিৰূপণ করিতে अन, यञ्ज अव्यादमारमत गरिष्ठ भूनतात मी-আমার অবস্থা স্বাধীন किं इहेलांग। ভাব সংস্থাপন ও অধ্যয়ন উভয় বিষয়েই একাস্ত 'অনুকূল হইয়া উঠিন। धटर्माभटम-শঙ্কের পদ গ্রহণ পূর্বক ধর্ম বিজ্ঞান অনু-শ্রীলন আরম্ভ করিলে একটি স্থনহৎ পরিবর্ত্ত লক্ষিত হইতে লাগিল, কিন্তু উচা এই ৰূপ নিস্তদ্ধ ভাবে প্রবর্ত্তিত হইল যে উহা কোন্ স্থান হইতে প্ৰবৰ্তিত ও কোন্স্থানে প্যা-বলৈত চটবে, তংকালে কেছ কিছুট নিৰূপণ কবিতে সমর্থ হন নাই! ফলত এই পরি-বর্তের সময়টি আমেরিকার ধর্ম সংক্রান্ত ইতিহামের অভাস্ত ফলোপধায়ক হট্যা-हिल, गरम्ह नाहै।

ইজিপ্তীর মত।

ইজিপটীবাদণের পূৰারত্ত এৰপ কণ্পিত উপাश्यादन পরিপূর্ণ, যে কোন বিজ্ঞতম পণ্ডিতও ভাষা ফইতে কে:ম বাস্তবিক র-া ভাষ্ট নিঃসংশয়ে নিৰূপণ করিতে পারেন क्ट क्ट बटनम, टेजिकी देशता পরলোকগত প্রধান প্রধান বীর, কবি, শি-প্ৰস্তুত পদাৰ্থ বিদ্যাবিৎ পণ্ডিতদিগকেই দেৰত। বলিয়া উপাসনা করিত। পৃতিয়ান্ যাছকগণ তর্ক দারা আনায়াদে পরাজয় করিবার স্থাবিধা হইত বলিয়া এই পক্ষই আন্ত করিয়াছিলেন। গ্রীস দেশীয় উপুरागत्रिक अञ्चलाद्वतः। रेजिन्दीय्रनिशदक পশু পকীর উপাদক বলিয়া নানা প্রকার উপহাস করিয়া शिशादहम, किन्द्र धीम ल्टलंड एवं एनवीत काछ नकत है जिल्ही स भूबाइख स्टेट्डरे त्य नगुरु छ स्रेशाहिल, हेश

छ। हात्रा कानिट्डन मा। (कह (कह वटनम, इंकिन्धीरशत्रा स्र्या हता नक्तव थङ्डि क्या-ভিক্ষদিগকেই ঈশ্বর জ্ঞানে উপাদন[্] করিত। দকল জাভির পূর্বে পুরুষেরাই প্রথমে সূর্যা প্রভৃতি কড় পদার্থের উপাদনা করি হ, এই নিমিত্ত কোন সম্প্রদায়ই তাহা লইয়। ইঞ্চি-প্টীয়দিগকে উপহাস করেন নাই। প্টীয় যাজকগণের লিখিত যে সকল এন্থ প্রাপ্ত হওয়া যায়, তন্দার। অনেকে স্থির করি-য়াছেন,ইন্দ্রপটীয়াদগের চক্ত সূর্য্য প্রভৃতিকে উপাদনা করিবার নিগ্ত অর্থ ছেল। সে যাহা হউক ইজিপটীয়ের চন্দ্র সূর্য্য প্রভৃতি বড়,পশু পক্ষী প্রভুতি হয়,ও পরলোকগত প্রধান প্রধান মনুষ্যদিগকেও দেবত। ভারেন **छे** 'मना कहिंक, छाद्यात मरम्ह नाहे। হারা পুর্বতন রাজাদিগকে দেবতার পুত্র বলিয়া বিশ্বাদ করিত,এই জন্য অনেক রাজা তাহাদের দেবভার মধ্যে পরিগাণ্ড আছেন। रेकिको ५५८म रेकिकोय एनवर्शामध्यत जिन भुक्र रवत नौना आल इउरा गारा अवस म्बर्**णश्चित ज्ञाम भूत्रम व**िवस পरिवर्गिष আছেন; এই শ্রেণতে দেবও দেবীতে आर्छे का किर्निन । ६३ आर्थे इन्टि দিতীয় পুৰুবে আর বারটা দেবতা ভং<mark>পন্ন</mark> হইয়াছলেন। এই বিভায় পুরুষ হইতে থার কতক্ষালি দেবভা उँ १ भन हम। व्यांगक उमरिम प्रव ७ पार्रेमम् (मदी এই তৃতীয় সন্ত⁴নের শ্রেণীতে পরিগণিত ইয়া দারা স্পান্ট **इहेट** ए (य, श्रीमद्रिम ও **आहे**मिटमद्र **शू**-কো ইজিপ্ট দেশে বিংশতিটি দেবতা ছি-লেন। কিন্তু আদি দেবতাদিকের মধ্যে भिष्य वा भाग मामक स्मव अ बूटिं। वा নাটোনা নামক দেবী এবং দিঙীয় সন্ত্তির মথে হকুলিস দেব এই ভিন নাম ব্যক্তি-রেকে বিংশতি দেবতার মধ্যে আর ,কোন নাম প্রাপ্ত হওর। যার না। এবং ভাঁহাদিগের বিশেষ কোন প্রতিমূর্ত্তিও নাই। এই
দেবতাদিশের মধ্যে যে জান্ত যে দেবতার
প্রিয়, প্রায়ই ভাঁচাকে দেই জান্তর আকৃতিতে
প্রা করা হইত। এক্ষণে যত দূর প্রাপ্ত
হওয়া যায়, ইজিপটীয়দিগের দেবতা ও ধর্মা
বিষয়ক মত প্রকটন করা যাইতেছে।

আমন। গ্রীম দেশীয় ইতিহাম লে-शंक हिट्याट अपन वटनन, हे जिन्ही यपि-গের আমন ও এীক্দরের জোভ্একই দে-বতা ছিলেন। আকিকার অন্তর্মন্তী থিবস্ প্রদেশে ভায়ক্পলিস্নামক নগরে আমন দেবের মন্দির এভিষ্ঠিত ছিল। সেই স্থানে ভীহার উপাসনা হইত। ইপিওপিয়া এ-দেশে অভি বংসর একটি মহোহসব হইত। দেই সময়ে আমন দেবের প্রতিমা নীল নদার তীর দিয়া তথায় লইয়া যাওয়া হইত, এবং ইথিওপিয় লেকেবা অত্যন্ত আভ্রবের সহৈত প্রত্যালামন পুর্য়ক তিঃহাকে এহণ করিত। মহে। ৎসব শেষ হইলে পুনর্বার মেই প্রতিমা স্বস্থান সংস্থাপত চইত। देखिक फिली मिट्ट बार कार्य किया निष्याम किश (व. व्यापन एनव अ अविक मञ्जाश है-ক্রিয়ের অলেচর, কিন্তু মন্ত্র পাঠ ও যাগ ন্ত প্রভৃতি প্রক্রিয়া দারা বশীভূত হইলে ইন্দ্রিগোচর কোন মুত্তি পরিগ্রহ করিয়া ভক্ষসণের নান পথে আবিভূতি হন। ই জভীয় দৰ্শনকারের যে পাঁটেকৈ ছুত বুলিয়া নিৰ্দেশ কৰিতেন, আমন ভ্ৰমধ্যে ाक्षा है है। पाता है भीत करा गरनत की रन भारत इहें हैं।

হকু লিস। ইজিপ্টী স্থাদিশের মতে ইনি নীল নদীর পুজ, ইনি হিন্দু দেবগণের নায় সূর্য্যাদিলে অবস্থান পূর্বাক সূর্যাক নহিত পূর্বিধী পারিবেইন করেন। ভারতী বর্ষায়েরা যেমন সূর্যানপ্তানগানিষ্যানি

য়ণকে বিভূজ চতুৰুত্ব অভূতি ৰান্ত্ৰিধ जाकादा शुकां कतिहा थाटकन, देकि की दहना मिहे क्रि की होर के नी का छाटव खोत्रधिन। করিত। ইজিক্টার্দিগের এই রঙ্গ বিশ্বাস ছিল যে, ज्ञा ममुनात्र भनोदर्शत आहि कातन: জল শুষ্ক হইয়া গেলে মুদ্তিকা উৎপন্ন হয়। **এरे कल ও মৃত্তিকা হইতে সিংহের নাম** मूथ ७ मदर्भत नाम महोत अक्षि कर है--পন হইয়াছিল। এই জন্তুর মধ্য স্থানের-নাম হকুলিস ও কাল। হকুলিস্হইতে একটি প্রকাও ভিন্ন বহির্গত হয়। হর্কুটিন थे जिन्नतक जैनेयुक्त नमदेश विना विज्ञक क-রেন। ভাহার উর্দ্ধ ভাগ স্বর্গ ও অধ্যে ভাগ चुमखन इरेन " चनखत इक् लिम् ११० ভূতকে হথাবং বিভাগ করিয়া রক্ষা করিতে লাগিলেন ৷ আমন যেমন জীবদিগের নি-য়ন্তা, হকু বিলম্সেই ৰূপ জড় জগতের নি মুখা ছিলেন।

মেণ্ডিদ্। ইজিপ্টীয়দিগেব যে আটটি আ,দি দেবতং ছিলেন, ইনি তাঁহোদেরই অ-নাতম। ছাগের আক্তির নাার ইহাঁর প্রতিমূর্ত্তি। যে নগরে ইহাঁর মন্দির সংস্থাপিত ছিল, দে নগরের নানও মেণ্ডিদ

এই মতের সহিত মনুর মতের অংশেক্তংশে সাদশ্য কাচে, যথা

সোভিধ্যাথ শরীরাং সাথ সিদ্ কু বিবিধাঃ প্রকার ।
অপএব সসর্জাদৌ 'চাস্ত্র বীজ্মবাদ্ রূপ ।। ৮ ।।
তদশুমন্তবিদ্ধাং সংস্রাংশু সমপ্রকার পিতামকঃ ।। ২ ।।
তশ্মিক্ ক্রেন্ডে স্থাং ব্রকা সর্বালোকপিতামকঃ ।। ২ ।।
তশ্মিক্তে সভগবানুসিন্তা পরিবংসরং ।
অংকেবাদ্ধানাতালিত্যকবোর্কি ধা ।। ১২ ।। ,
তান্ত্যাংস শকলান্ত্রাঞ্জিবিশং ভূমিঞ্জিম্বিনে।
মধ্যে ব্যোম দিশশাকীবিশাংস্থামক শাক্ষ্তং । ১৬ ।

তিনি চিত্তা করিয়া অ শরীর হুটাত্তে বিবিধ আনা শৃষ্টি করিবার ইচ্ছাত অধ্যে জল সৃত্তি করিবেল ও-তা-হাতে বীজ নিক্ষেপ করিবেল। সেই বীজ অবর্ণনাম অ অর্থ্যের ন্যাত্ত প্রভাসন্তর্গ অত ক্রীয়া উঠিল। জ্লা-বান ব্রক্ষা সেই অতে নম্বৎসর বাস করিয়া অয়ংই আপিনার ব্যান এতাতে তাতা বিধা বিভক্ত করিবেলন, কর্ম ক্রিটি সেই তুই খণ্ড বারা শুরেলাক ও অ্বানান্ধ বিষ্

विनिष्ठा श्रीमिक्ष इप्त । हेहाँ विविद्य पात प्रथिक प्रवश्व हुउग्न बांग्र मा, क्वरण এहे माळ क्रानिट्ड शाला बांग्र व अ क्टिंग वठी क्वित छेशद्व व्य व्य क्वित्य क्वांग्र कांग्र बाट्ड, व्यक्षित क्वित क्वांग्र व्याक हिट्लम ।

পাঞ্চিমিন। নিন্ধুখোটকের আরুতিতে
পাঞ্চিমিন নগরে ইংশার পূজা করা হইত।
অনেকে অনুমান করেন, নিন্ধুখোটক এই
ক্রেবিভার বাহন। ইজিপট দেশীরেরা ইহাকে প্রালয়কারী দেবভার অবভার বলিয়া
বিশান করিত।

ভবানীপুর এক-বিদ্যালয়।

প্রধান আচে,যোর উপদেশ।

চতুথ সংখ্যা।

১০শাবন ১৭৮০ নক।

আনর। অপার গঠার কান-সাগ্র হইছে যে সভাকে লাভ করিবার জন্য এখানে যত্ন করিছেছি, ধেই সভাকে ভাবিতে গেলে ভাস্তিত হটভে হন। त्म हे में खा चरार्थ आभारत इ स्टार वर्ष आर्थनारक অকাশনা করিবে আমবা কথনট উহিতিক পা-ইতে পারি ন।। জিনি পরিষিত বিষয় নহেন ফে আমরা কেবল আপানা। বুদ্ধি-বলে ভাঁহাকে বুবিতে পারিব। ভিনি মহান্, অন'দানস্ত; তীহার সাহায্য ব্যতাত তাঁহাকে লাভ করা যায় না। অভএব নভ হইয়া ভাঁহার নিকটে আপনাকে সমর্পণ করিভেছি, ভিনি আমার জ্ঞানকে উদ্ধৃত্ করিয়া ভাঁহার সভা প্রেরণ করুন। সেই সভা चि ग्रं वित्रा चामत। छ। हात्र डेलार्च्यन निवस् পাৰিতে পারি না। তাঁখাকে না জানিবে নয়. ভাঁহাকে না পাইলেই নয়; সেই সভাগে সভাকে चंद्रमञ्जान कविया जानिटल्डे इहेटर। जन्म-ज्ञान বৰ্ণ-লাধা বলিয়া আনত্না যন্ত্ৰীন চইতে পারি না, किन्छं चाद्रा वज-महकारब जाहारक कानिएक हरें दव। त्व विकारक नाच कहित्व धार, भाग, भाक रहेट उ উত্তীৰ্ণ হওয়া ৰাষ্ট্ৰ; সংসাৱ-সমুদ্ৰ পান্ধ ইইয়া क्षमूं भार्ति ज्यानी इं इत्या व है। अमून महाटक यक् नाथा बनिया कि अवटरना कहिन्छ है आयहा मण्ड केत्रिया केश्वत व्यवसाहित मध्यका क्रिकाल, व्याचा-तर्पत्र कान-पार देश वर्गीर्ग अंधूके जाति विक्रम করিয়া ক্রমে ভাষাকে পুনী ও বানিত করিবেন।
আমরা কুল হইয়া দহানের দাস হইয়াছি, অপপ
হইয়া ভূমার উপাসক হইয়াছি, নত হইয়াই
ভাষার জান-অজ্বি চেটা করিভেছি।

বেদ-স ছিতার মন্ত্র-সকল যদিও কেবল অগ্নি সূর্যা মিত্র বরুণ পরিমিত্ত দৈবভার স্তুভিতে পরি-शूर्व, खवालि मत्या मत्या खाहारकथ धनरसह আভাদ ক্টিভ হইয়াছে। " বো জাগার তম্চঃ कामग्रदेख यो कांशांत छम् मार्यार्न वृद्धि यो कांगांत्र ভনরং সোম আছা" (ঋণুেদ-সংহিতা) বিনি कार्शिया चार्ट्यन, श्रक-नकल डाँशटक कामना कति-ভেচে: যিনি জাগিয়া আছেন, সাম-সকল ভাঁছা-কেই প্রাপ্ত হটভেডে; যিনি জ'গিয়া আছেন, এই সোম-যাগ ভাঁহাকে কহিভেছে। বেদ-মঞ্জে এই মাত্র আছে; কিন্তু যিনি জাগিয়া আছেন, ডিনি যে কে, ভাহার নিকপণ কোপায় ? মন্ধ্রুং ক্ষিরা এক এক বার পুরের বিভ্রু বা জ্বর নারে জিন্সাদা ক্রিয় ছিলেন ' কবিম দেবায় হবিষা বিদেম।'' (ঋণেদ-সংহিতা) কোন্দেৰত'কে আমর হিৰ দান করি? কিন্দু উঁথোর। এই মাত্র উত্তর পাই-ग्रक्तिसम्बद्धाः विकास करि । जिल्ले इ সকল দেবভা। ''এমউ হেব সংস্থা দেবাঃ'' (বাজ-तत्वय आक्रान ' डेन्ट्र मिक्ट तक्नमधिमास्टवरथा-দিবতে সমুপ্ৰেণিক হান্। একং সহিপ্ৰাবছবা বদস্তি অগ্নিং যা ম'ত রশ্বিমাছঃ।" (মঞ্জ-বর্ণ) উচ্চাকে ইন্স, মিচ, লগ্নি করিয়া বলেব, ভিনি মুন্দর পক্ষ-সুক্ত চিবা পক্ষী, বিল্লেরা এক সংক্রে বহু অকার বলেন, উছে,চে ভার, ঘন, মাত্রিধা कांद्रया बदलम् । धा. हे न त्यप्त-भ स्त्रद्र म. पास केश-রের অনস্ত ভাব প্রাছিল ধারিতে পাবে নাই, এক धक रात्र लाष्ट्र। इहेटल क्लिया हिनास्ट्रा । व्यक्ति म९ किन्द्र राज केन्द्रदर्ग रूप **स**्च स्त्राप्त स्वाप्त कार्याहर ঞকংশের নাম প্রকাশিল হইম ছিল। কভ কলে জন্দান খনিদাণৰ নিকটে সেই **অনস্ত** পুক্ষ প্রজন্ম থানিডে পারেন। কড়কাল আর ৰ্বাহারণ এমন ধ্বত অসীম **আকোশে সমুত্র ভীবস্থ** বলৈ-রাশি সদৃশ অস্থ্য নক্ষ্ম সা েবল পার-মিভ দেবভাকেট মানিতে পাবেন**ং তাঁহারা** দেখিতে পাইলেন যে একই দেবতা সূর্যা চঞ্ अधिटक, मावाशृधिवास्त्रशेटक, वांग कविटक्टफन ; ভাঁহারই নিঃধানে বিশ্ব সংগায় নিঃম্পিভ হাই-८७८७। **७ हार।** छोन-ध्राम्हास मःम् मध्यके অনপ্ত আকাশে অনস্ত দেবের হস্ত অধ্যেতে উর্দ্ধেত ध्यमात्रित पिथियान। वास् विषयप्रत श्राम व्याक्त्रम হেদ করিয়াও সেই অনভের জ্যোতিঃ প্রকাশিত ष्ट्रेम ! जैक्षित्रा धरे न मन क्षण वश्चत्र मटला, वाह्नि-त्वत्र वरे व्यमातिक जीकाण मर्गाल, जीवक शुक्रवीत्क

प्रविष्ठ शहिसन। छव्या जीवात्री श्रीव उक्कान শ্ৰেষ্ঠ কোৰ আত্মার মধ্যে পর্মাত্মাকে দেখিতে शान नाहे, खबाना छांदापत्र तमना हहेएछ "अक-নেবাশ্বিতীয়ং " এই মহা বাক্য বিনিৰ্গত হয় নাই। हे सिया प्रिया का वाहा विषय हो एक छालि निद्रस क বিয়া একমেবাদ্বিভীয়ং সভা পুরুষকে স্বীয় আত্মাতে (मृश्वाद **উপদেশ উপনিষদেই প্রাপ্ত হও**য়া যায়। 'প্রাঞ্ ধানি বাতৃণং স্বয়ন্ত্রমাৎ পরাঙ্পশাতি नाखद्राञ्चन । कन्छिक्कीदः क्षणः शाकानरेमकना इंख ह-कृतगुरु इभिक्षन्"। (कटोशनियर) वीहर्तिसार्वान-ণকে ঈশ্বর অত্প বলই দিয়াছেন,এই হেড় ভাহাবা বৃত্তিবিষ্ণাই দেখিতে পায়, অন্তরাস্মাকে দেখিতে शाम न।। এक करे। एक एवं ठक्कू व्यक्त करार मिट्य, ভাইারও বল অস্প, বে হেডু সে অন্তর সাকে দে-থিতে পায় না। কোন কোন ধীর আর্ভ চকু হুইয়া, বৃহিধিনয় হুইতে ইন্দ্রিয়দিগকে প্রতিনির্ভ করিয়া, এব ৷ অমৃতদ্ধক ইচ্ছা কবিয়া,দকল আয়াব অন্তরাত্মা যে অধিতীয় প্রভাগাত্ম। উটোকে দে-থেন। যাঁছাল বাহা বিষয় ছইছে উল্লেয়দিগকে প্রতি-নিত্বত করিয়া আনাকে দেখিতে অভাস করে ন নাই, ভাঁছার। বলেন বে নিরাকার পারমে-ধবংক দি প্রকারে ভাবিব। তাঁগাদের প্রতিভো बिदाकात फाविवात **উপদেশ नग**; উচ্চার। স্বীয় আয়াকে ভারুন, জানিবেন যে সেনিরাকার। ष्या अत्यात काहे, त निष्क निद्रम्य हर्षेष् নাবয়ব সমুদয় বস্থ প্রকাশ করিভেছে। পর্বছ, প্রতি স্থান আকাশকৈ আগ্রয় করিয়া আছে, ভিল ভিল সম'ন আকাশকৈ অবলগন করিয়া আছে। যদি সেই ভিলকে দশ ভাগ কর, সেই দশম ভাগেরও আপার ভক্ত টুকু আকাশ চাই। কিন্দু আয়ার সহিত কিছু মাত্র আকাশের সম্বন্ধ নাই: সে অণুনহে, সে এও নহে সে দি'ছ নহে। এই বলিয়া আছা। কি বস্তু নয় ? আছা। জড় বিবয় **২টাতে মহত্র বস** ৷ আত্মা চেতন বস্তু, ভাহার সংস্থাৰ এই জড শ্বীর সন্দেষ্টৰ হইয়াছে। যথন শরীরের অন্তরে শরীর ইউতে ভিন্ন করিয়া আত্মা-কে ভাবিতে পারিলে, তথনই নিরাকার ভাবিতে পরের। বৃহি,রিন্দ্যের দ্বারা বাহিরে নিরাকার ल विरक्त कारण भूगा कि शिद्धा योशे तो विद्राह বিষয়েতেই আসন্ত পাকে, ভাহারা আকাশবিত वश्चरकरे वश्च वालगा कारमः स्व वश्च आकारण मारे, ভাহাকে গ'রও শরিকে পারে না। यদি নিরবয়ব হইল, ভাষাবদের নিকটে তবেই ভাষা অবস্ত হইল। মাজা,দর সংক্ষার অতেশনে, ভাহার। অচে-হণ করিছে পারে; कन्दक्हे (पृथ्य क्रष्ट(कडे কিন্তু ব্ছার চেতন আছে,১৮৪ চেড**নকে জানিতে** भौडि। एक ६ त. बलाक भारत बर्ध यात्र, मन 🐺 🚮

মনকে মনন ছরা বায়, জ্ঞান ছারা জ্ঞানকে জানা বার, আ্যা ছারাই জায়াকে জালুক করা বার্না মে, হস্ত ছারা জায়াকে জালুক করা বার্না মে, হস্ত ছারা জায়াকে দেখিতে হায়; কেইছা হইতে জার নির্কোধ কে আছে? এক বার জন্তরে খায় আয়াকে দেখ, দেখিবে যে দে বিজ্ঞানমন্ত্র। ভাহার আবার নাই, ভাহার জবয়ব নাই, ভাহার রূপ নাই; ভবে আছে কি? ভার জ্ঞান আছে, ভার জ্ঞাতি আছে, ভার ধর্মা আছে। এই আয়াত্তে আরোহণ করিয়া আরো ভাহার অঠবে প্রবিট হও, সেই নির্মাল নিরাকার জ্ঞান-জ্যোভি মিলন্স্রপ জনস্ত প্রস্কাকে দেখিতে পাইবে এবং জান্সর্বো উৎফল্ল হইয়া-প্রেমাশ্রুদ্ধ বিস্ক্রেন করিবে। খায় আয়াই প্রমাত্মাকে দর্শন করিবার সোপান-ভূমি। এই আয়াই প্রমাত্মাকে দর্শন করিবার সোপান-ভূমি। এই আয়াই প্রমাত্মাকে দর্শন করিবার সোপান-

سلم أمالي

কঠোপনিষ্দেৰ আখায়িকাতে আছে বে বাল্য ' কালে শ্রন্ধারিট নচিকেতার আায়-ক্রিফাসা উপ-ন্থিত হইথাছিল। মুত্রার পরে কি হয়, জিনি ভাষা সমুং মৃত্যুকেই জিজাস। কবিবার অবসর পাইয়াছি-লেন। শ্রদ্ধান, নচিকেন। পিতার সভ্য-পালনের। জনে। তিন রাজি অনাহাবে গম-ভবনে ছিলেন। সেই ভিন রাত্রি গারে যম প্রবাস কইতে গুকে আদিয়া দেখিলেন যে নম্যা অভিথি তিন বাতি ভাঁহার ভবনে উপবাদী রুগ্যাছেন। ভিনি আপনার এই দোষ অপন্যনের নি.মত্তে ভাঁচাকে ভাঁর ভুটি-সাধন ভিন্টি বর দিসার প্রাথনা করিলেন। নটি কেতা প্রথম বব এই চাহিলেন যে এই ভয়ক্ষর যম-ভবনে আগাতে আন র পিত' যে শোকাবিউ ও ব্যাকুলিত হইয়াচেন, ভাঁহার সেই শোক ও বাকুণভার উপাশন চউক--ভিনি শান্ত ও প্রেসল-মন। হউন। তিনি জিতীয় বরে ফর্গ সাপন যাগ-যক্ত-অনুষ্ঠানের প্রকরণ জানি বার অভিলাষ করি-लन। जुडीप बरत जिल्लाशीना कतिलन "स्वप्रश প্রেতে বিচিকিৎস। মনুষো অস্ত্রীত্যেকে নায়মন্তীতি চৈকে। এভবিদ্যান্ত্রণিউ প্রাহ° বরাণামেষবর-স্তু জীয়ঃ।'' ''প্ৰেজে মনুষো যা ইয়ং বিচি**কিংনা''** । মনুষ্য এ লোক ছইতে মৃত চইয়া **অবস্ভ হইলে** य এই मर मांग्र टरा। कि मर मांग्र ? ना, '' प्रास्त्री-ভোকে নায়মস্তীতি চৈকে" কেহ বলেন আত্মা थारकमः रकर वरमन थारकम् मा । "अक्रविमामसू-শিউস্বাহাহং '' আমি তোমা কর্ত্তুক অনুশিউ হইয়া ইহার সিদ্ধান্ত জানিজে চাই। " বর্ণামেশ-वब्रक्ष की शः " वद्वत्र मध्या कामात्र अहे कुकीय वद्र। ষম বালকের মুখে এমত কটিন প্রশাস ভ্রিয়া চমৎকৃত হইলেন। এ জিজ্ঞানা কত ভুর ভীছার অন্দের ভাব, তাহার গঢ় ভাষা-জ্ঞান স্থানিবার ম্বার देखां ७ जायकात्र वरेतारक कि जा, देश राजेका

कतियोत निर्मिष्ठं यम छाष्टारक विनिट्नम । अ स्कटेन-ब्रवानि विविधितिष्य भूता नांच सुविष्णप्रयः। ইহাজে দেবভারাও পূর্বে সংশগ্ন করিয়াছিলেন, हेहां भूविरक्षम् मन्न। ^{१६}व्यमार वत् महिर्क्टला इनीचे" तर मिटक्खः! जुनि अना वत श्रार्थना कत। এ বরের জনা আরু অনোকে অধিক উপরোধ করিও না। নচিকেতা বলিলেন। দেবভারাও ুইছাজে সংশয়যুক ছিলেন এবং ভূমিও বলিভেচ ইহা সুবিজের নয়; ভোমার নাায় এই সংশয়ের দিবান্ত-কর্তা এমন আচাগাই বা কোবায় পাইব, অব্যানবিদ্যার সমান আর বিদ্যাই বা কি আছে; অভএৰ আমাকে এই বর দিতেই হইবে। যম পু-নকার বলিবেন, " শতায়ুবঃ পুরপোতান র্ণীম " में जायू कि भिक्के भूक-(भोक-भकत धार्थना करा। ৰহুন্ পশূন্ হস্তিহিরণামধান্ " বহু পশু, হস্টী, চির্ণা, অশ্ব সকল অর্থনা কর। "ভূমেম হদায়ভন্ৎ ৰুণীয়া " নহদায়তন ভূনির প্রার্থী হও। " শ্বৰঞ कोत महरमा सार्वामण्डम" यन नःमद পृथिवीर न জীবিত থাকিতে ইচ্ছা কর,তত কাল জীবিত থাক। আমি যনের পদে থাকিতে তোমার মৃত্যু হইবে না। ছে নচিকেডঃ। মরণের পর আত্মার যে কি হয়, এ প্রেম ভ্যাণ কর। নচিকেছা এ সকল প্রলো-छन-वारका गुक्ष ना इहेगा अकृत महाङ्गप्तर नाम्न ন্দির হইয়া উত্তর করিলেন, "ন বিত্তেন ভর্ণনীয়ে। মনুষাঃ। হস্তীহিরণ অশ প্রভৃতি বিত ছার। মনুবা তৃপ্ত হয় না; প্রত্যুত যত বিস্ত লাভ হয়, ভত্ত লালসা ক্লিছে হয়। অভএর এ সকল আমি চাইনা। যখন ভেখেরে পহিত আমার বন্ধুত। হইয়াছে, তথন কোন্ল জায় ভূমি আর আমাকে মারিতে পারিবে; অর হিরণ। অশ্ব হস্তি সকল তো তোমার অনুগ্রহে পাইব ; কিন্তু এ সকল আ-নার প্রাথনার বিষয় নহে। মৃত্যুর পরে নলুবোর ষ্মাত্ম। থাকে কি না, ইহাই আমি ভোমার নিকট হইজে শিক্ষিত হইভে চাই। অভএৰ হে বন। আমাকে এই ভৃতীয় বর প্রদান কর, ও ভোমার অলীকার পালন কর। এই প্রকারে নচিকেড। बनटंक प्रतिशा बिगटलन, आण्या-विमा विलिट्डि स्टेटन। फथन येम खीठ हरेग्रा बनिवान । "हस्रा-**छत्रनाटक रहर रक्टन्ट्यनाटक रहर । छेटको** ट्ली न विकानीटलानाग्रंथ रहि न रनाटल।" रहा याम ছয়ন করিবার নিমিছে মনে করে, এবং হত বাজি ৰদি আপনাকে হত বলিয়া মনে করে ভবে ভাষারা उक्तर जायातक जात्म नाः ना वर जाया रनन फर्ड, ना धरे जाना एक रहा। निकासमू द्यमन व्यक्त, नामह रचमनि उक्त- "न हमारक हमामादन भंदीतां' भंदीत नक इंहरतं आवा नक इस ना। चनवन्गी खाटक वेशाव काव्युनि चाटक । धरमनः

ছिन्हरिं ने खाँनि रेमनः त्रदेखि नावकः। न रेहनर ক্লেময়ন্তাপোন শোষৰতি মাকতঃ।" ইছাকে তাত্ৰ চেদন করিতে পারেনা, ইহাকে অগ্নি দহন ক-রিতে পারে না, ইহাকে জল সটিত করিতে পারে না, এবং ইচাকে বায়ুও শুক করিতে পারে ना। এই आञा अध्यम, अमारा, अद्भगा, ष्याभाषाः अद्गीरतत विनात्य हेशह विनाण रह ন।। নিঃশাস বাযু যখন বাহিরের অনিল হইয়া যায়, এই শরীর ধধন ভাগ্নের সহিত ভালাক হয়, তথন আমা 'যথাকর্ম ঘণাঞ্জং'' পর-लाटकत मत्रन कान पर्या नहेता वहे पृथिती हहेएड প্রস্থান করে; ইগার উপরে মৃত্রুর অধিকার নাই। এই অকটো গদ্ভীর মার নিদ্ধান্ত পূব্ব কালের উপ-নিষদ্হইতে প্রাপ্ত হওয়া ধার। দেশ, এ সি**দ্রাস্** কেমন সভা। যথন মনু-স্মৃতি, রান'গুণ মহাভা-सड, भूदान, किंदू है डिल मा: उथन धरे उपमिषण ছিল। যদি বলা যায় যে উপনিষদ ভিন দক্ত বংসরের পুর্মে প্রকাশিত হটয়াছিল, তাহাতেও পুরিক্ত শাস্ত্রত পাওতেরা কোন সাপতি আ-নিতে পারেন ন।। এত পুরাতন কালে আত্ম-বিষয়ক এমন সার সিদ্ধান্ত এট মুবিস্তীণ ভারত বর্ষে आठलिक दिन। हैशास्त्र कि आर्क्टिया हरे**र ह**न्न न। ; ইহাতে कि आमात्रप्ति भूथ উচ্ছ त रहा न। १ এমত পুরাজন কালে জ্ঞান-ধর্মের এমন মহং কীর্ত্তি আর কোণাও নাই।

উপনিয়দে যেমন শবিংব হইতে পৃথক্করিয়া আত্মার-সক্রপ জানান হইয়াছে, এনন আর বেদেব कान अथान नाहै। किन्तु आन्ध्या कहे य शहु-लादकत काण्डिक, ७ श्रां लाएकर माधन, त्रापत প্রথম হইতে সংক্রিনতেই প্রাপ্ত হওয়া যায়। त्वम-विश्विष याच यटकत **अ हे**के पूर्वत जनः मन-बूक्षेत्र ७ भूग करणेव कल व स्थर्ग ब्लाक छ्यांखि, ইহাতে হতন পুরাজন সকল ক্ষমিদিশেরই বিশাস ছিল। বেদেব ক্ষিরা পর লোকের প্রতি কোন সংশয় আনেন নাই। তাঁহার। হৃদয়ের সহজ ধর্ম্ম-ভাবে প্রভাগ করিভেন যে ইহ লোকে পুণাানুষ্ঠা-নেব ফল পর লেকে প্রাপ্ত হইবেই চইবে। **উপ**-নিষদের সময়ে জ্ঞানের অ'বেচিনা আরম্ভ ইয়া এই দার্ভাবিক আত্ম-প্রভাবের উপর সংশয় উপ-ন্তিত হইল। ভথন উপনিষদের ঋষিরা সহ**জ** জ্ঞানের আলোকে নিঃসংশয় হইরা এই আছা-প্রভায়কে আরে। চূড়তর করিলেন। " পুলোন পুণাং লোকং নয়তি পাপেন পাপুং।" (প্রেছা-পনিষদ্) পুণা ছারা পুণা লোকে গভি হয়, পাশ षांत्रा भाग काटक ।

বৰ্ণন অনাঝা হইতে আগ্লাতক, দেহ হইতে দেহীকে; পূৰ্ণক করিলা আনা ব্য়; তথন আগ্ল

কি জানা যায় ? তথন আর এই জানা বায়, বে শরীরের বিনাশে আত্মার বিনাশ হয় না; যে হেড উত্য পৃথক বস্তু। আরু কি জানা যায়? না, মূব্য চল্লে এহ নক্ষম সমুদয় বাহা বস্তু হইতে জাতা। উৎকৃষ্ট; যে হেডু আত্মার দ্বারাই সমুদয় বাহা জগৎ প্রকাশ পায়। আর কি জানা যায়? না, আন্ধা অমৃতের নিকেতন, অমৃত পুরুষ ঈশবের আবাস স্থান; জীবাভার অন্তরেই পর্মাজ। রহিয়াচেন, ভাহা হইতে কীবালা অভি অপ্যান্তরও নাই; ে হেতু উাহারদের মধো আকাশেরও ব্যবশান নাই। আবে কি জানা ধায় ? না, জাতা। ঈশবকে অবল্বন কবিয়াই স্থিতি করিছেছে। ''এয়হি দ্রেউ। ম্পুট' ভাতারশ্যিত। মস্তাবোদ্ধাক্তাবিজ্ঞানামা পুরুষ:। সপার অক্রে আআনি সম্প্রিষ্ঠতে।" (প্রশ্নোপনিষদ্) এই বিজ্ঞানাত্র। পুরুষ এটা স্পৃতি। প্রান্ডা রগায়ত। মন্তা বোদ্ধা ও কর্ত্তা, টান অক্ষয় প্রমাত্মানে সম্প্রিষ্ঠিত হইয়া আছেন। আর্থী। দ্রুটা, চকু দেখে।); আক্রা **চকুর ছারা** দুর্ন করে। আখাই শ্রেভা, আয়াই প্রান্থ। আখাই র্দেব ভোজা। থাছাবই শক্তি মন আঞারই শাঞ্জ বৃদ্ধি, আখাই মনোবৃদ্ধি দ্বাব। বিষয়ের আ-লোচন। করে। এই পরিমিত বিজ্ঞানীয়া কোথায প্রভিত্তিত আছে? "দপবে অকরে আয়নি দ° প্রেশি সূত্র ্রেট অংক্ষয় প্রমুখ,তে সং-लिक्टिंग काइका दिया, अथारन अदकरादत छुदे আ্থাৰ কথা এক নিশ্বাদে দলা ইইমাডে। যে সভোৱ জনো এল শাস্ত্র আক্রেদালিভ ক্ষাচ্ছে ভাহে, এক কথায় ব্লাছে। এমত গদ্ধীর সভাকে। भे कि श क देश जारण व भरता छोत्र जिल्लि गरम है দোখতে পাই। এই লোকে আমার বিশেষণে কনা শব্দ আছে। আ,আকে কৰ্দ্ৰা বহিষা না কানলে মহাভাষ পালিভ উইমে হয়। চলুকুৰ্ব্য सरकट नाग ध्विरकाष्ट्र, शक्ष शकी, त्वारक खरा সাথ স্থায় প্রাব্ধ রবে চলিভেছে। মনুখাই কেব্স । े। '० कर्ब-राल कथान। धर्माश्रीम हैक्रांक निरमान कात्रमा छम्रक इटेटक्टफ, कथरना व्यवस्त्र ানে , নিয়া বিশহে প্রভিত্তেতে। আত্মার কর্ত্ত य कार एक जाकात कर्तना कर्या भर्या क्रेसाटक। মান্ত ভুটা পশ্চ পশ্চীর নায় প্রকৃতির নিয়নে दक र नाष्ट्र: स्त्र धरमात विगरम वनीयान वह-१८८४, वेशक इष्टेश छेदकुक्त क्षारतातक स्रोहेनात अभिनात शाहिए। एक, अवः मुक्कित् माशास्म मिम ান মালের হল ক একেছে। প্রকৃতিকে, পারুত্তিকে, পণানলে অভিজন করিতে পারে বলিয়াই কবিয়ায়া पुरुष महरू उंक कहेगाएक। धार्मिक निश्वार्थ सी-ীন প্রবেষর আত্মা সাক্ষাৎ পরমাকার একটি ক্ষুদ্র প্রতিকৃতি।

্বাহার অনত দবরে মগ্ল হইয়া আপনার কর্ত্বকে জেতাহার সহিত আপনাকে হারাইয়া क्लानन, ভाँशत्रां कर्डवा धर्माटक खूलिया निया व-निष्ड थारकन, " किभिष्टन् कमा कामाग्र मंत्रीत्रमयू-मर्बादर।" (ब्रमाय्रगादमार्थनियम्) कि देखा করিয়া আর কাহার নিমিত্তে শরীরকে দক্ষ করি। ভাঁহারা সংসারের কুশলের জন্য পরিপ্রম ক্রিডে ঢাহেন না। ভাঁহার। কর্ত্তব্য কর্মের অনুষ্ঠানে বিরক্ত থাকেন, ভাঁহার। ঈশ্বরের প্রিয় কার্য। সাধুদে खेरमाठी दम न।। **डाँ**हातदमत कीवन नीवर्म **स्क** ভকর নায়ে কোন ফল প্রদান করে না। ভাঁছারী ইহা অবগত নহেন্ধে ঈশ্বর আপনার **অনস্ত** মঙ্গল ভাবে আমারদিগকে যে দেখিতে দেন সে ইহারই জন্যে যে আমবা ভাঁহার দেই পবিত্র নঙ্গল ভারতে আদেশ করি, ও নংসাবের শভ কার্যো ভাহার অনুক্রম কবি। যদি উহাব সুন্দ্র মঙ্গল ভাব দেখিয়াও সানারদের কার্যো ভাচরে অনুকর্ণ না করিলান, ভবে ভাষা দে৷খবার ফল কি ? ব্রাহ্মপর্যা বলেন, আমারে পর্যা-ছার কদ্ধ করিলে কথনো ভাহাৰ উল্লি হলবে না, "মভালি প্ৰদদ্দ-ভবাং धर्माप्त अमि उतार कुललाग आमा प्रतार।" সভা হইতে বিজ্ঞিল হইবেক না, ধন্ম হং ছে বিজিত্ন हरेरवक मा, ७७ कम्बा इनेटच विक्रिश इनेटवक मा। ফান-আলোকে আলাকে উদ্ধান করিয়া সেই मना-त्रकारक जानस-त्रकारक भित्र, की जि-जाद ভাগতে আন্ত করিয়া মেই মম্বল সকপকে পুকা कद अव धर्मा वटल नानारक बलीय न् कहिया स्म ह ধর্মাবহ পাবত্র ধরপকে অনুকরণ কর প্রতিক্ষণেই जन्मानन भूतकात रहेल। जन्मभरर्यात बहे आरमन ।

DFFENCE OF BRAHMOISM, AND THE BRAHMO SOMAL

-- 120, 10

GENTLEMEN - You are aware that a warm controvers; has been rage in for some years past between some Christian Missionarus, and the leaders of the Calcutta Braim Samaj about the truth of Brahmoism. The battle is growing thicker day by day, and, it common incrour speak anglit, mightier combatants than those that have already appeared on the field, we goding their loins for the light, evidently think he Brah ecism to be no ordinary toe. The horson regioning derker and darker and greater fulumations and thunderings are expected. to take place but without however, it may be safely guessed, the useful complement of showers refreshing to those she that after truth.

According to one view of the controversy, Gentle- , men it cannot but gueve us, Brahmos, behevers in catholic reignon, as we are, to mark the bitterness of feeling that has been created by if between the Christian and the Brahmo, who both believe that the essence of religion is love "love to God".

Being a lecture delivered at the Midnapore Brahme

明人 "妈妈妈去做我的情况。"

and love to man," and who are sons of the common Father with whom "verily there is no regard of persons, but in every nation he that worketh righteousness and feareth him is accepted" But in another view we cannot but be glad at the present discussion, for it is certain that our religion will come out brighter and stronger from the fiery ordeal, convincing men of its internal strength, and leading them to a clear recognition of "the light that light-eth every man that cometh into the world," but which is obstructed to our view by the mist of prejudice and passion.

It is my intention to offer, this evening, with reference to this controversy, some remarks on Intuiton, and the guiding principles of the Brahmo maj, in vindication of our religion and its principal followers, avoiding as much as possible the

odium theologicum.

It shall be my endeavour in this lecture to keep always prominently in my view the principle, that among all religious denominations, the meck followers of the catholic religion, for Brahmoism is essentially the catholic religion, should exhibit in their own persons conspicuous examples of nligious toleration and love, never indulging in sarcasm instead of argument, and in vitaperation in-stead of fan reasonage, in ver sacrificing condor tor the sake of more leveliness. My remarks will not a have reference to the arguments contained in at single lecture of a single Christian Missionary but to the arguments, advinced by Christian Missionsaries in general in this country against Brahmo sic-

The Christian Missionaries who attack the Braham Soma, say that Infuntion is resufficient to tive as a clear idea of god. I would serow b these reverend gootles on to consider that resolution always presupposes a being that reveas the good rest of that being, his midlibility and holiness, or else what he says cannot be b hered in Non the infallibility and the perfect betties, of God necessarily noply his other perfections. A 1936lation is not at all possible wiless a Perfect Bong exists

Now if we are able to knew so much clearly and disfinetly I say, without a velation what i the necessity of it? Cannot all the other form, of religion, the most important for our salvation be deduced from the above? Has God andle a natural provision for the gratification of every one of our natural wants and not for that of the greatest necessity of human nature, thurst after religion.

knowledge?

Is not belief in God hunself, our Creator, Comforter, and Rodeomer, whose sweetness should perfune our whole hite, and the beauty of whose holiness should ever be present before the eve of the mind, as light that clasps heaven and earth in its levely embrace is before that of the body-1 ask, is not a belief in Him only quite sufficient for salvation without a belief in a Mediator i Is the assistance of a third party required for a son to go to his father? Is every man who loves tied with all his heart and strength and who loves his neighbour as himself, but who, from conscientions scruples, cannot believe in Christianity to be reasted in eternal hell fire? If that be not the case why then insist so much on the acceptance of a book revelation as necessary for salvation? Granted that a book revelation exists, what is its test? It cannot be any other thing than Intuition. Its test can neither be the miracles, which the apostles of Christ themselves said every false prophet coming in the name of Christ could work, ner prophecies conched in the most enignatical language, and

The state of

admitting of a thousand different interpretations, but the heart of man on whose fleshly tablets God has written the only true revelation. if a voice from the heavens cry out: "()h man! lie! steal! bear false-witness! for lying, stealing, and bearing fulse-witness we the true road to salvation', could we believe in such a voice? Certainly not. Why could we not believe in it? Because its utterances would not agree with those of our own hearts,

It is plain therefore that "Intuition is our receiation and likewise the evidence of that reve-lation" The Brahmos cannot believe in any other revelation than what is contained in "The elder Scripture wit with God's own hand Scripture authentic, uncorrupt by man"

Christian Missionnes assert that it is evident that Intantian does not give us a clear idea of God because digrading notions of him are found to prevail among the nations of the earth. It cannot but be admitted that such degrading notions exist among mankind, but what is the cause? The intuitin about God is that there is a Perfort Mind in whom we entirely lepted but then different nations have get different ideas of perfeetien. Rule nation, believe true open ness to conses in power only As they are more struck by the sight or coll than that of good they consaler if a greater man festation of power to de evil than good. Hence some nations believe the Dorty to be of an exit nature, as did the ancient dews, who thought God to be a jealous and revenered god. Rude nations consider such culers as are s'on ray cruel, as greater than those who are not so but as there ideas of perfective improve with then palgment they belove true greatures to he in power regulated by patter and meres

The law of morress oppose to religion as to once though Is not prior as to be perceived in the source writing of the thir times don't was it not a great transition from the Flohina I Mosos to the Golf of the New T stament . " A change piece ore, the dearsh religion from less to live. home power to or our, ficulties potice a chad to the miny of Gol, won the nation of a meterde it is me the verito another those the contation critic sins of the latter up of the checken, to there is said shall be a its own darping from the air the cortice and the cortic to the still

Small voice

except ments cand on that it was Of re- who has recall borned actions of religion to manhand a decate they did not possess them been his commander. You this is a statement marsh tother all history

I would be samend, Gentlemen to your attention pers of the Intellectual Sestem of the Universe by off It. Colworth, whose borral Christianity do receive goutlemen in question would do well to mut to This book contains minimerable paret of the existence of correct norms of the gotto id prevailing among the accient Greeks and

The Apostics and the Fathers of the early Christian Church w ro more liberal in their acknowledgemuch of the ments of the so-called heathens in this respect than our present Christians. Every one who has read the New Testament must recollect the often coted celebrated saying of St. Paul " The wrath of God is revealed from beaven against all ungodiness and unrighteousness of men whe hold the truth in unrighteousness; because tha which may be known of God, manifested in them for God hath showed it unto _m. For the invis

thle things of him from the creation of the world are elady seen, being understood by the things that are made, even his eternal power and godherd, so that they are without excuse; because that when they knev God they gloritied has not as God neithe were thankful; "but became vain in their imagination and their foolish hearts were darkened

Now from the expressions "Ged hath showed it unt them", "clearly seen", and especially "they are without evense", it is plain that the apostle behaved that the light of nature was quite sufficient to give man a correct knowledge of God Instead of flinking with our modern Christians that the to them did not possess correct knowledge of tood, the said apostle did not think it beneath him to horrow a line from the Greek just Aratus "in him we live and move and have our being" and another from the Dramatist Mensuder, " cvil communications corrupt good manners One of the leithers of the early church called Socrate: St Speriers on account of his noble life and still nobler death. Another was so struck with the beautiful religions and moral sayings tound in Greek authors that he said that a man might judge either the ones of Christians were philosophers or the old pur to, others me Christians

Turon & from the one branch of the Aryan manufestation of the religious sentiment the field enic to the other the Indian, (there have been bat two great manifestations of the religious sentiment in the world, that is the Arvar and the Shenath, I would recommend to the religious inquirer the perusat of the compilation named Briling Dharma published by the Calentia Samay many years ago To ontains religious sayings selected from the Show on sometimely simple with so replete with or one to and beauty as to justify the assertion of Worker Schlegel. It cannot be desired that the early Indians possessed knowledge of the true field All then entings are replete with scatiments and uspessions noble clear, seconds grand, as deeply conceived and reverentially expressed as 19 any human language in which men have spoken of their God ! The Brahmo Dharioa also contains beauuful moral precepts rivaling in excellence any found in the Scriptures of other nations

Our reverend friends lay great stress on the point the it was the Bible that brought life and immor talify to light. If that be the case. Why is the Lead in a future existence, and the distribution of the rewards and purishments so prevalent among mere it more thristian mations? Why are there such penetrial descriptions of the destination of the manan out found in their religious Scriptures? This leads us to believe that the immortality of the beman soul is as much an intuitive belief as ention is which we call "I", from the body and in a projections of the distinctness of the principle mam asurable superiority to the latter. behild to future existence afterwards gains ample construction from the moral attributes of God which require a just distribution of rewards and prinsum ts not witnessed in this life. Now believthe in an intuitive truth is one thing, and giving and monstration of it to others, another. People may often fad in the latter, the they cannot ignore the bolich as was the case with the Grecian philose vice Plato.

ingual demonostrations of the immortality of the soul oven in modern times are more estisfachave than those given in ancient times because the Sorree of theology improves with time just as other sciences, while the primary intuitions upon

which the science of theology is based are the

same in all ages and countries,
Some of our reverend friends account for the noble and beautiful sentiments met with in the so-called heathen writers about God, immortality of the soul and the moral duties of man by the theory that they are derived from a primeval revelation. Now this theory rests only on the authority of the Bible. As the Lectures of our reverend friends against Brahmoism are intended to edify the educated natives, most of whom do not believe in any revelation at all to hazard an a sertion on the authority of the Bible is as ab! surd as for an orthodox Hindon to attempt to convince a Christian of the correctness of his opimore by eating in corroboration of them the thority of the Bhagavat Poorana, or Choitanya Choritane ita.

Our Christian friends maintain that the Gespel has revealed the time plan of redomption for our suns It will be going beyond my limits it f discuss the question how far the opinions entertained by modern Christians on the subject agree with the Christianicy of Christor even apostolical Christrainty, but suffice it to say that two e catertained or if by those whom our chirteen friends call heathens, (I beg to be pardoned as them for stating the simple truth) are superior to their own The idea entertained of God by our Christian friends is that of an oriental despot who while panishing a criminal, look, more to his outraged how ir than to the good of the state or the amendnent of that eriminal. The opinica that God parishes exactly in the same way as a human goveraor dies who is not satisfied with only the repentimes of a cranmal or that punishment in the sense in which it is taken by mea is as much necessary in the divine actions of government as in the lemmas is arthropomorabitie. Art not the pings of remoraes different punishment for our sins? If remove do not take place in the heart of a baidened sinner in this world, is it improbable that it may be awakened as his mind in a future state when his religious and moral susceptibilities along with his other laculties would be more improved than now? Will not then his own heart hea hell to him realizing the following description of Satan by the great author of Paradise Lost

. For within him beil He brings and round about form, nor from hell One step, no more than from bimself, can the By change of place !

Our reverend friend, if they impartially consider the subject will find it more consonant to the infinite goodness of God to believe that he punishes the summer is a father door his child in order. to amend his conduct and not as a ecalous revengeful eastern treant to vindicate his own outraged honor. Our reverend friends maintain that not a single religious or moral truth has been discovered since the tome of Christ. Why since the Christ? We may say since the creation of man, for religious and moral truths are as old as the human race, although their purification, which may be compared to that of a valuable metal from its state of rude ore and the discovery of the several modes of demonstrating them are more recent as they are the work of time. If no new religious of moral truth has been discovered since the time of Christ, another sort of discovery has been made that is that of the erroneousness of some of the beliefs of Christ, such as those in the propriety of sections in the existence of downs, and the efficacy of exerrism and in the occurrence of the universal discolution in his own generation,

Among those beliefs, I desire to dwell a little on the first of them, that is his belief in the propriety of leading an ascetical mode of life. Christ, though perhaps the greatest religious genius the world has ever seen, was still an ascetic. Tike those commonly met with in Asiatic countries. His not recognizing his mother when others pointed her out to him and his enjoining his disciples not to care for tomorrow's feed or raimont; it short the gener I mode of life which he led, followed afterwards by his disciples proves that he was an ascetic. Now this asceticem has been relaxed in Protestant countries although it exists in its integrity in Roman Catholic countries which after in this respect more christian than the

former.

Christian missionaries remark the diversity of opinions prevailing among the Prahmos. The same right be remarked of Christians by Brahmos. The Brahmos, however have this superiority over the followers of exclusive religions that although an individual may have difference of opinion with the Somaj on minor points, he is reckoned a Brahmo if he agrees tressent is "Unity in essentials, variety in nonescentials and toleration in all" might be predicated with greater correctness of the Brahmos.

than of Christians

After attempting to refute the arguments generally advanced by Christian massionane, against Brahmoism, I now proceed to vindicate the Samaj from the charge of vicellation which our reverend friends have brought against it. They say that the Samaj has passe t through three different stages of religious opinion, namely those of Vedantism Rationalism, and Interionalism. This statement is not correct.

It must be frankly admitted that minor changes have taken place in the religious opinious of the Samaj but not in essential. A belief independently of an external revelation in the One True God, One only without a Second' the creator and the preserver of all, in the immortality of the soul and the existence of the noral law, in the distribution of future rewards and punishments and in the paramount necessity of worshipping God with love and learning a pure and blameless life has been the distinguishing characteristic of the Somaj from the time of Ram Mohun Roy to the present. It has never believed in a written revelation except so far as it is consonant to reason.

Ram Mohun Roy cited the authority of the Vedas while writing against popular Hinduism, that of the Bible while disproving the doctrine of the Trinity and that of the Koran while attacking the absurdate. of Mahommedanism as in the Persian work "Towfatal Mohaedin" but ne was neither a Hindu nor a Mahommedan nor a Christian in his religious opinions. His biographer in the "Calcutta Review" says on the authority of his immediate disciples that before he departed to Europe he told them that after his death the Hindoos will contend that he was a Vedantist, the Christians that he was a Unitarian Christian and the Mahommedans that he was a Mahommedan but he really belonged to no existing religious denomination in the world. The Cathelicity of Ram Mohan Boy wore a triple aspect; that of Vedantism towards the Hindoos, that of Unitarianism towards Trivitarian Christians and a still pures form towards the Mahommedans in whose case he had not to contest with the doctrines of Multiplicity or Trinity. In the case of the Hindoos and Trinitarian Christians In the case of the minds and artificial to remove first from their minds the belief in many gods or three gods by attacking is with their own weapons than to preach pure theirn to them.

The essential catholicity of the religious opinions of Ram Mohun Roy plainly manifested itself in a theoretical form in the "Towfatal Mohaedin" which by the bye was his earliest work and a very small pamphlet published by him in English, hearing the remarkable title of "Universal Religion" and in a practical form in the primitive constitution of the Calcutta Somaj In the Trust Deed of the Somaj building it is stated that it is to be used as a place of public meeting of all sorts and descriptions of people without distinction for the worship of the Author of the Universe but not "under or by any other name peculiarly applied to any particular being or beings by any men or set of men what-ever". The sermon to be preached and the hymns to be sung therein "should have a tendency to the strengthening the bond of union between men of all religious persuasions or creeds" It is said that, in accordance to this principle, in the very infancy of the Sanaj Eura ian boys used to sing Psalins of David in English and Hindu musicians religious songs composed by Ram Mohun Roy and has friends in Bengah

But Ram Mohin Roy was soon after obliged to give a more Hindu aspect to the Somai for the propagation of the doctrine of the unity of Gal among his countrymen and that to such a degree that the Vedas which were now pronounced by into to be the chief guide of his followers in matters of religion were read in an adjoining room accessible only to Brahimias before public worship was held in the Samaj Hall and gifts were distributed to them on two or three successive Samaj anniversaries.

It is however plain that Ram Mohan Roy did not consider the Ved is to be inspired compositions because while he acknowledged the Vodas to be inspired he in the same breath admitted the Christian Scriptures also to be inspired. His idea of inspiration was not that of a micieulous process confined to any single ago or nation but a gift coextensive with the human race. In the sense in which he acknowledged the Vedes and Ciristian Scriptures to be paymed, he adoutted even cortain portions of the Poorans and the tant as to be inspired. In his preface to his Bengali translation of the Ishopanishut, he says "Are not the Poorans and the Tintias Sha trus? They ar. Shastras because they also proclain the unity of God" his opinion then, those pertions only of the Poorans and the Tantras p seesed Sunscrit natherity which proclaimed the unity of God It is still more carrons to relate that he held the works of the celebrated Persian part Jelalorddeen Roomee, called by way of emisence the Moulana, to be inspired in the same some as the Vedanta His biographer in the Calcutta Review says that he once expressed his intention to retire in his old ago from worldly life and devote him elf to the study of the Vedanta and Mesnavi, the great work of the said Moulans. It is evident therefore that Ram Mohun Roy's idea of inspiration was that of a process of spiritual illumnation and cestasy shared by all the members of the human race in more or less degree.

The intelligent portion of the immediate disciples of Ram Mohun Roy did not mistake the sense in which he called the Vedas a revelation. They partook of his eclectic spirit, quoted with almost as much enthusiasm a precept from the Tantras as one from the Vedas—a robase from a Scofee poet on the agreement between all religions as a sloke from the Bhagavat Gueta, and spoke with rapture (I state from personal observation) of the religion of themselves and their great teacher as being that

of the wave of all ages and countries, as being in fact the universal religion

After the death of Ram Mohun Roy, the catholic character of the Somaj was not destroyed. Even while its leaders admitted the Vedas to be a revelation, they did so solely on account of the "reasonall bress and togency of their doctrines" as compared with the other Shasters of the Hindus and the religious Scriptures of other nations. They rejected the idea of a revolation supported by external exidence. "The only ground," they said, " on which the truth of any system of behelf can be maintained is that founded on the nature of the doctrines inculcated by it" "If the doctrine of theology and the principles of morality thegat in the sweed volumes refered to appear to be consonant to the diebates of sound reason at 1 visilom --il bliese tenets and pecepts cury the uningrea habit character of truth or them- the man who has recoved them e of continues to place his crust in them will have o casen to fear the vilupe alive sammes of un-godliness in respect to his i ligion? (Vide Vedan-tic Doctines Violanded) The letter of Balm Debrudro Nath Torone published on the Englishman in October 1846 species of his religion as one who e-principle are echoica to by the dictates of that of nature and of human reason and human hear, and by the consequence missest of all ages and countries." The Previous M. Mullens, at his Essay on Velantien Bedinnen and Constanty says "Though the Britain's claim the Velis as a revelation of divine to the they look place ity upon the works of Vite eas non reasons reached From nature to y layed in the null because the Vela-(as they assert carrie vine nature therefore they regard (new as espired). He quetes in support of the bove assert of the I dlowing passage from the * Vedinas Doet n - Vindica (* * " The knowledge die die nei'r some's or orspiration deals with ttered test's check require to other proof than what the whole creation and the rand of man to perverted by tallers a reasonings will aid in above lineon It is thereting evident that the leading of the Samaj at the considered the Vedas to be s venled solely a recount of the reasonableness and exceep of the executives. Their error lay in behoving that wherever they contained was reasonable and cogent. As soon as they perceived then mistake affer a wider study or the Vedas, they shook it off BI or e Now why did they do so so eas ly? The resens that a higher standard of belief had always predomnated in their minds as shown by the at the intracts from their publications over that of winds a regulation, that is the standard of reason and are in a attack men they could not continue protesso har be a revelation which was found to ed as come

it some still holds that only those doctrines and a control of a constant holds that are reasonable in a constant of a constant that are reasonable in a constant of all truth. The present member of the contain of all truth. The present member of the control of the doctrine of the tree of reason in its intuitive and as in a lorent constants its sole claim to our better that intuition type the groundwork, and reasonable to so the superstantine of religion. As all trees to the superstantine of religion. As all trees to the superstantine of religion of reasoning the determination of religion, truth, its recognition of min tron cannot be reckoned as an organication of principle but as rather a development of the processive entertained.

Yea see then, Gentlemen that a belief in the most truths of religion independently of an external

revelation and on the principle that the reasonableness of sedoctrine is the only test of its truth has been the chief characteristic of the religious opinions of the Samaj from the time of Ram Mohun Rov to the present. There . also another feature of the Samaj which it has not just from its first establishment to the present time. I mean its Hindoo aspect as far as such aspect can be maintained in conformity with the principles of true religion. The service of the Samaj contains extracts from the Sha-tras, books held in veneration by the people of India from ancient times In discussion with orthodox Hindoos, Slokas are cited from them by the Brahmos in corrobonation of their opinions. This practice has been adopted by some Christian misstonaries also, giving a greater right to the Brahmoe to its observance. The Brahmo Dharma Grantha or the manual of Brahmic faith consists of selections from the Shastras The same process of selection and retormation but not of extirpation is nowa-days being also applied by the Brahmos to the ritual and custom of Bengal Wnatever in them. is not opposed to the true religion and to right reason is being kept and whatever is so is being rejected The Brainnor council he blamed for displaying a certain degree of conservation in the work of reformation. For in tance what would an Eughsh Theist have done in a similar case? Would be have at once rejected the whole Busic and the whole of the old corem at all and customs. Certainly not "The natural result of the pight of private judgment is to come sestimate Christianity into philosophy a principle of the energy pleable to all religious to purify and to sportualize, by which the Jew ap, plying it to his Birth the Hindoo to his Shastarthe Greak to his Place, the modern European ot the New Testement the Millenamedan to the Iverao and so to the markind neight gradually become wore unred in a histherly celectic feeling of piety and the sence, to qually allowing variety of customs, and ensenting out of former creeds to beject the weeds and kep the flowers'" Although Brahmost, is the purest form of Hinduisia and althothe burry has a Hindu aspect which it would be a sale that step to destroy, its memoers, as becomes the followers of universal religion, are not backward to acknowledge then obligations to other religious than Hinduism, especially Christianity to which they are

more indebted than to any other of those religions. The essential features of the Samaj have remained unaltered from the time of Ram Moleun Roy to the present but it has not however remained still since his death without making progress. The catholic religron is essentially of an expansive character. One of its leading doctrines is that religion like other things is subject to the law of progress and that the religious ideas of man develop, expand and purify themselves with time The Sama, therefore profes-sing as it does the eatholic religion would have belied its character had it remained stereotyped on the Vodantic plate of Ram Mohun Roy and not made any progress since his time when its religious opimons adoutted of progress The progress which the Samaj has made since the time of that reformer has been both of a negative and positive character. The negative progress lies in its abandoning its behef that whatever is contained in the Vedas, is reaconable. The positive progress consists in the clearer and fuller recognition than before of intuition as the foundation of natural religion. I use the expression "clearer and faller recognition, than before's because such recognition is not of a vary recent date us has been asserted to be. The Brahmo Dharma published about densisen reservations

has the expression arts of the taken from the Mandookya Oopanishad of the Athana Veds, meaning that the proof of the existence of God is intuition only If any one tun over the file of the Tattwabedrince Patrika for Sakabda 1776, he will find an article headed the thirty fram in which it is distinctly stated that our belief in the fundamental truths of religious is of an intuitive character. In some other articles published about that period, intuition was stated to be the primary basis of re-

The progress of Brahmotsm will ever keep pace with the age. The latter can never outgrow our When I was science springs up, the memreligion ner of A Same denot require to take the infinite pain which the follows of other religions take on tart and with the creed the profess men, and that instead of there being a natural many to the year religion on the one hand and and second on the other, the latter exercises . . It's willowned upon the former in refining and , what if With regard to the relation between science and religion, the Samai echoes the following senting it of an English writer True science and true religion are twin-sisters and the separation of either from the other soure to prove the death of both. Science pro pers exactly in proportion, as it is religious and religion flourishes in exact proportion to the scientific lepth and firmness of its bass'. With regard to the relation between philosephy and religion, the members of the Samar "The mangaration of eclectic philosophy is an edy a fact in the plid so head world and serves to respire us with the board that sale by side with cities rephilosophy will reign eath the religion that natural beligion and natural psychology, will triumphantly use in harmony from the emiliets of contending sects." In conclouity with such views, the Samaj has always gladly admitted secentific and philosophical articles into the columns of the Tattwabodhinee Pattrika. In short the opinions of the Samajon this point can be thus summed up that there is no disagreement between Common Sense and Philosophy, between Reason And Revelation, between Theology and Science but that each has its own prescribed functions which must be preceted by those of the other in the building up of the grand edition of Theism.

Brahmo brethren who are present in this Hall, I have a word to tell you before I conclude. Con troversy with the followers of other religious we cannot avoid both for purposes of self vindication as of conversion but let us set an example to them in what spirit religious controversy is to be conducted Appealing to those sentiments which every religion has in common with Brahmoism for Brahmoism is the universal religion, we should try to wean the followers of other religious from their errors and prejudices in the spirit of charity and love, for we are children of the one common father. Let us recollect the remarkable words of the great founder of our religion "strengthening the bonds of union between men of all religious per uasion and orceds." Let us not lose our temper at the time of discussion. Let us not indulge in sarcasm instead of fair argumentation for sareasm but ill befits the most momentous of all subjects, religion. Let us not sacrifice candour at the alter of liveliness. Let us not for the sake of appearing amount loss sight of the duby of behaving fairly towarde the followers of other religious for

I see some of us are very fond of religious controversy but let us not give way to an over-fundament a religious being. Let us pay more attention to our own religious and moral improvement and that of our country than to how we will best acquit ourselves in religious controversy. Let us always cherish in our minds a lively consciousness of the Divine presence Let us in all our actions keep Him before our minds' eye as "an abiding presence not to be put by." While we are engaged in the duties of a worldly life, let us remember were in the presence of a Task-master whom we cannot deceive though we can deseive our earthly task-When we indulge in harmless pleasures and amasements, let us think of Hun as a father who is observing the mirth of his children. When wa are holding a great religious festival let us consider Him as at once its spectator and object. When we hold a meeting for any other purpose conneeted wish religion than we dup, let us consider Him as its great president. When so worship Him in the Samay He'll blons adore. Hen as the living When reworship Him densy of the tempte. Let us in ail our thoughts words and deed keep Him below us

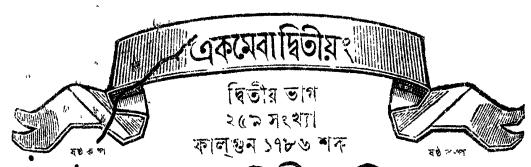
Let us be pure and body in our lives show to the dolater that me religion is a dividend religion, a religion only to a talked or and not acted up to . In this in do shor hees for our religion. and thereby show our eventry men that we love it with all our minds, all our heart, and all our strength, then will they think that Brahmorsmas something and that it is not to be made light of Thet us think more of our country's than of our own interests. Let us direct our chief attention to the edication and social in provenient of our voices for it one half of our population by poduliness how can the other i, ilt prosper thet us he always up and deme for our count you mand the or transition and the duties

of their and he at such a period are not light to defined our Fully our Savier' our Kes Jener Paixone strongth to be a the trials of this awirdly created time. To They we look up not sue cour for we are weak. Alone as great the latter of the counter mee for that slopes an only consolation and the darkness of dargers of our sit stion From The alme come strongth and first and tass Forsake us not but infoso per oe, himnes and fortified into our soil so that we may strind as withnesses of Thy glory to generations to come

পুস্তক বিক্ৰব।

			युना
ব্ৰাহ্মপৰ্যোৱ অনুষ্ঠান-পদ্ধতি			No.
यश्किषाः (छि हर्षे १५ ठाकूत व्यन)	3)	. ,	11%
শিশুপালন সে ভাগ	• •	••	10
ঐ ২য় ভাগ		••	100
বিদেশীয় আহক্দিণের ি		নগৰ	মূপা
বাতীত পুস্তক প্রেরিড ইইবে ন	11 *		

ক্লিকাতা ত্রাক্সমাজের ১৭৮৬ শকের	'' शीक्ष्वत कटक्साशाधाय >
পৌষ মাদের আয় বায় বিবরণ।	" व्यवस्था सम
আ্য়	" পার্বভীচরণ হৈন্দ্রাপাধ্যায় >
ভবুৰোধিনী পতিকা ১৭১/ । বন্ধান্য ১৪৮/১৫	वामधर्मा आठांत सम्माना। जीवुक ध्यमत्रकृतांत सम्म शुक्ष ১०,
পুস্তক বিজ্ঞায় ৫ ১৭০ ভাকমাণ্ডল ১৮৮৮	⁶⁶ রাজারাম মুখোপাখ্যার ১
	" দিননাথ মজুমদার ১॥০
	" পোপালচন্দ্র মলিক ১
প্রিট্র ১ ৷ ১ ৷ ১ ৷ ১ ৷ ১ ৷ ১ ৷ ১ ৷ ১ ৷ ১ ৷	· ·
عداماع دو	2.0110
ব্যয়	op-10.
माणिक दिङ्ग ৮৭॥०	বায়।
জীযুক্ত বিজয়কৃষ্ণ গোস্বাদী প্রচারক 💛	ঞীযুক্ত বিজয়কৃষ্ণ গোশ্বামীর ঢাকা গমনের
পজিকা যুক্তাস্থ্ৰ ৩০	পাবেশয়
शत्रांत्य ५१२ छ	भागको सामा ।०
पुष्ठक दुर्गाक्ष १३	বিল পরকায়ের হাওড়া পারে ঘাইবার বায় ১১০
দ্বকারের ক্ষিশন ১. ১৯ ১৯ ১৯	1
今日 繁星 4月	20170
が感味 、・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・	The second secon
مايورية بيستريورية به يورورية به المارية	ু জায়
399!\/2¢	বায় ১০১০ হিন্ত ২৭৮/১
১৭২॥৴১৫ ত্রায়	वाम्र
ত্ত্বার হৈছ ত্ত্তাল হার ক্রার	বিয় ১০।১০ হিছ ২৭৮/১০ শ্রী প্রভাপচন্দ্র মন্ত্রদার । কলিকাডা ব্রাক্ষসমাজের দান সংগ্রাহক
১৭২॥৴১৫ ত্রায়	বিষ ২০১০ হিছ ২৭৮/১০ শ্রী প্রভাপচন্দ্র মন্ত্র্মদার। কলিকাতা ব্রাক্ষসমাজের দান সংগ্রাহক
ত্যায় ত ৯৮০ / ১৫ পুর্বার খ্রিছ	বিয় ১০০১০ হিছ ২৭৮/১০ শ্রী প্রভাপচন্দ্র মজুমদার। কলিকাতা ব্রাক্ষনমাজের দান সংগ্রাহক নিযুণ্ট প্রতা
ত্যায় ত ৯ ৪ ০ / ৫ ৩ ৩ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ ০	বায় ১০০১০ হিছ ২৭৮/১০ গ্রী প্রভাপচন্দ্র মজুমদার। কলিকাডা ব্রাক্ষসমাজের দান সংগ্রাহক নিঘ্ণী প্র। সূতী স্থাচার্গের উপদেশ ১৪৯
ত্যায় ত্রায় ত	বিষ ২০১০ হৈছ ২০৮/১০ শ্রী প্রভাপতন্দ্র মজুমদার। কলিকাভা ব্রাক্ষসমাজের দান সংগ্রাহক নিঘ্ণী পুতা। পুঠা ভাবিদের উপদেশ ১৪৯ ভীবনের প্রকৃত ব্যবহার ১৫১
স্বন্ধ ত স্থান ত স্থ	বিষ ২০৮০ হিছ . ২০৮/১০ শ্রী প্রভাপচন্দ্র মঞ্মদার। কলিকাতা ব্রাক্ষসমাজের দান সংগ্রাহক নিঘ্লী পুত্র। পুতী ফ্রাচার্গোর উপদেশ ১৪৯ জীবনের প্রকৃত ব্যবহার ১৫১ বিয়োডোর পার্করের পত্র ১৫৪
স্থান ত্র্যান ত্রান্ত ব্রান্ত ত্রান্ত ব্রান্ত ত্রান্ত ব্রান্ত ব্যান্ত ব্রান্ত ব্যান্ত ব্যান ব্যান্ত ব্যান্ত ব্যান্ত ব্যান্ত ব্যান্ত ব্যান্ত ব্যান্ত ব্যান্ত	বিষ্
স্থান ত্র্মান ত্রাল ক্রাল	বিষ ২০৮০ হিভ . ২০৮/১০ ত্রী প্রভাপচন্দ্র মজ্মদার। কলিকাতা ব্রাক্ষসমাজের দান সংগ্রাহক নিঘ্লী পুত্র। স্থাতী ফুলাচার্টোরে উপদেশ ১৪৯ কীবনের প্রকৃত ব্যবহার ১৫১ হিজেপ্টীয় মত ১৫৪ হিজেপ্টীয় মত ১৫৭ ভবানী পুর ব্রন্ধবিদ্যালয়ের উপদেশ ১৫১
ত্বনা ত্রা ত্রা ত্রা ত্রা ত্রা ত্রা ত্রা ত্র	বিষ্
ত্ব বিহারীলাল ভটাচার্য	বিষ ২০৮০ হিভ . ২০৮/১০ ত্রী প্রভাপচন্দ্র মঞ্মদার। কলিকাতা ব্রাক্ষণমাজের দান সংগ্রাহক নিঘ্ নী প্রতা ভূমাচার্টোর উপদেশ ১৪৯ ভীবনের প্রকৃত ব্যবহার ১৫১ বিয়োডোর পার্করের পত্র ১৫৪ ইচ্ছিপ্টীয় মত ১৫৭ তবানী পুর ব্রহ্মবিদ্যালয়ের উপদেশ ২৫৯ ইং রাজি ১৬২ আয় ব্যবের বিবরণ ১৬৮
ত্ব বিহারীলাল ভটাচার্য	বিষ্
তাল ত ১৮৮/১৫ তাল ত ১৮৮/১৫ তাল ত ১৮৮/১৫ তাল ১৮৮/১৫ তাল ১৮৮/১৫ তাল ১৭৭॥/১৫ তাল ১৮৮/১৫ তাল ১৮৮/১৫ তাল জিলেন্দ্রনাথ ঠাকুর। সম্পাদক। বাজিদানর গেডিজাও সাধ্যমিক দান। শীবুক বিহারীলাল ভাটাচার্যা ৫ বিষয়েন্দ্রনাথ ১৮৮ তাল বিহারীলাল ভাটাচার্যা ৫ বিষয়েন্দ্রনাথ ৪ তালিক বালান্দ্রনাথ ৪ তালিক বা	বিষ ২০১০ হিভ . ২০৮/১০ শ্রী প্রভাপচন্দ্র মঞ্মদার। কলিকাতা ব্রাক্ষনমাজের দান সংগ্রাহক নিঘ্ণী পুত্র। পুতা ভাচার্যের উপদেশ ১৪৯ কীবনের প্রকৃত ব্যবহার ১৫১ বিয়োডোর পার্করের পত্র ১৫৪ ইজিপ্টীয় মত ১৫৪ ইজিপ্টীয় মত ১৫৭ ভবানী পুর ক্ষেবিদ্যালয়ের উপদেশ ১৫৯ ইং রাজি ১৬২ ভায় ব্যবের বিবরণ ১৬৮
ত্ব বিহারীলাল ভটাচার্য . ৫ ত্বিদ্যালয় ১	বিষ্
ত্যাল ত্রালাল ভালাকা একলে ও কলে কলাকা কল	বিষ ২০৮০ তিত্ত ২০৮/১০ তিত্ত ২০৮/১০ তিত্ত ২০৮/১০ তিত্ত ২০৮/১০ তিত্ত ২০৮ তিত্ত বোধিনী প্রিকার মুল্য নিরূপণ! অগ্রিম মূল্য (কলিকাভার জন্য) ৩০০ গ্রেম্থার ক্রিকালর জন্য) ৩০০ গ্রেম্থার ক্রিকাভার জন্য) ৩০০
ত্বনা/১৫ আয় ত্বনা/১৫ পূর্বহার খ্রিচ : ৫১৯/১৯ ৪৪৫৭/৫ বায় : ৩৭৭॥/১৫ আয় : ৩৭৭॥/১৫ আয় : ৩৮৮/১০ আ বিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর। সম্পাদক। বাস্দিনের গাড়িছাও সাখংসরিক নান। শ্রীযুক্ত বিহারীলাল ভটাচার্য : ৫ রাম্মেনের দে : ৪ শ্রেডাগেচন্দ্র চটোপাখ্যায় : ২৭০ শ্রেডাগেচন্দ্র চটোপাখ্যায় : ২	বিছ ২৭৮/১০ ত্রী প্রভাপতন্দ্র মজুমদার। কলিকাতা ব্রাক্ষনমাজের দান সংগ্রাহক নিঘুণ্ট পুত্র। ত্বাচার্গের উপদেশ ১৪৯ জীবনের প্রকৃত ব্যবহার ১৫১ থিয়োডোর পার্করের পত্র ১৫৪ ইজিপ্টীয় মত ১৫৭ তবানী পুর ব্রন্ধবিদ্যালয়ের উপদেশ ১৫৯ ইং রাজি ১৬২ আয় ব্যরের বিবরণ ১৬৮ তত্ত্বোধিনী প্রিকার মুল্য নিরূপণ। অগ্রিম মূল্য (কলিকাতার জন্য) ০৩০ দাসিক মূল্য ১৫০
ত্ব বিষয় বিষয় প্রতি লাভ নাম্থনরিক নান। শ্বীযুক্ত বিহারীলাল ভটাচার্যা . বিষয়েন্দ্র বিহারীলাল ভটাচার্যা . শ্বীযুক্ত বিহারীলাল ভটালার্যা . শ্বীযুক্ত বিহারীলাল ভটাপাধ্যায় . শ্বীয়ার মান্ত্রীলাল ভটালার . শ্বীয়ার মান্ত্রীলাল ভালা . শ্বীক্ত্রীয়ার মান্ত্রিক . শ্বীয়ার মান্ত্রিক নাল্য . শ্বীয়ার মান্ত্রিক . শ্বীয়ার মান্ত্রিক নাল্য . শ্বীয়ার মান্ত্রিক নাল্য . শ্বীয়ার মান্ত্রিক নাল্য . শ্বীয়ার মান্ত্রিক নাল্য . শ্বীয়ার মান্ত্রিক . শ্বীয়ার মান্ত্রিক নাল্য . শ্বীয়ার মান্ত্রিক নাল্য . শ্বীয়ার মান্ত্রীয়ার মান্ত্রী	বিষ্
ত্যায় ত্রান্ত ত্রান ত্রান্ত ত্রান্ত ত্রান্ত ত্রান্ত ত্রান্ত ত্রান্ত ত্রান্ত ত্রান্ত	বিষ্
ত্ব বিষয় বিষয় ক্রিক্তি বিষয় ক্রিক্তি বিষয় ক্রিক্তি বিষয় বিষয় ক্রিক্তি বিষয় বিষয় ক্রিক্তি বিষয় বিষ	বিছ . ২৭৮/১০ ত্রী প্রভাপচন্দ্র মজ্মদার। কলিকাতা ব্রাক্ষসমাজের দান সংগ্রাহক নিঘ্ণী প্রতা ফ্রাচার্গোর উপদেশ ১৪৯ জীবনের প্রকৃত ব্যবহার ১৫১ থিয়োডোর পার্করের পত্র ১৫৪ ইজিপ্টীয় মত ১৫৭ তবানী পুর ব্রন্ধবিদ্যালয়ের উপদেশ ১৫৯ ইং রাজি ১৬২ আয় ব্যবের বিবরণ ১৬৮ তত্ত্বোধিনী প্রিকার মুল্য নিরূপণ। অগ্রিম মূল্য (কলিকাতার জন্য) ১৩৭ মাসিক মূল্য ১৮০ বহু তত্ত্বোধিনী প্রিকা কলিকাতা বস্বের বের্ছা



তত্তারোধিনীপ্রতিকা

अभिवादक्षित्रमञ्जामी श्वासादः विक्रमाणि किति । সর্কাশসক্ষ। তে লব শিং গ্ৰাগ স্বাধন আছে দিং বা স্টেগ বিশিশে বাদ ১০ কিটীয়া সাক্ষরাপি সাক্ষ্যিণআৰু দ্বাশিশসক্ষ্যিত শবং যদিক্ষণ ুশ্বসাধিক শিংকি ক্ষেত্ৰ দিং বিশ্বস্থানি । ১০ গ্রা ক্রিকাইক আভান্ত বিভাগ বিভাগ আভি বিভাগ আহি বিধান বিশ্বসাধিক সংগ্রিকান ।

পঞ্চতি শ সাম্বনরিক ব্রাফা-মনাজ।

१५ माच ३१०५ मल ।

जेषाह अमिटिन >> मिटियन स्टिश्रानित অতি সমারোহ পুর্বক স্থান কলে সংগ্রাপন হইস। গিয়াছে। এ বংগরে আনাধ্যনে इव्यास अधि প্রধান আটার্যা মহাশ্বের মহোৎমবের কেন্তু হইরাভিল। তগায स्वामधिक मध्य (लांक ममांगंड मध्याह-লেন; অন্যান্য বৎসর স্থান।ভাবে অনিক: তেও অনেকে পরাধার হইয়া বহিগত इरेट्डन, এ वर्षत अरे त्र्मायुक्त (कार्व সমাজ ভঙ্গ পর্যান্ত সকলেই স্তন্তিত হইয়া নিবিদে ভক্তিভরে মনের সাধে উপাদনা করিয়া ছিলেন। উৎদৰ ভূমির অধ্র বাহির নবপলব ও স্কৃদ্ণ্য কুস্থম মালায় স্লোভিড হইরাছিল। সন্ধা ৭ ঘটিকার সময়েশত তুর্দিক আলোক মালায় স্ক্সজ্জিত रहेल, উৎসব ভূমি মনোহর বেশ ধারণ করিল, এবং আচার্যোরা বেদীতে উপবে-শন করিলে পর চতুর্দিক্ নিন্তন হইল, ও " थाकि यामात्रात मरहादत्तर " अहे छूट

। মাধ্যর উল্লাসকর ব্রহ্মসাহীত সংক্ষা তাকোণাসনা আবিয় শ্লীক ব্রহ্মহাণ শেষ হাইব। মান ব্রহ্মা, কাল আব্ধ গোলপ সমাজের মবের বেলান নাম্যার আছে। পদ আয়ুত্র কেম্বর্জন ব্রহ্মান্ত ব্রহ্মান হব্য। ভাষ্যার হব্য। এই বৃত্যাত ক্রের্ন।

"নভেলে কি আ ওয়া ন হল । যে এন জির ক্রনে মতেটে প্রতিটা গ্রিক এক मर्छ। स्वरुक्त धर्म स्वरुक्त है। स्वरुक्त स्वरूप शोदवानिक इस , य (भर । मराज्य । । मण्यालिह क्या (म (भग (५) (न्तर राजान) कार्य अभीत जालक उभाउत निकटन स्थ। সত্য কাল্বিয়া নেজস্বাধন নতে, অংশচ শ্লাকে मुक्रानवरे आहराता गरः घरधः नाम नत्म, मम्। छेद्र७ असुगठ नद्भ। हेटाद নিকটে পজে-প্রায়াদ ও গ। কুটার উভয়ই मभारा भगवाम ७ निर्वम मन्द्रवरहे जना ইল্র জেড়ি নিরপেল ভাবে প্রদারিত র্হির্ভে ব্ল লোক-বিশেষে প্রবা मस्त्रायः विद्रभटन प्यथं व कार्डि-विट्रमटन विकी ज न्य गाने। वेदा प्रस्थ वस नटर, क्रिन्य यक नर्भ, मकन (मर्ग ७ मकन সময়ে ইহার আধিপত্য। সভা মহৎ ও

উদার। ইহা আবার জীবন্ত ও বলীয়ান্। ইহার আধার নিজীন জ্ঞানও নহে, তরল ভাবও নহে; জীবনই ইহার আবাদ ভূমি, জীবনেতেই ইহার যথার্থ প্রকাশ। নমুদায় জীবন স্বৰ্গীং বলে সংসারকে পরাস্ত করিয়া, পাপ, তাপ ও মৃত্যুকে পদানত ব-রিয়া, ঈশ্বরাভিমুখে উন্নত হয় ; তথনই স-ভেবে প্রকৃত মহিম: প্রতীয়দান ২য়। বাস্ত-ঠিক সভাই আমাদিগের জীবন, এবং যে পরিমাণে আমরা সতা চইতে বিচ্ছিন হই, নেই পরিমাণে আমরা জাবন-বিহীন ও জড় ভারাপন ইই। সতোর ৫ রূপ জাবিন্ত বল বে টলার ক-।মাত্র কিয়ণে অমা-নিশার অভেদ তমেজাল ছিল ভিন্নয়, ইঞাৰ गः स्थान महिन भण्छ। भक्त दर्भ मक्षिण अस-লায়তন ব্লি-রালি চল এইফ মায়: নিরাশ মুখুৰ্বাতি নৰ জীৱন ও নৰ উদাম প্ৰাপ্ত इस : व्यांक कुरतन कींद्र दाकि सभा विदेतद नारि वीमावान इर. धनः अधि मामाना कुछ टांडि ६ ममुष्ति, जिंड खदार्भ मं≉ख मे-হস্তালে ক্ষেত্র সমলে বনীছিত্ত কারয়। ভাগার re एका श्राम्म नका मश्मारम कवियो लम । সতে देव वट अद्गतिक देवे उद्यान-वल धन-दल দেহ্-বল মক্রম প্রাভূত হয়-–কেবল প্রা-ভুত হয় এমত নচে, কিন্তু আবার অনুগ্র নাদের নায় ইহার পরিচর্যা করে। প্রমাণ স্বার্য ইভা সিদ্ধান্ত করা যাইতে পারে যে ঘালারা ভ্রমণ বিকট মূর্ত্তি ধারণ পূর্বক বন্ধ-পরি কর ও থড়্খ-হন্ত হইয়া সত্য-পরায়ণ যা জিব অনিষ্ট মাধ**ে প্রবস্ত হয়, ভা**হারাই শার্যর সম্ভিবিলয়ে সেই ব্যক্তির **দেবা করে** া হারুপ্রা হইয়া ভাহ'র আদেশানুসারে ২০ ার মহিম। কীর্ত্তন করিতে থাকে। কি অভিযা সত্যের মহিমা।

ই উলার ও জীবস্থ সজোর উপারে
 পারারের পবিত্র ত্রাহ্মধর্ম সংস্থাপিত;

कनकः मठा है बांकाभर्मा। এই कनाई खाका-অধিকার। ইং ধর্মে দক্র মনু**রে**ার যেমন ভারতবর্ধর্ব,তেমনি ইংলত্তেরও ধর্ম; ইহা যেমন পূৰ্বকীলেব, তেমনি বৰ্তমান मभटशत्र धर्मा। देश (यम) स्थापन भी नाना-বিদ্যা-বিশারদ পণ্ডিতদিগেরী, তেমনি সরল-চিত্ত রুণকদিলেরও ধর্ম। অন্যান্য ধর্মের नाम रेश क्रांकि-दक्ष वा मख्यानाय-वक्ष नटहा ইছাতে জাভির গৌরব নাই, দেশের গৌরব নাই। দকল মনুধাই স্বভাবতং বে। সা। যিনি যে পরিমাণে স্বাভাবিক নিশ্মল জ্ঞানের অনু-সরণ করেন, তিনি সেই পরিমাণে ব্রাহ্ম। ম-নুষ্যাত্মার দহিত ব্রাশ্বধর্ম দনব্যাপী; আত্মার স্বৰণমই ব্ৰাহ্মবৰ্ষ। দেশ কাল 🔞 অবস্থা নি-বিশেষে দকলেরই ইচাতে অধিকার। জগৎ जागातरमत (मद-मस्मित, পর্মেশ্ব আমা-দের উপাশ্য দেবতা, স্বাভাবিক জ্ঞান আম:-দের ধর্মাশান্ত,উপাসনা আমাদের মোক্ষ পথ थाञ्च शक्त गामारमत थात्राक्ति छ, मायु वर्ष মাত্রেই আসাদের গুরু ও নেভা। দার ব্রাহ্মণর্মে সাম্প্রদায়িক লক্ষণ কিছ নাঁই, ইফাতে বিরোধের কারণ নাই। ইহা সাধারণ সম্পাত্ত। স্ক্তরণে ব্যক্ষ**নাজ** স স্প্রদাযিক সমাজ নছে; থাঁছারা এক মাত্র অ-দ্বিতীয় গরত্রক্ষের উপাসক হইয়া ভাঁহাকে প্রীতি ও তাহার প্রিয়কার্য্য সাধন করিতে ইচ্ছা করেন, জাঁলাদিগেরই এই সমাজ।

পঞ্জিংশ বর্ষ পূর্কে এই ১১ মাঘ দিবনে অসাধারণ-ধীশক্তি-সম্পন্ধ, অত্যুত্রতপ্রশাস-ক্রদয়-বিশিক্ত মহাদ্মা রামমোহন
রার এই ব্রাক্ষসমাজের স্থ্রপাত করেন।
সেই দিবসে প্রীতি-বিক্ষারিক ক্ষমত্রে তিনি
সকল দেশীয় সকল জাতীয় লোকদিগকে
এক সাধারণ উপাসনা-গৃহে সত্য-স্বরূপ
অন্ধিতীয় সম্বরের উপাসনায় জনা আহ্বান
করিলেন; এবং ব্রক্ষোপাসনা-রূপ অমূল্য

ধনে দকলেরই যে অধিকার আছে এ গৃচ প্রতিষ্ঠা দারা দগতে এই স্থান্চার ঘোষণা করিলেন। সেই দিন অবৃধি ক্ত শত লোকে এই ব্রাক্ষসমাজের পুশীতল আত্রয় লাভ कतिसा खाकावर देत गाराया मरणात थ-मारम, क्रमग्रदक अभेख कतिशास्त्रम, मनदक উন্নত ক্রিয়াছেন এবং আত্মাকে পবিত করিয়াছেন। দেখ কেমন আক্র্যা-ৰূপে অংশে অংশে ত্রাহ্মসমাজের বিস্তৃতির সঙ্গে मत्क भावित ताका, थीजित ताका, धर्मातिह হ্ইতেছে! কত শত লোক সাম্প্রদায়িক ° দকল প্ৰকাব শৃষ্থল ছেদন পূৰ্বাক অশস্ত क्रनरम् भरहात भाषांत्र ভূমিতে मकरनद ন্হিত উচ্চতম বিমল্ডম সমূলে আৰক্ষ इटेट उट्टन; विट्य, एवा, विवाप, विभाग ≥हेटच पूर्व्य ब्हेश नितृत्थक मत्न मकल लांकि ও धर्मा-मच्छानाय हरेटक धर्मा कञ्जू मक-লন কবিতেছেন, সকলের সহিত মিলিত হহয়া বিবিধ হিচকৰ কাৰ্যা সাধন ক্রিভেচেন, এবং উন্নত প্রীতি-যোগে দকলকে ভ্রাহা বলিয়া আলিক্ষন করিতেছেন। দেখ, জগৎ ্য পরিবারের গৃহ, ঈশ্বর যে পরিবারের পিতা মাতা, দেই পরিবার ক্রমে চতুর্দিকে वाश इटेटज्रह । वहे मत्नाइत मृणा म-ক্রমতিন কাহার চিত্তনা মহেলাদে অদা উ॰ कुल रहेरण्ट्र, खांचाधरमात महिमात शित-চর পাইরা কাহার শরীর না রোমাঞ্চিত क्ष्रेटलट्ड ?

ব্রাজ্যপর্যের উদার ভাব দেখিয়া অদ্য বেষন মন প্রশৃত্ত ইইতেছে, তেমনি ইহার মাশ্চর্যা স্থগাঁর পরাক্রম দেখিরা আমারণের আস্বা উৎসাহে প্রজ্ব লিভ হইতেছে। এই পঞ্চতিংশ বৎসর মধ্যে ইহার আগ্নি এ দে-শকে কেনন উজ্জ্ব ক্রিয়াছে; কভ কত পর্বভাকার বিশ্ব বিপত্তি, কভ ভয়কর কু-সংস্কার ঐ স্ক্রিভি ভাষীসূত্ত ইইয়াছে।

শভ সহস্ৰ ৰৰ্ষে যে সকল কুদংস্কার এদেশে ৰদ্ধমূল হইয়াছিল, তাহা ব্ৰাহ্মধৰ্মের বলে मभूटन छेश्याणिङ करेट बट्ड, मभुषय ভाরত-বর্ষে যে দকল ভ্রমের আয়তন ডাহাও ক্রমে চূর্ণ হইতেছে। এই ভারতভুমি পৌতালক-তার ছুর্গ স্বৰূপ,ইহা কঠিন অভেদ্য কুসংস্কার প্রস্তরে নির্দ্ধিত,অগণ্য পরাক্রমশালী বিরোধী বিপক্ষেরা সভ্য-পরায়ণ বাজিক্ত প্রাণ পর্যান্ত বিনাশে প্রতিজ্ঞান্ত হইয়া নিদ্ধাশিত খড়গ ধারণ পুৰুক অংশীর ন্যায় নিয়ত ঐ তুর্গকে রক্ষা করিতেছে; মেই ছর্গের মধ্যে ত্রাক্ষ ধর্মের জরপতার। উক্তীবদান, এবং দেই বিরোধী দলের কত কত গোক এক্চনে সভা भरागत भागवन् छिष्ठ इकेट ब्रह्मा मानु सा ক্ষের সভ্যের প্রভাবে আপনানিগ্রে ৬ পরিবরি এবং স্থানেশকে ভয়ন্তর ফুম সাং इंडेटर अगुङ कतिया श्रीनक् मदन स्पर्धाः করত সমুদয় ভারতভূমিকে নিনাদিও 🗥 🌣 **एटएन।** मन्दर्भाक्षमान् क्रेश्वत में शिक्त সচায়, এবং জাৰত জ্বত সভা ঠাছালৈ रुट्स, खेशिराय निकारे एवं विक्रीय कीर्र ভ্ৰম নিচয় আপনা হইতে কিলাপ ২:৪ হইবে, ইহাকে অার আশ্চয় কি : বৃদ্ধ বলের মন্মুখে কি পার্থিব কেনে বল ডি-তিতে পাটাও বেংা, ক্রমে কেমন পথ পরি-ষ্ঠ হইমাচে। পবিবার মধ্যে পিস্তা মাতা, পুত্র কনা, ভাতে ভাননী সন্থানে মিলিত হট্যা নিসিতে অচিতীয় ঈশ্বদ্ধে উপংসম করিতেনের, চাল্রা গ্রাব লাবে জ্ঞানের সহিত রাভাগতিক আলিজন করিতেছেন, যুদ্দেরা সংখ্যাতে উদ্দীন্ত শ্রেয়া ইহার সভা সকল খানুষ্ঠানে শরিওত করিতেছেন, কো-मल-ऋगत महिनाहा तिश्वक धौि श्रुटका ব্রহ্ম পূক। ক্রিভেছেন। এ মহ্ৎ জয় কেবল মতোরই বলে, এমন রম্ণীয় শোভা কেবল जाक्रथर्भात्रहे मोमन्धा।

आंभगन । अभाकति छेरमदा अभिष एक. छेलोन आप १ **कुछ** से तेन **स**माक् साम का ए शानन कड़ अन्दर निश्च अस्त देशकि ্ৰ লোচনা করিয়া ঈশ্বরকে ধনাবাদ কর ू भारताची पर्सित कवा छात्र सिका कन ५५ क सरक्ष्मत्वत एथार्थ छ। पर्याः। গত ব্রু হান্ত্র প্রসালে নারভত্মির দক্ষিণ ও পশ্চিম ফ্রেকাশ তালিকা প্রচারিত চট-२ १० वर्ष प्रांतिक कारणेत उरम्यो ्रकः भगद्यः - नेशा दाजायमाधः मत्राध्यः रहिशाला वस्ताला । वस्ताला । প্রচায়ক, দক্ষের পারিক্সনে ত্রাক্ষধর্ণের উ ভারতি হল্মাটে : ব্রেপ্রক্ষা পেটা চার্লি प्राप्ति बहुद्धा गाँचा त्यक्त कर्ने कलिक रहे र १ ६ इ.७१८ । सुरूष मा १०५१० मी धन चे स्-大王(1) 对 海军有 指确则 1、河南鸭类 人 衛行 राम समाप्त रक्षेत्र स्था । इति । वाहमा अस्ति । भ्यान हिल्ला कर । अञ्चल विद्राह अहत् सह সভাষ কলে। খালা শ্কলি পাতি পাঞাগালুফী रहेदराज । जुरावे छिल्लालाक छ। ६ ८६ ,बर्धिय के विशेष के विशेष करें हैं। ब्द्रास्क के कि करेंद्रीहरू । ब्राह्म के हाई গক্ষাবলনীয়া ভাগিদিও যে প্রতি অংপক্ষাক্রত भुनान ७ अका अंक्षा बहित्राहर। ্র বালাদিখের এশত জীকি, নত্যান্ত্রাগ ्रिमप विभाग अस्तित् मञ्जूषे इहेश्वाट्डन এবং পাহার ক্ষেব্যে, বিশ্বাস করেন না জারবিত কিল্লুজ বেক্সিন্ধীবনের মহ**ন্ত দে**-, शेशो एक, एक (के १५) व्यवस्थ **व विटल्ट**न। গে চন মট্ল আছে লিডেল যাত্র ও অধ্যবসায় . इ.र. १४५ १ क्ष्री का अविश्वास ८० । १९० एक अप **र १३८७८ मानुस** তিল এই ত্রাক্তপত পরিবা**ও হইবার প্রক** েলে। তেওঁ, বাং কাজা। তে আ**ল-পরায়ণ** ो । १९ । ८१६ टी जो जक्षरणेत् वी**ल लहेश।** ্র নেক্টার উবলো ভারত-ভূমিতে রৌপর

কব। গে অমূল্যধন লাভ করিয়াছ, তা-শ্তে কেবল আপনাদিগের অভাব মোচন করিয়া শ্যাতে ব্যান থাকিও না, কেবল শাপনাদিগের আত্মন্তক চরিতার্থ করিয়া ফল্ড থাকিও না। দেশস্থা দাত। ভগিনী দিলের আগ্রার রোদন-ধনিতে বোধ হইতেছে মেন গগন বিদীর্ণ হইতেছে , সহারা ঘেন চতুর্দ্দির হই তে ব্রাক্ষ্মমাজের আশ্রর প্রার্থনা করিতেছেন, ইহার উদার অদাব্রতে অংশী ÷ेरांत कमा উटेक॰श्वदः निर्माः कतिरुट्छ सः ज्यागतः कि ध मगत्र भय' भूना-कृत्र छ পেনা ফরিব ৷ মা গাবিকত ভাবে আর নাণিবের তাপ মুখ এদশন পুরুষ ধর্ম বিপাপ্ত ব্যক্তিদিগকে আনাধর ক্রিন্ত भाग दिवीर छोत्र आपण कार्रास्टी रागा आ, हारी छोड़। यह हा जिले स्थानी ারণাকে আ, শাস্ত্র দিবার জন্য চাত্রুক্রিক ধারিত इ.स. मध्य भाषाता या विक व्याद्वाहरू श्रीतकृत या, भारिकाहि भारा । अभाग कर्माक 制度的 进入 1

তে পরমান্ত্রন । কুমি আমার্থনের পির ও প্রভু , গালতে দুচ্বত , ইয়া চির দিন ভোষার পান দেব। ধরিতে পারি, চা কোন একাপ্রতা ও ধ্যাবল রিধান কল। আমার দের বন নাপাতে, আমার্রদের শরীর মন, আমানের লান ম্যাদা, মকলই তোমাকে অর্পন করিজেছি, ভূমি আমার্রদিগকে ম-স্পূর্ণকগে ভোমার মঞ্জা কার্য্যে নিয়োগ কর, যেন ভোমার মঞ্জা কার্য্যে নিয়োগ কর, যেন ভোমার আজা পালন করিয়া, ভৌমার বিভ্রমন কীর্ভনকরিয়া এই স্কুদ্ধ জীবনকে সার্থক করিতে পারি। ব

'ই একমেবা**দিতীয**ং

প্রনশ্ব শ্রীযুক্ত অযোধানাথ পাকড়াশী মহাশ্ব ত উপকরে এই উত্থাধন খারা সকলের মনকে জাগ্রহ করিলেন।

এই সম্বংসর মার করুণা অবলক্ষ্ম ক-রিয়া অবাকার উৎসব-ক্ষেত্রে সকলে সন্মি-লিত হইলাম, সম্বংদর ঘার অভয়-ক্রোড়ে অবস্থা করিয়া রোগ-শোক ভয় বিপত্তি कंट छ खेरी व इवेशीं है, या कांत्र ध्यामील कन আমারদের জনা নিরন্তর প্রসারিত আছে. য়ুনি মণ্যে মণ্যে আমাদের আত্মাতে আবি-ভূতি ফ্টার্মা আমাদিগকে পাপ তাপ হইতে নিস্তার কবিয়াচেন, অদ্য সমস্ত দিন ঘঁংহার পবিত্র সন্নিকর্ষ অন্তভব করিয়াছি, এখনই वी हात (अपनुनं हक्कू आंगोरनंत स्नता अकः . শৃত দেখিতেছি; ভাঁগকে জ্ঞান-নেত্রে প্রতাক্ষ কর, ভাঁহার নিকটে হাদ্য় ছার উ-প্যাটন কর, তাঁহাকে রুভজ্ঞতা উপহরে দাও, তাঁহার চরণে প্রীতিপুষ্প বিকীণ কর, ভালার নিকটে শুভ বৃদ্ধি ও ধর্ম বল প্রা-র্থনা করু, ঠাছার উপাদনা করিয়া এই ক্ষুদ্র ভীবন চরিতার্থ কর।

অনন্তর আদি অন্তে ব্রহ্মনাঞ্চীত সহ কৃত স্বাধানাত ব্রক্ষোপাসনা পরিসমাঞ্চ হইলে. পূজনীয় শ্রীযুক্ত আনন্দচন্দ্র বেদার-বার্গীশ মহাশয় উৎসাহসহকারে ব্রাক্ষবন্দ্রের অধম থণ্ডের চতুর্দ্ধশ অধ্যায়ের এই তিন্দী শ্রুতি তাৎপর্যোর সহিত্ব্যাখ্যা করিলেন—

বোবৈ ভূমা তৎ মুখৎ নাম্পে মুখমজি।
ভূমিব মুখং ভূমা ত্বের বিজিজাসিতবাং। ১।
ধিনি ভূমা, যিনি মহান্ তিনি মুখস্বৰূপ; ক্ষুদ্র পদার্থে মুখ নাই। ভূমা ঈশ্বরই সুখ স্বৰূপ: অতএব ভাঁছাকেই জানিতে
ইচ্ছা করিবেক।

मञ्रुरवात मन পরিমিত ক্ষুদ্র পদার্থে কথনই স্থাী হইতে পারে না। সেই ভু-নাতেই আমারদের স্থা, অপ্প বিষয়ে স্থা নাই। বিষয়-সুখে আমারদের আত্মা ভ্পা হয় না। বিষয়-সুখ সকলই ক্ষণ-ভঙ্গুর, অতীব ক্ষুদ্র-কথনো বা ধর্মের অনুকুল,

কথনো বা অভিকৃল; কথনো বা দেব। কথনো ত্যাক্ষা। সেই ভূমা ঈশ্বরই আ মারদের ভৃপ্তির স্থল, আমারদের প্রিত্ত শান্তি-নিকেতন। অভূতৰ ভাঁচাকেই অ-স্বেষণ করিবেক, ভাঁহাকেই জানিতে ইচ্ছা করিবেক॥ ১॥

সভগবঃ কন্মিন্ প্রতিষ্ঠিউইতি বে মহিনি। 🦮

শিষা জিজাস। করিলেন, চে ভগবন্। তিনি কোথায় প্রতিষ্ঠিত আছেন। আচার্য্য উত্তর করিলেন, তিনি আপনার মহিমাতেই প্রতিষ্ঠিত আছেন॥ > ॥

প্রমেশ্বর নিরালয়, স্বতন্ত্র ও মুক্ত স্ব-ভাব। অনা সকল বস্তু যেমন তাঁচাকে অবলম্বন কবিষা স্থিতি করিতেছে, জাঁহারই উপর নিছর করিছেছে, তিনি সজাণ ক। হাকেও অবলম্বন করিয়া স্থিতি করেন না এই বিশ্ব-ৰূপ শৃখাল ভাঁচাতে আৰম্ম থ'-কিয়া লয়মান রহিয়াছে, তিনি এক মাজ শন্ধু-ছব্ৰপ ইইয়া সমূদ্য ধারণ কবিয়া আন-ছেন, কিন্তু তিনি কিছুতেই আধক্ষ নহেন, ভূঁ।হাকে কেছ ধারণ করিয়া বছে নাই। দেই নিরবলম পূর্ণ ব্রহ্ম স্বীষ্ নহিনাতেই অবস্থিত কবিতেছেন, আপ্নাতে আ্প্নিই নিভা রহিয়াছেন: তাঁছবি কেই ধনকও নাই তব, ভাুছার কেই আত্ময়ও নাছ ।।।।। महवारखार भनेनदिनाए मन्कार मनुत्रखार मन्भिक्षाः, नाईन्द्रवाद्यः । अन्यादनाच्या छतामा मध-नामा मछ महः ।।

তিনি অধেতে, তিনি উর্কেতে; তিনি পশ্চাতে, তিনি সম্মুখে, তিনি দক্ষিণে তিনি উত্তরে। তিনি ভূত ভবিষাতের নিয়ক। তিনি অদাও আছেন, পরেও থাকিবেন। ৩।

কি উদ্ধে, কি অধোতে, কি পশ্চাতে; কি শশ্বুথে; কি দক্ষিণে, কি উত্তরে; আ-মারদিগের চতুর্দিকে সকল স্থানেই তিনি দ্বিশাসন রহিয়াছেন। আসর। যদি প্রতশিথরে আরেছেল করি, সেথানেও তিনি
বিশাস্থান যদি গভীর সমুদ্র-গতে প্রবেশ
শরি, সেথানেও তিনি ওইমান। দিবাকরের
মান্তে কালের কিরণে যেমন তিনি স্থান
লগ্ন হালের, তজেপ ত্রমণী বিভাবরীর
অপ্রেম তিন্যারেও জাত্র্যানা রহিয়াত্রেন।
নকল জানেত তিহার রাজা, নকল আনেই
ভাষার দ্বি। যেমন তিনি স্ক্র-দেশ ব্যাপী,
তেমনি তিনি স্ক্র-কালে হিদ্যোল। তিনি
যেমন ইহ কানের নিয়্প্র, ত্রমনি প্র কান্
প্রেও নিয়্প্রা: তান জ্বাও আছেন, প্রেও
থাকিবেন। ৩।

ওঁ শান্তি সান্তিঃ কান্তিঃ চরি ওঁ পরে শীন্তুক্ত বেচারাম চট্টোগারার মহা-শরমার গড়াব স্থারে এই মহোৎনাবের পরিত্র বংসাহ বাকা দারা সকলকে সিদ্ধ করিলেন

ল, থ হাছে। এক ৮৯ দেবস, আজ বন্ধভূতি ত্রান্ত ভারণভূমের একনাত্র लेंदमव निम्म । बागन । नभरतः इस हरेटह—-हुकु। भुद्य इन्हेट इंटियुटन इन्हेटन रभवन (मन्हे भिक्ति सव दशक्ष व (इन कार्त्वोक्ष क्रेश शाहक रमसे क्या करे भाग्यर क्रकाम्य निदमी ধ্যদেশানুবাগা সম্বৰ-প্রেমী ব্যক্তি মাত্রেরই ন্মৰণ প্ৰে চিব্ন মুক্তিত থাক। নিতামই কর্ত্তবাং কেন না এই দিনে এই অনহায় ুভর পে বজ ভূমির প্রভূতপ্রাণ সঞ্চার হয়---এদেশের সকল তৃথ সৌভাগ্যের স্থাতপাত ংল্, বজালেশে যে সঞ্জ করীতি কদাচার अर निम स्काविशवा कतिएकिन, **अरे मिन** ২৯ ছে এনন একটা কাংখার অনু ঠান হইতে অবিত্রহল, মাহার রাজ। ক্রম ক্রমে এ । मार्थान अकृत वाजान विमुद्धि इंट्रे**टिट्,** র্বহ'ৰ ক্রানের প্রতি গ্রেছর---প্রতি ভারোর ংশন অন্তন বিলোচন হুইরা আমার্দিরের धार जुनित विभन्न सुथ अमून इरेटिस है।

চির ছংপিনী বঙ্গ মাতার স্বাধীনভাকপ অমূল্য হার পরিধানের সময় লক্ষ্য করি-বারও কাল উপস্থিত ছইয়াছে। বখন ব্রাহ্মণর্ম এ দেশের সকল বাধা বিশ্ব অভি-ক্ৰম কৰিয়া সম্যক্-ৰূপে উদিত হয়েন নাই, তখন যে কখনও বঙ্গভুমির ছঃখের নিশা व्यवगान रहेरव रेटा ভाविशा खित कताउ কর্মিন হইও। এখন তো আমারী গণনার কাল প্রাপ্ত হইয়াছি—এখন তো উন্নতির সোপান লাভ করিয়াছি। এখন আমরা दय शनकार मटक मटक शनका कहि. एम एमर्लाव क्टमूत बीड्रिक इडेन.— **इ**नस् कि. প্রিমাণে গাপ মলিনতা ছইতে বিমুক্ত হইল.— খাখা কত দুর উন্নত হইল। কেন ন্দ্ৰিয় নহালা কর্ত্তক আমারদিলের কোন न। रक्षान এनটা अचार निवाकन अञ्चल হাঁহার নিকটো বাত ক্রতজ্ঞ হই, বিনয় বচনে ভিন্দেকে সভ সাপুনাদ প্রদান করি, কিন্দু যিনি ধর্মের অবর্তিং, সক্র মঞ্জের একমাত্র षास्त्रका, भारा बनेटन (मर्भव बार्जाव अधि গুল-প্রতি পরিবার-প্রতি পাঞ্চার গালী-রতম অভাব বিদুরিত হইবাছে, সেই জিছু-বনের রাজার নিকট ক্তজতা এফাশ করা कि यञ्ज ७ व्याताम माता २ है। इंदर अहर व করিতে কি আজ উল্বোপনের প্রয়োজন ১ অজি নাখের একাদশ দিবস, আজ ব্রাক্ষ-সমাজ সংসাপানর প্রথম দিন। ইছা উচ্চারণ কবিবা মাত্রই শরীর লোমাঞ্চিত হইষা উঠে, নদন যুগল প্রেমাজ্রতে পরিপূর্ণ হয়, হৃদ্দের অভান্তর হইতে যুগপৎ প্রীতি আকা ও রুতজভার ভার ঈশরের প্রতি উक्ट्रिंग कर्फ निरंतीय कतियां करियां करियां ঢারিদিকে ঈশ্বরের মহিমা জাজ্জামীন সন্দর্শন করিয়া, এই শোক্তা সৌন্দর্যোর অভ্যন্তরে, এই সাধকদলের মুখ্যুম**্ভলে জা**-হার সভা জ্যোতি বিকীর্ণ দেখিয়া বিশাররদে 🤟

হাদর প্লাবিত হইতেছে। অনত্তের মহিমা ব্যক্ত করিতে গিয়া রসনা অসাড় হইয়া বাইতেছে— জাঁহার গুরু ভার ধারণ করিতে গিয়া শৃদর অবসর হইয়া পাড়তেছে।

সন্ধারে কি মনোহর দৃশ্য! শত সহস্র ব্যক্তি শাস্ত সংঘতেন্দ্রিয় হইয়া সেই দেব দেবের পূজার নিমিত্ত একতিতে হইয়াছেন, আনন্দোর্মীলিত— নিমালিত নয়নে সকলে আমারদিগের '' সাক্ষাৎ পিতা, পুরাতন পিতামহ'' পরমেশ্বের অর্চনার জন্য— তাঁহার পান বারণার নিমিত্ত সমাসীন হইয়া-ভেম, সকলে এক লক্ষ্য এক জ্বায় হইয়া এক বাক্ষো জন্মত্বর প্রদাদ-বারি ঘাচ্ঞা করিতেছেন, ইহা সন্দর্শন করিলে মনুষা মাজেরল ভোজ্নয় কনল প্রক্ষা টিত হলবেই, দেবতারাধ এই মনোহন দৃশ্য সন্দেশন

मेश्र-मस्तव अमास्त्राचा गुरुण हत এই मम्भाग व्याराग्ड स--- मम्नाय चार युव स्यवन ঈশ্বের্ই জনা। তিল ঈশ্র হ্ইকে আ-धनाव मञ्जल, शतिवादनत मञ्जल, मञ्चलात বসভূমির মঙ্গল লাভ করিয়া আনন্দে উর-ক্সিত হইয়া চারিদিকে এই সকল মঞ্চলাচরণ করিতেছেন। আজ তিভুবনের রাজার প্রধূলি ভাঁহার আশ্রমে পতিও হইবে, আজ সেই ভুবনেশ্বরের পূজ। জীহার গৃতে স্থাপন হইবে, এই জন্য তো দুপরিবারে হ্লনয়-থাল প্রীভি-কুস্কুমে পূর্ণ কবিষা তাঁহার খারে উপস্থিত হইয়াছেন—তাঁহার উৎসব আনন্দ জনিত পবিত্রতর স্থথের ভারী করিবার জন্য আমার্দিগকেও আছ্বান করিরাছেন, আমরা তাঁহার নিমন্ত্রণে — ঈশ্ব-রের সম্বেহ আহ্বানে নানা স্থান হইতে অক্টিত প্রীতিকুম্ম লইয়া এগানে উপ্-िष्ठ रहेन्नाहि, रमहे रनव रनरवत शुक्रांत উপতার লাইয়া সকলো_ঁ একত্রিত হইয়াছি।

আইস সকলে মিলে ঈশ্বের পূজা করিয়। কৃতার্থ হই, হৃদয়ের পরিশুদ্ধ কুডজুতা উপহার তাঁহাকে দিরা জীবন স্বার্থক করি। আপনার উন্নতি, দেশের উন্নতি, প্রাণসম বাক্ষধর্মের উন্নতির জন্য সকলে মিলে তাঁহার মহদ্যশ যোষণা করি।

হে অথিল-মাত। বিশ্ব-বিধাত। পরমে শ্বর! আমরা ভোমার পূজার জন্য এখানে উপস্থিত হটয়াছি, ভোমাকে লইয়াই আমা-त्रिंदिश्व डिश्मव श्रानम युश्च (मो नांशा मक-লট | আমবা ভৌমাব চিবা্শ্রিত চিরানুগত দাস—অফাবদের প্রতি তোমার এড করুণ ' আমারদিগকে নিত. ব নির্ভার এক। ম য মহার দেখিরা ভোমার ব্রাকাধনের শীতল ছার্যে আন্যন ক্রিয়ভে,ডুমি ধ্যোর্দির্ব নির্বন নৈর্থ দেখিয়া রূপ। কাব্যা দেব ছুল্ ভ ত্রাক্ষধর্মের অবিকারী করিয়াছ। তুল দ্বীন হীন মলিন বজ দেশের অভন্তর ২ইতে অমৃতি গনি फेबा क कानशा किया है शतक क्षीतन त्यीत हन প্ৰকৃথিত ক্রিতেও। ধলা ধনা নথে। ধন্য ভোমার করণে। ভোমার প্রদাদ গুণা ছুব ल अ तल को च करत, जोक अभार में ० ने है। छ रहः

তে স্কলের বল, গাভ ইনেন গাভ প্রমেশ্র। তাম এই গৃহ আর্মিন মঞ্জল কর। ভূম ইছ হ সভান সম্ভিল্পকে তোমার জন্ম কলে করে। নাম করি নাম করে পর্বত প্রামান তর্সের মধ্যে নামার অভয় পদ আ্রান করিছা যথ সারস্থ পণ করভ যেমন ইনি নির্বিলে শাভি উপাত্রল উপনীত হুইয়া স্বীম নির্বাদানকৈ তনের সধ্যে তোমার এই সিংহাদন প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন, তেমনি যেম চির কলে অবাবে এখানে তোমার পূজা সম্পন্ন হয়। তোমার প্রিত্ত নাম যেমন এখানে বাহিরে স্থাক্ষিকের মুক্তিত রহিয়াছে, তেমনি যেম বাহিরে স্থাক্ষিকের মুক্তিত রহিয়াছে,

কলের হৃদয় পটে তোমার পবিত্র ধশ্মের মঞ্চল ভাব সকল চির মুদ্রিত থাকে।

যাঁণার গৃহে আজ সমুদাব বঙ্গভূমির

— ভারত ভূমির শাস্তি স্বস্তায়ন হইতেছে,

গাংশার ভাহ্বানে আমরা সকলে এগানে

উপস্থিত হইয়া ভোমাকে লাভ করিতেছি
ভাগর মঞ্চল প্রাথনা না করিলা কি ক্লয়

প্রতির হইতে পারে ?

ে ইশ্বর তেনের নাম দকতে ঘোষিত

ইউক, তোমার মহিনা মহীয়ান্ ইউক, তো
মার ধর্মা সম্দার প্রথবী মধ ব্যাপ্ত ইউক,

এই আমার্লিগের আগুরিক প্রথিন।
।

ওঁ একমেবাহি দীয়ং

অনন্তর এযুক্ত অধোগ্যানাথ পাকড়ানী মহাশ্যু সকলের জাদ্য পথ। এই কিতকর অসতেলী উপদেশ গুদান কবিলেন—

বাহিতে বাজবগণের আলন্দকর সমাগম, অন্তরে দেই চির জীবন-সংগ্র মধুময় আবি ভাব, অদাকার এক মহোন্দবের মধুরতা ও আ্মানের জীবনের চরিভার্যতা সম্পাদন করিল। যে প্রকার প্রত। শা করিছা এই মহোৎসবের প্রত্তীক্ষা করিতেছিলাম, তাহা পরিপূর্ণ হইল। স্নিক্ষমূর্ত্তি স্কলাণের শ্রীতি বিকশিত মুখমগুল দর্শন করিবার সঙ্গে সঙ্গে ্মই চির-সুক্দেন আভিতাব **অনুভূত হ**টল। অ∤য়। তেজধী হইল, মন বিনীত হইল, জনয় কোমল হইল জ্ঞান পরিভূপ্ত হইল, ত্রীতি চরিতার্থ চলল ইচ্চা পবিত্র হইল, প্রাণ শীতস হইল। কি শ্রভ ক্ষণে ব্রাক্ষধর্ম পাবিভূত হইয়াছিল। কি আশ্চর্যা <u>গ</u>ৃতিতে ইং৷ প্রদারিত হইতেছে ৷ কি মধুর ভীবে ক্র সমাজের শুভ সাধন করিতেছে! ভবি-ষাতে কি মনোহর দৃশ্য প্রদর্শন করিবে !

বথন বিজ্ঞানের তীক্ষ্তর আলোক প্রতি আত্মার স্বাধীনতা আবিষ্কৃত করিল, মনুষোর অন্তান্ত বিলুপ্ত করিল, সমুদায়

धर्मभादक सम धमान धमर्भन कतिए ना-গিল, সেই উপযুক্ত সময়ে ব্ৰাহ্মধৰ্ম আৰি-ভূতি হইয়া দেই প্রত্যাগার দহিত প্রতি আত্মার সাক্ষাৎ যোগ প্রকাশিত করিল; স্বাধীনতার মধুর ভাব, কর্তব্যের সরল পাথ, প্রীতির প্রকৃষ্ট রীতি শিক্ষা দিতে লাগিল। এক দিকে চির-দেবিত অনুকারে এক্সছ-বন্ধন-বশত বিদার বিগকে, বিজ্ঞানের বিপকে, স্বাধীনতার বিপক্ষে, সভ্যের ভি-পকে কোলাহল; অন্য দিকে অস্বাকার म्हेर्फ महम। प्यार्तारक श्रम क्रिया লুকনবিধ অন্ধতা, এক দিকে কড়ের ন্যায়— एएखेत नाच कर्ज् झ-हीन हहेश जालमाटक ঈশ্বরের প্রতি নিউর ভাবিয়া কাশুরুষতা, यना फिर्फ केश्रत हहेर विक्रिय हहेगा আপনাতে শুতন্ত্র ভাবিয়া পৌরুত্যর পরি-বর্ত্তের স্বেদ্ধার ক্রান্তর এক দিকে প্রকৃতির অভীত স্বতন্ত্র পুরুষকে আপনার সমান নীচ ভূমিতে প্রকৃতির শৃত্থলার মধে। অ নিবার নিমিত প্রয়াম, অন্য দিকে এক তিকেই প্রকৃতির অগীত গুণে অলম্ত করিবার জন্য আগ্রেহ: এক দিকে ঈশ্বরের কর্মাক্ষেত্র হইতে পলায়ন করিয়া ঈশ্বরের পরিবর্ত্তে শুনোর উপর জীতি বশ্বনের टिकी, अना नित्क क्रेश्रद्धत कार्या श्रद्धा হইতে গিয়া ঈশ্বরকেই বিশ্বৃত হওয়া; वाकाश्यां वह छेख्य निक्त मधा ऋता দণ্ডায়মান হুইয়া নিভান্ত অসকত পরস্পার বিরুদ্ধ এই উভয় পক্ষের দামঞ্চা বিধান করিবার নিমিত্ত অবতীর্ণ হইল।

স্থাধীনতা অপহরণ করিয়াকোন আত্মার অবমাননা করা ব্রাক্ষধর্মের উদ্দেশ্য নয়; কিন্তু সকল আত্মাকেই বথার্থ স্থাধীনতার উপ্থাপিত করা ইহার অভিসন্ধি। জ্ঞানের আলোক নির্বাণ করিয়া অন্ধকার উৎপ্লম করা ব্রাক্ষধর্মের উদ্দেশ্য নয়, কিন্তু জ্ঞানের যথার্থ পতি নিরূপণ করাই ইহার অভিসাল। একটা সংকার্ণ সম্প্রদায় নিশ্মাণ করিয়া পৃথি-ৰীর সমস্ত সমাজ হইতে তালকে বিভিন করা ব্রাক্ষধর্মের উদ্দেশ্য নয়, কিন্তু সকল **সমাজের পরস্পর** বিসম্বাদিত। উৎসল করিয়। मकलरक এक और जिन्ह्र व रक्षन शृक्षक (मर्जे সাধারণ শান্তি-নিকেডনে প্রবেশিও করাই **ব্রাহ্মধর্মের অভিস্থি। কোন** সভ্যের বিন্দুমাত্রও বিলুপ্ত করা ব্রাহ্মধর্মোর উদ্দেশ্য নয়, কিন্তু সকল স্থানের সকল সভা সংগ্রহ করিরা দেই মতা স্বরূপের মহিমাকে মহী-য়ান্করাই বোক্ষধর্মের অভিসন্ধি। অজ্ঞা-নের অভি, ছুর্বলের অভি, পাপীর অভ খুণা প্রদর্শন ক্রিয়া আপনার অনুদরিতা প্রদর্শন কর। ব্রাহ্মওর্ন্সের উচ্চেশ্য নয়, কিন্ত সকলের আত্মাকে সংশোধন করিয়া ঈশ্ব-বেব জন্য প্রস্তুত কংগ্রু ব্রাক্ষণেরে অভি माञ्च। এই मकन लेफट्य डेएकमा मश्मा ধনের নিমিত ত্রাহ্মবহেমর আবিভাব।

আমর: ত্রাহ্মবর্মের একান্ত পক্ষ পাড়ী। ব্রাহ্মণর্ম আমাদিগকে বে আনন্দ—যে উৎ-मव आनिया (मय, ७: हा आगातिह ऋनयत्र সম্পূৰ্ণৰূপে আক্ৰ্ন করে। ব্ৰ ক্ষধন্ম व्यामामिशदक एय छे भएमन । एत्र. व्यामादमत **জান,ভাব,ইচ্ছা এ**কত্র হর্যা ভারা **অস্পী**কার **করে। ধেখানে ব্রাহ্ম**নর্মের আলোচনা হয়, মহত্র কর্ম পরিত্যাগ করিয়াও মেখানে ষাইবার নিমিত্ত হন্দর ব্যাকুল হয়। ত্রাকা ধর্মের এতি ঘাঁখার বিল্ফুমাত্রও স্নেহদৃষ্টি দেখিতে পাই, মনের সহিত ভাঁছাকে আ-লিক্সন করিতে যাই। অধিক কি, স্বদেশের কোন র্ভান্ত শুনিলে চির প্রবাসীর ক্ষায়ের ভাব যে অকার হয়, ত্রাহ্মধর্মের নামোলেখ শুনিলে আমাদের মন সেই ৰূপ ছইয়া व्यानत्म नृष्ण कतिए श्राटक।

टकन खाक्तरमं भागानिश्चरक व बकात

করিল

করিল

·এই জন্য যে—ব্ৰাহ্মণৰ্ম আমাদিগকে দেই আবিষ স্থান ব্রহ্মনিকেতনে লইয়া যায়, महें व्यागिषिक वक्कुटक व्यामीत्मत इन्ह्र আনিয়া আনাদের তাপিত প্রাণ শীতল ক রিয়া দের, যথনি চাই তথনি দেই সর্বা সন্তাপ হারিণী মুর্ভি আম:দের সম্মাতা **আনিরা** দেয়: পাপে প্রিত হঠনে নেট প্রিত পাবনকে শ্বরণ করিয়া দেন , সকল কার্য্যে দেই মক্সল হস্ত প্রদর্শন কবিষ। উ। । র প্রতি স্বামানের জীতিকে ধিতুতিত করিয়া (मञ् , भाक छः दथ णाकुन ४२ दन (मञ् খেম চকুর সক্ষাতে লইয়া মাত্রা প্রদান करत, अनः बाखरनय आश्वासन्त व्यापन स्थापन हाई-পা আমি।কে খলাল করিবার উদ্যোগ ক বিলে দেই শান্ত স্বৰূপের পাণ গান কবিশ্ শা, স্থ শিক্ষা দেয়। মঞ্জুমি সদশ দংসার ক্ষেত্রে যে এক মাত্র ছায়, অ সালের বিশ্রাম ন্তান, ব্ৰাহ্মপৰ্ম সভি সহকে অভি নিকটে তাহ আমাদিগকে আনম্য দেয়। আমাৰ-দের চরম স্থান প্রনায়া নিজ্ব মিল্ডা এ কেন, কৈন্দ্ৰ প্ৰভাগ নগা কিলাগা, ও জননীর নায় কে।মল, ব্রাভাবজোর ই এল মধুমর ভাব। किनि किरल अर्थुव मस्यानिश्वत स्वीत सर्वन কবিবার নামন্তই বিশ্বতশ্চক্ষ্ নতেন, কিন্তু ভক্ত জনের বাঞ্জা কম্পাতরু : ব্রাক্ষণশ্মেরই এই মাশাকর উপদেশ। তিনি উদাসীন ও মূক সাক্ষী নহেন, কিন্তু আমাদের চির-জাবন-সহায় ও চিরম্ভন উপদেয়ী; ব্রাক্ষধ-শেরই এই নিগৃত মত। তিনি কেবল পা-পের দগুদাতা নহেন, কিন্তু পাপী সনের পরিক্রাতা, ব্রাহ্মধর্মেরই এই শীতলকর সা স্ত না। বে তাঁহার একান্ত সাজ্ঞাকারী, ভিনি কেবল যে ভাষাকেই পরিতাপ করি-বেন এমন নছে, চির জীবন যে তাঁছার বি-কন্ধার্য করিয়াছে, তিনি তাহাকেও পরি-वान कतिद्वनः खाक्त दर्भावरे के वे व्यवस्थातन স্বর্গ-ধানে অবেশ করিবার 🔻 নদারতা। নমিত্ত মৃত্যুর থালিস্কন অপেমা করিছে ছত্বে না, স্বাধীন ভাবে একটি কর্তবের অনুষ্ঠান কর, নিজ হন্দ্রের মধ্যেই সেই ष्ठत (मृश्वि. ७ शाहेर्द : वाकायरमांवहे कहे भूना ए भरम्म। जाभनात छेपत कर्जु इ कत् स्विन इटेटवः जिलार ध्यम वस्त्र कत्, পরিকৃপ্তহ্বে; ইচ্ছাকে মাধুকর, কর্ व्यात श्व महत इहेटव : खाध्वतस्य हुई अहे তৃত্তিকৰ আ..৮শ। ঈগরের মঙ্গল-স্বরূপে নির্ভর কর, আপেনার পৌরুষ অবলয়ন কন, পাপের উপর জগ লাভ কর, অকুতো চরে চলিয়া যাও, বোদ্ধানেরই এই তেজ্ঞা ব্<mark>কা। ব্ৰাক্ত্ৰেরই এই সকল মহত্ত</mark>ম छ ९८६८। এই कता खाक्यर देत अह গোৰন ও এত আকর্ষণ।

এই गर्वाक सूकत अध्यक्षिण पानाकति উৎসৰ ভূমি নিম্মাণ করিল, উৎসবস্থার উদযা-টিত কারল, সকলকে আহ্বান পূর্ব্বক এ থানে দমবেত কাবল, স্বর্গের আনন্দ পুথি-दीरक व्यवधीर्व कतिल, व्यामारभत मुक्तिक ठण् अकृष्ठि । कतिया मत्नाव्त मृत्रा अपर्कान করিল। অভএব আজি ব্রাহ্মধর্মেরই জয় ঘোষণা কর, **ভ্রাহ্মধরেই গুণগরিমা গান** ব ! : আর মহোৎসবের আনন্দ, যত পার. উপভোগ কৰ। কেব**ল ব্ৰাহ্মদের জ**ন্য নয়, কেবল বজের জনা নয়, কেবল ভারতের क्रमा नय, मभूमाय भूवितीत स्ननारे अरे उद-দব দার উদাটিত আছে। मकरलब्र मन দমভাবে আকর্ষণ করিছে পারে, এমন नाहा (गोन्मर्या এ डिएनर्य किष्ट्रहे नाहे; তবে এখানকাৰ এই সামান্য বাছ সৌষ্ঠব

यि कितान मीन ही तन नज़न मन आकृषे करत, করুক, কিন্তু ইছার যে স্থান হইতে স্থাকর্ষণ শক্তি বিনিগ্ত হইতেছে, ভাছা ভোমা-দের সকল ইন্ডিন্ডের অবেগাচর। ধন চান, রত্নগর্জা পৃথিবীকে খনন করুন, মান সভান চান, রাজ প্রানাদে গমন কর্মন, কেবল প্রার্ভ সকলকে চারতার্থ করিতে ঢান, স্বেক্তাচারের সহস্র দার**্টান্যাটিত** আচে, তথায় প্রস্তান করুন , প্রভুত্ব চান, भाषनात मान मागौर निकटिं अवश्रास कः सन, यांन ध्यावल हान, ध्यावल हान, व्यादाम চান, শাল্ভ চাল, জম্মানকে চাক, এই উ.-मदनत वा नाजाशी क्षेत्र । এখানে भदनत অনুরোধ নাই, মন্ত্রের অনুধোধ নাই, শ্রভুরের অস্বোধ নাই, পদের অনুরোধ नारं, धर्यादन नेश्दतंत्र खलूरवाध, त्थारमत অনুনাণ, ধর্মেন অনুরোধ, কর্ত্তরের अनुरम्प । मरमाद्य याका लहेला (खर्छन् ক্রিড়ারের বিচার হয়, এখানে ভাছা নাই, এখানে যিনি ঈশ্বরের মত নিকটবভা তিনি তত শ্রেষ্ঠ। এখানে সকলই বিগরীত; যিনি এখানে আপনার শ্রেষ্ঠত্ব কিছুই চান না, তিনিই এখানকার স্বাপেকা; শ্রেষ্ঠ। যিনি এখানকার কোন কাম্যের প্রভুত্ব ক-विट्ठ हान ना , जि.नहे भक्त कार्याव अजु। যিনি যশের বিল্ফুমাত্রও চান না, তিনিই এখানকার প্রধান যশসী। যিনি এখানে মান সম্ভন চান না. এখানে তাঁরই মান দ-ভ্রম আধ্রা । যিনি আপনার সর্বস্থ পরি-ভাগে করিরাছেন, তিনি এথানকার দক্ষা-পেকা ধনবান্। যিনি আপনার জন্য কিছুই রাথেন না, এখানকার সমস্তই ভার कता शादक। अधिक कि, मश्मादत दवन রাজি, এখানে তথন দিবা, দংদারে যথন मिन, এখানে তথ্ন রাত্রি, সংসারে ধিনি নিরস্তর জাগিয়া আছেন, এখানে তিনি

ঘোর নিদ্রায় অভিতৃত; সংসারে যিনি নিদ্রিত, এখানে তিনি ভাগ্রহ। আনাদেব खेरगद्वत वहे व्यवद्या, वहे त्रि, वहे छात, **बहे डको** ; हेव्हा हम, छेश्मद क्लाउन श्व-বেশ কর; আনাদিগকে আপাধিত কর্ আপনারাও আপাাবিভ হও। शांकिया पर्णन कांत्रत हेशात चा नेश नाहे. অন্তও লাঠ, হয় ত দকল চ বিশৃত্বলা— সক-लप्टें बाहालकः (प्रविद्या । अस मृत्य छ-বেশ কৰ ইছাৰ অৰ্থ বুকৈছে পারিবে। " खन्द। १ क मनम श या भी ए माना ए कि अन-নাদাং , ভনিদং সংবনস্তচ্ছ। শ শপুৰ্বে কে-ৰল এক প্ৰব্ৰুক্ত মাত্ৰ ভিলেনে, আনা আৰ িছুল জিল ন'; তিনি এই সনুদায় স্থাটি कतिद्रामा" बहे हुक् बहे कहा अवगंता রের ভিভিড়ম। 'তদেব নিতঃং জনে मन्तर रि ४९ प्रकेश नित्रभारमकरमवाधि-धीयः गर्वसाया मञ्जूषाम् मञ्जामा मञ्जू বিধ নারিশা জিলদাপাও পূর্বি প্রতিমন্তি।" শ্তিনি জান স্বৰূপ, অন্ত স্বৰূপ, মক্ষল श्वतात्र, निका, निवन्त्री, नक्षात्र, मर्काराहणी, मर्काञ्चन, नित्रस्य, निर्काशन, अक्रमाज, অবিতীয়, মাঠাণজিলান্, সংগ্র পরিপূর্ণ; কাহারও সহিত ভাঁচার উপনা হয় ন।।" हेशव कीवन। " अकता उत्तारवाशामन्या পারত্রিক মৈ চিকঞ্চ শুভন্তব ভি '' " এক মাত্র ভাঁহার উপামনা দারা ঐচিক ও পারত্রিক ম-**জল হ**য়।" এইটি ইহরে ফল। "তক্মিন্ প্রীতি-**ভ**দা প্রিয় কার্য- সাধনঞ্জ ভন্তপাদনমের।" '' জাঁহাকে প্রতি নরা এবং ঠাহার বিয় কার্যা সাধন করাই তাঁহার উপাশনা।" **बरेटि यागा**तरमत छेशमव।

ব্রাজ্যণ। প্রকার আস্পদ্ শ্রেমর আস্পান্ স্লেছের আস্পান্ আত্যাণ। আজি বেন তোমাদিগকে বহু দিনের পর দেখি-জেছি, কুশন জিজ্ঞানা করি, উত্তর দাগু।

षोगामत (महे कक्षां-भूवं भिष्ठां, स्त्रह-भूवं মাত্র সংবাদ কি ১ এই এক বৎসর ভিনি কি ভোমাদের হৃদয়-মন্দিবে বিরাজমান আছেন > নৎপুজের ষত দূর উচিত, দেই পরিনাণে এই এক বংগর কি উচ্চার সেবা কবিতে পারিয়াছ > ভাঁহার প্রদন্ত। কত টুকু উপাজ্জন করিয়াছ ? তিনি যথন যাহা বালয়াছেন, প্রীতির সহিত ভাষা 🖍 পালন ক্রিতে পারিয়াছ ১ এলানে ক্রি विপश्चि बातक, छभुमाव ~ A (35 व्हेशाटक ? अथारन 🥊 লধিত ব্ৰতেব ভ*্* भरम श्राम भावमः 🔍 भाः मारे ? अशरम क्या अरबर १०८क, १५ ধূর্ব প্রভারক আনেক, ক্লপা পাত্রত মনেক, দ্যাৰ ও ৰাখ্যত হয় নাইছ এখানে ১০০০ ष्मश्री इहेवान यर्थके मसुर्वस्, धर গুণ ত ৰক্ষিত হইয়াছে ১ এখানে সৎকৰ্ষেত প্রাক্তবন্ধান বিষয় বিষয কণ্ড নাই ০ এখানে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র বিষয় একখা मछ (उद्देश्य भर्थके म झार्यमा, उद्भाग क वि-एषत ভার উপজিত হয় লাই ? এখানে **সকলে** নমান পুৰ্য উপাজ্জন কবিতে পারে না, তজ্ঞাতে ৷ বের উদারভাগ ত নাম্বাত र्य नार्रे १ (वंशार्त केश्वरतंत्र क्या द्यावनः কবা উচিত, সেধানে ত আপনার জন ঘো-यना कतिएक साथ नारे। दाश (स अन्यद्रत महिमारक मधीबान करा छ, 53, तमशास्त অপেনাৰ মহিমাকে ভক্ষাত করিতে যাও নাই > ব্রাফাগণ আমরা কি জ্ঞান ধর্মো এত দূর উন্নত হইরাছি, আমাদের আর खाविट इटेटव मां ? देहा कथन हे मा। व्यामहा (महे मर्वनाकोत मगरक (य कड অপরাধ করিয়ালি, ভাঁহার আজ্ঞাকারী দাদ হইয়া কত বার যে তাঁহার আফরা লজ্মন ক-রিরাহি তাহার সংখ্যা নাই। অতএব আজি

দকে নৈলিয়া তাঁহার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিব। এই সমৎসর কাল তিনি যে অম্বপম করুণার সহিত আমাদিগকে প্রতিপালন করিয়াছেন, রোগ শোক, ভয় বিপত্তি, পাপ
ভাপ হইতে যে রক্ষা করিয়াছেন, সহত্তে
কর্ত বিশুদ্ধ স্থপ—আনন্দ আমাদেব জন।
প্রেরণ করিয়াছেন, ডজ্জনা তাঁহাকে আজি
কৃতজ্ঞতা উপহার প্রদান করিব। ভবিষাতে
ভাঁহার আজে লংগন করিয়া ভয়ানক পাপে
পতিত হইতে না হয়, এবং যাহাতে ভাঁহার
কর্থো অনাঘাদে সম্পন্ন করিতে পারি,
ভত্মিনিস্ত ভাঁহার নিকট শুভ বুদ্ধি ও ধর্মা
বল প্রার্থনা কবিব।

ছে নিশ্বপি । অধিল মাতা প্রদেশব ।
ত্যেন্রট শক্ষম প্রতি উপ্রেলাগ করিছে
করিতে আন্না নির্নির সম্বানর অভিবর্গরত
করিলাম। তোমরট স্কেন্দল অক্ষে অধি
নাল ইট্যা এক ব্রুমনের পথ অভিক্রম করিলায়। এই ব্রুমন মধ্যে কছ স্ক্র্যানন ভূমি স্লেকের সহিত প্রদান
করিরাছ, ভাষার সংখ্য করিতে পারি না।
আমানের সংশোধনের নিনিত্তে ভূমি যে
সকল শোক, তথ্য বিপদ্পোরণ করিয়াছিলে
ভাষাতে ভোমারই মন্সল ভাব সম্ভাব করিবাছি, এক্ষণে কোটি কোটি নমন্ধার পুরুক
ভোমার চরণে ক্রজতা উপ্রার দিছেছি,
ভূমি গ্রহণ করিয়া আমাদিগকে ক্রভার্থ কর।

হে মজল দাতা মুক্তি দাতা প্রমেশ্বর!
তুমি সকলের অন্তর্যামী ও সকল হৃদয়ের
অধীশ্বর! আমাদের পাপ পুণা, ধর্মাধর্ম,
উন্নতি অবনতি সকলি কামিতেছ। তোমাকে আর কি বলিব: আমাদের আল্লাকে
গ্রহণ কর. এবং এই মলিন আল্লাকারা শাহাতে তোমার কার্যা দিল্ল হয়,ভোমার মঙ্গল
ইচ্ছা সম্পন হয়, ভাছাই কর। হও পুরকার ভোমারই হস্তে।

হে মজলস্বরণ পরমেশর! ভোমার
মঙ্গল রাজা বিস্তার কর, ভোমার প্রেম শিক্ষা
দাও, আমাদিগকে ভোমার ইচ্ছার অনুগত
কর। পৃথিবীর সর্বাত্র তোমার জয় ঘোষণা
ঘোষিত হটক, ভোমার নাম কীর্ত্তিত হটক,
নর নারী সকলে মিলিয়া ভেমোর মঙ্গল ভাব
বিস্তার করিতে থ কুক।

e openaifa श्रीयः' ·

অনস্বর ব্রহ্ম-স্পাত হইয়া সমাজ ভঞ্চ হইল এবং সকলের মুখে সন্থায়িত প্রি-ত্রতার চিক্ত লাক্ষত হইতে লাগিল।

ইজিপ্টীয় নত।

১৫৮ দ থ্যক পত্রিকার ১৫৭ প্রস্ত'র পর।

আনুবিদ্ ইজিপট লেশ্র মধো আনু বিস অভ্যন্ত বিথাতে দেবকা চলেন। চলু-দার ইজিপটাযেবা বিশেষত সাইনাপো দি দেশীরেরা ইকাকে অভিশ্য ভান্তি কবিত। কুরুরের ন্যায় ইকার মন্তক চিল। কুরুরই ইকার বাহন। তনি প্রান্তক চিলেন। কুরুরই কি মাইনি দেবার সহচর চিলেন। ইনি দেবভাদিগের সমুদার কার্যেক আরম্ভক ও দুতের ন্যায় ছিলেন। এবং তনি মূত লোক দিগকে যথোপযুক্ত স্থানে লইয়া ঘাইতেন।

থং। বিশ্বকর্মা দেমন এ দেশীর শিশ্প করাদগের দেবতা, থংও অনেক অংশে ইজিপ্টীয় দিগের দেই কপ দেবতা ছিলেন। গ্রীক ও লাটিন গ্রন্থকারের। ইহাকে মাকরি দেব বলিয়া গিরাছেন। ইনি ইজি-প্টীয়দিগকে সমুদ্য় নিয়ম এবং অক্ষর বিনাম, জোতিষ, জামিতি, আয়ুর্বেদ ও অনানা বিদায়ে শিক্ষা প্রদান করিয়াছিলেন। আইবিস্নামক পক্ষী ইহার বাহন ছিল এবং ইহার এই কপ ইক্ষা যে সমু-যোরা আইবিস্ পক্ষীর নায় প্রতিমূর্তিতে

আমার পূজা করে। টাইফন • যখন দেবতাগণকে আক্রমণ করিয়াছিলেন, তথন ইনি আইবিদ্ পক্ষীর ৰূপ ধারণ ক্রিয়া পলায়ন করেন।

अगितिम्। जि॰म्थ मिरम माग धतिरन जिन भ र यापि फिटन वर्गत इस, इंहाटड নৌর বুৎসরের আর পাঁচ দিন অবশিষ্ট थात्क। त्रियां (पूर्वी ७३ शाँव नित्य सूर्या, হকুলেম ও শনি (স্বাটারণ) হইতে ষথাক্রমে ভিনটি পুল্ল ও চটি কনা। প্রস্ব क्दत्रन। स्ट्रयं। स्ट्रेटच अमितिम् अ व्याक्त-यादिम् धरे छुट भूछ, भनि घरेट इ चारेमिम कना। এनः इकू. निम् इहेटड छ। इकन भूछ उत्पर्शिम् कना उद्याद्य क्रेशाहिल। अध्य পুত্র ভিনটি, পরে কনা ছটি, ক্ষম গ্রহণ করে। দেব ও দেবীতে এই পাঁচটি ভিন্ন ভিন্ন পিভা ছইতে এক মাত্র হই গতে জন্ম গ্রহণ করেন, স্ভর ও ইহাছের পরস্পর ম- । (रापित ও मरहामद्रः मध्यः व्यात्का विश्व কেবল এই সম্বন্ধ চির কাস বর্ত্তমান চিল म। ওদিবিশ্নিজ সভোদর আইদিশ্ দেবীকে ও টাইফন নিজ ভগিনী নেপ্রিস मिवीटक विवाह करतम। हेडिकी जिल्हा এই পাঁচটির বিশেষত তিনটি দেবের পুজাই अधिकडत अठांनड इहेग्न। इन । इंड्रॉटिंग्ड मस्या आंक्रयातिरमत अधिक त्रुखांच आश्र হওয়া যায় না। অনেকে অনুমান করেন, ইজিপ্টায়ের৷ স্র্যাকে ওসিরিস ও চক্রকে আইনিস্ বলিয়া পূজা করিও। উভয়ে স্থাও চল্লের অধিষ্ঠাত্রী দেবতা ছिলেন।

ওিসরিসের জ্বের সময়ে এই দৈব বাণী
 হইয়াছিল বে, সমুদায় পৃথিবীর রাজা জন্ম
 গ্রহণ করিলেন। ইনি সমুদায় পৃথিবীর রাজা

হটয়াছিলেন। ইান সহস্ত লোচন, তেজোময় ও মঙ্গলদাভা ছিলেন বলিয়া ইহাঁর
অন্দিল এই নাম হইয়াছিল। ইনি ষে
সমুয়ে টাইফনের রাজো গমন করিবাছিল
লোম সেই সময়ে তাঁহাকে স্যারাপিস নামে
আক্রান করা হইড। যেমন আক্ দেবভা
জুপিটারের সাহত টাইটাগনের, পার্নিক
দেবভা অন্মনের স্হত আহি মানের এবং
ভিন্ত দেবভা ইলের মাহত আহি মানের এবং
ভিন্ত দেবভা ইলের মাহত র্লাস্থরের বৈর
ভাব হুইঘাছিল, সেই রূপ ওসিবিনের স্
ভিত্ত টাইফনের নির্ভর বিবাদ বিসম্পদ্

এकका अमितिम (प्रव. (प्रवर्ण ममस्ति । হারে পৃথিবী পরিভ্রমণে নির্গত হইয়ালি লেন৷ সেই সময়ে ভিনি পুৰিবীস্থ লোক-मिश्रातक गञाण। विषयि ७ क्रांषक**्यां भिका**। প্রদান কবিলেন ', ওসিবিস্ পৃথিবা পরি सम् करिया अधावृत्त करता श्रेष के हैं। ফন একটি ভোজেব সংখে ভাঁছাকে সিন্তু কের মধ্যে পুরিষণ রুদ্ধ করিয়া ফেলিলেন এবং লৌহনীনকে এ দিন্দুক বন্ধ করিয়া नील नगीटङ निरमान विशिद्यान । गिन्छुक ए गिएक अगिद्र गाल समीत के शिक्षेट नामक भूश मिशा मानात विभी विभाउि कहन। र्रे जन्हें रिश्त अरे निमान है। कि इस्थत নামেট্লেথ ক বলে অতাৰ শক্তি হইত ৷ এই সমধ্যে ওমিারদের আটাবিংশতি বৎসর वयन् इहेगाङ्ग । कामम (भटमत कम्मू ख मार्छिम् कार्रिका अथरम छ मिन्स्क मिथरड পাইয়াছিল। ওমিরিম দেবের পরা আ-इतिम् (पर्वे । এই छूट जिनांत मण्याम खनियाः মাত্র মস্তকের এক গুল্জ কেশ কাটিয়া কে-

পাতঞ্জল দশনে অশ্বাবা উশ্বত্ত নির্মাণ-কাম
বলিষা থাকে ডাহার অর্থ এই —নিরাভার উশ্ব কুত্তকার
ও কৃষক প্রভৃতির শ্রীর ধারণ করিয়া ঘট নির্মাণ ও কৃষি
প্রভৃতিব দ্টাত প্রশ্ন কবিয়া ছিলেন। এই মতের সহিত্ত
আহিশিক সাদৃশ্য দেখিতে পাওয়া যায়।

[•] ইনি কোন কোন বিষয়ে যম ও কোন কোন বিষয়ে শক্ষরের ন্যায় ছিলেন।

লিলেন এবং শেকস্তুতক পরিচ্ছদ পরিধান 🐇 হয়৷ ইভস্কল গে*ছ* নি**ন্দুক অন্বে**শণ কৰি**তে** লাগিলেন, গ্ৰেষাহাকে দেবেন, ভাছাকেই 🕆 ঐ পিন্দু কের মংবাদ জিতাগো করেন। এমন মন্দ্ৰে কৃষ্ঠ ও ব বালক ভাগেকে বানল : (र. मिन्द्र के बीन समीद के। (किंक भूध । प्रथा) মনুজে পতিত হইলাছে: অনন্ধ আই- : लिन देन्द्र दानी भागा अप्याक इकेटलन एवं, रमही मिन्छुक मार्ग्स श्रीडिक इन्द्रेन वामाखाः, জুফান উপাত্তিত হয়, ভগোগেছ নেই মিন্দুক मन्द्रपत औतः खी व हिन्स् मासक मदम देल-विक्र हो। एथीन गर्नक छ। जन ए छ-लहरूर अक्षेत्र किला। (मन्यूक्ति टाइ। र किंध्दर दिवन में १० ध । इस सम्रज्ञ । मह कुन গুলি প্রক্ষার মণ্যুক্ত হর্মা। একটি এক। গু व्या ह ए। ५०० । मिन्छु हिंदि । नई खन, ए নক্ষেত্ৰ চলাৱে ৮ বুকী ২ইব খাকেয়া। ভাষদ কার ১০খা এলন। তুন্যমন্তির রুম্ম ভাব । व्यक्षि भागा व नाम व नुकति उन्न প্রক ধ্ ভবনের একটি স্থান্থাণি কর नाइका: पार्शनम् । भी देननवादा हा : এই নংবাদ ভাষ্যত হট্য। বা**ই**বন ৮ে: গ धरम विशिवम कार धक कभी करिंगि-করের প্রশ্নে উপর্বদান করিবা রেখন ক-विष्ठ तो शदलन। এই भगाउँ वाक्र**अवदन**व अप्रकेश नाभी भाग शहन जैशिक्ट रथ। জভোৱা আইনিদ্ দেবীৰ **সন্নিটত হইলে** ক্রিত্রে গালে ইউতে সহল্পালেচ্যা সৌরভ শ্হণ ৰ হলপত লাগিল, লাদীরা এই সংবাদ वाक्रमंडियोरक अमान करत . রাজমহিধী এने मध्दान आप्त कडेया (लाक **वांता आहे**-নেদ দেবীকে স্বভবনে আনম্ন করিয়া আগনার শিশু পুত্রের ধার্ত্তী করিয়া রাবেশন। অংগ্ৰিম দেবী দেই শিশু**টাকে স্থনা না** ^{দিয়} অস্কৃতি পান করাইয়া রাখিতেন। এবং

প্রতি রাভিতে, ভাষাকে অমর করিবার মি-করিলেন ৷ অন্তর অতিমতি ব্যক্ত হ- ুমিত অংগ্র মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া স্বয়ং সেই স্তম্ভটির চতুর্দিকে বিলাপ করিয়া বেড়াই-তেন। কোন কারণে রাজমহিনীর অভঃ-করণে সন্দেহ উপান্তত হওয়াতে তিনি এ-নলা জাগারিত গাকিয়া আইনিস্ দেৱীর এই নকৰ আপপুৰ প্ৰভাক্ষ কণিচলুন এখং পুত্রটিকে অগ্নর মধ্যে নি,ক্ষপ্ত দেখিয়া ভাষ সীংকার করিতে লাগিলেন। ८ म है। हा म्कूमान अम्बद्ध लाइ विशिष्ठ करता ज्यन वार्टितम् (क्वी निक्रमूहर् ধাবর্ণ করিয়া মেই স্তুর্তী প্রার্থনা করিলেন। धनपुत (गई उन्न ७३ कित्य लगाया (गई मिन्यूकि मर्भन कविता धरन छेटेछ:यद রে।দন কবিটে লাগিলেন যে ভাগে এবিগ করিলা সেই শেশুটি প্রান্ত্রাপ করিল: তগন তিনি রাজার জোঠ পুর ও গের দি-म्बूक मर्मा ७८)(इ। द वहेता होक की एम्मा-লিমুখে গমন করিলেন: আতংক'লে গা্থ मस्या मी अम् नामक नेनिष्ठ कुकान छेपाञ्चल হুট্যা তাঁহার প্রনের ব্যাঘাত করে, ডা कोट के कि कि कि कि के के कि कि कि कि कि कि कि कि मित्रिम । जनमञ्ज এक घरणात भएषा ध विके कहेंगा मिटे निस्तुक एक्यकिन श्रुद्धक ওাঁদরিম প্রেব মৃত দেও লভয়। রোদন কারতে পাগলেন। ভাঁহার দমভিব্যাহারী রাজপুত্র রোদনের কারণ অনুসন্ধান করিছে ভাঁখার দালভিছ কটবা মাত্র দেবী ভালার প্রতি কঠোর কট।ক্ষপতি করিলেম, রাজ-পুত্টি অমনি প্রাণত্যাগ করিল। **অনন্তর** আইনিদ দেবী স্বামীর মৃত দেহ সঙ্গে । हेशा हे कि औँ स्मार्थ आहो सन क्रि**ला** नै।

দিন পরে তিনি শ্বামীর মৃত দেহকে অতি গুপ্ত ভাবে পুকায়িত রাখিয়া রুটস্ नगदत निक शुक्क रहोत्रग (बारश्रारकां) (मबरक पिथिटा जिटलन। अभिद्रक के दिक्स शक

পক্ষের রাভতে ইতস্কত অন্মেষণ করিতে করিতে ওসিরিস্ দেবের মৃত দেহ বাহির করিয়া ফেলিলেন, এবং তাহা চতুর্দশ ভাবে ছেদন করিয়া দেশের চতুর্পিকে विकिश्व क्रिया पिटनम। आहेरिया (पर्वी এই সংবাদ শ্ৰেশমত এক খানি সুদ্ৰ নৌক। আংবোহণ পূর্ব্যক দেশের চত্র্নিকে অস্বেয়ণ कतिएक कैंबरण उत्पापन भाष्ठ व्याश्वाहरी स्ति। এन शङ्बीत नतीत स्टल बिकिश इहेम्डिल: लाल ए। ऐम. एन्यम ७ छ-क्निक्रिक्त अने जिविध छ। जीत मण्डमा ভাহা ভক্ষণ কৰিলা কেলে। এই জনা के किली देवन। अबे किन श्राक्त म्हरमान দিপৰ অভিশার স্থা করিত। আহিসিম मित्री कांत्र कि करदन समित्र स सक **এ**क मार्य विद्याल रहेराजिल कालम सामक কন্ত্র পেই অঞ্জারা ভালাপূর্ণকরিলেন। এছ দিনেৰ প্ৰ- ও'নবিণ্ছৰ মৃত্যু ভবন **৯ইটে প্রতাহিত হ**ইবা নিজ পুজ ছোবদের निक्षे छिपछि इन्हेंद्वर, द्राप्त्र १७ পুর্বের পিছার ভিত্ত-বিবোলী টাণ্টক্ষনতে যুক্ষে পৰাস্ত ও রুদ্ধ করিয়ালিলেন। কিন্তু আইামস্ দেৱী ভাছাকে মুক্ত কৰিবা দেন। **ং**লার দ**্দেই কোধে জননীর মস্তকের মুক্**ট का छ्वा नम। ভाষ্তে ४९ वृधमञ्जूदान नात्र এकि मुक्ठे व्यक्तिश व्यक्तिम्हा অদান করেন। অনন্তর আইসিদের গর্ভে ওসিরিদের একটি ক্লশাঙ্গ পুত্র উৎপন্ন হন. তীহার নাম হার্পে:ক্রেটিস্।

স্ত্রীলোকের রচিত প্রার্থনা।

বেথানে কোম মন্ত্রোর বাঞ্তা নাই. কোন প্রচারকের যত্ন নাই, কেবল ঈশ্বরের হস্ত নিজ্ত ভাবে কার্য্য করিতেছে, আমা-দের ব্রাশ্বধর্ম সেখানে কি মধুর বেশ ধারণ করিয়াছে, পাঠ দং প্র অবগত হইয়া ঈশ্ব রকে ধনাবাদ করেন । কলেক তা ানবাদী কোন পরিবার হইতে একটি রচনা প্রাপ্ত হইয়াছি। তাহাতে নিপুন লেখনের নাম কোন আড়গ্র বা অলক্ষার নাই , কিন্তু কেবল পরিত্র কদযের সরল ভাবে ভালা আলক্ষ্ত হইয়া আছে। যদিও ভালার কোন কোন স্থানে রচনাগত কিছু কিছু দোষ লগিত হব, কিন্তু আমরা ভালার কোন পরিবর্গ না করিয়া অবিক্ল নিম্নে প্রকাশ করিভেছি।

त्यार्थकाः)

কে বেনালন্ জেলাৰ নিকট আলে এই জাইনা কৰিজেছি, যেন সংসাবের সংঘাত মুক্ষ হুইয়। ভোষাকে না ভুলিল পাকি ও যুহাতে उड्राचीत भी बज पुरशत खिथिकारी अवैष्टा निष्म, सुख भि के किएक पाति। अहं असे वाधेव नकटन লাভ হবিষ্ ভোষাৰ উপাসনা ক্রিকে পারি। হে ৮ বেশব। কোমার সন্ধারত কভ ভগরাধ ক রিখানি ভাষাবন্দ কাবলৈ অক্ষম, এই নিনিচেট ক্ষা প্রহোষা করি। ছড়ি, আমারাদগ্রু প্রাণ্ড ছ-ইতে মুদ্ধ কর, এবং সংকর্ম্মে নিম্নান্ধ কর। ভূমিই रक्त कराहरार संकर एउ.स. क पुलिय, आश्रहा द्यावय यालन क.यहा. छ। हा नद्रा (क प्रुक्त) व ুক্ল, হাল্ডইটে আম্বা একিমন পুল সম্পদ मसूषाम প্রাপ্ত रणना জीवन याद निकार विद्याहरू রিষ্ট্রেট্রেস্ট্রেয়া রুচিয়াছি, আভারণ আমার-দের সফলের কিঁচত যে পশুরুৎ মুদ্ধানা হইয়া জোনাব আবিলেনায নিম্ভুল থাকি। হে ককণা भग आमात करे चुन आर्थना धरून कता

দে পারনেশ্বর পার কর এই সংসার পারাবার।
চাশিয়া দার্যীয় প্রতি, হর মম এ ছুর্গন্তি,
আমি অভি মূচমতি, নাহিক পর্যোতে মভি,
কি হইবে পরে গভি, ভাবি ভাই নিরস্তর।
কুপা চুন্টে কুপাসিমু, পার কর ভ্রসিমু,

এ অধীন জনের বন্ধু, ভূমি বিনা নাহি আর।

মূহন পুস্তক

় - ভারতে স্থা । শান্তি-রুম পুর্ণ চম্পুকাস্য। শ্রী নরদা এমান বার প্রকীও।

ে। ক্ষাজি ভিরু বিদ্যাল্যাদের উচ্চ গোনীচিত্য থিচার বিষয়ক প্রাক্তার। দেন হাটা দেশাহিতৈ যিশী সভায়ে পঠিত। জী সামান্ত্রীশ দেন বিষচিত।

থে দুই খানি পুন্তক চাব। চইতে প্রকাশিও ছইনাছে।
ক্রিক্ত বর্ণাপ্রস দ্বাধ নহাম আগন নাম্ব জাও জাত্রর

কর্ণা নক্ত করিবাচেল। প্রবাল বিষ্যুক চর্চ মত হয়

হংল বর্ণােল করিবাচেল। প্রবাল বিষ্যুক চর্চ মত হয়

ইলোগােলাবা হিছা সম্পন্ন ছইতে পাবেল প্রস্থানপ্রকল করিবাল কর্পা ভলিপ্রােল ন্য যে আনর। পোক দ্বােষ্ট নিপ্রিচ হলে সম্পােশ ব্রেভি নক বাবে প্রশামিলা আল্লাহ্য করিব।

ক্রোব প্রশাল বিষ্যুক্ত জ্ঞান ক্রাজ্যালাল ক্যা ক্রাম্ব ক্রোব প্রশালক ক্রিকাল ক্রাম্ব সম্ব্রুক্ত প্রস্কার্যাল ক্যা ক্রাম্ব ক্রাম্ব প্রার্থী ক্রাম্ব ক্রাম্ব কর্ম স্বাম্ব ক্রাম্ব করা ক্রাম্ব ক্রাম্ব ক্রাম্ব ক্রাম্ব ক্রাম্ব ক্রাম্ব করা করা ক্রাম্ব করা ক্রাম্ব করা ক্রাম্ব করা ক্রাম্ব করা ক্রাম্ব করা বি

দিত' দুস্তক শ্ৰ'ক শিষ্ক কৰামলাল সেন মহাক্ষ भी । र्रा किया लिखान विश्वता स व्यक्ता व लिखा राजिन काकार खेखमा । पर्वे किस्तु कि स्वर्ध रहन में सुध्याल कार्याल অলাব জ্লাসা ক্লাড । জান্দ্ৰ স্থানি বাম না (ম জ্ঞানা সি कर भारत । पास वे कारियों का मिला मिला बारमाव । জার্মান নার্ম र मिश्रा ५ मा इस्स अ ही का कि । बार सन 雙行一(22年)州市 马克马首6、 山路14 fm (空气)16号 降* प्लोक्स लिक्स १८ किछि अधारीत **उ**च्छानेन न न दे किस Z : 6 51. W . সন্তাপি মানৰ এ বিষ্ণে একশানি ৰ चिल्कमधु इक क अ वह रह है । क्ष्मान ६५ व्हाना होर ह 宇子林 古京1016 3111111 福門鄉,在面面八起去 海-कर १ (च अभ्यान १०१न शेपकेट्स खाझाफा विस्कान म-रकार आहे। उपकार का भटा दे गार्चक को पालीर अन्तरर 长鸡 新姓尼语 公司部门 章章 ক্রিটেট শেক্ত আ জন ৫৪'পাৰ জাভিত দালিক প্রবালী যে প্রিশুদ্ধ ও উ-কৃষ্ট ८८७ छोडा प्रिन्तन - एकान के हो तिल्लाम नोमान धरा छ '४' स् 祝りて書り(お) (写す) कीर्नका करत राजा ७ ५ पत ७/८१७५ र महागरकः य किका, दश्वासीएक च्छान अध ध्यांत छेलीलन व वर्तन नी छर छ। झारल करावह ४ कुड अवदर्श्वीरक अपूर्वितक लेपात्र सार इस्कार्ण ऋषी साम्बर्धिक तेल क्य- 'ली १७६१ ५ि७ छ। ३ ल' ठेक्टन विट्युटम, स्बिट्यम ।

দ্শী হকু শুষ্ঠা। এই মাদিক পানিবা দুই ল কা জেকাতি বংগাছে, ইহাৰ উদ্দেশ্য ও অনুবাধিনী দ্বিকাৰ উল্লেখ্য স্থানি এই জন্য এ প্ৰিকা খাদির আহি আমৰ। ভাইডাৰে দু উপাচ কৰি। এ প্ৰিকার স্ব-হিড আমনিবিধের । বক্ষণ স্থান ভাইছো বিষয়ে অধিন কলি হাই ল , কেবল পোননা কৰি যে কট গ্ৰিক কলোৱাৰে উপবার্গ হইবা চির্ছায়ী হউক।

গ। এগি ডিন্ট পীড়ান ি কিংসার উপায়। এই পুস্তক ।
গানি ইংর'খি ভংগায় লিগিও। ডাক্কারেরা ইহার দেগি
নাগ বিচার ভংগান। জানরা এই পর্যান্ত বলিতে পাবি ।
ইহার চিনিৎসার উপায় আকাশ করা যেমন আবশাক,
ইব র কারণ আবিস্থার করা তাহা অপেক্ষা অধিকঙর।
আবশাক।

বিজ্ঞাপন

শ্রীযুক্ত প্রভাপচন্দ্র মন্ত্রমণার কলিকাতঃ ব্রাহ্মনাচের দানসংগ্রাহক পদ পরিভাগে করিয়াছেন, অতএব দাত রা প্রভিজ্ঞাত দা-সংস্থিক দান, শুভ কর্ম্মের দান ও দক্ষিণা প্রভৃতি সমুদান দান কলিকাতা ব্রাহ্মসমা-জেন সম্পদি চ শ্রীযুক্ত দিভে ক্রমার্থ ঠাকুরের নিকট প্রেরণ করিবেন। দাতাদিনের অধি কাণ্দের অভিমতে এই দানের টাকা ব্রাহ্ম-বন্ম প্রচাবের কার্যো নিয়োজিত হইবে:

> জ্ঞী দেবেন্দ্র ।থ ঠাকুর। কলিকাড। রাজসমক্ষের টু জ

ট্টালিবের অনুমতন্সারে প্রীযুক্ত অন্যোধানার প্রকড়ালী মহাশ্য তত্ত্বো দিনী কৃত্রিকার সম্পাদক হুইলেন, এবং শ্রীযুক্ত আনন্দরন্ধ বেদান্তবালীশ মহাশ্য কালকাতা ব্যাহ্মসমাজের সহকারী সম্পাদক হুইলেন।

> জী **चिट्छल्पनाथ ঠাকু**ৱ . বলিকাতা ব্রাক্ষমাজের সম্পাদন

অনুষ্ঠান পদ্ধতিঃ।

জাতকর্মনামকরণোপনয়নদীক্ষা বিবাহাস্টেশ্রেফিন্সান্দৈতি-সপ্তবিধসংস্কারাজ্যিক। 1

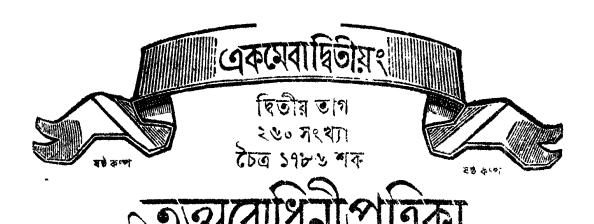
এই পুস্তক প্রস্তুত হইরাছে,মুলা ॥০ আটি আনা। যে ৰূপে ত্রান্দিগের গৃহধর্ম সকল অনুষ্ঠিত হণ, ইহাতে ভাহার আদর্শ বিবৃত্ত আছে। ঘাঁহারা এই পুস্তক প্রার্থনা করেন, কলিকাস। ত্রান্দ্যামাজে মূলা প্রেরণ করিবেন। শ্রী আননদ্যক্র বেদান্তবালীশ।

भा अर्गन्त्राध्य ६ वन छित्। शामा १ अलिनाष्ट्रा दो कममारकत महकाती मच्याहक।

নিঘ তি পত।

প্রতি প্রান্থ সান্থ সরিক ব্রাহ্মসমাজ . ১৬৯ ইজিপারীয় মৃত ১৮০ ব্রীলোকের রচিত প্রার্থনা . . . ১৮৩ এই তত্ত্বোধিনী পত্রিকা কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজ হইতে প্রতি মাসে প্রকাশিত হয়। ও স্থান্ধন মুক্তম মান্তি সম্প্র

১৯২১ কলিগভাস্ক ৪৯৬৫ :



রশ্বতিকমিন্নপ্রকাদীয়ানাথ বিশ্বনাদীতদিদ সর্বামসূত্রথ। তদেব নিতাং জ্ঞাননতঃ নিতং স্তল্জান্তব্যবংসক নবাবিতীয়ং সর্বাসাপি সর্বানিয়ন্ত সর্বাভ্যমর্ববিৎসর্বশক্তিমন্ত্রুবস্পূর্বজাতিম্যিতি । একস্থাত ইন্যবেল্পানন্ত্র ত্রিক্টমন্তিক অভস্তবতি । তলিন্ প্রীবিজ্ঞা বিধেন্যায়াধনক ওপুপানন্দেব

নেদিনীপুরে গোপগিরিতে বসন্ত কালে ত্রন্ধোপাসনা।

पान पामात्रिकत्वत् वामकीय उरमत्वत्र ান্বস উপস্থিত। অদা আমারদিগকে তিন अकात त्नोन्नर्या अर्थे श्रांत्म व्यांकर्यं कति-पारह; दगरखत मोम्म्या, नथा ভাবের भोक्त्यां अवश्रष्टेश्रद्धतः (भोक्त्या। यमञ কালে জগতে নব জীবন ও নব বদের আর্বি-জাব হয়; বন ও উপ্বন সকল নব প্লব ও মুকুলকুলে পরিশোভিত হইয়া চিত্ত হরণ করে; পক্ষিগণ নূতন স্ফুর্ত্তি প্রাপ্তি পূর্ব্তক অবরুদ্ধ কণ্ঠ নকল পরিমুক্ত করিয়া নঞ্চীত-स्था वर्षण करत ; ज्यपूर्व मनत ममीत्र मनत मन श्रवाहिज रूरेश महीत मर्पा जान्हरी ছথের সঞ্চার করে। কিন্তু বসস্ভের সৌ-न्मर्था व्यापका मथा खाद्यत मोन्सर्था कि (अर्थ । यथन ऋगन्न ऋगन्नरक **आकर्वन क**रत्. यथन এक महान महा-निष्ठं ঈश्वत-भर्भार्ग मन जना मत्रल गडा-निर्छ मेश्वत-প्रताराग म-বের সৌন্দর্য্যে মোহিত হইয়া প্রণর-পাদে বন্ধ হয়, সে ভাবের সৌন্দর্যোর নিকট বস-তের দৌন্দর্যা কোধায়? কিন্তু যিনি বসতের

मोन्द्रयात शकि कड़ी अन्त्रशा ज्यात्वत (भी ন্দর্যোর জনয়িতা, ভাঁছার দৌন্দর্যোর বি গীম। আছে ১ তিনি দৌকর্মোর প্রত্রবণ ভাহা হইতে সকল জোতি, নকল শোভা अक्न कोन्स्मा विनि॰एङ इक्टिड्इ। ^{रिक्}नि शुर्भत प्याकत, फिक्कि क्रीकरयान मा भव । अध्यादन अकुष्टा छात्रे छ। हात (मी-साया। तम भोनमद्यात महिक हटकात म-म्लर्क मारे, स्म त्मोन्मरयात महिल भवात নগন্ধ নাই। সে সোলতা যে থাকি কৈবাকৰ ক্রিভেচে, ভাষ্য আয় চকু ক্রি) ইবার সাধ্য इहेटकर ना। याकूल अन्तर्भिक कियन् অংছেন,কিন্তু আমাদের ব্যক্তিলভা কোথার ১ প্রেমী যে চলা যে প্রেমাস্পদ ভাষার প্রতি প্রীতি দুটি না করিলেন সংযে ব্যক্তি ঈশ্বরের নৌক্ষা নিরাক্ষণ করিবার নিমিত ব্যাকুল হয় ও তাঁহার নিকট প্রার্থনা করে, তিনি ভাহার মহাপে আত্মস্ত্রপ এক শিক্তরেন। श्रेश्वर (य का क्रिक श्रीत भोन्मर्र्यात श्रीक्रफ উপাদক দেখেন, তিনি তাহার মনশ্চস্থুর ম-শ্ব থে আপনার দৌক্ষী ক্রমশঃ অধিকতর প্রকাশিত করিন্তে থাকেন। এ অবস্থাতে माधक " উৎमदा९ উৎमदः याप्ति स्त्रीए

স্বৰ্গণ স্থাৎ স্থাং "ভিৎসব হইতে উৎসবে,
স্থা হইতে স্থাে, স্থা হইতে স্থাে উপনীত হযেন। এই কপে তাঁহার পাবিত্র
যৌবন বিগত হইয়া যথন তাঁহার বাৰ্দ্ধ্যা
উপন্থিত হয়, তখন কি তাঁহার আনন্দের
শাস হয় / কখনই নয়। বরং জাহ্। অস্তকালীন স্থাের জ্যোতির ন্যায় আরো গাঢ়
ওপরিপকু হয়। বাহে বাৰ্দ্ধকাের চিক্ল কিন্তু
আন্তরে চির-যৌবদ ও চির-বসন্থ। এই
বাহ্য বসন্ত সেই আধাাত্মিক বসন্তকে স্মরণ
করিয়া দিতেছে। ফিনি বসন্তের সৌন্দর্যাে,
সথা ভাবের সে ক্যেম্য ও স্থীয় সৌন্দর্যাে
বিরাজ করিতেছেন, আইন অদ্য আমরা
নকলে মিলিত হইয়া তাঁহার গুণ গান করত
আমারদের জীবনকে নার্থক করি।

७ একনেবাছি टौर्स

জীবনের প্রকৃত ব্যবহার।

৫৮ সংখ্যক পত্তিসভি ২৫৮ প্রষ্ঠ র পরঃ

किशोषां।--यि जूरि शौहदान्निड ३-ইতে ইচ্ছা কর এবং যদি ভোগার কর্ণকুষর व्यमश्मा-इति जुल्डिक्ट (वर्ष करह, छाइ। হইলে জড়তা পরিত্যাগ পূর্বেক কোন মহৎ বস্তুর প্রতি লক্ষ্য হৈর রাখ। যথন কোন মহৎ কাষ্য সম্পন্ন করিতে প্রবৃত্ত হইবে, তথন সর্বদা মনে করিবে যে, কোন কায্যই একে বারে নিজ্পন্ন করা যাইতে পারে ন।। ए वर्षे-अक लक्ष वक्ष वाक्रित इसि असीम ক্রিতেছে, ইফা এক কালে কণামাত্র বীজে নিহিত ছিল। যথন যে কার্য্যে প্রবৃত্ত হইবে, মনোমধ্যে প্রতিজ্ঞা করিবে, যাহাতে ভোগাকে কোন প্রতিবাসীর অমঙ্গল চিন্তা করিছা উল্ভির পথে গমন করিতে না হয়। কোন প্রতিবাদীর উন্নতির সহিত তুলনা করিয়া আপনার উন্নতি পরিমাণ করিতে ঘাইও না . প্রতি দিন িশ উন্নতির সহিতই

নিজ উন্নভির তুলনা করিবে। অথভিত্ত অধ্যবসায় অবলম্ব করিয়া অহরছ আপ-নাকে অতিক্রম করিতে যাওয়াই যথার্থ জিগীবার लक्ष। घटनात अत्र लाएड ঈর্ষান্থিত হইয়া জিগীবা রুভি চরিতার্থ করিতে ব্যা**কুল হইও না। তুমি এই রূপ** প্রতিজ্ঞা করিবে, ^{*} যে অদ্য মন্ যেকুপ অএবর্ত্তী হইয়াছে, কল্য আফি যত্ন সহকারে দৃঢ়ব্রত হইয়া আরও অত্যে গমন করিব। এই ৰূপ প্রতিজ্ঞা প্রতিপালন করিতে পারিলেই অচিরাৎ মহান্লক্ষ্যে উপস্থিত হইতে পারিবে; এবং তোমার জিগীযা র্ভিও যৎপরোনান্তি চরিতার্থ হইবে। এই ৰূপ জিগীয়ু বাক্তিই অনন্ত উন্নতিকে লক্ষ্য করিয়া শ্রেষ্ঠ হইতে শ্রেষ্ঠতর লোকে গমন कट्टरन ।

मभवावमात्रीटक अनात्र कात्र। मीह-११६-বীস্থ করি**তে চেফী না ক**রিয়া স্বয়ং দুট ব্রত ও কমিন পরিশ্রম দ্বারা অধিকতর শ্রেষ্ঠার লাভ করিতে যত্রবান্ হইবে: তাহা হহলেই যশের সহিত সফলত। ল। ভ कतिरव। कीशीयु वृक्तिमान् वाकि राष्ट्रभ মহৎ কার্যোর প্রতি লক্ষ্য রাথেন, ভাদুশ मनत्क महर कित्रा चक्रांचा माधत्न खरुशत হন। তিনি পৃথিবীয়া সকল বিশ্ব বিপত্তিকে व्यवस्था कतिशे देश्या ७ माहम क्षेत्र भक ছয় সহক: রে উচ্চতম লক্ষ্য স্থানে উ**ডী**য়-মান হন। তিনি সর্বাক্ষণ সাধু লোকদিগের দৃষ্টান্ত অধুরে জাগৰক রাখেন, এবং সেই সকল দুষ্টান্ত আপনার কার্য্যে পরিণত করিতে সর্ব্ব প্রকারে যত্ন পান। ভিনি উচ্চ কার্যো লক্ষা রাখিয়া শরীর মন সকলি, সেই कार्रगढ़ जना छेरमर्भ करत्रम अवश्र पि शर्या-

কর্তৃক সেই কার্যা স্থসম্পন্ন না হর, নে পর্যান্ত কথনই বিআম করেন না; কিন্ত যখন তিনি আপনার উদ্দেশ্য সিন্ধ করেন,

ভখন ভাঁচার অন্তঃকরণে কি এক অনি-र्याजनीय आनत्मत उदम उदमातिक इ-ইতে থাকে, তাহা অন্য লোকের স্বপ্নেরও অগোচর। কেবলই যে তিনি আনন্দ উপভোগ করেন এমত নহে কিন্তু তাঁহার অত্তে পৃথিবী চিরকাল তাঁচার নাম পৃষ্ঠ-দেশে পারণ করিয়া থাকিবে। পরবশদিগের সমস্তই বিপরীত। তাহাদি-গের অস্তঃকরণ গরলে পরিপূর্ণ। তাহারা যাহ। কিছু করিতে যায়, তাহাতে তত দিন আপনাদিগকে উন্নত বোধ করিতে পারে না, যত দিন আশীবিষের ন্যায় অন্তর্গরল वाहित कहिया व्याख्यांगी मिनाटक विवन छ ভাকর্মণ্য করিতে না পারে। गर्टकिंग्स् विषाटम পরিপূর্ণ দেখা যায়; বিশেষতঃ যথন ভাহার কর্ণ কুহরে ভাহার প্রতিবাদীর উন্নতির সংবাদ প্রবিষ্ট হয়, তখন তাহার মস্তকে যেন বজাঘাত পড়ে এবং পাছে প্রতিবাসীরা তাহ। অপেকা অধিক উন্নতি লাভ করে এই আশস্কায় ভাগার অন্তর্দাহ উপস্থিত হয়। ঘৃণা তা-হার অন্তঃ করণে সর্বাক্ষণ রাজত্ব করি-তেছে, এক মুহূর্ত কাল যে তিনি মনের আরামে কাল যাপন করিবেন, ভাহার কিছু মাত্র সম্ভাবনা নাই। পরোপকার কাছাকে वरल, चलिए लोक मूट्थ धवर दावहाद জানিতে পারে, তথাপি তাহাকে তাহার অনুষ্ঠানে কখন দেখা যায় না। স্থতরাং ' আত্মবৎ মন্যতে জগৎ ' আপনার ন্যায় সকলকে দেখিয়া এমন স্থন্দর সংসার ভাঁহার পকে বিষবৎ হইয়া উঠে। তিনি যদি উল্লের সমব্যবসায়ীকে ভাহা অপেকা অধিক উন্নত দেখেন; তাহা হইলে ভাঁহার সমবাবসায়ী বে যে কার্যা করিয়া উন্নতি লাভ করিরাছেন,সেই দেই কার্য্যের দোবানু-সন্ধানে রত হইয়া কি উপায়ে তাঁহার আর

উন্নতি না হয়, স্বতঃপরতঃ তাহার চেফা পান। কিন্তু দেখ এতাদৃশ অন্যায়াচারী অহিতকারীর মঙ্গল কখনই সন্তবে না; সে যাদৃশ লোক সকলের উন্নতির কণ্টক স্বৰূপ, তাদৃশ আপনি আপনার উন্নতির কণ্টক স্বৰূপ। অবশেষে, সে এতাদৃশ স্বাধীন মনুষ্য হইয়া তন্তকীটের ন্যায় আপনার উর্বাজালে আপনিই যত্তবন্ধ হইয়া পড়েন, প্রতিবাদীর মঙ্গল ঘটনা কালসপা ইইয়া সময়ে সময়ে তাঁহকে তত্তই দংশন করিতে থাকে, সে মূর্য আর এক পদও পলায়ন করিতে পারে না।

স্থবুদ্ধি।--সর্ব্ব ক্ষণ স্থবুদ্ধিকে তোমা मिटशत व्यक्तःकतर् छोन निरंत, (मश (यर **ध**क বারে। স্ববৃদ্ধির কথা অবহেলা না কর। স্থ-বুদ্ধি ধর্ম্মের প্রবর্ত্তক এবং ইহাকে অবলয়ন করিয়াই শাণিত ক্ষুরধারের ন্যায় ধর্ম পথ দিয়া চলিয়া যাওয়া যায়। জিহ্বাকে সর্বাক ক্ষণ বশে রাখিতে,নভুৱা ইহা ভোমাদিগের এতাদুশ উপকারী বস্তু হইরাও উদ্বেগেব কারণ হউবে। কাণ, খ্রা ও কুক্তকে দেখিয়া কথন উপহাস কবিবে না। ঘাঁহারা লোক দিগের কিঞ্জিংমাত্র তুর্বলত। দেখিয়া উ-প্রথম করিয়া থাকেন, ভাঁহার। নিশ্চয়ই উপহাস স্পেদ হন। অধিক বাক্য বাবের সময় ক্ষেপ্ণ করা নীচ অন্তঃকরণের কার্যা, ঘাঁছাবা অধিক বাকা বাষ করিতে প্রিয়, তাঁহারা সভাব অতান্ত অহিতকারী। তাঁহার বাকা শুনিতে শুনিতে কৰ্ণ ক্লান্ত হইয়া পড়ে এবং অপরা**পর ব**ক্তাগণের বাকা, **যাহা** অবণ করা অতি আবশাক, তাহা তাঁহারি বাক। জ্বালে জড়িত হইয়া বক্তার অন্তরেই নিহিত থাকে। আপনার গুণের কদাচই গরিমা করিবে না; যে হেতু স্বীয় গুণ প্রকাশের নকে নঙ্গে সাধুদিগের তাচ্চল্য উপস্থিত काशंदक कुछ छान कतिदव ना,

রেণ ইহাতে অনেক আপদ্ উপস্থিত হই-অধিক কৌভুকে বন্ধু-বৰ সম্ভাবনা। বিজেদ হইবার যথেষ্ট সভাবনা, ঘাঁহারা জিহ্বাকে শাসনে না রাখিতে পারের, টাহারা সময়ে সময়ে বিলক্ষণ ক্লেশ পাইয়া **ভো**মার যে ৰূপ **অবস্থা, জুমি** थाटकन । म्हें बंश कीवदनत छेशदयांशी खवा गकव নঞ্য করিবে। **অ**ধিক আয়াদ পাইয়া অকি-ক্ষিৎক: স্প্র সঞ্য় আবিশাক নচে, যে চেডু च ऋरथंत উদ্দেশে তুনি गেই দ্বা मधः। কারতেছ, তোমার সপার করিবার দুণখের স্কিত ভোমার ভবিষাং **স্থাবের ভূলন**া করিলে সুখের অংশ অতি অণ্পই থাকিবে। দক্ষয় করিলে তুকাবস্থায় স্থায়ের কারণ **ब्हेरव, विर्वधन। भूक्षक छ**ावाब मञ्जूष করিবে। দেখা ধেন কোনার আনাদ ^{२०} ९क वाश-माथा मा ६४, छ। है। इडेरल **शर**त পশাবাপ আদিয়া উপত্তিত হইবে। তে। ম: দীভাগ্য যেন ভোমার বিচ্চাক, ১, কে এবং পরি মিতাচারতে নক না অরিয়া ফেলে। যিনি অধিক আভূদর ভাল বাদেন, উস্থাকে পরে আবশাক মত দ্রামা পাইয়া খেদ ক-রিতে **হয়।** অনাকে বিপ**দে** পড়িতে দেখিয়া আপনি সভর্ক হইবে, এই স্থানেই লোকের বিপদ্ভোমার সম্পতির কারণ **হইবে।** 🗝 পরের দোষ কেথিয়া আপন দোষ সংশো-ধন করিবে। যদনধি নাকোন ব্যক্তিকে উত্যৰণে পরীকা করা হয়,ভদবধি ভাছাকে বিশাস করিবে না; এই জনাবে তুমি সহল লোককে কোন কারণ ব্যতীত আবি-খাল করিবে, ভাগাল নহে, বে হেছু এতা-দৃধকামে। কদবাতা প্রকাশ পার। প্রথন কোন উপাবে কোন ব্যক্তির **অন্তর** বংহু বিশেষ ৰূপে জ্ঞাত হইরা তাঁহাকে সৎ বলিয়া বিবেচন। হয়, ভাহা ংটাল সেই াজিকে তোমার অন্তর ছইলে দ্বীরুত

করিও না; এতাদৃশ বাক্তি অমুল্য নিধি প্ৰৰূপ বলিলেও অত্যুক্তি হয় না। शरमत मदक मृदक याँश्वित्र क श्री श्र ছওয়া যায়, তাঁহাদিগের কুপা **প্রার্থনীয়** কথনই হইবে না; ভাঁছারা ভোমার কাঁদ স্বৰণ নিশ্য জানিবে। যাহা কল্য আৰ খাক হইবে, তাহা অদাই সমস্ত বাবহাস कता रकांन मर्फ विटश्त नग्न; श्वात रेंग वश्च रकतन विभारत कात्। विनया स्वीध इहेरव, তাহা কথনই দঞ্চ করিবে না। নির্কোধেরা गक्ल गमरत कि अस् करत ना अवः ञ्जू कित्राए मकल मगरत मकल विषश्च कत णां कतिएं शांद्रम मा , जन्ममा एयं नि-र्व्यारपत्रा विव कान ऋत्य काठे।हेर्व जवः स्ट्राटनहा ह॰टथ काल गालन कतिरवन, हेक् কোন কালে মনে স্থান দেওয়া উচিত নছে।

ভিতিক।।—বিশ্বপতি মনুদাবৰ্গকে এই ৰূপে পৃথিবীত করিয়াছেন যে ভাঁহাদিগকে বিপদ্ দুঘটনা, অভাব, ক্লেশ এবং কভি गश् क्रिटंड इहेट्वरे इहेट्व। उज्जना, हर মন্ত্রাগণ। ভোমরা পূর্বেই দৃচতা, ধৈর্যা এবং তিতিকা শিক্ষা কন, যাহাতে ডো-मानिरात जीवरनत व्यवभाषाती व्याशन् **रहेटठ जनाशादम छक्कात भारेद्य। छक्** যেমন বালুকাময় প্রান্তরে পতিত হইয়া ক্ষুধা ভূষণ এবং প্রচণ্ড স্থর্যাকিরণ অনা-য়ানে নহ করে, ভাদৃশ ভিভিকু ব্যক্তি অবলীলায় মংদারের সমস্ত বিন্ন বিপত্তি অবিচলিত চিত্তে সহা করেন। করণ মনুষ্যগণ স্থা ছঃখে হর্ম বা কাভরতা थकां करतम ना। **डाँशत्र मिर्गत्र सहद** অভঃকরণ জঃবের কথাছাতে সম্বর হইরী **वितरमित्र धर्म अर्थन वरिष्ट्र ७ इम्र ना।** তিতকুর স্থথ হুংথ যদি সৌভাগ্য ছুভার্গ্যের উপর নির্ভর থাকিত, তাহা হইলে তিনি ছ্ঃখের সময় কাতর হইডেন, এবং সুখের

সময় আহ্লাদে হতচেতন হইতেন: কিন্তু তাঁহার মন তিতিকাৰপ রজ্জু দারা ধর্ম-ক্ৰপ পৰ্ব্বত মধ্যে ধৈৰ্ঘ্য ৰূপ কীলকে আবদ্ধ রহিয়াছে. স্কুতরাং বায়ু-স্বৰূপ সংসারেব দামানা স্থা তৃঃখে ইল বিচলিত হইবার বিষয় কি। যথার্থ তিতিফু ব্যক্তি কেবল সাধ্য ও দুঢ়ভার উপর নির্ভর করিয়া খনা-योटम विशेष्टि-मांगद शान हरेशा यान । ठिनि वीरतत नामा त्रांशरमंत्र मन्युशीन इन, स्र उवार বিপদ ভাঁহাকে পরাস্ত করিতে পারে না। नश्कारन निश्रम-ममूह हजूर्फिक् इटेट जैं।-সার মনকে আক্রমণ করিয়। বিধাদ-সমুক্তে নিপাতিত কবিতে যায়, ভখন ভাঁহার গৈয়া র্হাছাকে অক্য কবচে আরুছ করিয়া রাথে। কিন্তু ক্রীণ্মন। ভাঁত ব্যক্তির প্রতি লক্ষ্য কর, তিনি চিরক।: বজ্জার দান হইয়া কাল যাপান কবিতেছেন, তিনি পরিদ্রভার ভিনে কম্পান্ত হুইব। নীত কল্যে প্রবুক্ত হুই-অপমান সহা করিতে গিয়া নানা আপদে পতিত হইতেছেন। তাঁহাব মন নামান। তৃণ অপেকাভলপু, তিনি বিপদ সমনে ष्यकृत इःशमभूटक भक्ष बहेटच वाटकन, ५८-দুফের সময় হতচেতনপ্রা হন এবং নৈব-শেরে সময়ে তাঁহার আত্মা একে বারে অভিভূত ও নিরুপায় হইয়া পড়ে।

০০০০ থিয়োডোর পার্করের পত্র।

২৫৮ সংখ্যক পত্রিকাব ১৫৭ পৃষ্ঠার পর।
ইউনিটেরিয়ানেরা কুসংক্ষার-মূলক ত্রিনীতুর মত সম্পূর্ণ অস্বীকার করিয়া থাকেন,
ভারিমিন্ত গোঢাদিগের সহিত উহঁ। এ সমস্ত
গাহুবাদীরা মত-ভেদ নিবন্ধান নির্মাঞ্জাতার
সহিত উহঁ।দিগের প্রতি অতি কদ্যা ব্যবহার করিভেন। কিন্তু পরিশেষে ইউনি-

টেরিয়ানেরা উহাদিগকে পরাস্ত করিয়া ত্রি-নীতির মতে অবিশ্বান বন্ধমূল করিয়াছি-উঠার। মেদেচুদেটদিশেরও ধর্ম-াব্যয়ুক বিশ্বর অসম্পত মত থ এন কবেন। অন্তর উচারা ক্তকগুলি ভলনাগার নি-ৰ্মাণ ও বহুসংখাক পূৰ্ব্য তন বিদ্যালয় আ-পনাদিশের আধকাবভুক্ত করিয়া তৎ সমু-नारप्रत गरथछ 🖺 त्रुष्टि म्यापन कतिरत्नन। এই সমস্ত কারণে আন্মারকার ইতব সাধা-त्र मक्राच्ये ज्ञानिभारक यर्थके ममानत করিতে লাগিল। যদিও উ.হাদিগের মত মক্ষ্যুর্ণ স্বতম্বা তথাত ভাছারা অপেনা,দগকে স্বাহন সম্প্রদান বলিব। বিবেচনা ক্রাডন না এবং মাধানদের ধর্মানংক্রান্ত স্থান ভাব **प्रभाग कतिया भाडिस्थ भयुको ३०**८ इन । তৎকালে ইউনিভাষালতেরা বিকাপ বিমল আলোকে আপলানিগতে উক্সাল কারতে পারেন নাই, তথাত যাহা ধ্যাবিজ্ঞান মজত ইতিহামকে এক কালে দুবিত কার-তেতে, সেই অনও নাত ৰূপ প্ৰিশুক্ত মতেৰ বিরুদ্ধে গৌরব সহকারে ঘোরতর নিজ্ঞা ক্রিভেন। ভীগ্রা নক্ষ্ণানিষ্ঠ অধিকার प्यवात्रक ७ निमर्गत् न रुटेश सम्बद्ध নিয়ম গুলি পবিব্রিত ক্রিয়াছিলেন এবং क्रभनोश्वराय मार्यहर्त्त था । भूमा क्रम ो। उतिस्वात ५ तिएउ हार — श्रीवि मान स्य ভূঁশার সার্বা প্রাথান দান, এই সাচাটি নিস্কা ख बाब कार्य व्यवस्य कांबर ध्या খুটিয়ান সম্পূদ্য়ে মধে। কেবল উহ রৈছি অনন্তনরকের মতে মুক্তকণে প্রতিবাদ করিয়া থাকেন। কিন্তু যদিও তাঁছারা খিটীর ধ-र्क्स्ट थ ममन्द्र मार्ता प्राचित्र व्यविश्वाम कटत्रम, তথাত কি ইউনিভাসলিট কি ইউনিটে-রিয়ান উভয় সম্পুদারই বাইবলের অ-লৌকিকভা বিষয়ে সম্পূর্ণ বিশ্বাস করিয়া थारकन এবং करहन यनि जरनोकिक ও ্যভ্রাস্থ বাইবলে তিনীতি ও অনন্ত নরকের বিষয় স্পটাক্ষরে নির্দেশ করিয়া থাকে. ভাষা ফটলো আমরা ইছাতে অবশ্যই আন্তা প্রদর্শন করিব সন্দেহ নাই।

মাইটার গারিমন আপেনার বন্ধুবর্গের স-্রত আমেরিভাব পিউরিটান সম্প্রদায়দিশের देश्तर छेश्तर ये मट्ड बका अक्रिश्डी হুইয়াছিলেন এবং খাঁহারা ধর্মের নিমিত व्यान विमञ्जू । कतित्त्व अञ्च आएम, ्मरे मधात्र कृष्टे (प्रीवशवा महावा ও हिक्क-দিলের ভবিষাপ্তজাব নামে দাতিশয় উৎ-দাহ ও যত্র সহকারে, সেই সকল মত প্রচার কারতে লাগিলেন। কিন্ত তিনি পিউ-রিটান সম্প্রদার, হিবুজাতীণ প্রিয়দ্ধকা ও भन्मा थ की तम अधिकारण राजा अपित ব্যক্ষিকগণ অপেক, এনেকাংকে অপিনার प्रज्ञान अनम्ब कतिहर्याः स्वा । स्टक्राः ভিলি জ সমস্থ মত পালার ক্রিতে আরিট कर्रम, उदान करे का, जा, उन्नाह शूना इरेग्ना-চিলেন গে নেফিনের রাজপুরুণেরা বিস্তর অন্ত্র্যান কলিবার প্র দেখিবেন একটি **ब**े क्रद्या महाग्रहा

ব্যিত্ত ছে। তদ্দানে উই দিনের মনে গ্রিত্ত ছেনিত ভ্রের আর্কিছুনাত আশকা বছল না। ডাল্র চানিত সম্পূর্ণ ক্ষমতা, ক্ষমতেশী বজ্তা ও সম্ধিক মনুযান্তের নহিত সম্ভাবের প্রকৃত গৌরব এবং ধর্ম শুরির প্রকৃত জাবন স্বরূপ এই ছুইটি বিশ্বে সকলকে উরোধিত করিয়া আপনার শির্টি ইইনেন। এ মহাল্লা কহিয়া থাকেন ইটাম হর্ম প্রভাবে স্থানার কির্মিণ প্রিণ্ড করিছে সচেটিও ইইনেন। এ মহাল্লা কহিয়া থাকেন ইটাম হর্ম প্রভাবে স্থানার কির্মিণ, নির্বানর অবস্থার উন্তি সম্পাদন ও অনভিত্তের শিক্ষা সমাধা হয়, এবং এই ধর্মই আনেরিকার ক্রীত দাস-

मिरगत श्रीनेका अमारन अकुछ छेमात्रका थमर्भन करत । थे ख्रविशांच महत्रा युवक-দিগের সহিত গাঢ়তর সংস্তব রাখিয়া এবং উহাদিগের সহিত বিবিধ বিষয়ে তক বিতক করিয়া বয়সের উন্নতি অনুসারে জ্ঞানেরও সমধিক শ্রীরৃদ্ধি করিয়াছিলেন। ছোরেস-মান ও তাঁহার কএকটি সহযোগী সাধাস্ত্রের বিদ্যার উল্লভি সাধনের নিমিত্ত সাভিশয় যত্ন ও পরিশ্রম স্বীকার করেন। শিয়ারপণ্ট অসহায় হইয়াও স্থা পান নিবারণ, ধর্ম যাজকের ন্যায়-পরতার দৃটি স্থাপন, ধর্মা বিষ্থক ভাস্কর অসম্পতি নিরাকরণ এবর্ণ সাধারণের প্রীতিকর বা অপ্রীতিকসই হ উক প্রকৃত নিষ্ঠ্রতার প্রতিবিধানার্থ দর্মন যাজকের অধিকার স্থাপন বিষয়ে সমধিক আয়াস অবলয়ন করিয়াছিলেন। শেষে ইমার্মের উজ্জ্ব ধীশক্তি বোউনে স্থকাশিত হটরাছিল। উহা সুচতুর ব্যক্তি বর্গের মন আকর্ষণ করিণ: ভূতন পথ ও ভূতন প্রত্যাশা প্রদর্শন করে। ফলভ আমেরিকায় এই ৰূপ বিশাষাবহ বাাপার আবি কথন প্রত্যক্ষর নাই এবং এখনও ইহা জন্ম বিশ্বদের বিষয় নহে।

ক্ষত ত্ব বিশারদ পর্কেম ও কুম মন্ত্রান জড় দেই পূর্বাপেক্ষা সমধিক অভিনিবেশ সহকাবে পর্যালোচনা করিতে সাধারণকে প্রবর্তিত করিয়া প্রাচীন অপ্রাক্তবাদীদিণ্যের ক্ষমতা সক্ষু চিত করিয়াছিলেন। ওয়ার্ভিনার্থের বচনা প্রকৃতি-প্রিয় গৃঢ়ানুসন্ধানপর ব্যক্তিদিশের অভিশয় আদর্গীয় হইয়া উঠে এবং উহা সাধারণকে প্রাকৃতিক ধর্মো আকৃষ্ট করে। কার্লেলির গ্রন্থ বেশ্রুনে পুনরায় মুদ্রিত হইয়া কি মুবা কি বুজ সকলেরই চিত্ত আকর্ষণ করিয়াছিল। কোন্ত্রির রচনা সকল আমেরিকায় পুনমুদ্রিত হইয়া সাধারণকৈ নিশৃত ভার আফুমন্ধান

ক্রিবার প্রচুর সাহায্য প্রদান ক্রিয়াছিল। ঐ সমস্ত রচনায় প্রগাঢ় বুদ্ধিজ্যোতি সর্বত विखोर्ग बाद्ध। अं तहनाश्चीन ब्यानटकत, বিশেষত দেবতায়বাদী ধর্মধাজকদিগের চিন্তা শক্তি একান্য উত্তেজিত করে। যদিও তংম-মুদায়ে ইতিহাস ও পদার্থ বিদার অসঙ্গতি ও বিশুদ্ধ প্রণানীর অসদ্ভাব আছে এবং থদিও গর্বে, কুদংক্ষার, রুখণ ভক্, বিশৃষ্থলতা ুও ভ্র'বির চিষ্ণ স্কুম্পান্ট নির্নাক্ষিত হয়, তথাচ ঐ সমস্প রচনা নিভান্ত পরাধীন চিত্তকে স্বা-বীনতা প্রদানে সাহায়্য করিয়া আমেরিকার 🖜 🛪 উপকার সাধন। করিয়াছিল। . बर ८ स स्थाली जन्म विद्रिष्ठ, शजीत ভাৰ পৰিপূল্ ও সাধারণের জীতিখন, তিনি स्था अन्य माना एकण साध्या । अन्य क्रि गार्ड्स, लागा अग गर्सामि मन्ना । या (भविकात राष्ट्रीक जन्छामण उँ । त मविद्रमय 'बारामाहमा कविया थारकम । एव स्थादन भूज-ভাষার এন্ত নিভান্ত ডু:আধ হইছ, তথায় नकरम छेडात अनुराम अनुगोशन कांत्रह ! 'यमाना तमार्थ हिम्हा खाउँ। मानावर्गव ए কুমংক্ষার প্রাক্তভূতি হয়, কুলিনের প্রস্তু প্রা াবিত হইয়া ভাষা এক লালে নিবাস করে।

~~**~**

ইজিপ্-টীয় নত।

২১৯ ন খাত পত্রিকার ১৮৩ পৃষ্ঠার পর।

আইদিস্ দেবী। ইজিন্টী বদিলের প্রধান প্রধান দেবতার রক্তান্ত সংক্ষেপে উ লিখিত হইয়াছে; এক্ষণে তাহাদিলের ক-তকগুলি দেবীর রক্তান্ত বর্ণিত হইতেছে। পুরী আনেক প্রত্কার ইজিন্টী মদিলের ভূরিভূরি দেবীর কথা উল্লেখ করিয়া গিয়া-ছেন, কিন্তু নিপুণ ৰূপে আলোচনা করিলে জানিতে পারা যায় যে, দেই সমস্ত দেবীর অধিকাংশই এক আইনিস্ দেবীর মূর্ত্তি

ए माज हिला। क प्रतम स्वयन कर ছুৰ্গা কালী, জগন্ধান্তী, চণ্ডা প্ৰভৃতি নানা ৰিধ আকৃতিতে পূজিত ≆ইয়া গাকেন, সেই ৰূপ ইজিণ্ট দেশে এক আইদিস্দেবী ভিন্ন ভিন্ন কার্যোর ভত্তাবশব্রিকা ব্রপে ভিন্ন ভিন্ন মূর্ত্তিতে আরাধিত হুইতেন। ই হার কোন প্রতিমূত্তি **শৃঙ্গবিশিষ্টও দেখিতে** পাও্যা যায়। পরস্পর অনুরাগাধী নায়ক নাহিকারা मिक्ति ल एउन गिंगल विस्थय बार्श आहे-।मम् १५वीर अपाप्ताना करिछ। **। । अटि**ग আইসিম্দেখীকে ধানা বলিখা গণনা করি তেন। আইনিদ দ্বীর দশ কেন্দ্রনাম চিল, এই নিমিত্ত ভাঁদার আর একটি নাম बिदियनिषम्। आहेमिन् द्वीव अनावः রুরাভ প্রদক্ষ ক্ষমে ওমিরিন দেবের বিববং मत्भा मधितांग्र क्रेडाला।

বিউপটেশ। ওমিরিশের উনলে আইকিল দেনীৰ গভে বিউবদ্ধিন, দ্বীৰ জন্ম হণ।
প্রাক্ দেনী ভাগনার মহিত উইলার অনেক
বিষয়ে সৌসলিশ। আছে। ইনি ডাগনার
নাম অভাশ পতিরভা বলিয়া প্রমিদ্ধি প্রাপ্ত
কিল। বিভালেও লগম হৃতি নির্মাণ করিল।
ইলার প্রা ১ইন। ই দেশে মত
বিভাল মবিত, তংশমুদার স্বাভিত করিয়া
বিভাব ফিন্দ্রারে প্রোধিত করিতে হুইছা।

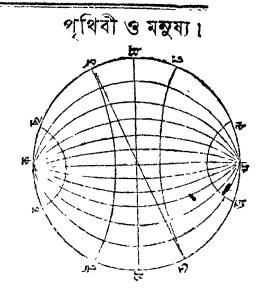
বৈনিথিয়া: শক্নির নামে আকৃতি, এই
পাথে ছুই পক্ষ বিস্তুত, সব্বাপ্ধ হীনক দ্বারা
আচিত, একটি প্রতিমুর্ত্তি ছিল; ওচোরই নাম
ইলিথিয়া। ইনি স্বতন্ত্র দেবতা নহেন,
আইনিম্বা নিউনাউদেন মুর্ত্তি ভেদ মাত্র।
যে দিনে দিনীয়া ভিথি পাড়ত, দেই দিবদ
হুইবি পুলা হইত।

নেণ্গিশ্ ওসিরিসের র্ভাতে উলি বিভ ২২খাছে থে. হকুলিসের ঔবদে রিয়া দেবীর গতে টাইফন পুত্র ও নেপ্থিস কনা জন্ম গ্রহণ করেন। এই নেপ্থিস্ দেবী
নিজ সহোদর টাইফন দেবেব পত্নী কইয়া
চিলেন। গ্রীস্দেশায়েরা এই দেবীকেই
অংশ্ডেইট্ বলিত। শ্বেত্রণা ধেন্তব নাায়
ই হার মূর্ত্তি। ইনি রাতি ও অন্সকারের
অ্রেডারী দেবতা। কিন্তু দিগের অক্ষরা
শ্বে, গ্রীক দিগের বিনম ও ইজিন্টীয়দিগের
কেপ্রিন কুলা কাপ চনিত কইয়াই মনুষাশবের মনে আবিহিত কইয়া ডিলেন।

तृरको रा लाएके. मा । भीत मनीत प्रारम । केस (नर्ग प्रकृष्ण एक समाम ८ कि मिनार तृरके। करी प्राप्त कर्तर हन। कर प्राप्त कर्तर हन। कर प्राप्त कर्तर हन। कर प्राप्त कर्तर हन। कर प्राप्त कर्तर होता वास्ता। कर प्राप्त करिया मिनार कर्ति कार्य क्रिकार करिया क्रिका कर्ति कार्य क्रिका विकास करिया कर्ति क्रिका हो कर्ति विकास करिया कर्ति क्रिका हो कर्ति है क्रिका विकास करिया कर्ति कर्ति है क्रिका करिया कर्ति करिया करि

গমন কাৰ্যাছিলেন, সেই সময়ে লগতে নি হোলাকাকে কেনি স্থীপে রাখিলা লীপতি ভাষাইয়া দেন এবা ধ্বং টাইফনের হস্ত হটা ৩ পরিবাণ পাইবান নিমিত্ত মাইবোল গনীর মুর্তি ধারণ কবিয়া প্লায়ন করেন।

ইজিপটীয় দেব দেবার সহিত ভারত
থানি দেব দেবার অভ্যন্ত সাদৃশ্য দেখিতে
থানিয়া যায়। কেবল দেব দেবী বলিয়া
নয়, অন্যান্য মত বিষয়েও বিলক্ষণ মৌশাদৃশ্য আছে। ইজিপটীয়দিগের অন্যান্য
রভাত্ত বিবৃদ্ধ হইবান সময়ে তাহ্য ক্রমে
ক্রমে অভিব্যক্ত হইবে।



পুলিবীতে যে সমস্ম ঘটনা উপস্থিত হউল্ভেক্ত, ভাহার কারণ নিকাপণ বাতিরেকে কেবল দেশ গ্রাম নগরাদির বিভাগ নির্দেশ এব- ভত্তা আণিণণের স্বভাব ও চবিত্রাদিব বিষয় বণন কভিলে ভুগোল ব্ভান্ত লামের সাংগকতা সম্পাদন কর। হয় না। হতিরুদ্ধ সংক্রান্ত নিজ্ঞান ব্যতিরেকে যদি কেবল यहेंगा छालत फेरलंश कता इस, छोड़ा इंडरल क रामन १९१६ ७ नीहम इन्नेभा साम, राह् ৰাপ ভূগোল বুড়ান্ত বৰ্ণন করিছে গিং যদি গত কারণ সমস্থ উচ্চাবন না করিয়া क्तितल भृष्ठे बख्त अक्ष भाग बिटफ्स कत्। यहि, ब्रहा बबेटल फेंबेल मौध्यतिवृत्त केनाह প্রীতিকর হয় ন.। বস্তু মাত্রের বণুনা কর। जुर्गान द्रशास्त्रत अक्रुड फेर्फ्सा नरह। পার্থিব গুরুর্থ সমুদায়ের পরস্পার বিভিন্নতা धानमान, कांगा कात्र । वह छेखावन, मरह छन अ অচেতন পদার্থ সমূহের পরস্পর সম্বন্ধ ও · কাৰ্যানিৰূপণ এবং মানব সমাজের কি ৰূপে ক্রমণ উল্লভি হইয়াছে, ইহা নির্দারণ করাই हेश्रपृथा উष्टिमा। এই ममस्र 🚜 त्रिः উল্লেখ না করিয়া কেবল যদি বস্তু মাতের বর্ণনা করা যায়, তাহা হইলে ভূগোল রক্তান্ত নিচান্ত অসার ও অকিঞ্চিৎকর হইয়া উঠে। ए ममल विषयात कारनाशाकन कतिला

মন যথাৰ্থ পুষ্টি ও প্ৰকৃত উন্নতি লাভ ক-विट्ड शादत, उৎमञ्जात्यत जमस्रात इहेटल পদার্থ বিদ্যা সহজেই নীর্ম হ্ইয়া গাকে। স্তরাং যাহাতে জড় ও চেতন প্রাণ পরস্পার কি কাপ সম্বাহ্ম নিবন্ধ শৃইয়া সেই করণোময় বিশ্বস্রুষ্টার মঞ্চল অভিপ্রায় স্থ-দিন্ধ ক্য়িতৈছে, ইল সুস্পাট উপলব্ধি করা যায; যে সভস্ত করিলে পার্থির প্রার্থ সমু-লাম ক্রমণ উন্নতি নাতি করিবা বিশ্বপতির अनम् ७ महिन्ता कोन्द्रतान अनिप्रय व्यन्ति ►शबुट कर कर यह वा दन है सम छ कावन छेच वन प्रता भाग; (न[े] अका ध्राक भक्तक स ममन नियुद्धतः अवीन कवियां अहे कड़ क গহকে নির্দ্ধ উদ্ধান্ত করিছেচেন,যাহাতে खरममुम्हाद्यत किलास्यातिको ७ खाउल्लबकाः। অভিনাত কলা যায়; খাহাতে এই সমস্ত অচিন্তুনার অতকলার আক্ষয় ন্যাপার মুস্পর্ট জন দ্য করিয়া মেহ বিশ্বপিতা অधिलमा छ। ? व्यक्ति व्योक्ति । ज कि केली পিত হয়; এই ভুগোল গুত্তান্তের তালাই উদ্দোশ্য। पागदो এই উদ্দেশ্য गिश्व कवि বার নিমিত্ত পৃথিবী ও মনুষ, সংক্রান্ত রম্ভান্ত বৰনে প্রবৃত্ত হইতেছি।

কোন কোন অবিচক্ষণ গদার্থ-বিদ্যাবিং
পণ্ডিতেরা কহিবা থাকেন যে,পশ্য পাফ্যাবি
জীব জন্ত এবং তরু গুলাদি উদ্ভিদ্ পদার্থের
নাম পাষাণ প্রভৃতি অচেতন পদার্থের
কাবন আছে। কিন্তু এই মত নিতান্ত
অলীক ও অমূলক। চেতন ও অচেতন
এই উভরবিধ পদার্থ পরস্পার বিভিন্ন।
মাত্র ও রক্ষা, রক্ষ ও পশু পক্ষী এবং
পশু পক্ষী ও মরুষা যে পরস্পার কত
অন্তর ভাহা অমুভবশীল ব্যক্তি মাত্রেই
সহক্ষে স্কুস্পাই হৃদয়ঙ্গম করিতে পারেন।
অচেতন পদার্থকে মৃত ও সচেতন পদার্থকে
জীবিত বলিয়া নির্দেশ করা যায়; কার্ম

পশু পক্ষাবির নাার পাষাণ শভ্তি অচেতন পদার্থে জীবনের কোন নিদর্শনই প্রাপ্ত হওয়া यात्र मा। তবে जे मकल जफ পर्नार्थ কেবল জীবনের প্রতিভা মাত্র প্রতিভাত সলিন্ত্রেভ তরঙ্গ জাল **इंडेश** योदक। বিস্তার পূর্বাক ফেনায় আকুলিত চইম वानवात भक्त महकादत व्यवन त्वरन व्यव-হিত ১ইতেচে, সমীৰণ ভাঙ্গৰ অপ্ৰতিহত াতি ঘৰলয়ন পূক্ক গাদিপদণ উন্মৃতিত ও ভূতনে নিগা(৩৩ করিতেচে ; অন্তরীকো াই নক্ষত্র প্রভৃতি কোর্তির প্রদার্থ সকর গ্ৰহণ্য আন্তৰ্ম শক্তি ছাবা আক্সেই কইড়া স্বান্ধ ক্লানে আবস্থান কলিকেলে हुमक तिम्छूमाञ लोक प्रशिक्षणे पर्यानश বেচলিত ও নিরম্বর উত্তরাভিমুখীন কর্মন গাতে, সুইটি পদাথ উপযুদ্ধেরি নাডাপিছু रूट हो से समित्यात श्रमानु अरेट कम खाना ९ वरम्भत्रः भत्नस्भावत्तः । प्यांकर्षभ् कत्तः , जन स्व भारत धारय शिक भवार्थ मञ्जारयन धन्। दश आचार्ड क्रिटल छेटा अन्वनाभी बहेपा थे'रक. तमायन विषता थास्ट्र हेक् क अंत्रक करेगाता हुए कष् भवत्र्यंत करणक लग्भाद्र संग्रेण भागा विष्याद्रभन गायर्थ। व ७५ . करे मन क लिया सिन्सा अर्नटक अनुनार क'हा। बारकर (व श्रु शक्त भाग हिमादन कीतन आहरू, किन्दु केरा जीवन गढ़, जीवरनत धा-তিতা মাত্র। আমরা কএকটি প্রতেগ এই অভুত কাষা দেখিয়া বিদান দাগেরে নিমা रहे कि उ धरे धर्का उन्नां कार्या (य এই ৰূপ অত্যাশ্চর্যা ও অচিন্তনীয় কত শঙ ঘটন। উপস্থিত চইতেছে তাহার इंग्रज्य नाई।

আমরা অচেতন পদার্থের নায় চেতন পদার্থেও এই ৰূপ কার্যা দেখিতে পাই কিন্তু এই ৰূপ ক্রিয়াকে ইহার জীবন ব্রিয়া কথনট স্বীকার করা ঘাহতে পারেনা।

াল সম্প্র প্রস্পর বিনিময়কে সামানা।

কার জীবন বলিয়া নির্দেশ করা যায়,

াই ইইলে পরস্পরের আকর্মণে সমান্ত্রই

জড়-দেহের উপর এই রূপ জীবন আরোপ

করা অসঙ্গল ও অযৌজিক নহে। কিন্তু

কেই রূপ জীবন নিরুষ্ট জীবন বলিয়ানি
াক্র ইটাত পারে।

নেই আরু তিক ও রাসায়নিক জীবন সকল জও দেহেই বিদ্যান রহিয় ছে, কিন্তু এই রূপ আরু, তক ও রাসায়ন ক কার্য কে চেতন পদার্থের জীবন বা জীবনের মূল কার্য কারণ বলিয়া কণ্ড প্রেলিক জীবন কবা যায়ন।। জীব যে জীবন উপতেলগ করিছেতে, ইহাতের আনতের কা পা প্রেলিক কবা মনুষা লাহনেতে প্রতিতিক কবা বাহনেতে প্রতিতিক কবা বাহনিক জীবন রুফ্ ও পশু প্রতিক কবা দার্যনিক জীবন রুফ্ ও পশু প্রতি মনুষা লাহতে প্রতিতিক স্থানিক জীবন রুফ্ ও পশু প্রতিতিক উহাতিক জীবন রুফ্ ও পশু প্রতিতিক জীবন রুফ্ উন্তিবিক স্থানিক স



ভবানীপুর রেজ (বদ) লির। ৫ ধান জ চালের উপদেশ। ১ ধান মণখা। ।

১ ১৮৮ কেলেন

वदारम काठा ५८९ ३३१७ अञ्चल आहत्स आतम क-'त बाद्रम् ... প্রন্তি, শ্রীরের মণো १ ३ ''व ए भर् । यक्ति शाहियां छ। स्थान মান পদের করণের শ্বার দেখিছেছি, ভেন্নি करनानामच अर्के केव आग्नारिकंड प्रकृष्ट कवि-अधि। इ. ६३ छ। 🔐 ८५। मावटम् व म**गटफ** গকাল কবিত্ব কিমিন মতু করিছেছে, १ %' १४८ सार १५ छ। इर गरन हा **नरवा प्रसंख** ' ' "'र्''व ६ गा २०को कि. ८७८७ । **धरे छा**-1 1 2 不同一种所有例 即同相互,通常的 क हो। काचन च्या अदलदम स्टिया सकदलत अधिकी া না পুন্ধর নম্ম পুক্রতে প্রভাক করিতে 医乳头 化二氯甲二 এই। চাপ্র?, বাভং মনাতে ন' 'কং ৬ছঃ। যদ্মি',সিজেন ছঃখেন গুরুণাপি

বিচালাতে। '' যাঁহাকে লাভ করিয়া অপর লাভকে ভদপেকা অধিক বোধ হয় না এবং যাহাতে অবস্থান করিলে গুকু ছুঃখেও বিচালিভ হয় না।

বেদের মন্ত্র ও ব্রাহ্মণ ভাগ সমাপ্ত হইলে প্র উপনিষদ্ বেকোর অনুসন্ধানে প্রবৃত হুইলেন। अक्ष कि ? ना धिन मकत इडेस्ड द्रहर, मकत হউতে মহৎ, ঘাঁচা হউতে শেষ্ঠ আর কেইই ্রাই; यिनि मख-फर्म-वाशी, यिनि मकल काली विमानान। উপনিষদ্ইহার অনুসন্ধানে প্রাক্ত হইয়া জানি-लिन (र. २४० रक्: म:म (बाह्य हेज़ बाबू र्जाइ প্রভৃতিদে সকল উপাস। দেবতা, তাহারা কথনো अर्थ नहर । '' (नप्र योगनगूशामर**छ**।'' (छलव-कारवार्थानरम) रेबिनरकतः य अकल श्रीहिम्ह দেবভার উপাদন। করে, ভাগারা কথনো ত্রন্ধ न १० १ दिन १४ अन्य शुक्ताय मामान् कराइड्य कता (१ म (४६म हेरु व) मठ वा नियक विशुक्त विश-মাগে। ভিৰেই ব্ৰহ্মা। "ভাধানাস্ভাল প্ৰভে अपन्दारतीय स्टब्स अन्ति । जीवान्त्रा, विश्वासक क्ष्म पूजा ४। द ७ भक्ष्यः। १ । (रेकाळ द्वीरम् अ गरम) इकात ভাগে ব'বু গ্ৰমান ইইডেচে, ইহার ভাষে দুবা টিন্য ইউটেডে, উহাবে ভয়ে আগ্নি ও ইন্দু ও মূকুঃ স্থায় ক্রমে পারেত হইতেছে। উপ-नियम्भितंत्रायतः का । न मस्यः जास्यः कि क्षिमः वह ५८,८१५ मा १५८५ मा ६४. जा से दाश्च के छ अक्री ७ देश सक प्तिक'त' एकदन्धे शार्त्रमण्ड, मक्टल्डे **छ** श्र अक লেই কুদ, ইহারা ব্যন্ত নতে ইহাবা আপেনাকে শাপনি এচাশ কৰে নাই; ইনার, স্মন্ত্র নালে, ইছারা আপেন রাও আপেনার নিবস্তা নছে। ইছারা य (२) क एक करे महभारद तथ ५ इ. इ.सेपाटक, बीस् . इडेट्ड वेंथ वीय चेंछि लाङ कविद्यादक, यांजाब শ'সনে নিয়ত প্রবর্ত্তিত গ'ংখাছে, তিনিই ব্রহ্ম, चिनिहें काता, लेक कराउ (अर्फ ७ श्रुवनीय बाद (कश्री महि। अहे जार जनवनात उपनियदमञ् আখাদিকাৰে অভি দু দর-ক্ষে প্রকাশিত রহি-म[5] भारे काथ, दिका धड़े। " उन्न इ दन्दा-ভোবিতেলা ৷ এখা দেবভাদিগকে জয় বিধান করিবেন ৷ ইক্র বায়ু প্রভৃতি দেবভারা **ঈশ্বরের** छाङ् । १२ 🔊 अक्षित्र के प्रमुख्य का वाक कतिरलन । ইজ চান বে, পৃথিতীতে মুক্তাটি বর্ষণ করিয়া প্রশা দিগের ভিত সাধন করেন, রতাসুর ভাছা করিছে (मध न।। गक्त (मवलांता এकळ इहेशा क्यानिक-कारी इक्षामुद्रबं छेशद्र अग्न नाच क्रियान । उक्ष एँ। रात्मिश्टक वहे क्या आमान कवित्वन, मिनकांत्री ধীয় খীয় অভিযান-দোষে তাহা জানিতে পারি-লেন না। তাঁহারা মনে করিলেন, আমর ই व्यागांत्रामत कम्बार्ड कामूल्य छेशत क्षत्र नाक

कतिलाभ: आभातरमत्रे धरे छत्र, आमातरमत्रे **এই महिमा। '' अञ्चाकत्यवाधः** विकत्यार्शमाकः মেরায়ং মহিমা।" ঈশ্বর ভাঁচারদের এই অভিমান काबित्वन । ভাঁহার৷ অনিউকারী অমুবদিগের नाय द्वरी-अভियम-भारत १३ ना १न, এই छान দিবার নিমিত্তে তিনি তাঁহারদের নিকটে স্থাং প্রকাশিত হটলেন। ভাঁহাবা জানিছেও পাবি-ब्ल्म ना (व, मीलागान श्रेष्ट्रनीय श्रुक्य हैनि (क। ভাঁইারদের অপেকা অপিক শক্তি সম্পন্ন পুক্ষ যে কেছ আছেন, ভাষা ভাষারা জানিতেন না: আপনার্দিগকেই ঘতনু সমুম্ন বলিয়া মান কবি-তেন। এই অপ্রিচিত প্রকীয়ের অবাক্ত অপ-निमिन (जाक कें। होया मकालंडे रुक्त अन हरेग्री (श- त्वा : उंशिरदाद अभग अ गम विकल्पिक बहेल। ভাঁহার। আগ্রেকে বলিলেন, তে আগ্ন। তে জাও-तमः । जिम जामध्याम्य भारता जाली । एक जायी, राख जुमि हेड वि नि व है शिया डेड रिक ऋत्रवड कहेश ए। उम होन तक। खांध्र हैं। हांत्र निकटी .भरत्रम । जन्म ई। हा १६ क्यांमा कविरासम, । ¹⁵ क्वर'न ?' ज़्शि उन २ अ शु प्रप्तं कृदिश। कृतिहलस " অংগ্রিক" অসমন্মীনি জাভাবেদা ব'অহমন্মীতি " अभि कार्य, जा मा लाक्ष्यमा । ब्रह्म है। क्रिक विलाधन । जिल्ला क्षिण क्षेत्रा क्षेत्र व জাশ্বেনা আগ্ল, ভোনাজে চি শ্লি আছে? ভিনি উনৰ কৰিবনে, ' অপীদ্ধ সঞ্চল দুৱেষণ यिक्षण श्रीरवादिक। " उन्ने श्रीश्वीदन व्यक्ति বস্থ আছে, তাহা সক্রই আমিদ্রা ক'ব্ডে 📢 বা खन्न छैं। इंदिक अक्षि कुल जिल्लाम छ सन्ति । ইহাকে দক্ষ কর। তিনি নহাতেগে আপনাব সকল ভেক্স ভাষাভে নিয়োগ করিলেন, ভথাপি এই ভূণনীকে দক্ষ কবিতে পাবিলেন না। আপন্তক শক্তিহীন দেখিয়া লজ্জিত হইচা দেবতা নিশেব निकरे कित्रिश आंत्रिश विविद्यान- यांग विनिद्य পারিলাম না, এই অচিন্তা-শক্তি পুজনীয় পুরুষ কে। তথন তাঁহারা বায়ুকে বলিলেন, হে বায়ু যাও তুমি ইহাঁর নিকটে গিয়। ইইাকে অরগত ক্ষয়া আটম। ৰ'য়ু তাঁহাৰ নিকটে গেলেন। ব্রহ্ম তাঁহাকে জিজ্ঞানা করিবেন, তান কে? वासु पर्भ कतिया विभिद्यान, "वायुक्ता खरमन्यो कि ্মাতরিশাবাঅহমামীতি। '', আনি বারু, আমি মতিবিশ্ব। ত্রহা বলিলেন, তুলি যে মাত্রিশা ৰায়ু তোমাব কি শক্তি? তিনি উত্তর করি-त्मन, शृथिवीएक बाहा किछू धारू, आमि मकनरे হরণ করিছে পারি। ত্রন্ধ মেখানে একটি তৃণ त्राथिया विलालन, अथान इटेट्ड टेटाक अहन कत দেখি। ভিনি ভাহাতে আপনার সমুদায় বেগ নিয়োগ করিলেন, তথাপি ভাহাকে একটুকুও

বিচালিত করিতে পারিলেন ন।। আপনাকে শক্তিহীন দেখিয়া লজিভত হইয়া দেবসাদিংগৰ নিকটে ফিরিয়। আসিয়া বলিলেন-- আমি চিনিডে পারিলাম না, এই অচিন্তা-শক্তি পুজনীয় পুক্ষ কেশ পরে ভাঁহাবা ইজকে বলিলেন, হে মঘবন। ভূমি আনাবনের সকলের রাজা, যাও ভূমি চঁহার निकटि शिया डॅंडाटक व्यवशंख इटेश कार्टेंग। ইন্দু ট্রের নিকটে অগসর হইলেন। ইন্দেব বাজ-প্রদর অভীব গর্ম ও অভিন'ন দেখিয়া ব্রহ্ম দ্রথা হটতে লিবোহিত হইলেন; বরং নিনি अना अना (प्रवाह प्रियादक (प्रथा) विश⁴ छिटनन, हेस्सर्क क्रक बांव प्यथान बिट्यन मां। ध्यने स्राटन ন্ত্ৰী কপিনী বৃধ্ব-বিদ্যা আসেয়া আবি ভুল চটলেন ৷ इ.स. ८५३ 'धालक रवाको जुक्त-'वनाएक 'काकामा ক্ষিণেন যে সেই দাপামান প্রজীয়, বিনি এই বার এখানে ডিলেন ভিনি কে ? ব্ৰহ্ম-বিৰা বলিংগন ইচাবে ভোষণা জান মা, ইনি ব্ৰহা বিদ্যে ভোষরা আপনাব আপনাৰ মহিন বনে কৰি ভিলে; যাৰ এই কাষৰ জনা ব্যোগ না भारका करा। बुकारिमां बु के किनेटनटमं अन्सर বিচাদন। হুইল। ভাদৰ্গি ইন্দ ব্ৰহ্ম হয়। ন ল' ভ কবিয়' অশ্ব সামল দেৱত। এইডেড উল্লেড ইইলেন্ ভাৰত বি আগ্র র'ণ এছে,তি দেবত রাও ইন্দ্রের নিকট হইজে ব্ৰক্ষ, লালাভ কণ্মা কাৰে আৰু সকল দেবজা ठ है, एक "लाम करें दल स्¦

कि का या। यहा जाता कहे जिल्लाम पा इस य[बेटलटाइ ह्या, ह्या लोनाक 'श्रामता व्यापन' वहमन প্ৰিনিছ ভাষ ব্য়িকে না পাৰি, যে প্ৰাৰ্থ জনজ मात्त्र मृश्मिः अवशंत्र ३७ण याय म्। क ा तिधु हेक रहव काता प्यापितावर प्रांच मां अपने भौगा পুরিছের) গুলিষ্ট স্থানার্ডিল ক্টা স্থান স্ব মান্দ্রমান বাব্যা শা,ত্রান কারেছের ৷ যথম উ'৬৻১' ভাগানাব্যের আন শাঞ্জির গাঁমা বুলোকোন: यथन (५) हे पुरुष म अवग (भव ५) है न। जानिएड পাৰেষ' উভাবৰের জান কুঠিভ ইইল, যথন **एकित जुनाहरू कीय न्दर्भ आ**निहरू न। शाहिया উহি বিদের বল শুঝ ছইল: ভথনি দীহোব। বুঝিজে পানিবেন যে আগবা ক্ষুদ্র, আমারদের জ্ঞান শক্তি প্ৰিমিত এবং গেই প্ৰিমিত জ্ঞান-শ্বিক্ত আনবা আপনারা সৃষ্টি তার নাই; কিন্তু সেই मर्बय है। अर्थ भूकम इंडेटल लाज कविगाहि, गाँहित मगःक छ। मध्द्रपद भकत छ। त. मक्त महिन, सुक् হইয়া গের। দম্ভ ও অভিযান ব্রন্ধাজানের প্রতি-ৰক্ষক। আনি সকল বুনিতে পাৰি, আনি সৰ করিতে পারি, আমারই যথ সর্বত প্রকাশিত হউক: এই অভিমান ও নীচ কামন। ব্রহ্মকে বুঝিতে (मग्र ना। जाननात इस्रवाजः विनि कानिशाट्यन, ভিনিট উচ্চার অনুধানী ও শরণাশন হইনা নবল ৬ উল্লাল ইয়াছেন।

क्षा वाश् हेस अकृति शक्षकः माम स्वरमञ् দেবভার। উপনিষ্দের উপাস্য দেবভা নহেন। ভিপ্রিসদেব প্রভিপাদ্য পর্ম দেবতা এক মাত্রপি-व्यक्ता। उल्लिमयाम् व मध्कला এই य वि.न मक्त ছইতে বড় উহিকেই অস্বেদ্ করিয়। জানিতে হইবেক, ভাঁছাকেই স্থীতি করিছে মইবেক, তাঁহা-নেট পুজ। করিজে চইনেক। উচার। সকল হটডে रा प्रतिष्ठ या द्वारक क्षानित्वन, अञ्चत बनित्वन খ্যার। ব্রহ্ম" (লাশ : ছাপেনিষদ্) এই আত্মা ব্ৰহ্ম। "যো দৈ দুম। তং ধ্ৰং নাপে সুখমন্তি र्हिम् अवः स्वाद्य राज्यामिखवाः। "(ছी-কোলো)পনিষদ্) থিনি নহান্ ভিনি সুখ-ৰক্ষ क प अमार्थ सूथ नार्क, महान् अमार्थहे सूथ-वक्षा; সাত্রর উচ্চাকেই জানিতে ইচ্ছা কবিবেক। সেই ভ্না কোখাল? ''সএব সঙ্গুত সউপৰিটাৎ সপশ্চাৎ সপুরস্তাৎ সদব্যক্তঃ সউত্তর্ভা । "।ভাকে।গো:-প্ৰিষ্ণ) ভিনি সংগ্ৰে, ভিনি উদ্ধেতে,তিনি পশ্চাতে, ভিান সম্মুথে, কিনি দক্ষিণে, ডিনি भड़े कुंगा (क ! यह आलाहि (मई ম। - মণী রসংখ্যাদাকোপরিন্দী দাসা পশ্চান দাক। পুরসাদার। দকিংভ্যাতা উত্তরভঃ।" (७१८क (८४) (अ नियम्) जा शाहि व्यापारम, जा बाहि উদ্বেশে, জালাই পংশ্চাতে, আলাই সম্মুখে, তারাই দ্বিনে ভাগাই উত্তরে। ইহাতে এই ला जिला करेल या रिज एक्ट मक्का की एन। नेपत, জিনি শুনানভেন, জিলা জগতের আলা, ছিনি भक्तलाल पूर्व द्रहिद्राहरून। अथादन जिकामा अहे रह दम्र है निष्म कि भेदीती का द्वा ! य **व्याद्या मंदीद** मक्त था कम। को ए८ काटन विश्वितिसम स्वीता स्वान বাংবিধি ভেগকেবে, এই আছোকি সেই ভূমা? ্ট "জাশবিদ্ধানে বাবে বিহং এজঃ বুল ভুক্ " আরা াক ভ্লা? উপনিষদ্ধলেন যে না, ভূমা অ'আ। ক্দাপি শরীর্থ আগা নতেন। ইনি শরীরী জাগ-কিও আতাৰ লাল বহিরিভিয় ছারা বহিবিষয় উপভোগ করেন না: ভ্মা আত্মার শরীরও নাই, टेक्टिय ३ नार्टे! एटर कि जिनि यदनामग्र आया ? --- এবানে এই বিজ্ঞানা উপস্থিত হই**তে পারে।** শনীর নিস্পুত ব্**ইলে, উত্তিয়া-ছার-সকল ফুক্ত** হইলে, যে আহা স্ব**েপ্লে স্বীয় মহিনা অনুভ**ৰ तत्त । य कर्षत्य चाचा विषय ७ हेल्लिसब निब्र-, क व्हेश क्षेत्र ग्रहिमाटक **हे दिस्त्र-ग्रहन मुस्टि** कविद्या फोर्स डिशटअक्त करतः (य आंखा यांशीयम-थिगाटि, मासाउ दिल्थिगाटि, जीवा दिल्थाः, बाद्या গুনিযাছে,যাল নাও জনিয়াছে, ভাছা ভানে; বা্ছা অর্ভব করিয়াটে, যা নাও অর্ভন করিয়াটে,

ভাছা অনুভব করে; বে আত্ম। " নর্বং পশ্যক্তি नर्काः श्रमाणि " जाशीम मध बहेबा नव तमर्थः; रमंदे ষপ্লাবত্ব মনোময় আহা কি ভূমা? না। বে আত্মা স্বয়েতে কেবল মনো-স্থারা বিষয় উপজোগ करत, त्यद्रे " यश्रदात्नारसः अळा अविविक्कण्युक् " আত্মাভ্যানছেন। যেনন ভূমাজাআর শরীর নাই, তেমনি ভাঁহাব মনও নাই। তিনি মনের ছার। সুখ ছঃখের অনুভব করেন না। ভিনি খ-প্লাবস্থ আজাব ন্যায় খোকও করেন না, ক্রমানও করেন ন।। অতএব স্বপ্লবস্থ মনোময় আতা ভূমা নহেন। এখানে তাৰ আৰার এই প্রশ্ন হইতে পারে বে, সুমুপ্ত আমা কি ভ্যাণু বে আয়া সু-ন্দর সুপ্ত হইয়৷ কোন কামনাও করে না, কোন যপ্লও দেখে না; শোকও করে না, ক্রন্দনও করে না ; এই সুমুপ্ত আত্মা কি সেই ভূমা ! এই সুনুপ্ত আলাও ভূমানহেন, যে হেড়ু ভখন সে আছা '' जयगदम नोलिं' (ছाटकाटका) পनिषम्) कानि এই বলিয়া আগেনাকেও ভালে না। যদিও মুখু-প্রাবস্থাতে ভামার শোক নাই, ক্রন্দন নাই; ভথাপি ভাগার কোন ভোগা বস্তুত । টি। ''নাহ মত্র ভোগাং পশাব্দি, " (ছালেরপ্রেগ্রাপ্রিষদ্) জামি এথানে ভাহার কিচুই ভে:গা বস্তু দেখি না। এই মুদুপ্ৰাৰস্থাতে আন্মার না কিছু চোগ। বস্তু আছে, না কোন ভোগ আছে, ক্েল এক মহাবিম্মতি ভাষাকে আছল করিম। রাখে। এই प्रयुष्ठ अव्वष्टकम आजा। कथन हे जूँमाजा नर्हन। খিলি ভূমামা, ভিনি অপরিল্পু টেডন্য-বভাব। তাহার চেজনোর কথনো লোপ নাই, ভাহাস-দাই প্রকাশিত হইয়ার হয়তে। সংসারী আখাই भविदित अधीन, विषयात अधीन, मरमह अधीन : সংসারা আখাবই জাগ্রদ্বস্থা, স্বপ্নাবস্থা, সুযুপ্তা-वर्षाः प्रभागा कान जनस्त अधीन नटहनः ভিনি কথানা জাগ্ৰহ, কথনো নিটিভ, কথনো মুযুগু, এনত নহেন ; উাহার জ্ঞান, তাঁহার ভাষ, সদাই দক্তি রহিষাছে। ''এম **মুপ্তেমু জাগতি** কাম। কামং পুক্ষো নিৰ্মিমাণঃ।" (কঠোপনিষদ্) যথন সকলে নিজ। যায়, তথন এই পুরুষ জাগ্রৎ থাকিয়া সকলের কাম্য বস্তু বিধান করিতে খাকেন। অতএব মাণ্ডুক্যোপনিষদু বলিভেছেন, ভিনি '' প্রপক্ষোপশমং শান্তং শিবমটেরভং। '' ভিন্দি স্সারের অভীত ; শাস্ত, মঙ্গল, অশ্বিভীয়। 'স-আত্মা সবিজেয়ঃ" তিনিই সেই আত্মা, তিনিই ব্যানিবার বোগা। কা গ্রৎ-পদ্ম-মুদ্রারত্ব এই শংশারী আত্মার প্রতি**ঠা সেই অভ্**র্যা**দী অমু**ভ জন-বিহীন নহান্ আছো। এই শরীরী সংসারী व्याचात्र व्यख्तकम् व्यक्तिम् (महे क्षेत्रीही क्षत्र-সায়ী মহানু আছা। অব্ছিতি করিছেছেন। " বা

পেৰা সয় জা সখালা সমানং বৃক্ষং পরিষধকাতে:" मृश्डरमाणनियम्) इट मुक्तत शकी जीवाश्चा আরু প্রমামা, উভয়েই এক রক্ষ এই শ্রীরকে অবলম্বন করিয়া রহিয়াছেন ; তাঁহার। সর্বাদা একত ধাকেন এবং উচ্চয় পরস্পরের স্থা। " বপ্লান্তং कांगतिভात्रकारको स्वतानू भगाछि। महास्ट वि-ভূষায়ানং মহা ধীরোন শোচ্ডি। '? (কঠোপনি-খদ্) জীব ঘাঁছার ছারা স্পেব মধ্যে সুথ-ছঃথ ভোগুকরে, এবং জাগরিত থাকিয়া বিষয়-সকল দর্শন করে, সৈই সর্ব্যাপী মহান্আভাকে সীয় অন্তরে জানিয়। ধীর বাজি আর শোক করেন না। "হর্মায়ে পরে কোষে বিরঙ্গৎ ব্রহ্ম নিষ্কলং। जब्द कर क्यांजियार क्यांजिखनामाञ्चविदनाविष्ट्रः।" /মুণ্ডকোপনিষদ্) ব্রহ্মবিৎ ব্যক্তিরা আত্ম-রূপ ্টেজ্ল ও শ্রেষ্ঠ কোষ মধ্যে সেই নির্মাল, নিরব-য়ব, জ্যোতির জ্যোতি, শুদ্র পরনাত্মাকে উপলব্ধি

এখানে উপনিষদের সিদ্ধান্ত মনোযোগ পূর্মক প্রণিধান কর। যাও ক্যোপনিধদেব অর্থমে আছে " नक्दरञ्ज्य का।" गकल है अने उका। उप-নিষদ এট কথাতে বেদের পুরাতন মত থওন করিছেছেন। অগ্রি ব্রহ্ম নহেন, স্থগ্রহ্ম নহেন, মিত্র ব্রহ্ম নহেন, বরুণ ব্রহ্ম নহেন: কিন্তু সকলই ব্রহ্ম। ভিনি আকাশের অভীত হইয়। সকল আকাশে ও বিশ সংসারে ব্যাপ্ত রহিয়া-ছেন: ভিনি ভুত ভবিষাৎ বত্তমান জিকালের অভীত হইয়া সঙল কালে ও সকল ঘটনাতে বিদ্যা-" ভূতং ভবং ভবিষাদিভি মান রহিয়াছেন। नर्सरमाञ्चात्रवय यक्ताना द जिकाना डाउर उपरापा-স্কারএব '' ভূত ভবিষাৎ বর্ত্ত্বান, সকলই ওঙ্কার ; ধিনি এই জিকালের অভীভ, ভিনিও ওকাব। অর্থানে অবশা ভোষরা জানিছে চাও, এই ও-কার কি? এই ওক্ষারের অর্থ সৃষ্টি-স্থিতি-প্রালয়-কর্ত্ত†, উপনিবদ্ 🗳 শব্দ স্থার। ব্রহ্মকেই ব্যক্ত করেন। '' ওমিভিত্রক্ষ ' (তৈভিরীয়োপনিষদ্) ওঁ ইহা ত্রকা। বেদের ঈশ্বর অগ্নি বায় ইন্দ্র প্রভৃতি বেষন ক্ষুদ্র, উপনিষ্দের ঈশ্বর ওল্পার-প্রতি-শীদা পরবৃদ্ধা ভেষনি মহান্। উপানিবদের খ-বিরামধন এই ত্রহ্মকে অবেষণ করিয়া আপনার-रमंत्र जाखरत रम्थिरनम, ज्यम बीगरमम '' अग्र-'**শ্রারকা" এই আ্যারকা। পরে উ**হারা তীহাকে প্রতেদ করিয়া ব্লিলেন " সেয়েমাত্মা চতুল্পাং।" নেই এই আঁলা চালি পালে বিজ্ঞা। এখন নিৰ্ণয় করিতে ভইবে বে ইছার জোন্পাদ देगरे जाचा, विजि विद्या ; वैशिष्क समूनकान क्षियां कांना जागाहरमत निकास ब्येट्सांकन। क्षर्यम र्याम जावात जा अनरकी, 'त्य व्यवस्थित जाया

কহিরিজ্ঞিয় ছারা বহিবিধয় উপভোগ করে। দি-ভীন্ন পাদ আত্মার স্বপ্লাবস্থা, বে অবস্থাতে আত্মা ৰিষয়-সকল সৃষ্টি করিয়া ভাহা উপভোগ করে। ভূতীয় পাদ আত্মার সুষ্পারতা, বে অবস্থাতে ष्यात्रा पूछ हरेश काम कामनाञ्च करत्र ना, काम স্থপ্রথদথে না। এই ভিন পাদ আত্মার ভিন অবস্থা। ইহার কোনু পাদ ব্রহ্ম ? উত্তর—ইহার কোনো পাদই ব্ৰহ্ম নহেন, ইহার কোনে। অবস্থাই সেই ৰিজেয় আছার অবভা নছে। উপনিষদ্ইহা মুষ্পাত্ত-রূপে রাজ করিডেছেন, "নাস্তঃপ্রক্রং " দেই বিজেয় আজ। স্থাবস্ত আল্লা নহেন, '' ন ৰহিঃ প্ৰজং" তিনি জাঞাদবস্থ মান্নাও নহেন, ''ন প্রজ্ঞানখনং" তিনি সুযুপ্তারত আলাও নহেন। ভবে সেই বিভেয় আত্মা 🌢 ' উপনিষদ ভাহা পরে বলিভেছেন ৷ " অভূমীনবাৰহায়াম গ্রাহ্মল-ক্ষণমতিস্তামবাপদেশামেকাতা প্রস্থাসার্থ প্রপঞ্চো-शमगर मोख मिनगरेष्ठ 5 5 ईर्य गनारसम আত্মা সৰিভেয়ঃ।" ভিনি চক্ষুর অগেচেব কর্ণ্যে ন্দ্রিয়ের অগ্রাহ্য এবং অব্যবহার্য হয়েন। স্থিনি কোন লক্ষণ দাবা গমা নহেন, তিনি কোন শদ দ্বারা বাপদেশা নহেন, ডিনি অচিন্তা। এক আয় প্রভায় ই ভাঁহাব অন্তিন্তের প্রভি প্রমাণ ইইবাছে। তিনি সমুদায সংসার ধর্মের অভীভ: তিনি শান্ত, মঙ্গল, অধিতীয়। ব্রহ্মজেরা তাঁ-হাকে আহাব চহুৰ্থ পাদ বলিয়া গণনা করেল; ভিনিই আত্মা, ভিনিই বিজেঘ। ইহাতে দেখ, ''অয়মারা একা'' এই অরো; ক্রকা, বলিয়া ঋষিরা যাঁচাকে লক্ষ্য কবিষাছিলেন ভিনি কে, ভাষার সিদ্ধান্ত চটল। সংসারী আগারই ভিন পাদ— अश्वापवद् । ४४ वद् । ४ पृथः । उ ३ । त ८ व ७ पृथः পাদ, ভাহাই মেট বিচেয় প্রণ আত্মা, মাঁহাকে অ'মারদের অনুসন্ধান করিয়া জানিতে হইবেক ; সেই আত্মাই প্রহ্ম। কা এংবর-মুযুগ্রাবসা-স্থিত সৎসাধী আত্মা ব্ৰহ্ম নহেন; কিন্ত যিনি ব্ৰহ্ম, ভিনি সংসারের অভীত; শস্তে, মঙ্গলা, অদ্বিভীয়। এই সংগারী আত্মার প্রতিষ্ঠা ক্রন্ম, এই আত্মাতেই আছেন, অভএন ব্রহ্ম ইহার চতুর্থ পাদ বলিয়া উক্ত इहेग्राट्डन । श्रुवाजन উপनिষদের এই माब्र সিদ্ধান্ত। এই সিদ্ধান্তকে আমরা মনের সহিত কেন অন্সীকার করি ? ইহাতে আমারদের দৃত বিশ্বাস কোণা হইতে উৎপন্ন হয় ? बहे भंदोती आधर आधारे हकूद लाह्द मरह ; ইহার সুযুগুাবস্থার যে অচেডন ভাব, ভাহায় তো आमता किहूरे मश्दाम कामि मा; তবে এই আ-আর অন্করান্তা ভূদা ঈশ্বরকে কি প্রকারে জানিতে পারি, এবং এই ক্লানার উপরে কি প্রকারেই ধা নিঃশ্ংশয় হইয়া আছবিক বিদাস স্থাপন क 🏬 : পाরি १ 🛮 ইহাতে উপনিষদ্ বলিভেছেন, আমারদের নির্মান জ্ঞানে ভিনি প্রকাশ পান, এবং আলো-প্রভায় ভাষতে বিশাস করে। "ন চকুষা গুছাছে নাপি বাচা নালৈবেদ্বৈশুপৰা করাণা ব।। জ্ঞানপ্রদাদেন বিশুদ্ধসম্ভুক্তজন্ত তং ल्लाएड निक्रवर धामभानः । '' (म्छद्कालनियम्) ভিনি চকুর এছিা নহেন ; বাকোরও গ্রাছা নহেন, जिलामा वा यक्तामिकमी द्वारा, उं शास्त्र व्याख इंद्रश गरा मा . १५%-गडु वाकि धान-पूक ब्हेश निर्यंत ক্ষান দারা নিরবয়ৰ ব্রহ্মকে উপলব্ধি করেন। ভাষ্টেক ইন্দ্রিয় গ্রহণ কবিতে পাবে না, ভাঁহাকে যন মনন করিলে পাবে না, ভাঁহাকে বুদ্ধি আযন্ত कविधा कर्क घाता शिका ख कतिरक शास्त्र मा ; ऋषग्र কেবল এক আল্ল-প্রভাষ দ্বারা নিঃসংশয় হইয়া তাঁহাতে বিশ্বাস স্থাপন করে। ' একমি প্রাভায়-সারং।" একঃ ক্লগংকাবনং ব্রহ্মাস্ট্রীতি আহানঃ প্রভায়ঃ সার্থ জমাণ্য ঘদাাধিপথে তথ একাল্প প্র-জ্যসারং " এম আত্ম-প্রভায়ই তাঁহ ব ভাস্তিত্বের প্রতি প্রমাণ ইইয়াডে। বিনি এই সংসারী আ-बीव का शमवद्याटक दिवस धक्राव्य करमा के उन्हास-দকল নিয়াচেন, থিনি ইছাব প্রমানস্থাতে ক্রীডাব নিমিত্ত মনের কপ্ষমা-পাতে দিয়াছেন, যিনি ইছাব দুৰ্ণুপ্ত কালে বিশ্বনি-সুথ দিয়। অহরহ ইহাতে इ.इ.स. वनाथान कविएक एक , स्मेरे मखक मर्ख-শাক্তি অনন্ত পুৰুবেষ অস্থ্যির প্রাভ্রের প্রভ্রের আ 🐍 প্রভাগ বিঃদংশগ প্রমণ্ঠইয়(ছে। ধ্থন অবি সাহি, তথন আমাৰ এটা পাত। নিযন্ত। এক ১(১৯৭: এই আমি-প্রভারে। যিনি আমার এটা পাত নিয়ন্ত। পুক্ষ ভিনি ভাষার সুক্ষ নৰ। দাত্ৰ্য ও প্ৰাভূ-এই বডঃসিদ্ধ আয়ে-প্ৰভায়। যিনি মান্তে পুজৰ স্থা আগ্ৰেষ্ড অভু, ডিনি সংগে 🕆 পুহাদ স্থা আশ্রয় ও প্রস্তু; তিনি 🎮 ন, সজল, অভিতীয়, এই আল্ল-প্রভাষের সহজ অকাটা দিদ্ধান্ত। এখন ব্রাহ্মপর্মা এই আত্ম-এতায়ের বিষয়ে কি বলেন, ভালা শুন। " দেই क म छ क्यांन खक्रण शव्दमध्य हसुत्र व्याह्म महस्म. উহকে হস্ত ছার। প্রছণ করা বাঘ না, ভাঁহাকে মনেব ছারা কম্পানা করা যায় না, ভাঁছাকে পরি-यि उत्तर विश्व विश्व विश्व कि विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य ^{এ'য} না। কেবল নির্মান সহক্ষ জ্ঞানে ভিনি ঞ-চ, শিত হয়েন এবং এক আত্ম প্রভাষের বলে সেই ^{ড়ান-গোচর সভা মুন্দর মঙ্গল পুরুষের **অন্তিত্তে**} সানরা বিখান করি। জা**ন যে অকৃত অভুত অ**-न छ शुरुषक ध्यकामा करत. आक्रा मिह भून शुक्र-ষের সন্তিন্ধে প্রভায় করে। জ্ঞানেতে সভা প্রকাশ পাণ, এবং সেই সভোতে জানারদের আতার প্রভাগ হয়। অন্তর্জন এই স্ভাব-সিদ্ধ আমি-প্রান

তায়ই তাঁহার আভিনের আগাণা ভাগালের এক. মাত্র হেতৃ। বখন আত্ম-প্রভায়-সিভ অনভ পুরুষ সহজ জানে প্রকাশিত হন, তথন বুলি তাঁহার জগৎ-রচনার কৌশল দেখাইয়া তাঁহার বিজ্ঞানের পরিচয় দেয় এবং জগতের মঙ্গলোন্দেশা নিয়ম प्रभादेशा मिरे निराखात मक्त छात वास्त करता যদিও পরিমিত বুদ্ধি অনস্ত পুরুষকে বুঝিয়া শেষ করিতে পারে না, ভগাপি সে সহজ জানকে অভি-মাত্র পোষণ করে। অভএব একা জিজামু,মুমুকু বাক্তি জগংকার্ণোর অন্তর্কাহেরে আকৌচনা ছারা বুদ্ধিকে মাজিতি করিতে কদাপি অবহেলা করি-বেন না। বুদ্ধি সুমাজিতি হইলে সহজ জান ও অ'ক্ব প্রভায়ের অধিকার ও উদ্দেশ্য আমরা বি-শেষ কপে স্বস্পত্য বৃঝিতে পারি। " এই আয়-প্রভাষ অ'মারদের ব্রাহ্মধর্মের সৃষ্টি নহে : ইহ। পুৰাত্তন উপনিষদে **সুস্পান্ট** ৰাক্ত রহিয়াছে। ৰা**ন্ত** বিত্রুজি যথনট আপেনাব পাত্র ভ্রিয় অয়েষ্ণ করে, ভথনি যে সহজ্ঞান ও আত্ম প্রভায়কে দেখিতে পায়।

এই অন্য-প্রভাষ সিদ্ধ জ্ঞান-গোচর সভা মু দ্দৰ মঙ্গৰ পুক্ষ জন্মবিহীন মহান্ আছো। ''অপ-য আলা সদেভ্রির্ভিরেষাং লোকানামসম্বেদীয় ৷ ঘিনি আ'অ', ভিনি লোক-ভঙ্গ নিবাৰণাৰ্থে সেত্ৰ-স্বরূপ হটয়: সমুদায় পার্ণ করিতেছেন। এই অ,ঝ-কপ সেতুর এপাবে দিন রাতি নিয়মত हरेट्ट : अ भारत मिन अ नारे, त्राविख नारे পুরুত্ত নাই, চুদ্ভ্র নাই; ইহা পুণা-জেন ভ্রে সদাই পবিত্র বহিয়াড়ে: জীব ইহাব ও পারে উদ্বীৰ্ চইলে সকল পাপ হইতে প্ৰতিনিয়ত হয়; এই নিষ্পাপ ব্রহ্ম লোক। এই সেতৃর পর-পারে উঙীৰ ২টমাৰে অন্ধ সে অনকাহয়: যে সংসা-রের ভঃখ কেশে বিদ্ধ, যে অবিদ্ধ হয়; যে পাপে ও দে'ছে উপভাপী, সে অনুপতাপী হয়। এই দেজুকে উত্তীৰ্ হইয়া রাজিন দিনের সমান আ त्त्राक शांवन करतः; अहे द्वन्त-लाकः; हेरात मिन বালোক কথন অন্ত হয় মা, ইহার প্রকাশও निकां । इस ना : है हा मनाहै अकानिक इंडिसाट । न क्रिया में ''নৈনা সেতুমহোরাতে ভর্তঃ। মৃত্যৰ্ব শোৰোন মুক্তং ন ছক্তং। সংবী পী-প্রানোংভোনিবর্তন্তে। অপহতপাথা তেম্ব্রগ্ন-লোকঃ। ভন্মাদাএতং সেতৃং ভীম্। স্কা কুৰ্ नक्षाज्यकि विद्यः अभिविद्याज्यकि उपार्थाणी-সমনুপভাপী ভবভি। ভশাহাএতং সেডুং ভী-ৰ্বাপি নক্ষমহয়েবাভিনিস্পদ্যভৈ। সকুষিভাভে।-(इंटिकाटकार्शनिवयः) -- " (ग्रेवयञ्चलदम्यः।

মেদিনীপুর উনবিংশ সায়ৎ-সরিক ব্রাহ্মসমাজ।

আৰু আমাদের উনবিংশ সাধ্যারিক সমাজ।
এই মেদিনীপুরস্থ ব্রাক্ষসমাজের ব্যঃক্ষম ক্ষেম্
ক্রােম উনবিংশ বংসর অভিক্রম করিয়া অদা বিংশভিতম বর্বে প্রাক্রিট হইল। এই উনবিংশভি
বর্ষে,বিশেষতঃ গত বংসরে এখানে আমাদের ব্রাক্ষ
ধর্মের কভ, দূর বল ও পুষ্টি সাধন হইয়াছে, আমরা
ধর্মের দিকে কভ টুকু অগ্রসর হইয়াছি, এ বিষয়ে
আক্র একবার আমাদের পর্যাালোচন। করিয়া দেখা
কর্ত্রবা হইভেছে।

আমরা দেখিতে পাইতেছি, এখানে দিন দিন ব্রাহ্মণর্নের উন্নতি ও বিস্তার হইতেছে। প্রাণমে যথন এখানে, ব্রাহ্মসমাজ প্রতিষ্ঠিত হয় তথন ইছার ভাব অভি সঙ্কীণ ছিল। ভথন ইহার কোন ১৬ ব্ল গৃহ ছিল না। প্রথমে ইহার প্রতি-ঠাতা কোমগৰ নিৰাসা জীমুক্ত বাবু শিৰচন্দ্ৰ দেবের বাস ভবনে উপাসনাদি স্যাজের কান্য নিকাহ **চইত। পাবে একটি বাটী ভাডা করিয়া কিছু** দিনের জনা ভাষাতে সমাজের কার্যা নির্বাহিত হয়। ভানধ্য স্থাতেল্য বহুমান আহি গাঁ<mark>মহাশ</mark>-থের রাস। বারীতে কয়েক বংসর পরিয়া সভাব কার্যা সনাধা হট্ছ। পুরের অভি অপে লোক গমালে উপ্রিভ হউত্তেন, তৎকালে ব্রাহ্মপর্মের প্রতি এখানকার অনেকেবই বিষম বি:ছ্য জারা-য়াছিল। সমাজের প্রথম অবস্থায় এথানে ব্রাফা-मबाटकत श्रांककृत्म अक्री धर्मा गछ। नामी गछ। কিন্দ্র চিরকাল সভে।র প্রক্ষিত চইয়াছিল, खय--- भरग्रेव क्यारे रहेशा शास्त्र। जाञ्चाभर्म ममुनाय বিল্ল বিপত্তি, সমুদায় আতিবন্ধকতা, সমুদায় বি-**च्चाह्य जिल्लाम क**दिया अथारम भिन्न भिन्न वली-যান ও পুট-দেহ হইয়া উচিতেছে। ব্ৰাহ্মপৰ্যা আপনার নিজের মাহাত্মোই আপনি বিস্তুত ও সভেজ হইয়া উঠিতেছে। একণে এথানে বছ मरथाक ल्लांटक विरमयंच्य छ। प्रतमंत्र छात्नटक ত্রাক্ষপর্কোর আগ্রয় গ্রহণ করিভেছেন। এখন उपामिन्याक चात्र भव-धृश्यामी नटहन। ভাহার এই স্বত ৫ ছহ নির্দ্মিত হইয়াছে। বিশেষ আহলাদের বিষয় এই যে এই গৃহ নির্মাণ বিষয়ে क दमभीदग्रता काश्रिक পরিমাণে माशासा করিয়াছেন।

আয় তিন বংসর হইল এখানে একটা ব্রহ্ম বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত ইইয়াছে। তাহাতে অনেকে ব্রাহ্মধর্মের উপদেশ পাইতেছেন। তদ্ধারা অ-নিকে ব্রাহ্মধর্মের সম্প্রপ ও লক্ষণ অবগত হইতে-ছেন ও ইহার উন্নত ভাব মেশিয়া ইহাতে আকৃষ্ট হইতেছেন এবং অনেকে রীতিমত ব্রাদাধর্ম: গ্রহণ করিতেছেন, বস্তুতঃ এই মেদিনীপুরে ব্রাদাধর্মের দিন দিন উন্নতির চিক্ট দেখা বাইতেছে। বিশে-ষতঃ গত বংগরে যে তুই প্রকার কার্মোর অনুষ্ঠান হইয়াছে, ভদ্মারা ব্রাদাধর্ম এখানে অনেক অঞ্জর হইয়াছে বলিতে হইবে। প্রথম কার্যা ধর্ম প্রচার, দ্বিতীয় কার্যা অনুষ্ঠান।

এই প্রদেশের সকল ছানে ত্রাহ্মধর্ম্মের প্রচার করিবার নিমিত গত ফাল্কন মাসে এখানে এক জন প্রচাবক নিযুক্ত কর। হইয়াছে। প্রচারক গ্রাদে গ্রাদের ক্রাদের প্রচার করিভেছেন। যদিও অপদিন প্রচার কার্যা আরম্ভ হইয়াছে, তথাপি ইহার মধোই অনেক ফল দেখা ঘাই-তে ছে। প্ররেষ এই মেদিনীপুর প্রদেশের অন্তঃ পাতী পল্লী নাম বাদীবা ব্ৰাহ্মধৰ্ম বলিয়া একটা যে সভস্তু পর্মা আছে, ভাহা অবগত চিল না। একণে প্রচ'রক দারা অনেকে ভাষা অবগত হই-তেছে। অনেকে একণে ব্রাহ্মপর্মা লইয়। ভূমুল অ:-ন্দোলন কবিতেছে। কেছ কেছ ব্রাহ্মধর্মের আ-শ্রুষ গ্রহণ কবিতেছে। অনেক স্থলে আমাদের প্রচারক সমাদরে গুলীত হইতেছেন। স্থান এইতে প্রচারকেব আংকান পত্র আসি-তেছে। প্রচারকের যত্ত্বে কলেশর ও গভবেডান্ত সমা-ত্বের পুষ্টি সাধন হইয়াছে এবং গঙ্গাদাসপুর ও ঘটোলে সমাজ স্থাপনের কম্পন। হইতেছে। ভন্নিক কোন কোন স্তানে কোন কোন সন্থান বাকি, অ: श्रीष বজন লইয। নিয়মিত কংগে উপা-সন। কবিতে অ'রম্ব করিয়াছেন। বিশেষ অহলা-দের বিষয় এই যে প্রচারক ও অপর এক মহাস্মাব যত্ত্বে কৃষক প্রভৃতি কভক গুলি সামানা লোকে ব্রাহ্মপর্যোর ক্ষাপ্রয় গ্রহণ কবিয়াছে।

গত বংসব ংখানে কয়েকটা ব্রাহ্মধর্মান্তমোদিত অনুঠান অনুষ্ঠিত হইঘাছে। গত বৈশাধ্য মাসে আটার্গা মহাশয়ের জ্যোষ্ঠা কন্যার পরিগয় কার্যা ব্রাহ্মপর্যের পদ্ধতি অনুসারে সম্পাদিত হয়। এইটা এখানকার ব্রাহ্মদিগের প্রথম অনুষ্ঠান। এই অনুষ্ঠানটা অত্যতা ব্রাহ্মদিগের এক প্রকার পরীক্ষা তল সইয়াছিল। তত্পলকে এখানে ব্রাহ্মদিগের মধ্যো মহা গোলধাগ উপস্থিত হই-য়াছিল। অনেকেই সেই অনুষ্ঠানে যোগ দিয়া ছিলেন, কভক গুলি আবার ভাহাতে যোগ দিতে বিমুখ হইয়াছিলেন।

দ্বিতীয় অৰুঠানটী শ্রাবণ নাদে সম্পন্ন হয়। ঐ
অনুঠান রাজা রাধাকান্ত দেব বাহাছরের পৌত্র
শ্রীযুক্ত কুমার ব্রজেঞ্জনারায়ণ দেব বাহাছরের পুত্রের
আন্তক্ষা। এই অনুঠানে অনেকে উপস্থিত ছিলেন।
ইহা আক্ষাদের বিষয় বলিতে হইবে যে প্রথম

অনুষ্ঠানে আগমন করিতে বাঁহাদিগকে; কুঠিও
চুই হইয়াছিল, এই অনুষ্ঠানের সময় জাঁহাদের
অনেকে যোগ দিয়াছিলেন। এই দিভীয় অস্থান দারা আমাদের মহোপকার সাধিত হইযাছে। এই অনুষ্ঠানটী বঙ্গদেশে ব্রাহাধর্মের
অনুষ্ঠান বিষয়ে মহৎ চুইান্ত স্বরূপ।

তৃতীয় অনুষ্ঠান মেদিনীপুর নিবাদী শ্রীযুক্ত
বারু নীলকমল দের পুজের নাম করণ। উহা
আমিন মাদে সম্পাদিত হয়। ভাহাতেও অনেকের
সমাগম হইয়াছিল। এই তৃতীয় অনুষ্ঠানটী এ
প্রদেশে বিশেষ ধর্মোঃভি সাধনেব চিক্ বলিতে
হইবে। ইহার পুর্ধে যে ছুইটা অনুষ্ঠান হয় ভাহা
ভিন্ন আন নিবাদীদেব হাবা অনুষ্ঠিত হয়; এটা
এই স্থান নিবাদী দ্বারা অনুষ্ঠিত হইয়াছে।

গভ বংদবে ব্রাহ্মপর্মের উপতি বিষয়ে যে नकल कार्गा अनुष्टित इहेग्राइ, उम्राक्षा अवसी অভ্যন্ত জীলিকর সংবাদ আছে। ভাষা এই, — এ প্রদেশের অন্তঃপাতী পলীগ্রাম বাদী অন্ধার।ন जाका श्रीषुक बाबू नवीनहत्व एकागी महागग्न प्रशाह দিবদে রম প্রীতিকর কাষা করিয়াভিলেন। ভিনি औ मिन नशूप्राप्त उशका दर्गटक भूगारहद नियञ्जग कविद्यान । यथा नगरम मकत्व उपिष्ठिक इडेल। জিনি উপস্থিত প্রজামগুলীর সমক্ষে পূর্মবং পৌ ভুলিক কার্যা না করিয়া ব্রক্ষোপাসনা কবিভে रिमिया (%) जन। उपापना मगाख इहेटल जनमी-শ্বের নিকট প্রজাবর্গের মঙ্গল ক'মন। পূর্ণ একটী ल्यारीना कविया भूगाह कोर्या सभावा कविरनन। এট কয়েকটি অমুষ্ঠান দারা এখানে ব্রাহ্মণর্দোর বিশেষ উন্নতি সাধন চইয়াছে বলিতে চইবে। क इक्छ नि बाक्त श्रुकार शंका धर्मा मग्धिक अन्-রক্ত হইয়া উটিয়াছেন। এক্ষণে তাঁহাদের প্রায় সমস্ত কাঠা ও বাবহার বাকাধর্মের স্বারা অনুশা-সিভ হইভেছে।

বত দিন না আমরা ব্রাহ্মপর্মকে অনুষ্ঠানে পরিণত করিতে পারিব—বত দিন না আমাদের সমস্ত গৃহ কান্যে প্রদান নাম ঘোষিত চইবে—ভত দিনই আমাদের ব্রাদ্ধধর্মের প্রকৃত উন্ধতি ও পুটি কাপন ইইবে না—ভত দিনই আমরা ব্রাহ্ম নিবার বোগ্য ইইতে পারিব না। অনুষ্ঠান ধর্মের জীবন ধরুপ। অনুষ্ঠান ধ্বারা পর্মতাব প্রকৃত রূপে প্রকাশিত হয়। ব্রাহ্মপর্ম বিদ কেবল আমাদের মনে ও সমাজ গুহুই বদ্ধ পাকে, সংসার মধ্যে প্রবিট না হয়; আমাদের প্রকৃত কার্মের সময় ব্রাহ্মগর্ম নেতা লা হন; ভাষা ইনে আমাদের সময় ব্রাহ্মগর্ম নেতা লা হন; আমান গৃহ কার্মের সময় ব্রাহ্মগর্ম দিতে পারিব প্রাহ্ম বিপ্রাাম্য বিদ্যা ভাষা বিশ্বা আমরা কার্মের বিদ্যা ভাষা বিপ্রাাম্য বিদ্যা ভাষা বিশ্বা আমরা কার্মের বিদ্য ভাষা বিপ্রাাম্য বিদ্যা ভাষা বিপ্রাাম্য বিদ্যা ভাষা বিশ্বা আমরা কার্মের বিদ্য ভাষা বিপ্রাাম্য বিদ্যা ভাষা বিশ্বা আমরা কার্মের বিদ্য ভাষা বিশ্বা

রীত ভাব দেখাই, ছাহা হইলে কি জাসর কাই ও ভণ্ড বলিয়া পরিচিত হইব না ? জনা সময়ে আনবা কপট বলিয়া পরিচিত হইতে লক্ষিত হই, আর ঈশ্বরের প্রতি কর্তবা সম্পাদন সময়ে কপট-ভাচরণ করিয়া কি লক্ষিত হইব না ? ঈশ্বরের নিকট কপটভাও ভণ্ডভাচরণ করিলে আমাদের নিক্তার নাই। অভএব বদি আমরা ব্রাক্ষধর্শের উমতি সাধন করিতে ইচ্ছা করি, বদি আমরা পারলৌকিক অনম্ভ মুখের প্রত্যাপা করি, ভাহা হইলে কপটভাচরণ পরিভ্যাগ করা, আর্থদের সর্বাত্রে কর্ত্বা। ব্রাক্ষধর্মকে আ্যাদের সমস্ভ কার্থেন সকল ব্যবহার ব্রহ্মধন্মের অনুমোদিত করা কর্ত্বা।

হে জগদীখর! আমরা ভোমার অতি কীণ সন্তান, আমাদের এমন বল নাই যে আমরা নিজে ভোমার দিকে আঞার হই, ভোমার প্রদেউ ব্রাদ্ধ থর্মকে আলিঙ্গন করিছে সক্ষম হই, ভোমাকে সাক্ষী রাখিয়া সাংসারিক সমস্ত কার্যোর অনুষ্ঠান করিছে পারণ হই। ভূমি ককণা না করিলে, ভূমি পর্মাবল প্রদান না করিলে, আমরা কথনই ভোমার দিকে উন্দুখ হইছে সমর্থ হই না। হে ধর্মাবহ পুরুষ। ভূমি আনাদের মনে একপ বল দেও যেন আমরা সমস্ত জীবন ভোমাবি দিকে অগ্রসর হই, আমাদের সকল কার্যা যেন ভোমাবি অনুমোদিত হয়, আমাদের সকল অনুষ্ঠান যেন ভোমার ব্রাদ্ধপর্মের অনুশাসিত হয়।

ওঁ একনেবাছিভীয়ং

কলিকাতা ত্রাহ্মনমাজের ১৭৮৬ শকের মাঘ ও ফাল্কুন মাদের আয় ব্যয়

বিবরণ।

আ্য়

ভত্তবোধিনী পতিকা	**&/•
लका मान	२०१
विकानीन मान	, 7110
পুস্তক বিক্রয়	ं ৯১ (४०
डाक्माञ्च ;	ا مرادد
सञ्जानम	3964050
পুল্ডক বিক্ররের কমিশন	DC 10.
मिक्न मिट्न वृद्धिक मान	ં પ્રદ
অনিরূপিড	ZIINE,
পদ্ভিত	BOIL

	1
· ব্যয়	'ব ন্রব্যোপাল মিত্র ২
মাসিক বেন্তন ২২১॥০	" कांखिएस भिज 🖫 \cdots 🕠
প্রিকা মুদ্রান্ধন ও কগিজ ক্রয় ১০১//১০	" श्रीविन्महस्र वस्र ''' >
সরকার্দিগের কমিশন ১৭١১ ৫	" অবিনাশচন্দ্র চটোপাধ্যায় ১
Additions of the State S	" जीनभि भत >
	" নহাভাপচন্দ্র চন্দ্র ১
Alani Ka	" देवलाकामाथ वसू >
Las Las	" भीजनम्म गूर्थानाथाय >
The second secon	" প্রমথনাথ মিত্র >
10, 44,	" উमानाथ छश्र
delian control of the	" অজুরচাদ মলিক · >
আলোকেৰ ৰায় আ/১৫	ং হলপর মলিক ১
मिक्ति (मर्ग प्रस्थिक मीन ९०४	্ বিশ্বেশ্ব ঘোষ >
भूखकानस्यत् अना भूखक कथ थ।०	" ल्लानान वत्नाभाषां >
ेश् लुक वि य्यद कमिनम २॥ ०	" অভযাচরণ গুপ্ত
গছিত ২১/১০	" तनगंती स्थन >
Beautiful Control of C	" গোপলেচন্দ্র মিত্র >
હાના	" क्षात्राहन पद
व्यात्र १४००/१६	' সাগ্রলাল দত্ত
পূর্মকার শ্বিত ৬৮১/•	' গ্ৰেক্টন্দ্ৰকিন্ত
***************************************	" द्रोभटमक्क <i>द</i> न
F8F1/2C	" इतिभाग श्रीभागी >
वाक ७००॥ ८०	ি বিজয়গোপাল মিত্র গণ
The same of the sa	" इत्कालि त्याय ॥०
विक	Saddled Cald '
জী দ্বিজেন্দ্রনাপ ঠাকুর।	95
कलिकांडा जांच्यमध्यास विकास	্ব ভুমনু হৈছিল বাহিছ
कालका का जी मन्त्रम हला र से स्थाप	
	প্রীপুক্ত অধ্যোদাধ শক্তাশী . ২
ব্রাক্ষদিগের প্রতিজ্ঞাত সাস্থ্যবিক দান।	
	ि भग्नास्थ्यमञ्चरहेश्याग्र ১०/१
প্রায়ন্ত দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর · · · › ০	
ماسلوا الالماسا ومن	<i>e_q</i>)•
escultation to the second	मानाधारत्रमान २
्रीचाबाध्यान्याः । । । ।	
' হরিনোহন নজী 8	٢ ١
" ब्राकावाम मूर्याशायाम ७	আর ৮৫ ৮০
" माधवष्टल वनांक	পূর্বকার স্থিত ২৭৮১০
" প্রসরকুমার ঘোষ ২	Manager and American
" ভরোধ্যানাথ পাক্ডানী · · ২	>>> √>∘
. विद्यालयनाथ ठीकूत र	बाग्न
अ महजाव्यनाथ शिक्त १	महकाद्रमिरशद्र कमिमन १५०
*	AND CONTRACTOR OF THE PROPERTY
बीदब्रक्तनाथ ठाकुत र	वर्ख्यान ১১०।/১०
💃 জ্যোতিরিজনীপ চাকুর \cdots ্ 🤻	জী হিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর।
र नात्रमाध्यनाम् भटकाशाधामः . १	আ (ৰংগতান। ব চাণুগ্ন । কলিকাণ্ডা আলসবাদের সম্পাদক।
" (शाकूनकुक निष्ट र	कायकात्रा मा मनवास्यव गर्जा होत् (
" मदश्कानाथ जात २	

ক লি কা ড	া ৰা	কাসম	ंटिक इ	পু স্তক	লেরস্থ
			भू छ		
কংগুদ সংহিত) খ	·	٠.		5
À	২ থ	3			>
অনুষ্ঠান পছ	ভ	• •			٥40
खासाधरमीत ग			•		10
के छ। न वं	াধান		. الكامر الأ		ųo
প্রত্যাহিক ব্র	কাপ্য	मभा			Jo
ব্ৰহ্ম স্থোত্ৰ	•			•	75
ব্রাহ্মগর্ম্মের আ					do
ব্ৰাকাপৰ্য সন্মত			. •	••	10
उभ উপामन।			* *	• •	10
ব্ৰহ্ম সঙ্গীত				* *	oj o
હે જીવન હ			াগ এ	करज	10
नी डेलाम	_	ইভ	•	• •	9/0
ख्यायंना जवरः			•	•	10
কলিক।তা ব্ৰাহ	ñ ⁷ !¥ं८	জর ব	<i>७,</i> ७	٠	10/0
ব্ৰাহ্য সমাজের	•			.,	10/0
রাজনার্যণ বং	रूब दर	দূ জা			ļ, ,
সংশাৰ ৰাঞ্জ				• •	10
ঐ ভাংপন্য	স[হয	5		• •	ij →
বাঞ্চাল। প্রাথ্য				• •	10
के क			· #_	•	ه/ه
जे दिखीय	4 9	• •	• •	• •	40
রাক্ষণর্গোর মত	ও বি	শ্ব[স	•	•	110
লিশ্বরে (পাসন।		• •			/•
ধৰা চিচা					10
উ ट्याभनाञ्चलि	. ,			• •	/0
গৃহ কর্ম	• •			•	e) o
স্থে ত্রম লো					10
ত্ৰিসন্ধান্তে, ত					d'o
ম্ব ভিমান!		• ,	• •	• •	 •
ष्यां स खड्डिया।					10
শিশু পালন	প্রথম্	ક †গ	• •		>0
ঐ ছিতীয়	न ्ग	• •		• •	/°
সংগীত মুক্তাবৰ্গ	٩				10
शर्मा भीका					10.
यञ्चिकात					20
शानार्थ विमा।	. •			••	ło
মনুষোর মহন্ত্র				• *	130
ভাত্ভাব				••	150
জয়নগর গিরিশি			घगन	••	jo
मोल भिवाद करि	७:दक			••	.30
বৈরাগ্য শতক	• •				100
চাক্ৰ মীৰাৎসা	••	• •			10
यरिकिभिष्य		*," ** * *		**	10/0
ভানীপুর ক্রম্য	वशांच	513	ज ारम	1 1 3 1 Ti	10

वर्गमाना	\$
बे विषीय मर्था	10
ব্ৰাহ্ম ব্যৰহার	10
ष्ट्रां १ मर्थ	10
সংস্ত পাঠোপকারক	0.
हिन्दा डोक्स-धर्म — मिरनागत अक्तरत	10
রতি সহিত কঠোপনিষৎ দেবনাগর অক্ রে	do

বিজ্ঞাপন

আখিন মাধের প্রবল ঝড়েতে কলিকাতা ব্রাক্ষনাজ গৃহ একপ ভগ্ন হইরাছে,
বে সংক্ষার না করিলে আর বাবহারের
উপযোগী হইতে পারে না। এবার সংক্ষার
করিতে ক্যুনাধিক ২৫০০ টাকা লাগিবে।
অতএব বিজ্ঞাপন দিতেছি যে কলিকাতা
ব্রাক্ষান্যজের প্র, গ্রাহাদিগের সেহআছে,
ও ইহাকে রক্ষা করা ঘাঁহারা কর্ত্রা বোধ
করেন; এই সময়ে তাঁহারা সাহ্যা করিবেন।

শ্রী দিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর। কলিকালা রাক্ষসমাজের সম্পাদক।

ত চৈত্র মঙ্গলবার অপরাক্ত ৭ ঘন্টার
সময়ে বর্ষশেষ উপলক্ষে, এবং ১ বৈশার
বুববার প্রাতঃকালে ৭ ঘন্টার সময়ে নববর্ষ
উপলক্ষে কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজে ব্রহ্মোপাসনা কটবে। ব্রাহ্মগণ প্রাধান আটার্যা
মহাশ্রের ভবনে উপস্থিত হইয়া উপাসনা
ক্রিবেন।

শ্ৰী বিজেমেনাথ ঠাকুর। কলিকাতা ব্ৰাফ্যনমাজের লম্পান্ত।

বাঁহাদিনের তত্ত্বোধিনী পত্তিকার অঞ্জিন মূল্য নিংশেষিত হইরাছে, তাঁহার। আনামী বর্ষের জন্য অগ্রিম মূল্য আশান করিবেন অগ্রিম মূল্য অগ্রেম প্রদান না করিলে করা-জের ক্ষতি করা হয়।

की गानस्कृतिहरू विकास की माने विकास के कार्या कर की किया कर